

राजस्थान भारती प्रकाशन नं०

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली

सम्पादक —

अगरचंद नाहटा



प्रकाशक —

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
वीकानेर

प्रथम संस्करण

सन् २०१७

मूल्य
२

सेठ ब्रादर्स

७० - बी०, घर्मतल्ला स्ट्रीट

(कलकत्ता)

जिनसे सदा सहयोग व साहित्यक्षेत्र
में आगे बढ़ने की प्रेरणा
मिलती रही उन्हीं सौजन्य-
मूर्ति, विद्यामहोदधि,
राजस्थानी साहित्य
के महान्
सेवक

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी
के
कर कमलों
में
सादर समर्पित

—अगरचंद नाहटा

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट वीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में वीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिकर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी वीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से वीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संवध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का सकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार-शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उनके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी गई हैं । यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह मस्या के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं का प्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायण, ऋतु काव्य । ले० श्री नातूराम सस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उण्णयास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३ वरस गाठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

‘राजन्यान-भारती’ मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४ ‘राजस्थान-भारती’ का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्या के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अङ्क ३-४ ‘डा० लुइजि पित्रो तैस्सितोरी विशेषांक’ बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये ‘राजस्थान भारती’ अनिवार्यतः सग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्या के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अग्ररचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात ओग अनोखी ग्रान जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है ।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सवध में भी सवधे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है ।

१३. जैमलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं ।

१४. वीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है । इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयमुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है ।

१५. इसके अतिरिक्त सस्या द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, मयमुन्दर, पृथ्वीराज, और लोक-मान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियाँ मनाई जाती हैं ।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानियाँ आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विद्यार्थी साहित्य का निर्माण होता रहता है । विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है ।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदान, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं ।

गत दो वर्षों में महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ ग्रामन की स्थापना की गई है । दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, डू डलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा सदरं पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनों के अभाव में भी सस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका- अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संख्या को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

- | | |
|---|---|
| १. राजस्थानी व्याकरण— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध) | डा० शिवस्वरूप शर्मा अत्रल |
| ३. अचलदास खीची की वचनिका— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| ४. हमीरायण— | श्री भवरलाल नाहटा |
| ५. पद्मिनी चरित्र चौपई— | ” ” ” |
| ६. दलपत विलास | श्री रावत सारस्वत |
| ७. डिंगल गीत— | ” ” ” |
| ८. पवार वंश दर्पण— | डा० दशरथ शर्मा |
| ९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली— | श्री नरोत्तमदास स्वामी और
श्री बद्रीप्रसाद साकरिया |
| १०. हरिरस— | श्री बद्रीप्रसाद साकरिया |
| ११. पीरदान लालस ग्रंथावली— | श्री अग्रचन्द नाहटा |
| १२. महादेव पार्वती वेलि— | श्री रावत सारस्वत |
| १३. सीताराम चौपई— | श्री अग्रचन्द नाहटा |
| १४. जैन रासादि संग्रह— | श्री अग्रचन्द नाहटा और
डा० हरिवल्लभ भायाणी |
| १५. सद्यवत्स वीर प्रबन्ध— | प्रो० मंजुलाल मजूमदार |
| १६. जिनराजसूरि कृतिकुमुमाजलि— | श्री भंवरलाल नाहटा |
| १७. विनयचन्द कृतिकुमुमाजलि— | ” ” ” |
| १८. कविवर घर्मवद्धन ग्रंथावली— | श्री अग्रचन्द नाहटा |
| १९. राजस्थान रा दूहा— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| २०. वीर रस रा दूहा— | ” ” ” |
| २१. राजस्थान के नीति दोहा— | श्री मोहनलाल पुरोहित |
| २२. राजस्थान व्रत कथाएं— | ” ” ” |
| २३. राजस्थानी प्रेम कथाएं— | ” ” ” |
| २४. चंदापन— | श्री रावत सारस्वत |

२५. भङ्गली—	श्री अग्ररचन्द नाहटा
	मःविनय सागर
२६. जिनहर्षं ग्रथावली	श्री अग्ररचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण	” ”
२८. दम्पति विनोद	” ”
२९. हीयाली-राजस्थान वा बुद्धिवर्धक साहित्य	” ”
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भँवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जँसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जँन साहित्य (ले० श्री अग्ररचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्याभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस महायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है । अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं ।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस बृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके सस्या के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं ।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय वीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, श्रीरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार वीकानेर, मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय वीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार वीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यस जैसलमेर आदि अनेक सस्याओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है । अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं ।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन धर्मसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है । हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है । गच्छतः स्वल्पेन क्वपि भवत्येव प्रमाहतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ।

आशा है विद्वद्बृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुभाषों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे ।

वीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०.

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
वीकानेर

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली :-

परिभाषा

५

निमित्तान्युत्सर्गप्रपञ्चनिष्पन्नायानिमित्तानामुपवादिनाभाष्यते परिहृत्याप्रवादविषयमुत्सर्गोऽसि तिशते षोडशतस्वानिबन्धे
 त्यासद्विकारेऽपवादानोत्सर्गादिविधत्वाभाष्यते षोडशतः इति सप्तमोऽध्यायः इर्वत्रासिधीयमद्विर्वचने वेपाद, अत्रित्यमा
 गमाउत्सर्गमत्र निमित्तान्याप्येति त्रिकस्याप्यायः, रेफषाद्, गोणसुख्योऽद्विर्वचकार्यप्रषय्य, इतिमाकृत्तिसयोः इति
 मेकार्यसुवत्यय, धक्षनाप्रधानयोः अक्षते कार्यसंघयः उपपदविसृजेः कारकविनाक्तिर्वलीयमी अत्रयववत्रेऽः म
 सुदायप्रसिद्धिर्वलीयसी गामादायत्तरेष्वविशेषः सामान्यस्यातिदेशो विशेषस्यानतिदेशः अनामुमित्तयोः श्रोतः
 बक्षेष्वष्टायान् पिन्सराधिस्वरोवलीत्यान् विधिनिय
 मसनेवेविधेरेव ज्ञायान् प्रतिपदि विधिसमाहोगविना
 गोबलीयान् नियमज्ञापकयोः प्रिष्टो विरोधेऽयोरप्य
 लोपविधिर्वलवाव् अतएविकारेत्यसदेसास्व' मा
 य सद्देविरितासद्देवितयोः सद्देविरितस्यैत्रयद्वर्गा ।
 नित्य सदेवेवकवचनप्रयोग्य अर्थाद्विनक्तिपरिण
 नाद्भूयते व्यवस्थितवितार्थयाकार्योफाक्तियते अनिर्दिष्टार्थाः प्रत्ययाः स्वार्थसवति ज्ञापकसिद्धनसर्द्धन सुगपद
 धिकरणवचनेष्व इर्वक्षत्रः साधनेनमुत्पत्ते पञ्चाङ्गप्रसंगेण'वा' अथनाइर्वसुपसंगेया समासकृत्तद्विरेषसव
 निकानमन्यत्रस्त्वानिस्त्रपावति चारियव्येन्यः एत्वपादः इति अष्टमोऽध्याय इतिपरिभाषासामान्यमादागधरु
 णा ॥ अधश्चोका, ६६ ॥ सुगां च्चकुरनगदोऽपीऽमशोवत्यरेवरे च्चक्रास्त्रकृष्णमीतिष्यामतिस्ववर्मविर्द्धे । श्री ॥ श्री
 ॥ पदनाषोऽनीन्द्रोः परशशुक्लशरयोः भैथाकरणासाधयाः च्चलेषी नैवतुणतोः ॥ इति क्षत्रनाकरे ॥

कविवर धर्मवर्द्धन की हस्तलिखित "परिभाषा" ।

भूमिका

राजस्थान की साहित्य-सम्पत्ति की अभिवृद्धि एवं सुरक्षा में जैन विद्वानों का योग सदैव स्मरणीय रहेगा। जैन-विद्वानों का उद्देश्य एकमात्र जनसाधारण में सद्धर्म का प्रचार करना एवं ज्ञान की ज्योति की प्रकाशमान रखना रहा है। न उनको राजा-महाराजाओं का गुणानुवाद करना था, न हिंसामय युद्ध के लिए योद्धाओं को उत्तेजित करना था और न शृंगार रस से पूर्ण रचनाओं द्वारा जन-समाज में कामोत्तेजना फैलाना था। उनका जीवन सदा से निवृत्ति-प्रधान रहता आया है। अतः सद्धर्म-प्रचार के साथ ही साहित्य का उत्पादन एवं उन्नयन करना उनके जीवन का अंग बना हुआ दृष्टिगोचर होता है।

जैन विद्वानों ने प्रचुर साहित्य-सामग्री का निर्माण करने के साथ ही अतिमात्रा में ग्रंथों का संरक्षण भी किया है। इस कार्य में उन्होंने जैन-अजैन का विचार नहीं किया। जैन भंडारों में सभी प्रकार के महत्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतियाँ सुरक्षित की जाती रहीं हैं और उनके अपने लिखे हुए ग्रन्थ भी केवल जैन-धर्म विषयक ही नहीं हैं। उन्होंने सभी विषयों के ग्रन्थों से अपने भंडारों को परिपूर्ण करने के साथ ही स्वयं भी विविध ज्ञान-

शाखाओं अथवा साहित्यिक परम्पराओं की पूर्ति के लिए लिए ग्रन्थ रचना की है। जैन भंडारों में की गई ज्ञान साधना ने विद्यारसिकों के लिए प्रचुर साहित्य-सामग्री एकत्रित कर दी है। यह जैन विद्वानों की एकान्त तपस्या का ही फल है कि बहुसंख्यक अनमोल ग्रन्थ नष्ट होने से बच गए हैं और वे अब भी सर्वसाधारण के लिए सुलभ हैं।

राजस्थान के लब्धप्रतिष्ठ जैन विद्वानों एवं कवियों की संख्या भी काफी बड़ी है। इन विद्वानों ने अनेक भाषाओं में ग्रन्थ-रचना की है। जहाँ इन्होंने संस्कृत में ग्रन्थ लिखे हैं, वहाँ प्राकृत एवं अपभ्रंश को भी अपनी प्रतिभा की भेंट दी है। लोकभाषा की ओर तो जैन विद्वानों का ध्यान सदा से ही रहा है। यही कारण है कि राजस्थानी जैन साहित्य की विशालता आश्चर्यजनक है। प्राचीन राजस्थानी साहित्य को तो जैन विद्वानों की विशेष देन है।

राजस्थान के जैन साहित्य-तपस्वियों में उपाध्याय धर्मवर्द्धन का विशिष्ट स्थान है। ये एक साथ ही सद्धर्म-प्रचारक, समर्थ विद्वान एवं तरस कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी अपनी रचनाएँ काफी अधिक हैं और वे संस्कृत, पिंगल एवं डिंगल आदि अनेक भाषाओं में हैं। इतना ही नहीं, इन्होंने अपनी रचनाओं में अनेक परम्पराओं का सुन्दर निर्वाह कर के अपने साहित्य को समष्टि-रूप से एक विशिष्ट वस्तु बना दिया है, जिसके विषय में आगे जरा विस्तार से चर्चा की जाएगी।

श्री अग्रचंद्र नाहटा ने अपने 'राजस्थानी साहित्य और जैन कवि धर्मवर्द्धन' शीर्षक लेख (त्रैमासिक राजस्थान, भाद्रपद १९६३) में उपाध्याय धर्मवर्द्धन के जीवनवृत्तान्त पर अच्छा प्रकाश डाला है। तदनुसार इनका जन्म स० १७०० में हुआ था और इनका जन्म नाम 'धर्मसी' (धर्मसिंह) था। इन्होंने तत्कालीन खरतरगच्छाचार्य श्रीजिनगन्तसूरि के पास स० १७१३ में तेरह वर्ष की अल्पायु में ही दीक्षा ग्रहण की और इनका दीक्षा नाम 'धर्मवर्द्धन' हुआ। पंद्रहवींशताब्दी के प्रभावक खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनभद्रसूरि की शिष्य-परम्परा के मुनि विजयहर्ष आप के विद्यागुरु थे, जिनके समीप रह कर आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया।

मुनि धर्मवर्द्धन का समस्त जीवन धर्मप्रचार एवं ग्रन्थ-रचना में ही व्यतीत हुआ। आपने अनेक प्रदेशों, नगरों एवं ग्रामों में विहार करके धर्म-प्रचार किया और प्रचुर साहित्य-रचना की। आपको अपने जीवन में बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ। आपकी विद्वत्ता की प्रसिद्धि फैली। फलतः गच्छनायक श्रीजिनचन्द्रसूरि ने आपको स० १७४० में उपाध्याय पद से अलंकृत किया। आगे चल कर गच्छ के तत्कालीन सभी उपाध्यायों में वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध होने के कारण आप महोपाध्याय पद से विभूषित हुए।

लगभग ८० वर्ष की आयु में यशस्वी एवं दीर्घजीवन प्राप्त करके मुनि धर्मवर्द्धन ने इहलीला सवरण की। जयसुन्दर,

कीर्तिसुन्दर, ज्ञानवल्गु आदि अनेक विद्वान आपके शिष्य थे। इनकी शिष्यपरम्परा १६ वीं शताब्दी तक चालू रही^१। आपके सम्बन्ध में भोजक अमराजी का कहा हुआ एक डिंगल गीत इस प्रकार है :—

बखतवर श्री विजैहरप वाचक तणों,
 ज्ञान गुण गीत सौभाग बड़ गात ।
 बडा बाबई तिके गुणा रा धरमसी,
 पतगड तुं नै सहि बडा कवि पात ॥१॥
 ज्ञानवत सूत्र सिधतरी लहड गम,
 अगम रा अरथ जिके तिके आणड ।
 महु बहोतर कला तो कना धरमसी,
 जेन सिव धरम रा मरम जाणड ॥ २ ॥
 व्याकरण वेद पुगण कुराण विधि
 आप मति सार अधिकार आखइ ।
 ताहरी धरमसी समझि इसड़ी तरह,
 भरह पिंगल तणा भेद भाखइ ॥ ३ ॥
 राजि है श्री कमल साईज चढ़ती रती,
 जिन सासन जोइतां जती गुण जाण ।
 नग अमूल धरमसी सारिखा नीपजइ,
 खरतरइ गच्छ हीरां तणी खाण ॥ ४ ॥

१ महींपाध्याय धर्मवर्द्धनजी की विस्तृत जीवनी श्री नाहाटाजी के लेख में द्रष्टव्य है।

तत्कालीन व्रीकानेर नरेश सुजाणसिंहजी ने गच्छनायक श्रीजिनमुखसूरि को दिए गए सं० १७७६ के अपने पत्र में सहोपाध्यायजी की इस प्रकार प्रशंसा की है :—

सब गुण ज्ञान विशेष धिराजै ।
कविगण ऊपरि घन ज्यु गाजै ॥
धर्मसिंह धरणीतल माहि ।
पण्डित योग्य प्रणति दल ताहि ॥

सहोपाध्याय धर्मवर्द्धन अनेक विषयो के ज्ञाता एवं बहुभाषाविद् उच्चकोटि के विद्वान् थे। आपकी अनेक रचनाएँ संस्कृत में हैं। साथ ही प्राकृत-अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओं में भी रचना करने में आप समर्थ थे। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

सरस्वती-वंदना (संस्कृत)

मंद्रैर्मध्यंश्च तारैः क्रमततिभिस्तरः कण्ठमूर्द्धप्रचारैः ,
सप्तस्वर्य्या प्रयुक्तैः सरगमपधनेत्याख्ययाऽन्योन्यमुक्तैः ।
स्कन्धे न्यस्य प्रवालं कल ललितकल कच्छपी वादयती,
रम्यास्या सुप्रसन्ना वितरतु वितते भारती भारती मे ॥६॥

(सरस्वत्यष्टकम्)

प्राकृत

विविह सुविहि लच्छ्रीवहिसंताणमेह,
सुगुणरयणगेह पत्तसापुण्णरेहं ।

दलियदुरियदाह लद्वससिद्धिलाह,
जलहिमिव अगाह वदिमो पासनाहं ॥ ३ ॥

अपभ्रं सिका

तुहु राउल राउलह सामि हुं राउल रंकह,
हिणसु दुहाड सुहाड कुण सुमड मा अचहीरह ।
पिक्खड जुगू अजुगु ठाणु वरसतउ कि घणु,
पत्तउ पड जड होसु दुहियसा तुह अवहीरणु ॥८॥

(श्रीगौडीपार्श्वनाथस्तवनम्)

राजस्थान का ढिंगल साहित्य अत्यंत गौरवमय है। इसके गीत भारतीय साहित्य की विशिष्ट वस्तु हैं। गीतों की वर्णन-शैली एवं उनकी छन्द रचना अपने आप में स्वतंत्र हैं। ढिंगल की गीत सम्पत्ति है भी अति विशाल और इसकी अभिवृद्धि में केवल चारणों ही नहीं, अन्य वर्गों एवं कवियों का भी पूरा योगदान रहा है। महोपाध्याय धर्मवर्द्धन के ढिंगलगीत उनकी समस्त साहित्यसामग्री में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने काफी ढिंगल गीत लिखे हैं और और उनका अर्थ-गाभीर्य विशेष रूप से ध्यान में रखने की चीज है। यहाँ उनके कुछ ढिंगलगीत उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत किए जाते हैं :—

१. सूर्य स्तुति

हुवें लोक जिण रे उदें, मुदें सहु काम ह्वें,
पूजनीका सिरे देव पूजौ ।

साच री बात सहु साभलौ सेवका,
 देव को सूर सम नही दूजौ ॥ १ ॥
 सहस किरणा धरै हरै अधकार सही,
 नमैं प्रहसमै तियां कष्ट नाचै ।
 प्रगट परताप परता घणा पूरतौ,
 अवर कुण अमर रवि गमर आवै ॥ २ ॥
 पडि रहै रात रा पखिया पथिया,
 हुवै दरसण सकौ राह हीढे ।
 सोभ चढे सुरां सुरा असुरा सिहर,
 मिहर री मिहर सुर कवण मीढे ॥ ३ ॥
 तपे जग ऊपरा जपै सहुं को तरणि,
 सुभा असुभां करम धरम साखी ।
 रूडा ग्रह हुवइ सहु रूडै ग्रह राजवी,
 रूडा रजवट प्रगट रीति राखी ॥ ४ ॥

२. वर्षा वर्णन

सबल मेंगल वादल तणा मज करि,
 गुहिर असमाण नीसाण गाजै ।
 जंग जोरैं करण काल रिपु जीपवा,
 आज कटकी करी इंद राजै ॥ १ ॥
 तीख करवाल विकराल वीजली तणी
 घोर माती घटा घर र घालै ।
 छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,

चटक माहे मिल्यौ कटक चालै ॥ २ ॥
 तडा तड़ि तोव करि गयण तड़कै तड़ित,
 महाभड़ भड़ि करि भूक्त मंड्यौ ।
 कड़ा किड़ि कोध करि काल कटका कीयौ,
 खिणकरै बल खल सवल खंड्यौ ॥ ३ ॥
 सरस वाना सगल कीध सजल थल,
 प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रवला ।
 लहकती लाछि बलि लील लोको लही,
 सुध मन करै धर्मशील सगला ॥ ४ ॥

३. श्री महावीर जन्म

सफल थाल वागा थिया धवल मंगल सयल
 तुरत त्रिभुवन हुआ हरप त्यारां ।
 धनद कोठार भंडार भरिया धने,
 जनमियो देव ब्रधमान ज्यारा ॥ १ ॥
 वार तिण मेरगिरि सिहर न्ववरावियौ
 भला सुर असुरपति हुआ मेल ।
 सुद्रव वरपा हुई लोक हरप्या सहु,
 वाह जिनवीर री जनम वेला ॥ २ ॥
 मिहर जगि ऊगते पूगते मनोरथ
 जुगति जाचक लहै दान जाचा ।
 मडिया महोछव सिधारथ मौहले,
 सुपन त्रिसला सुतन क्रिया साचा ॥ ३ ॥

करण उपगार ससार तारण कलू,
आप अवतार जगदीस आयौ ।
धनो धन जैन धर्म सीम धारणधणी,
जगतगुर भले महावीर जायौ ॥ ४ ॥

४. शत्रुजय महिमा

सरब पूरब सुकृत तीये किया सफल,
लाभ सहु लाभ में अधिक लीया ।
सफल सहु तीरथा सिरे सेंत्रुज री,
यात्रा कीधी तिया धन्न जीया ॥ १ ॥
सुजस परकासता मिले सघ सासता,
शास्त्रे सासता विरुद सुणिजे ।
ऋपभ जिणराज पुडरीक गिरि राजीयो,
भेटिया सार अवतार भणिजे ॥ २ ॥
काकरै काकरै कोडि कोडी किता,
साधु शुभ ध्यान इण थान सीधा ।
साच सिद्धक्षेत्र शुद्ध चेत सु सेवता,
क्रीध दरसण नयनसफल कीधा ॥ ३ ॥
तासु टुरगति न ह्वै नरक त्रियंच री,
सुगति सुर नर लहै सुगति सारी ।
विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी
धनो धन श्री धर्मसील धारी ॥ ४ ॥

५. धरती की ममता

भोगवी किते भू किते भोगवसी
माहरी माहरी करड मरे ।
ण्ठी तजी पातला ऊपरि,
कृकर मिलि मिलि कलह कर ॥ १ ॥
धपटि धरणि कितेड धु सी,
धरि अपणाडत केड ध्रुवै ।
धोवा तणी सिला परि धोवी,
हृ पति हूं पति करै हुवै ॥ २ ॥
इण इल किया किते पति आगै,
परतिख किते किते परपूठ ।
वसुधा प्रगट दीसती वेश्या,
भूमै भूप भुजंग सुभूठ ॥ ३ ॥
पातल सिला वेश्या पृथ्वी,
इण च्यारा री रीत इसी ।
ममता करै मरै सो मूरख,
कहे धमसी धणियाप किसी ॥ ४ ॥

६. राष्ट्रवीर शिवाजी

सकति काड साधना किना निज भुज सकति-
वडा गढ धूणिया वीर वाकै ।
अवर उमराव कुण आड साम्हौ अडै,
सिवा री धाक पातिसाह साकै ॥ १ ॥

खसर करता तिके असुर सहू खूदिया,
 जीविया तिके त्रिणौ लेहि जीहें ।
 सवद आवाज सिवराज री साभलें,
 विली जिम विली रो धणी बीहें ॥ २ ॥
 सहर देखे विली मिले पतिसाह सू,
 खलक देखत सिवौ नाम खारै ।
 आवियौ बले कुसले दले आप रे ।
 हाथ घसि रह्यौ हजरत्ति हारै ॥ ३ ॥
 कहर म्लेच्छा शहर उहर कंद काटिवा,
 लहर दरियाव निज धरम लोचै ।
 हिंदुओ राव आइ विली लेसी हिवै,
 सवल मन माहि सुलताण सोचै ॥ ४ ॥

उपर कविवर धर्मवर्द्धन के ६ डिंगल गीत इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि इनके द्वारा विषयगत विविधता प्रकट हो सके। कविवर ने विविध विषयो मे डिंगलगीत रच कर इस शैली का महत्त्व प्रकाशित किया है। डिंगलगीतो का विषय केवल युद्धवर्णन अथवा विरुद्गान तक ही सीमित नहीं है। इस मे देवस्तुति, प्रकृति वर्णन, निर्वेद एव राष्ट्रीयता आदि तत्त्वो का भी सम्यक् सन्निवेश दृष्टिगोचर होता है। कविवर धर्मवर्द्धन के गीतो की डिंगल भी प्रसादगुण धारण किए हुए है। यह इनकी अपनी विशेषता है।

कविवर धर्मवर्द्धन ने अनेक गेय पदो की भी रचना की है। ये पद अधिकाश मे औपदेशिक अथवा स्तवन रूप है

और पदों की भाषा पिंगल है । कविवर के कुछ पदों को उदाहरण-स्वरूप यहाँ दिया जाता है :—

१. राग तोड़ी

तु करे गर्व सो सर्व वृथा री ।
स्थिर न रहे सुर नर विद्याधर
ता पर तेरी कौन कथा री ॥ १ ॥
कोरि क जोरि दाम किये डक ते,
जाकै पास वि दाम न था री ।
उठि चल्यो जव आप अचानक,
परिय रही सब धरिय पथा री ॥ २ ॥
सपद आपद दुहु सोकनि के,
फिकरी होइ फद मे फथा री ।
सुधर्मशील धरे सोड सुखिया,
सुखिया राचत मुक्ति मथारी ॥ ३ ॥

२. राग सामेरी

सन मृग तु तन बन में मातौ ।
कैलि करे चरे इच्छाचारी जाणे नहीं दिन जातो ॥ १ ॥
माया रूप महा मृग त्रिसना, तिण मे धावे तातो ।
आखर पूरी होत न इच्छा, तो भी नहीं पछतातो ॥ २ ॥
कामणी कपट महा कुडि मंडी, खवरि करे फाल खातो ।
कहे धर्मसीह उलगीमि वाको, तेरी सफल कला तो ॥ ३ ॥

जैन विद्वानों द्वारा लोक साहित्य का बड़ा उपकार हुआ है। जहाँ उन्होंने अपनी रचनाओं के लिए लोककथाओं का आधार लेकर बड़ी ही रोचक एवं शिक्षाप्रद सामग्री प्रस्तुत की है, वहाँ उन्होंने लोकगीतों के क्षेत्र में भी विशेष कार्य किया है। उन्होंने लोकगीतों की धुनों के आधार पर बहुत अधिक गीतों की रचना की है और साथ ही उनकी आधार-भूत धुनों के गीतों की आद्य पंक्तियाँ भी अपनी रचनाओं के साथ लिख दी हैं। इस प्रकार हजारों प्राचीन लोकगीतों की आद्य पंक्तियाँ इन धर्म प्रचारक कवियों की कृपा से सुरक्षित हो गईं^२। मुनि धर्मवर्द्धन विरचित अनेक गीत भी इसी रूप में हैं। उनके कुछ गीतों की धुनें इस प्रकार हैं :—

१. मुरली बजावै जी आवो प्यारो कान्ह ।
२. आज निहेंजो दीसै नाहलो ।
३. केसरियो हाली हल खडं हो ।
४. धण रा ढोला ।
५. ढाल, सुंवरदेरा गीत री ।
६. ढाल, नणदल री ।
७. उड रे आवा कोइल मोरी ।
८. हेम घड्यो रतने जड्यो खुंपो ।
९. कपूर हुवै अति ऊजलो रे ।

२ 'जैन गुर्जर कवियों' भा० ३ ख० २ में ऐसी प्राचीन 'देशिया' की अति विस्तृत सूची दी गई है, जो द्रष्टव्य है।

१० सुगुण सनेही मेरे लाला ।

११. दीवाली दिन आवीयउ ।

मुनि धर्मवर्द्धन का जीवन त्यागमय था एवं जनता में सद्धर्म का प्रचार करना ही उनका मुख्य कार्य था । अतः उनकी रचनाओं में औपदेशिक एवं धार्मिक सामग्री का पाया जाना सर्वथा स्वाभाविक है । वे जैन शासन में थे । उनके हृदय में जैन तीर्थङ्करों एवं आचार्यों के प्रति अगाध भक्ति थी, जो उनकी अधिकांश रचनाओं का प्रधान विषय है । इन रचनाओं से मुनिवर के हृदय की भक्ति टपकी है । यहां कुछ उदाहरण दिए जाते हैं :—

१. संघ (छप्पय)

बडो जिन चौबीस चवदसे वाचन गणधर ।

माथु अट्टावीस लाख सहस अड़तीस मुखंकर ॥

साध्वी लाख चम्माल सहस छयालिस चउसय ।

श्रावक पचपन लाख सहस अडताल समुच्चय ॥

श्राविका कोडि पच लाख सहु, अधिक अट्टावीस सहस अख ।

परिवार इतो संघ ने प्रगट, श्री धर्ममी कहै करहु मुख ॥

२. श्री जिनदत्तसूरि (सवैया)

वाचन वीर किण अपने वश, चौसट्टि योगिनीं पाय लगाई ।

डाडण साडणि, व्यंतर खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाई ।

वीज तटक्क भटक्क कट्टक, अटक्क रहै पै खटक्क न काई ।

कहै धर्मसीह लघे कुण लीह, दीयै जिनदत्त की एक दुहाई ।

३. श्री जिनचंद्रसूरि (कवित्त)

जैसे राजहंसनि सौं राजे मानसर राज,
जैसे विंध भूधर विराजै गजराज सौं ।
जैसे सुर राजि सुं जु सोभ सुरराज साजै,
जैसे सिंधुराज राजै सिंधुनि के साज सौं ।
जसे तार हरनि के वृन्द सौं विराजै चद,
जैसे गिरराज राजै नद वन राज सौं ।
जैसे धर्मशील सौं विराजै गच्छराज तैसै
राजै जिनचदसूरि सध के समाज सौं ।

जनता में सद्धर्म का प्रचार करने का मुख्य अंग आचरण एवं व्यवहार की शुद्धि है। मुनिवर ने इन विषयों पर भी बहुत कुछ लिखा है। इसी श्रेणि में उनकी नीति-प्रधान रचनाएँ हैं। इनमें कवि के दीर्घजीवन का सार समाया हुआ है। यहाँ कुछ उदाहरण इस सम्बंध में प्रस्तुत किए जाते हैं :—

१. भाव

भाव ससार समुद्र की नाव है,
भाव बिना करणी सब फीकी
भाव क्रिया ही कौ राव कहावत,
भाव ही तैं सब वात है नीकी ।

दान करौ बहु ध्यान धरौ,

तप जप्प की खप्प करौ दिन ही की ।

बात को सार यहै धर्मसी डक,

भाव विना, नहीं सिद्धि कहीं की ॥४५॥

(धर्म वावनी)

२. मधुर वचन

बहु आदर सू बोलियै, वारु मीठा वेंण ।

धन विण लागा धर्मसी, सगला ही ह्वै सैण ॥

सगला ही ह्वै सैण, वेंण अमृत वदीजै ।

आदर दीजै अधिक, कदे मनि गर्व न कीज ॥

इणा बातें आपणा, सैण हुइ सोभ वटै सहु ।

माने निसचै मीत, बोल मीठो गुण छै बहु ॥४६॥

(कुण्डलिया वावनी)

३. मोर और पंख

कहै पाखा सुणि केकि, कत तुम्ह लागि कहै ।

करि कु मया तुं कांड, फूस ज्युं अम्ह पा फेडै ॥

सुन्दर माहरे संग, कहै सहु तोने कलाधर ।

नहीं तर खुथड़ो निरखी, नेट निन्दा करसी नर ॥

अम्ह वणी ठाम वीजी अवर, धरमी आदर करि धरै ।

माहरै सुगुण सोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरै ॥२२॥

(छप्पय वावनी)

४. दृष्टान्त

मोटा रे पिण कष्ट में, जतन नेह सह जाय ।
रातें रमणी रान मे, नाखि गयौ नलराय ॥२२॥
राज लैण माहे रहै, वडा तणी मति वक्र ।
भरतै मारण भ्रात नै, चपल चलायौ चक्र ॥२३॥
दान अदान दुहूं दिसी, अधिक भाव री ओर ।
नवल सेठ नै फल निबल, जीरण नै फल जोर ॥२४॥

(दृष्टान्त छतीसी)

५. काया

काया काचे कुंभ समान कहै ककौ ।
धाखै धेखी काल - सही देसी धकौ ॥
करवत वहता काठ ज्युं आउखो कटै ।
परिहा, न धरै तोइ धर्मसीख जीव नट ज्युं नटै ॥११॥
(परिहा बत्तीसी)

६. सीख

राजा मित्र म जाणे रंग, सुमाणस रो करिजे संग ।
काया रखत तपस्या कीजै, दान वल धन सारु दीजै ॥१०॥
जोरावर सुं मत रमे जुऔ, करिजे मत घर माहे कुऔ ।
वैदा सुं मत करजे वैर, गालि बोले तो ही न कहै गैर ॥११॥
(सवासौ सीख)

७. शिक्षाकथन

सुगुरु कहै सुण प्राणिया, धरिजै धर्म वट्टा ।
 पूरव पुण्य प्रमाण तैं, मानव भव खट्टा ।
 हिव अहिलौ हारे मता, भाजे भव भट्टा ।
 लालच मे लागै रखै, करि कूड़ कपट्टा ॥२॥

उलमै नौ तु आप सुं, ज्युं जोगी जट्टा ।
 पाचिस पाप संताप में, ज्युं भोभरि भट्टा ।
 भमसी तुं भव नवा नवा, नाचै ज्युं नट्टा ।
 ऐ मंदिर ऐ मालिया, ऐ ऊचा अट्टा ॥३॥

हयवर गयवर हीसता, गौ महिषी थट्टा ।
 लाछ दु लीपी भूवका, पहिंग सु घट्टा ।
 मांनिक मोति मूदड़ा, परवाल प्रगट्टा ।
 आइ मिल्या है एकट्टा, जैसा चलवट्टा ॥४॥

(गुरु शिक्षा कथन निसाणी)

ऊपर के उदाहरणों से प्रकट होता है कि समर्थ-कवि धर्मवर्द्धन ने राजस्थान मे प्रचलित प्रायः सभी काव्य शैलियों को अपनाया है और इस प्रकार की अपनी रचनाओं में वे पूरे सफल हुए हैं। राजस्थानी साहित्य मे काव्यगत नामों के अनेक प्रकार हैं और उन सब में रचनाशैली की दृष्टि से अपनी अपनी विशेषताएँ हैं। मुनि धर्मवर्द्धन ने उन सब को अपनी वाणी का सुफल भेंट किया है। ऊपर के उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य काव्यशैलियों से सम्बन्धित कवि की 'नेमि

राजमती वारहमासा', 'श्री गौड़ी पार्श्वनाथ छन्द', 'शील रास' 'श्रीमती चौढालिया' एव 'श्री दशार्णभद्र राजर्षि चौपई' आदि रचनाओ के नाम लिए जा सकते हैं। इतनी अधिक काव्यशैलियों में सफल रचनाएं प्रस्तुत करना कवि की सामर्थ्यका द्योतक है। राजस्थान के कवियों में मुनि धर्मवर्द्धन की यह विशेषता वस्तुतः ही अत्यंत गौरव का विषय है।

पुराने कवियों में चित्रकाव्य की रचना करने का चाव रहा है। कविवर धर्मवर्द्धन ने भी इस प्रकार की रचनाएँ की हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

साधु स्तुति (सर्व लघु अक्षर)

धरत धरम मग, हरत दुरित रग,

करत सुकृत मति हरत भरम सी ।

गहत अमल गुन, दहत मदन वन,

रहत नगन तन सहत गरम सी ।

कहत कथन सत, वहत अमल मन,

तहत करन गण महति परम सी ।

रमत अमित हित सुमति जुगत जति,

चरन कमल नित नमत धरमसी ।

देव गुरु वंदना (इकतीसा, तेवीसा सवैया)^१

शोभ(त) घणी(जु) अति देह(की) चणी(है) दुत्ति,

सूरि(ज) समा(न) जसु तेज(मा) वदा(य) जू ।

१ इस पद्य के कोष्ठक वाले अक्षरों का छोड़ कर पढ़ने से यह 'तेवीसा' सवैया बन जाता है ।

भूप(ति) नमै(हैं) नित नाम(कौ) प्रता(प) पट्ट,
 देख(त) ताही(ही) दुख नाहि(हैं) कदा(य) जू।
 पूर(ण) वडे(ई) गुण सेव(के) करै(थैं) सुख,
 वंद(त) तही(ही) बहु लोक (स)मुटा(य) जू।
 देत(हैं) बहू(त) सुख देव (सु)गुरु(हि) नित,
 दोऊं(कौ) नमै(हैं) धर्मसीह(यौ) सदा(य) जू।

साथ ही एक हीयाली भी उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाती है :—

हीयाली

चतुर कहौ तुम्है चुंप सुं, अरथ हीयाली एहो रे।
 नारी एक प्रसिद्ध छै, सगला पास सनेहो रे ॥१॥
 ओलै बैठ। एकली, करै सगला ई कामो रे।
 राती रस भीनी रहे, छोडै नहीं निज ठामो रे ॥२॥
 चाकर चौकीदार ज्युं, बहुला राखै पासो रे।
 काम करावै ते कन्हा, विलसै आप विलासो रे ॥३॥
 जोड़े प्रीति जणै जणै, त्रोड़े पिण तिण वारो रे।
 करिज्यो वस धर्मसी कहै, सुख वाछो जो सारो रे ॥४॥

(जीभ)

इसी प्रकार कवि समाज में 'समस्यापूर्ति' का भी विशेष प्रचलन रहा है। काव्यविनोद करने का यह एक सुन्दर तरीका है। समस्या की पूर्ति के लिए प्रसंगोद्भावना करनी पड़ती है। इसमें प्रखर कल्पना-शक्ति की आवश्यकता है।

कविवर धर्मवर्द्धन ने अनेक समस्याओ की सुन्दर एवं रोचक रूप में पूर्ति की है। उनमे से कई तो संस्कृत मे है। आगे कुछ उदाहरण इस दिशा मे प्रस्तुत किए जाते हैं, जो अतीव सरस एवं रोचक है :—

१. समस्या, भावी न टरे रे भैया, भावे कलु कर रे १।
श्रवण भरै तो नीर, मार्यो दशरथ तीर,

ऐसी होनहार कौण मेटि सकै पर रे।
पांडव गये राज हार, कौरव भयौ सहार,

द्रौपदी कुट्टि मार्यो कीचक किचर रे।
केती धर्मसीख दइ, सीत विष वेलि वइ,

रावन न मानि लइ जावन कुं घर रे।
भावी को करनहार, सो भी भम्यौ दश वार,

भावी न टरत भैया, भावै कलु कर रे।

२. समस्या, नीली हरी विचि लाल ममोला।

एक समै वृषभान कुमारि,

सिंगार सजै मनि आनिइ लोला।

रंग हर्ये सब वेस बणाइ कै,

अंग लुकाइ लए तिहि ओला।

आए अचाण तहा घनश्याम,

लगाइ मरी करै केलि कलोला।

घुंघट में ए कर्यो अधरामनु,

नील हरी विचि लाल ममोला।

१. यह आशंदरामजी नाजर द्वारा दी हुई समस्या की पूर्ति है।
ये उस समय बीकानेर के राज्यमंत्री थे।

३. समस्या, टेरण के मिस हेरण लागी ।

चुं प सु च्यार सखी मिलि चौक मे,

गीत विवाह के गावन लागी ।

गौख तै कान्ह कौ साद सुणै तै,

भइ वृषभान सुता चित रागी ।

जाइ नहीं चितयौ उत ओर,

सखीनि कै वीचि मे वैठि सभागी ।

उतै कर कौ सुकराज उड़ाइ कै,

टेरण के मिसि हेरण लागी ॥

४. समस्या, हरिसिद्धि हसे हरि यों न हसे ।

हनुमान हरौल कियेँ चढै राम

तर्यौ निधि संनिधि लंक ध्वसे ।

करि रौद्र संग्राम लकेश कुं मारि,

कियौ मुखवास की नास नसे ।

शिव चिल्यो त्रिलोक कौ कटक सोऊ,

नमावतौ मो पद सीस दसे ।

उत दैत्य हसे उत देव हसे,

हरिसिद्धि हसे हर यों न हसे ।

इसी प्रसंग में 'कहावत' के साथ समाप्त होने वाले कविवर के अनेक पद्यों में से उदाहरण स्वरूप यहाँ एक पद्य प्रस्तुत किया जाता है :—

फूल अमूल दुराइ चुराइ,

लीए तौ सुगध लुके न रहैगे ।

जो कहु आथि कै साथ सु हाथ है,

ता तिन कु सब ही सलहैगे ।

जो कहु आपन में गुन है,

जन चातुर आतुर होइ चहैगे ।

काहे कहो धर्मसी अपने गुण,

त्रुटे की बात बटाऊ कहैगे ।

महोपाध्याय धर्मवर्द्धन संस्कृत के विद्वान थे । उन्होने संस्कृत के सुभाषित श्लोकों को अनूदित करके भी अपनी रचनाओंमें यत्रतत्र स्थान दिया है । इस विषयमें उदाहरण देखिए :—

रीस भयो कौइ राक, वस्त्र विण चलीयो बाटै ।

तपियो अति तावड़ौ, टालता मुसकल टाटै ।

वील रुख तलि बेसि, टालणो माड्यो तड़कौ ।

तरु हुंती फल त्रूटि, पड़यो सिर माहे पड़कौ ।

आपदा साथि आगै लगी, जायै निरभागी जठे ।
कर्मगति देख धर्मसी कहै, कहौ नाठो छुटै कठे ॥१३॥

(छप्पय वावनी)

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापिते मस्तके,
गच्छन् देशमनातपं द्रुतगतिस्तालस्य मूलं गतः ।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः,
प्रायो गच्छति यत्र देवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः ॥

(नीतिशतकम्-६६)

पंकज माफि दुरेफ रहै, जु गहै मकरंद चितै चित ऐसौ ।
जाड राति जु ह्वैहै परभात, भयै रवि दोत हसै कंज जैसो ।
जाडंगो मै तव ही गज नै जु, मृनाल मरोरि लयौ मुहि तैसो ।
युं धर्मसीह रहै जोड लोभित, ह्वै तिन की परि तार्हि अंदैसो ।

(धर्म वावनी—४२)

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा मूलतः कमलिनीं गज उज्जहार ॥

इस प्रकार महोपाध्याय धर्मवर्द्धन के काव्य की विविधता पर त्रिचार करने से वे एक समर्थ एवं सरस कवि के रूप में मूर्तिमान होते हैं। उनकी रचनाएँ उनके जीवन के अनुरूप हैं और साथ ही रोचक तथा शिक्षाप्रद भी कम नहीं

हैं। उनके काव्य के सम्बन्ध में उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार
यथार्थ ही कहा जा सकता है :—

एक एक तै विसेप पंडित वसै असेप,

रात दिन ज्ञान की ही यात कुं धरतु है ।

बंदक गणक ग्रन्थ जानै ग्रह गणन पंथ,

और ठौर के प्रवीण पाइनि परतु है ।

करत कवित सार काव्य की कला अपार,

श्लोक सब लोकनि के मन कुं हरतु है ।

कहैं भ्रमसीह भैया पंडिताई कहु कैसी,

दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है ।

हिंदी विभाग,
आर. एन रुडिया कालेज,
रामगढ़, शेखावाटी
दि० २६-१०-६१

मनोहर शर्मा

महोपाध्याय धर्मवर्द्धन

राजस्थानी-साहित्य की जैन विद्वानों ने बहुत बड़ी सेवा की है। १३वीं शताब्दी से अब तक सैकड़ों जैन कवि हो गये हैं जिनकी रचनाओं का प्रमाण कई लाख श्लोकों का है। गद्य और पद्य दोनों प्रकार का विविध विषयक राजस्थानी साहित्य जैन विद्वानों के रचित है। जैन विद्वानों में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी, सभी भाषाओं के विद्वान हो गये हैं। इनमें से कुछ विद्वानों ने इन सभी भाषाओं में रचनाएं की हैं कुछने केवल राजस्थानी में ही और कुछ ने राजस्थानी, हिन्दी, गुजराती भाषा में ही अपनी सारी रचनाएं की हैं। यहाँ उनमें से एक ऐसे कवि और उनकी रचनाओं का परिचय दिया जा रहा है जिन्होंने विशेषतः संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी इन भाषाओं में रचनाएं की हैं। वैसे उनके रचित पद्य-भाषामय स्तोत्र और सिन्धी भाषा के दो स्तवन भी प्राप्त हैं। अपने समय के वे महान् विद्वानों में से थे। अपने गच्छ में ही नहीं राज-दरवारों में भी इन्हें अच्छा सन्मान प्राप्त था। उन कविश्री का नाम है 'धर्मवर्द्धन'।

जन्म

कविवर धर्मवर्द्धन का मूल नाम धर्मसी था जो उनकी कई रचनाओं में भी प्रयुक्त है। जैनमुनि-दीक्षा के

अनंतर उनका नाम धर्मवर्द्धन रखा गया था। कवि के जन्मस्थान, तिथि, वंश, माता-पिता, आदि के संबंध में विशेष जानकारी तो प्राप्त नहीं होती पर हमारे संग्रह के एक पत्र में पं० धर्मसी के परिवार की विगत लिखा है उसमें उनका गोत्र ओसवाल-वशीय—आचलिया लिखा है। यद्यपि पं० धर्मसी नामक और भी कई यति-मुनि हो गये हैं, इसलिए उस पत्र में उल्लिखित धर्मसी आप ही हैं या अन्य कोई, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। आपकी भाषा राजस्थानी प्रधान है और दीक्षा भी मारवाड़ राज्यान्तर्गत साचोर में हुई थी, इसलिए आपका जन्मस्थान राजस्थान और विशेषतः मारवाड़ का ही कोई ग्राम होना चाहिये। धर्मसी या धर्मसिंह नामकरण उनके उच्चकुल का द्योतक है। उस समय ओसवाल जाति आदि में ऐसे और भी कई व्यक्तियों के नाम पाये जाते हैं। आपके जन्म की निश्चित तिथि तो ज्ञात नहीं हो सकी पर आपकी सर्व प्रथम रचना 'श्रेणिक चौपाई' संवत् १७१६ चदरीपुर में रची गई थी और उसकी प्रशस्ति में आपने अपने को १६ वर्ष का बतलाया है। इससे आपका जन्म सन् १७०० में हुआ प्रतीत होता है।

यथा—

लघुवय मे उगणीसवे वर्षे, कीधी जोड़ कहावे
आयो सरस वचन को इण मे, सो सतगुरु सुपसाय रे ॥७॥

* सतरसैं उगणी से वरसैं 'चदरीपुर चावै ।'

जैन मुनि-दीक्षा

आपकी रचनाओं में संवतोल्लेख वाली 'श्रेणिक चौपाई' संवत् १७१६ में रचित होने से आपकी शिक्षा दीक्षा लघुवय में ही हो चुकी थी; निश्चित होता है। खरतर गच्छ के आचार्य जिनरत्नसूरिजी के पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी ने जिन जिन मुनियों को दीक्षा दी थी, उस दीक्षा नंदी की नामावली के अनुसार आपकी दीक्षा संवत् १७१३ चैत्र वदी ६ साचोर में जिनचन्द्रसूरिजी के हाथ से हुई थी। उस समय आपका नाम परिवर्तन करके धर्मवर्द्धन रखा गया था और विजयहर्ष जी का शिष्य बनाया गया था।

गुरु-परम्परा

आपने अपनी रचनाओं की प्रशस्ति में जो गुरु-परम्परा के नाम दिये हैं, उसके अनुसार आप जिनभद्रसूरि शाखा के उपाध्याय साधुकीर्ति के शिष्य साधुसुन्दर शिष्य वाचक विमलकीर्ति के शिष्य विमलचन्द्र के शिष्य विजयहर्ष के शिष्य थे। यथा—

गरवो श्री खरतर गच्छ गाजे, श्री जिनचन्द्रसूरि राजे जी ।
 नाखा जिनभद्रसूरि सहाजे, दौलति चढ़ी दिवाजे जी ।
 पाठक ड्वर प्रगट पुन्यायी, साधुकीरति सवाई जी ।
 साधुसुन्दर उवकाय सदाइ, विद्या जस वसाई जी ।
 वाचक विमलकीरति मतिमंता, विमलचन्द्र दुतिवता जी ।

विजयहर्ष जसु नाम वधन्ता, विजयहर्ष गुण-व्यापी जी ।
 सद्गुर वचन तणे अनुसारी, धर्म सीख मुनि धारी जी ।
 कहे धर्मवर्द्धन सुखकारी, चउपइ ए सुविचारी जी ।

(अमरसेन वयरसेन चौपाई, संवन् १७२४, सरसा)

इस प्रशस्ति मे उल्लिखित जिनचन्द्रसूरि तो आपके दीक्षा-गुरु थे और उस समय के गच्छनायक थे । जिनभद्रसूरि सुप्रसिद्ध जैसलमेर ज्ञानभंडार आदि के स्थापक है जिन्हे संवन् १४७५ में आचार्य पद प्राप्त हुआ था और १५१४ मे जिनका स्वर्गवास हुआ । उनकी परम्परा के उपाध्याय साधुकीर्ति से धर्मवर्द्धनजी ने अपनी परम्परा जोडी है । साधुकीर्ति का समय संवत् १६११से १६४२ तक का है । ये बहुत अच्छे विद्वान थे । हमारे सम्पादित “ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह” में आपके जीवन से संबधित ६ रचनाएं प्रकाशित हुई है । उनके अनुसार “ओशवाल वंशीय सचिती गोत्र के शाह वस्तिग की पत्नी खेमलदे के आप पुत्र और दयाकलशजी के शिष्य अमरमाणिक्यजी के सुशिष्य थे । आप प्रकाण्ड विद्वान थे । संवन् १६२५ मि० व० १२ आगरे मे अकबरकी सभा मे तपागच्छीय बुद्धिसागरजी को पोपह की चर्चा मे निरुत्तर किया था और विद्वानों ने आपकी बड़ी प्रशसा की थी, संस्कृत मे आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था ।

संवत् १६३२ माघव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचंद्रसूरि जी ने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानों में विहार कर अनेक भव्यात्माओं को आपने सन्मार्ग-गामी बनाया था ।

संवत् १६४६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहा साह कृष्ण-पक्ष में आयुष्य की अल्पता को ज्ञात कर अनशन उच्चारणपूर्वक आराधनाकी और चतुर्दशी को स्वर्ग सिधारे । आपके पुनीत गुणों की स्मृति में वहा स्तूप निर्माण कराया गया, उसे अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है । साधु-कीर्तिजी अमरमाणिक्य के शिष्य थे, जिनका समय संवत् १६०० के करीब का है अतः जिनभद्रसूरि और अमर-माणिक्यजी के बीच की परम्परा में तीन-चार नाम और होने चाहिये । साधुकीर्ति के आपाढभूति प्रबंध के अनुसार वा० मतिवर्द्धन शिष्य मेरुतिलक शिष्य दयाकलश के शिष्य अमरमाणिक्य थे । पर साधुकीर्तिजी बहुत प्रसिद्ध विद्वान हुए इसलिए धर्मवर्द्धनजी ने अपनी गुरु परम्परा के वे बीच के नाम नहीं देकर साधुकीर्तिजी से ही अपनी परम्परा मिला दी है । साधुकीर्तिजी की संस्कृत और राजस्थानी की कई रचनाएँ मिलती हैं, उनमें से प्रधान रचनाओं की नामावली नीचे दी जा रही है ।

(१) सप्तस्मरण बालाचवोध-संवत् १६११ दीवाली, बीकानेर के मंत्री सग्रामसिंह के आग्रह से रचित ।

(२) सतरेभेदी पूजा—स० १६१८ श्रावणसुदि ५ पाटण ।

(३) सघपट्टकवृत्ति—स० १६१६ ।

(४) कायस्थिति वालावबोध स० १६२३ महिम ।

(५) आपाढ़भूति प्रबध—सवन् १६२४ विजयादशमी,

दिल्ली, श्रीमाल वश पापड गोत्र साह तेजपाल कारित ।

(६) मौन एकादशी स्तवन—सवन् १६३५ जेठसुदी ३,
अलवर ।

(७) नमि-राजर्षि चौपाई—सवत् १६३६ माघ सुदी ५,
नागौर ।

(८) शीतल जिन स्तवन—सवन् १६३८, अमरसर ।

(९) भक्तामर स्तोत्रावचूरि ।

(१०) दोषावहार वालावबोध ।

(११) विशेष नाममाला ।

(१२) सव्वत्थ वेलि ।

(१३) षट् कर्मग्रन्थ टन्वा ।

(१४) गुणस्थान विचार चौपाई ।

(१५) स्थूलिभद्र रास ।

(१६) अल्पावहुत्त्व स्तवन आदि ।

साधुकीर्तिजीके गुरुभ्राता वाचक कनकसोम भी अच्छे
विद्वान थे, जिनकी सवत १६५५ तक की २१ रचनाए प्राप्त हुई
हैं । राजस्थानी भाषा के आप सुकवि थे ।

साधुकीर्तिजी के शिष्य साधुसुन्दर भी बहुत अच्छे व्याकरणी थे। उनके रचित धातुरत्नाकर, क्रियाकल्पलता टीका (स० १६८०, ढीवाली) उक्तिरत्नाकर, और पार्श्व स्तुति (स १६८३), शतिनाथ स्तुति वृत्ति प्राप्त हैं। साधुसुन्दर के शिष्य उदयकीर्ति रचित पदव्यवस्था टीका (स १६८१) और पचमी स्तोत्र उपलब्ध हैं।

साधुकीर्तिजी के अन्य शिष्य विमलतिलक के शिष्य विमलकीर्ति भी अच्छे विद्वान् थे। उनके रचित चन्द्रदूत काव्य (स० १६८१), आवश्यक बालावबोध, जीवविचार वा०, जयतिहुअण वा०, पक्खीसूत्र वा०, दशवैकालिक वा०, प्रतिक्रमण समाचारी टब्बा, गणधर सार्द्धशतक टब्बा, पष्टिशतक वा०, उपदेशमाला वा०, ईकीसठाणा टब्बा, एव यशोधर रास, कल्पसूत्र समाचारी वृत्ति, और कई स्तवन, सज्भाय आदि प्राप्त हैं। इनके सतीर्थ्य विजयकीर्ति के शिष्य विमलरत्न रचित वीरचरित्र बालावबोध (सवत् १७०२ पोष सुदी १० साचोग) प्राप्त हैं। इन्हीं विमलकीर्ति के शिष्य विजयहर्ष हुए और उनके शिष्य धर्मचर्द्धन। विमलरत्न रचित विमलकीर्ति गुरु गीत के अनुसार विमलकीर्ति हुँ बड़ गोत्रिय श्रीचन्द्र शाह की धर्मपत्नी गवरा की कुक्षि से जन्मे थे। सवत् १६५४ माघ सुदी ७ को उपाध्याय साधुसुन्दरजी ने आपको दीक्षित किया। गच्छनायक श्रीजिनराजसूरि ने इन्हें वाचक-पद प्रदान किया। सवत् १६६२-में आपने

मुल्तान मे चौमासा किया और सिन्धु देशके किरहोर नगर मे अनसन आराधनापूर्वक स्वर्ग सिधारे ।

इस प्रकार हम देखते है कि कविवर धर्मवर्द्धनजी की गुरुपरम्परा में कई विद्वान् हो गये हैं और उस विद्वत् परम्परा में आपकी शिक्षा-दीक्षा होने से आपकी प्रतिभा भी चमक उठी और १६ वर्ष जैसी छोटी आयु में श्रेणिक रास की रचना करके आपने अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया ।

धर्मवर्द्धनजी ने १३ वर्ष की अल्पायु में ही जैन-दीक्षा ले ली थी इसलिए घर में रहते हुए तो साधारण अध्ययन ही हुआ होगा । दीक्षान्तर अपने गुरु श्रीविजयहर्षजी के पास थोड़े ही वर्षों में आपने व्याकरण, काव्य, न्याय, जैनागम, आदि मे प्रवीणता प्राप्त करली । फिर अनेक ग्राम नगरों मे विहार करके धर्म-प्रचार के साथ साथ अनुभव को बढ़ाया । आपका विहार वीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, चन्देरी, सरसा, देरावर, रिणी, लौद्रवा, वाडमेर, सूरत, पाटण, खम्भात, अंजार, बेनातट, नवहर, फलौदी, मेड़ता, पाली, सोजत, उदयपुर, रतलाम, साचोर, राडद्रह, पाटोदी, गारवदेसर, देशनोक, अहमदावाद, पालीताणा, आदि अनेक ग्राम-नगरों मे हुआ । शत्रुंजय, आवू, केसरियाजी, लोद्रवा, जैसलमेर, सखेश्वर, गोड़ी-पार्श्वनाथ आदि अनेक जैन तीर्थों की आपने यात्रा की ।

आपकी विद्वता की धवलकीर्ति कर्पूर के सुवास की भाति शीघ्र ही चारों ओर फैल गई। फलतः गच्छनायक जिनचन्द्र-सूरिजी ने सं० १७४० में इन्हें उपाध्याय पद से अलंकृत किया और अपने पास में ही इन्हें, रखा। जिनचन्द्रसूरिजी के स्वर्गवास के बाद जिनसुखसूरि गच्छनायक हुए उन्हें आपने विद्याध्ययन भी करवाया था और उनके साथ ही जब तक वे विद्यमान रहे, आप विहार करते रहे। सं० १७७५ में जिनसुखसूरिजी का स्वर्गवास रिणी में हुआ, उनके पट्टधर जिनभक्तिसूरि हुए। उन्हें भी विद्याध्ययन आपने करवाया था। उस समय जिनभक्तिसूरिजी केवल १० वर्ष के ही थे इसलिए गच्छ व्यवस्था भी विशेषतः आपकी देख रेख में, होती रही।

राज्य सम्मान

जैन आचार्यों और विद्वान् मुनियों का तत्कालीन राजाओं, मंत्रियों आदि पर विशेष प्रभाव रहा है। वीकानेर के महाराजा अनूपसिंह, सुजानसिंह, जैसलमेर के रावल अमरसिंह, जोधपुरनरेश जसवतसिंह, सुप्रसिद्ध दुर्गादास राठोड़ और वीर शिवाजी संबंधी आपके पद्य भी मिले हैं। वीकानेर के महाराजा सुजानसिंहजी ने संवत् १७७५ के माघ सुदी में खरतर गच्छ के आचार्य जिनसुखसूरिजी को पत्र दिया था जो हमारे संग्रह में है. उसमें धर्मसिंहजी की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार लिखा है :—

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली :-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

सर्व गुण ज्ञान विशेष विराजै, कविगण उपरि घन ज्यू गाजै ।
धर्मसिंह धरणीतल माहि, पंडित योग्य प्रणती दल ताहि ॥

बीकानेर के तत्कालीन मंत्री नाजर आणंदराम जो कि 'स्वयं' अच्छे कवि और विद्वान थे, आपके प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। ऋचिवर ने उनकी प्रशंसा में एक सवैया भी रचा है और उनकी दी हुई कि समस्या की पूर्ति भी की है। वह सवैया और समस्यापूर्ति भी इसी ग्रन्थ में आगे छपी है। नाजर आणंदराम रचित 'भगवन् गीता भाषा', 'गीता महात्म्य' 'अज्ञानबोधिनी भाषा-टीका' आदि ग्रन्थ उपलब्ध है।

स्वर्गवास :—

सम्बन् १७७६ में जिनसुखसुरिजी का स्वर्गवास और जित्तभक्तिसूरिजी की पदस्थापना रिणी में हुई उस समय तो महोपाध्याय धर्मवर्द्धनजी वहीं थे। उसके बाद सम्भवतः बीकानेर पधारे और सम्बन् १७८३-८४ में आपका स्वर्गवास बीकानेर में हुआ। बीकानेर के रेलडाडाजी (गुरु-मन्दिर) में एक छतड़ी बनी हुई है, जिसके अनुमार सं० १७८४ के वैशाख वदि १३ महोपाध्याय धर्मवर्द्धन (धर्मसीजी) की इस छत्री का निर्माण उनके प्रशिष्य शातिसोम ने करवाया था। छतड़ी के स्तम्भों पर निम्नोक्त दो लेख उत्कीर्णित हैं। -

[१] १७८४ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने महोपाध्याय श्री धरमसीजी री छतड़ी पशातिसोमेन कारापिता छत्री छथमी

सदा २७ लाग। पाखाण इलाख श्री कु सिरपाव दीना वि जणाने।

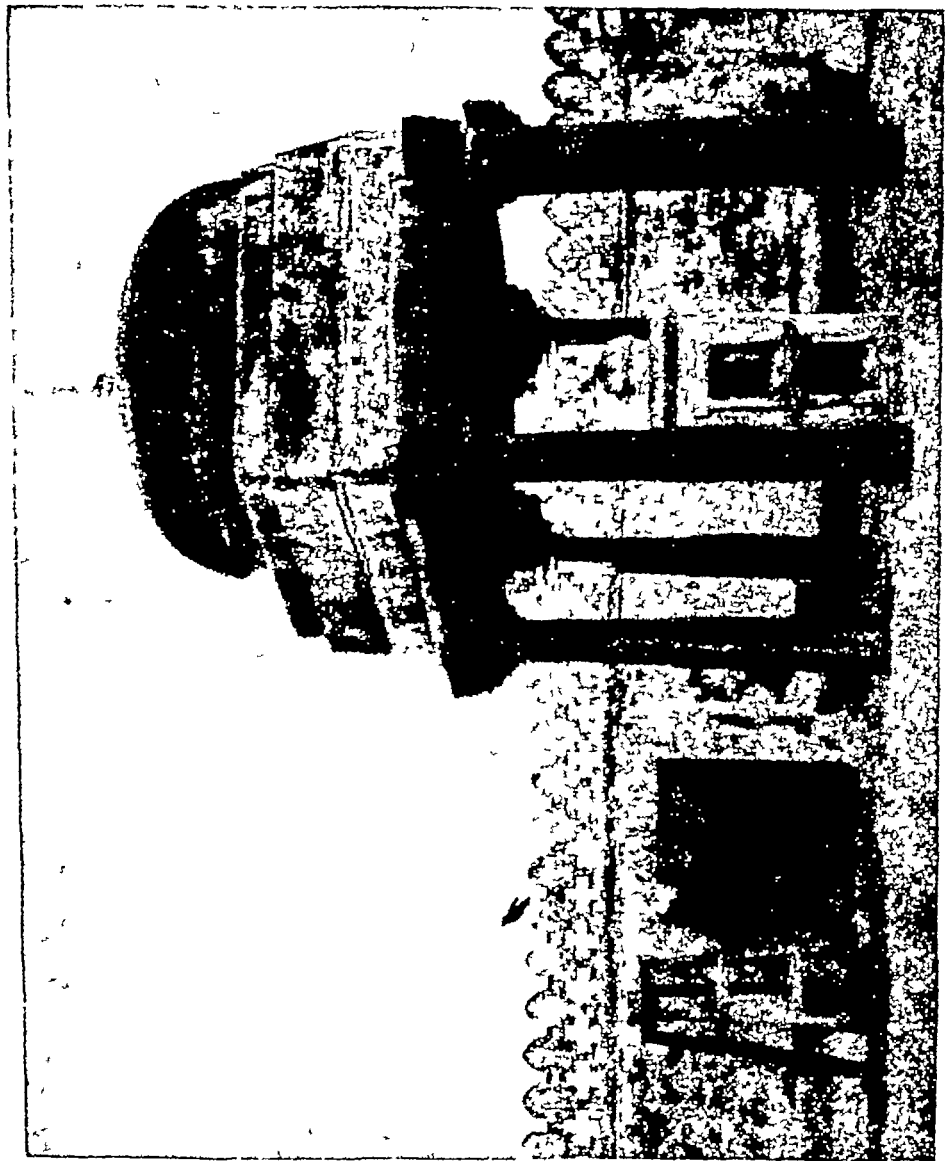
[२] सं० १७८४ वर्षे सि० वैशाख वदि १३ दिने महो-
पाध्याय श्री धर्मवर्द्धनजी री छतड़ी कारापिता शिष्य पं०
साम ..

शिष्य-परम्परा

कविवर धर्मवर्द्धन के गुरुभ्राता विजयवर्द्धन थे, जिनके रचित कई स्तवन उपलब्ध हैं। आप अधिकाश अपने गुरु विजयहर्षजी के साथ रहा करते थे। इनके शिष्य ज्ञानतिलक व्याकरण और काव्य शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। इनके रचित 'सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति' 'संस्कृत विज्ञप्ति लेखद्वय' और कई अष्टक आदि प्राप्त हैं। इनमें १०८ श्लोक का एक 'विज्ञप्ति लेख' मुनि जिनविजयजी सम्पादित 'विज्ञप्ति लेख संग्रह' में हमने प्रकाशित करवाया है। इसमें धर्मवर्द्धनजी सम्बन्धी निम्नोक्त श्लोक उल्लेखनीय हैं।

पठिता सद्विद्याना सन्निधिरिव सन्निधौ मुनीशानाम्।
श्री धर्मवर्द्धनगणिः सत्कविरिव भासते स्वभाषा च ॥३४॥

अलालाटिका धाटिका पण्डिताना,
निराकारव श्रारवो ऽमीरवश्च ।
धियो गर्द्धना धर्मतो वर्द्धनाद्या,
विभान्तूपकण्ठे सतां पाठका हि ॥१०१॥



धर्मवर्द्धनजी का स्मारक स्तूप, रेलदादाजी, बीकानेर

भवत्पूर्वजैर्गन्धहस्तित्व मुक्तं,
तदेव क्रमादागतं पूर्वजेषु ।
सदा भावयन्तोऽधुनाविःसभावं,
भवत्सनिधि प्राप्त शोभाविशेषान् ॥१०२॥

पाठकाः सकलशास्त्र पाठकाः शब्दशास्त्रमुरुमध्य जीगपन् ।
ज्ञानतस्तिलकनामक यकं पाणिनीय मन दर्पणार्पणम् ॥१०३॥

धर्मवर्द्धन के शिष्य कान्हजी जिनका दीक्षानाम कीर्ति-
सुन्दर था। वह भी अच्छे कवि थे।- इनके रचित
स्तिन्नोक्त ६ ग्रन्थ प्राप्त हैं।

- [१] अवन्तिसुकमाल चौढालिया—सं० १७५७, मेड़ता ।
- [२] मांकण रास सं० १७५७, मेड़ता ।
- [३] अभयकुमारादि पांच साधु रास—सं० १७५६,
जयतारण ।
- [४] ज्ञान छत्तीसी—सं० १७५६ श्रावण २, जयतारण ।
- [५] कौतुक वत्तीसी—सं० १७६१ आपाढ ।
- [६] कल्पसूत्र-कल्पसुबोधिका वृत्ति—सं० १७६१ अक्षय-
वृत्तीया (पत्र १६४ यति बालचन्द्रजी संग्रह-चित्तोड़ ।
- [७] चौबोली चौपाई—सं० १७६२, थानलेनगर ।

१ इनका मूल नाम नाथा था, जैन दीक्षा सं० १७२६ वैशाख वदी
११ को हुई ।

[८] बाग्विलास कथा संग्रह ।

[९] फलौदी पार्श्वनाथ छंद—गाथा १२१ ।

इनमे से माकण रास 'मरू भारती' मे और वाग्विलास कथा संग्रह 'वरदो' मे प्रकाशित किया जा चुका है ।

कीर्तिसुन्दर के अतिरिक्त धर्मवर्द्धनजी के जयसुन्दर ज्ञानवल्लभ (गङ्गाराम) आदि और भी कई शिष्य थे । कीर्तिसुन्दर के शिष्य शान्तिसोम और सभारत्न की लिखी हुई कई प्रतिया वीकानेर वृहद्विज्ञानभण्डार मे हैं । १६ वीं शताब्दी तक धर्मवर्द्धनजी की शिष्य-परम्परा विद्यमान थी ।

कविवर के प्रकाशित ग्रन्थ

प्रस्तुत ग्रन्थ मे आपकी जितनी भी लघु रचनाएँ संस्कृत, राजस्थानी हिन्दी मे प्राप्त हुईं, उन्हे प्रकाशित किया जा रहा है । उनकी नामावली अनुक्रमणिका में दी हुई है इसलिए यहा उसका उल्लेख नहीं किया जा रहा है । यहा केवल उन्हीं रचनाओं का परिचय दिया जा रहा है, जो इस ग्रन्थ के बड़े हो जाने के कारण इसमे सम्मिलित नहीं की जा सकी ।

(१) श्रेणिक चौपई

राजगृह के महाराजा श्रेणिक जो भगवान् महावीर के भक्त थे, उनका चरित्र इस ग्रन्थ मे दिया गया है । कथा प्रसंग बड़ा रोचक है साथ ही बुद्धिवर्द्धक भी । कवि ने ३२ ढाल

और ७३१ गाथाओं में इसे सं० १७१६ चंदेरीपुर में बनाया ।
जैसा कि पहले कहा जा चुका है यह कवि की सर्व प्रथम
रचना है, जो केवल १६ वर्ष की आयु में बनाई गई थी ।
इसकी प्रतियाँ वीकानेर के जिनचारित्रसूरि एव उपाध्याय
जयचदजी आदि के संग्रह में है ।

(२) अमरसेन वयरसेन चौपई

स० १७२४, सरसा में इस राजस्थानी चरित्र काव्य की
रचना हुई है । इसकी कई प्रतिया वीकानेर के ज्ञानभण्डारों
में है ।

(३) सुरसुन्दरी रास

कवि ने इस रास में नवकार मंत्र और शील के महात्म्य
संबन्धी अमरकुमार सुरसुन्दरी की कथा चार-खण्डों में
गुफित की है । प्रथम खण्ड में आठ, द्वितीय में ग्यारह
तृतीय में आठ, चतुर्थ में बारह ढालें हैं । कुल ६३२ गाथाएँ
है । श्लोक संख्या ६०० है । अन्य प्रति में गाथाओं की
संख्या ६१६ भी बतलाई गई है । इस कथा का मूल आधार
'शीलतरगिणी' नामक ग्रन्थ का कवि ने उल्लेख किया है ।
स० १७३६ श्रावण सुदी १५ वेनातटपुर (विलाड़ा) में इसकी
रचना हुई है ।

[४] परमात्म-प्रकाश हिन्दी टीका

खण्डेलवाल रेखजी के पुत्र जीवराज के पुत्रके लिये दिगम्बर

‘परमात्म प्रकाश’ की हिन्दी भाषा टीका सं० १७६२ में कवि ने बनाई है। इसकी ३५ पत्रों की प्रति अजमेर के दिगम्बर भट्टारक भण्डार में है।

[५] वीरभक्तामर स्वोपज्ञ वृत्ति

प्रस्तुत ग्रन्थ में वीर-भक्तामर मूल छपा है। इससे पहले भी यह संस्कृत भक्तामर का पादपूर्ति काव्य आगमोदय समिति प्रकाशित काव्य संग्रह प्रथम भागमें छप चुका है। पर इसकी स्वोपग्यवृत्ति अभी अप्रकाशित है जिसे भीनासर के यति सुमेरमलजी के संग्रह में हमने कई वर्ष पूर्व देखी थी।

कवि धर्मवर्द्धन की रचनाओं से मेरा परिचय वाल्यकाल से है। उनके रचित “जिनकुशलसूरि का सर्वैया” में जब ८-१० वर्ष का था तभी सुनने को मिला था फिर इनके रचित कई स्तवन और सभाय मेरे ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय अभयरत्नराजजी की स्मृति में मेरे पिताजी के प्रकाशित ‘अभयरत्नसार’ में सन्-१६२७ में प्रकाशित हुए तबसे कवि का परिचय और भी बढ़ा और सं० १६८६ में जब कविवर समयसुन्दर की रचनाओं की खोज करने के लिये वीकानेर के बड़े ज्ञानभण्डार आदि की हस्तलिखित प्रतिया देखनी प्रारम्भ की तो ‘महिमा-भक्ति भण्डार’ में ६६ पत्रों की एक ऐसी प्रति मिली, जिसमें कवि की समस्त छोटी छोटी रचनाओं का संग्रह था। इसकी प्रति की मैंने राजस्थानी रचनाओं की प्रेसकापी तो स्वयं उसी समय तैयार करली और संस्कृत स्तोत्रादि की प्रेस कापी

पण्डित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से करवा ली जो उस समय वीकानेर के सेठिया विद्यालय में काम करते थे। कविवर की जीवनी और अन्य रचनाओं की यथासम्भव खोज करके 'राजस्थानी साहित्य और कविवर धर्मवर्द्धन' नामक एक विस्तृत लेख तैयार किया जो कलकत्ते की राजस्थानरिसर्च सोसाइटी के त्रैमासिक शोधपत्र में 'राजस्थान के वर्ष' २ अङ्क संख्या २ के २२ पृष्ठों में सं० १६६३ के भाद्रपद के अङ्क में प्रकाशित हुआ। उस लेख में मैंने लिखा था "आपके जीवनचरित्र और कृतियों की खोज लगभग ७-८ वर्षों से चालू है। जिसके फल-स्वरूप बहुत सी सामग्री संगृहीत की गई है। और उसको आधार पर विस्तृत जीवनचरित्र, आपकी लघुकृतियों के साथ प्रकाशित करने का विचार है।" अपने ३०—३२ वर्ष पहले के किये हुए प्रयास को आज सफल हुआ देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। इस ग्रन्थ में कविवर की समस्त लघु रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है। पाच बड़ी रचनाएँ जो इस ग्रन्थ के बड़े हो जाने के कारण इसमें सम्मिलित नहीं की जा सकी, उनका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। कवि का चित्र तो नहीं प्राप्त हो सका अतः उनके हस्ताक्षरो की एव स्मारक स्तूप छत्री प्रतिकृति देकर सन्तोष करना पड़ता है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मुझे मेरे भ्रातृपुत्र श्री भंवरलाल नाहटा का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, 'वरदा' के यशस्वी सम्पादक श्री मनोहर शर्मा ने इसकी भूमिका लिखने की कृपा की है, इसलिये मैं उनका अभारी हूँ। ग्रन्थ में कठिन शब्दों का कोष देने का विचार था, पर ग्रन्थ काफी बड़ा हो चुका है और उसको तैयार करने में कुछ समय लगता जिससे ग्रन्थ प्रकाशन में और भी विलम्ब होता, इसलिये वह नहीं दिया जा सका है।

विनीत :—

अगरचंद्र नाहटा

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली :—

+

दिसूत्रेण अथोपिकारेणैषीषिः कसीदा कृष्णित्वाप सङ्गा नाम स्यात् । स्यात्प्रमाणात्तिसुतिः । यतः स्वकमीतिस्त्रैकशाकमीषिनिभयो
 गथ्य व्यासस्त्रैश्वादे नोदापायनशेषे केषुत्वात्प्रमाणात्तदश्वि भनशरीर-कसालेपेत्त पाचशुषिसूत्रसाप्याणोपकृताः कसलेपितेऽपि
 ह्यदक्षित्वाद् अन्वेष्यादिपरोन्नामनायथाऽदोढवादादमाद्यपरहतिगि साधनीयदकः सुता । इदमददद पदपरदो पदीनुद कः ऊदाश्व इ
 तिअनसकाधिनारः स्वविशिष्टलिग अथय्य कतिशुपदमादः सातासेखाकिक्षापरवव एकः उरुपः पकाश्रीणकः कल गुण
 ववनव इतकः पदः सुह्यापदी सुह्यं वखं इत्यथ्य करणाधिकारयोऽर्ह्युदिसधीनीनि सविनामानि सप्यार्थ्यद्विसूत्री इतिश्रीसिक्का
 तथोऽनुष्ठाभदोऽङ्गिदीक्षितविरविनायांलिगात्वासात्सुप्रत्यसिगासामात्रैभ्यसिजतकोऽशुदी ॥ एतन्नवत ॥ श्रीः ॥
 सवदेदकराश्चैवमितिभासिनाधेवे यथोदस्यामलेस्वीदधीनक्षिर्द्धर्मवर्द्धनैः ॥ कनप्रतिप्रमेऽरेश्रीमारसापरेसेदरेगतदरेषवेदे

कविवर धर्मवर्द्धन लिखित "सिद्धान्तकौमुदी"

अनुक्रमणिका



संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१	धर्मबावनी	५७	ॐकार उदार अगम्म अपार	१
२	कुडलिया बावनी	५७	ॐनमो कहि आद थी	१७
३	छप्पय बावनी	५७	गुरु गुरु दिन मणि हस	३५
४	दृष्टान्त छत्तीसी	३६	श्री गुरु को शिक्षा वचन	५३
५	परिहाँ (अक्षर) बत्तीसी	३४	काया कुंभ समान	५७
६	सवासौ सीख	३६	श्री सद्गुरु उपदेस सभारो	६४
७	गुरु शिक्षा कथन निसाणी	७	इण ससार समुद्र को	६७
८	वैराग्य निसाणी	६	काया-माया कारिमी	६६
९	उपदेश निसाणी	७	मोह बसै केइ मानवी	७०
१०	वैराग्य सज्जाय	५	जोवनियो जायै छै जी	७१
११	वैराग्य सज्जाय	११	करिज्यो मत अहकार	७२
१२	हितोपदेश स्वाध्याय	१५	चेतन चेत रे चलिमा चपलाइ	७४
१३	सप्तव्यसन त्याग स०	६	सात विसन नौ सग रखे करौ	७६
१४	तम्बाकु त्याग स०	१४	तुरत चतुर नर तम्बाकू तजी	७८

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१५	रात्रि भोजन स०	६	कर जीडि कामण कहै हो	८०
१६	औपदेशिक पद	३	ज्ञान गुण चाहै ती	८१
१७	"	३	सुग्यानी संभाल तु	८२
१८	"	३	गुण ग्राहक सो अधिको ज्ञानी	८२
१९	"	३	मूढ मन करत है ममता केती	८३
२०	"	३	मेरे मन मानी साहिव सेवा	८३
२१	"	३	करहु वग सजन मन वच काया	८३
२२	"	३	वह सजन मेरे मन वसत	८४
२३	"	३	प्रणमीजे गुरुदेव प्रभाते	८५
२४	"	४	सब मे अधिकीरे याकी जैतसिरी	८५
२५	"	३	आतम तेरा अजब तमामा	८६
२६	"	३	कबहु मै धरम को ध्यान न कीनो	८६
२७	"	३	तुं गर्व करै सो सर्व व्यथा री	८७
२८	"	५	वारु वारु हो करणी वारु हो	८७
२९	"	३	नट वाजी री नट वाजी	८८
३०	"	३	ठाग ज्यु इहु घरियाल छो	८८
३१	"	३	कहि मे काहू को नहि कोई	८९
३२	"	३	जीव तु करि रे कछु शुभ करणी	८९
३३	"	३	कछु कहीजान नही गति मनकी	९०
३४	"	३	दुनिया मा कलियुग की गति देखो	९०
३५	"	३	मन मृग तु तन वन मे मातौ	९०

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
३६	औपदेशिक पद	४	हूँ तेरी चोरी भई	६१
३७	"	३	काया माया बादल की छाया	६१
३८	"	३	रे सुणि प्राणिया	६२
३९	"	३	मानो वैण मेरा	६२
४०	"	३	किण विधि थिरकीजै इण मन कु	६२
४१	"	३	कीजै कीजै री	६३
४२	"	३	घर मन धर्म को ध्यान सदाई	६३
४३	" घमाल	७	सकल सजन सैली मिलि हो	६४
४४	" "	१	अब तौ सौ वरसा लागि आउसु	६४
<u>प्रस्ताविक विविध संग्रह</u>				
४५	सरस्वती स्तुति	४	अगम आगम अरथ उतारै	६६
४६	परमेश्वर "	४	महि सबला निबला करे सभाला	६६
४७	सूर्य स्तुति	४	हुदे लोक जिण रे उदै	६७
४८	दीपक वर्णन	१	अलग टलै अधार	६८
४९	पर उपकार	४	दुनी दाम साटै केता	६९
५०	मेह वर्णन	४	सबल भोगल बादल तणा सज०	६९
५१	मेह गीत	४	मडि भड घमड कर ईसब्रह्मडरा	६९
५२	मेह अमृतध्वनि	२	जल थल महियल करि जलद	१००
५३	सीत, उष्ण, वर्षा वर्णन	६	ठंड सबली पडे हाथ पग ठाठरे	१०१
५४	दुष्काल वर्णन	४	मन में धरता मरट	१०२
५५	सुस्त्री-कुस्त्री वर्णन	३	सुकलीणी सुन्दरी	१०३

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
५६	पुण्य पाप फल	५	सर्कै साली चित्र चाली	१०४
५७	प्रभात आगीप	२	आल्स ऊघ अज्ञान	१०५
५८	सध्या आगीप	२	सध्या वंदन साध	१०५
५९	सर्व सघ आगीर्वाद	४	परब अवसर सदा दरब खरचै	१०६
६०	हुँ हिया गो कविन	१	आया नै उपदेस	१०७
६१	"	४	अधिक आदि अनादि री	१०७
६२	माकण (जवा) छप्पय	२	आगै केड अथगरा	१०८
६३	धरती री धणियाप	४	भोगवि किते भु कित्ता भोगवसी	१०८
६४	छप्पय	२	रावण करता राज, गुरु थी लहियै ज्ञान	१०९
६५	शोभनीय वस्तु छप्पय		नरपति गोभा नीति	१०९
६६	राजनीति छप्पय	२	सकले गुणे सकज्ज	११०
६७	वरसीदान	१	अणसी अठ्यासी कोडि	११०
६८	छत्तीस विधान छप्पय	१	गुरु गुण दिन मन हस	११०
६९	एककवर उत्तरा	४	वदे नहिँ क्यु देव गुरु	१११
७०	हियाली (थापना)	४	कुण नागी रे कुण नारी रे	१११
७१	" (मुहपत्ति)	७	कहौ पडिन एह हियाली	११२
७२	" (मन)	४	अरथ कहौ तुम बहिलौ एहनी	११२
७३	" (जीभ)	४	चतुर कहौ तुम्हे चुप मु	११३
७४	आदि, मध्य अंत्यक्षर क०	२	रक्षक बहु हित सावु (सकोष्टक)	११३
७५	सर्व गुरु अक्षर म्मुत्ति	१	साइ नेगी सेवा सच्ची	११५

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठाङ्क
७६	सर्वैया	१	गग सरग के सग उरंग सु	११५
७७	यति वर्णन	१	केइ तौ समस्त वस्तु चातुरी विचार सार	११५
७८	मान कर्यो० समस्या	१-	ठीर सकेत की आगे तै आडके	११६
७९	भोजन विच्छति	४	आञ्जी फूल खड के	११६
८०	अध्यात्म मतीया रो	१	आगम अनादि के उथापी डारे	११७
८१	शरीर अस्थिरता	१	ज्ञान के अभ्यासा मिसि	११८
८२	रुपैया	१	आपणी देह सुनेह नही पुनि	११८
८३	चौदह गोभा	१	नृपति को शोभा नीति	११९
८४	वस्त्र शोभा	२	दूर ते पोशाकदार	११९
८५	आशिक बाजी	२	देखिवँ कु दौरि दौरि	११९
८६	छः पूजनीक	१	ऐसी नर देह दाता	१२०
८७	समस्या (भावी न टरै)	४	अटक कटक विचि	१२१
८८	समस्या (गौरी ठगठोरी)	१	द्वार कौ न गहे मौन	१२३
८९	„ (पीपर के पात पर	१	वाकै तुम जीवन हो	१२३
९०	„ चरण देख चतुरा)	१	इक दिन ख्यालहि अटकि	१२४
९१	„ (वामन के पग तै)	१	सूखत ना ववही सबही रस	१२४
९२	„ (हरि श्रु गनि ते०)	२	एक सर्म शिव शैल सुता	१२५
९३	„ (आरसी मे मुख)	१	मु दर पलग पर बैठो है	१२५
९४	„ (चप के से च्यार०)	१	अति ही अनूप नाभि	१२५
९५	„ (ठाढे कुच देख गाढे)	१	गोरी तेगी देखि गति	१२६

संख्या	कृतिनाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
६६	„ (नीली हरी विच०)	२	थोरी सी वेस मे भोरी सी	१२७
६७	„ टेरन के मिस हेरण)	२	चुप सु च्यार सखी मिलि	१२७
६८	समस्या	१	अरे विधि तुं विधि जाणत् थो	१२८
६९	„ (कर्मकी रेख टरै०)	१	नीर भर्यो हरिचद नरिद ही	१२८
१००	„ (टारी टरै नहिं०)	१	एक कौ एक रू दोइ न आवत	१२८
१०१	„ (सपूत घरी न कपूत)	१	तत्त की या धर्म सीख धरौ जु	१२९
१०२	„ (निसाणी घर जानकी)	१	आयौ जाको दूत	१२९
१०३	„ (हरि सिद्धि हसे हर०)	२	हनुमान हिरौल किये	१३०
१०४	„ (इण जोगहु तै गृह)	२	रिण देणो घणी लहणी न कछु	१३१
१०५	„ (चारू वेद चातुरी०)	१	एक एक चातुरी सो	१३१
१०६	„ (बिनामान हीरा मेरे०)	१	मित्र उदै मेरा जीव राजी है	१३२
१०७	„ (साहिबी नभावै तार्कु०)	२	देश की विदेग की निसै की	१३२
१०८	„ (थारीमे यु ठहरातन)	२	दूर सो दौरि मिले	१३३
१०९	„ (काकै के दीठै०)	१	मोहन भोग जलेबीय	१३४
११०	„ (यु कुच के मुख०)	१	तीय कौ रूप अनूप विलोकत	१३४
१११	„ (छानो रे छानोरे०)	१	काम कलोल मे लोल भयो	१३४
११२	सर्वैया दात करामात	२	गास्त्र घोष कण्ठ शोष	१३५
११३	दोहा (भाई दुपियाराह)	२	और ग पनिसाही ग्रही	१३५
११४	अध्यात्मियों के प्रश्न का			
	उत्तर (सर्वैया, श्लोक, दोहा)	३	तुम्ह जे लिखे हैं प्रश्न	१३६

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
११५	सवैया	१	उपजी कुल शुद्ध पिता हनिके	१३७
११६	सवैया	२	चंपक माभि चतुर्भुज	१३७
११७	वैद्यक विद्या (डंभक्रिया)	२१	शंकर गणपति सरस्वती	१३८
ऐतिहासिक व्यक्ति वर्णन				

११८	अनूपसिंह सवैया	१	केई तो विकट बाट	१४२
११९	संस्कृत	१	भुज्यत इष्ट जनैः	१४२
१२०	„ कवित्त	४	बीकपुर तखत महाराज	१४२
१२१	अमरसिंहजी सवैया १ दोहा	२	तेरे तो प्रताप के प्रकाश	१४३
१२२	„ काव्य	१	श्रीमच्छ्री अमरादिसिंह	१४४
१२३	„ अमृतध्वनि	१	सबल सकल विधि	१४४
१२४	गीत राउल अमरसिंह रो	४	जेठ तपते तपत	१४५
१२५	कवित्त जसवतसिंह रो	४	हुती जसवंत ता थोक	१४६
१२६	„	४	मरुधरै देस महाराजमोटो मरुद	१४६
१२७	कवित्त दुर्गादास रो	४	मौड मुरधर तणा	१४७
१२८	गीत शिवाजी रो	४	सकति काइ साधना	१४८
१२९	सवैयो आणदराम रो	१	ज्ञायक गुणै अगाह	१४९

*वर्तमान जिन चौबीसी स्तवन

१३०	आदि जिन स्तवन	३	आज सुदिन मेरीवास फली रो	१५०
१३१	अजित जिन „	३	प्रभु तु अजित किनही नही जीतो	१५०
१३२	सभव जिन „	३	सभवनाथजी सबकुं सुखदाइ	१५१

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१३३	अभिनदन स्तवन	५	घन घन दिनकर उग्यो उछाह	१५१
१३४	सुमति जिन स्तवन	३	माई मेरी मुमतिकी सेवा साची	१५२
१३५	पद्मप्रभु स्त०	३	हृदय पद्मप्रभु रात्रि रह्योरी	१५२
१३६	सुपार्व्व जिन स्त०	३	सही, न तजूं पार्व्व मुपास को	१५३
१३७	चंद्रप्रभु स्त०	३	चद्रप्रभु नी कीजिड चाकरी रे	१५३
१३८	सुविधिनाय स्त०	३	कवहुं मै सुविधि को ध्यान	१५४
१३९	गीतल जिन स्त०	३	मुखदाई गीतल स्वामी रे	१५४
१४०	ध्रैयांस जिन स्त०	४	केवल वाला रे केवल वाला	१५४
१४१	वासुपुज्य स्त०	३	वाह वाह वासुपूज्यनी वाणी	१५५
१४२	विमल जिन स्त०	३	विमलजिन विमल तुम्हारा जान	१५६
१४३	अनंतनाथ स्त०	३	अनंतनाथ रा गुण अगम अनंता	१५६
१४४	धर्मनाथ स्त०	३	घर मन घरम को ध्यान सदाई	१५७
१४५	जाति जिन स्त०	५	श्री जाति जिनेसर सोलमो जी	१५७
१४६	कुशु नाथ स्त०	३	शुभ आतम हित साधि रे	१५८
१४७	अरनाथ स्त०	३	कहै अरनाथ डम अरति रति०	१५८
१४८	मल्लिनाथ स्त०	४	मल्लि जिनेसर तुं महामल्ल	१५९
१४९	मुनिमुव्रत स्त०	३	सबमै अधिकी रे याकी जंतश्री	१५९
१५०	नमि जिन स्त०	३	नित नित नमि जिन चरण नमू	१६०
१५१	नेमिनाथ स्त०	३	करणी नेमि की	१६०
१५२	पार्व्वनाथ स्त०	३	मेरे मन मानी साहिव सेवा	१६१
१५३	वीर जिन स्त०	३	प्रभु तेरे वयण सुपियारे	१६१

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१५४	चौबीसी कलश	३	चित्तधर श्री जिनवर चौबीसी	१६१
१५५	चौबीस जिन सर्वैया	२५	आदि ही कौ तीर्थकर	१६२
१५६	नवकार छंद	२५	कामित सपय करणं	१७१
१५७	ऋषभदेव स्तवन	१६	त्रिभुवननायकऋषभजिनताहरो	१७२
१५८	अत्रुजय वृहत्स्तवन	२५	सत्रुंजै नायक वीनति साभलौ	१७५
१५९	" "	१४	तीर्थ सत्रु जैजी रहिवा मन र जै	१७७
१६०	" गीत	४	सरबपूरव सुकृततीयेकिया सफल	१७६
१६१	" महिमा सर्वैया	२	रतन मे जैसे हीर	१८०
१६२	" स्तवन	३	विमलगिरि क्यु न भये हम मोर	१८०
१६३	धुलेवा ऋषभदेव छन्द	२२	सत्यगुरु कहि सुगुर रा	१८१
१६४	शाति जिन स्तवन	५	सेवो भाई २ शाति जिन सेविरे	१८४
१६५	चंदपुरी शाति स्त०	१२	जननायक जिनवर पुहवी०	१८४
१६६	नेमिराजिमती वारहमासा	१४	दिल शुद्ध प्रणमु नेमि जि०	१८७
१६७	" "	१६	सखी री ऋतु आई सावन की	१८६
१६८	" स्त०	६	राजुल कहे सजनी सुनो रे	१६२
१६९	सिन्धी भाषा पार्श्व स्त०	७	अज्जु सफल अवतार असाडा	१६३
१७०	पार्श्वनाथ स्त०	७	नैणा धन लेखु देखु	१६४
१७१	लोद्रवा पार्श्व स्त०	७	महिमा मोदी महीयले	१६५
१७२	" "	७	लुलिलुलि बंदो हो तीरथलोद्रवे	१६५
१७३	" "	१२	पूजो पास जी परता पूरै	१६६
१७४	" "	८	धन धन सहू तीरथ माहि धुरै	१६८

संख्या	वृत्ति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१७५	गौड़ी पार्व्व स्त०	७	नूरति मन नी मोहनी	१६६
१७६	पार्व्व जित स्त०	७	त्रिभुवन मांहे ताहरो हो	२००
१७७	फलोवी पार्व्व स्त०	८	सुगुण सुहानी स्वानि नै जी	२०१
१७८	गौड़ी पार्व्व स्त०	९	बाज मन्त्रै दिन उगो जी	२०२
१७९	पार्व्वनाय स्त०	४	बाज नै अन्हारै मन आसा फ०	२०३
१८०	गौड़ी पार्व्व स्त०	९	आणी आणी अक्कि उनाह	२०३
१८१	" "	४	जगि जागै पास गौडी	२०४
१८२	बेनलमेर पार्व्व स्त०	७	उगो घन दिन आज सफली	२०५
१८३	माली पार्व्व स्त०	७	भविष्य भाव घरी नै भेटो	२०६
१८४	पार्व्व स्त०	७	सहियर हे सहियर	२०७
१८५	सत्सेखर पार्व्व स्त०	७	महिमा मोटी त्रिभुवन मांहे	२०८
१८६	पार्व्वनाय स्तवन	४	सुणि बरदासा सुगण निवासा	२०९
१८७	" "	३	नित नमिये पारसनाय जी	२०९
१८८	" ववावा	५	पहिले ववावै जिनवर देव जु०	२०९
१८९	" स्त०	७	नैगा घन लेखुं देखुं मुख	२१०
१९०	" "	६	महिमा मोटी महीपली हो	२११
१९१	आबू तीर्य स्त०	७	आबू आज्यो रे आबू आज्यो	२१२
१९२	म्हावीर जित स्त०	१३	वीर जितेश्वर वदियै	२१४
१९३	राड्डह म्हावीर स्त०	५	राड्डूइ म्हावीर विराजै-	२१५
१९४	म्हावीर जन्म गीत	४	सकल थान्न बागा धिया	२१६
१९५	मतरह म्हेदी पूजा स्त०	१६	नाव नलो भगवत री	२१६

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
१६६	बीकानेर चैत्य परिपाटी	११	चैत्य पूवाडे चौबीसटै	२१८
१६७	तीर्थंकर सवैया	७	नमो नितमेव सजौ शुभ सेव	२१६
१६८	चौबीस जिन गणघर	१	वन्दो जिन चौबीस	२२१
१६६	सनतकुमार सभाय	१६	साचा सुग्यानीध्यानी सनतकु०	२२२
२००	मेतार्य मुनि स०	६	राजग्रही मे गोचरी	२२४
२०१	दश श्रावक	७	सूघै मन पूणमो दश श्रावक	२२५
<u>गुरुदेव स्तवनादि संग्रह</u>				
२०२	श्री गौतम स्वामी स्त०	७	प्रह सम आलस तजि परी	२२६
२०३	जंबू स्वामी स्तवन	५	छोडोना जी रकञ्चन नै कामिनी	२२७
२०४	वडली जिनदत्तसूरि स्त०	७	यात्रा ए वडली जास्या	२२८
२०५	जिनदत्तसूरि सवैया	१	बावन वीर किये अपने वश	२२६
२०६	जिनकुशलसूरि देरा० स्त०	१०	दादो देरावर दीपै	२२६
२०७	जिनकुशलसूरि स्त०	७	कुशल करण जिनकुशल जी	२३०
२०८	" "	३	कुशल गुरु नामे नवनिधि पामै	२३१
२०६	" "	३	दौलति दाता द्यो मुख साता	२३१
२१०	" "	४	प्रेम मनधारि नितपहुँर परभातरे	२३२
२११	" सवैया	१	राजे थुम ठौर २	२३३
२१२	" छप्पय	१	सरव शोभ गुण सकल	२३३
२१३	" स्त०	३	श्री जिनकुशलसूरि गावो ग०	२३३
२१४	" "	३	कुशल करो जिनकुशल जी	२३४
२१५	जिनचन्द्रसूरि गीत	५	आज खरै उदै मुदै	२३४

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठाक
२१६	जिनचन्द्रसूरि गीत	४	पुण्य परकाज परभात	२३५
२१७	" "	४	दै दै कार करण धम दाखै	२३६
२१८	" "	४	चद्र जिमसूरिजिनचन्द्र चढती	२३७
२१९	" रसाउला	२	चावौ गच्छ चौरासिये	२३८
२२०	" सर्वैया	४	वाकू दूजै पछि दूज	२३९
२२१	" "	२	छाजति छवि चन्दा	२४०
२२२	" गहुँली	६	घन घन दिन आज नो लेखे	२४१
२२३	" गीत	७	राजै खरतर राजवी	२४२
२२४	" "	४	साधु आचार-सुविचार स०	२४३
२२५	" "	४	थियाकेई दिवस मनकोडकर०	२४३
२२६	" दोहा	१	वारू सरव विवेक	२४४
२२७	जिनमुखसूरि पदोत्सव	७	उदय थयो घन घन आज नो	२४५
२२८	" कवित्त	४	सकल गुण जाण वखाण मुखस०	२४५
२२९	" छप्पय	१	सकल शास्त्र सिद्धान्त भेद	२४६
२३०	" अमृतध्वनि	१	खरतर गच्छ जाणै खलक	२४६
२३१	" चन्द्रावला	५	सहु धरमा सिर सेहरो रे	२४७
२३२	" सर्वैया	१	गुरु जिणचदसूरि आप हाथ	२४८
२३३	" द्रुपद	३	जिनसुखसूरि सुग्यानी	२४८
२३४	" "	३	गावौ गावौ री गच्छनायक	२४८
२३५	" भास	७	भलौ दिन ऊगौ आज आनदसौ	२४९
२३६	" गहुँली	७	सिणगार सार वनाड सुन्दर	२५०

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
२३७	जिसमुखसूरि गीत	७	सरस वखाण सुगुरू तणो	२५०
२३८	„ छप्पय	१	करण अधिक कल्याण	२५१
२३६	जिनभक्तिसूरि गीत	६	जिनभक्ति जतीसर वन्दो	२५२
२४०	श्रावक करणी	२५	श्री जिन शासन सेहरो	२५२
<u>शास्त्रीय विचार स्तवन संग्रह</u>				
२४३	पैतालीस आगम-वीर स्त०	२८	देवा नापिण जेह छै देव	२५५
२४२	जिन गणघर साधु साध्वी सख्या स्तवन	१६	आदीसर पहिलो अरिहत	२५८
२४३	चौबीस जिनअतरकालस्त०	२६	पच परमेष्टि मन शुद्ध	२६१
२४४	६८ भेद अल्नाब्रहुत्व स्त०	२२	वीर जिणेग्वर वदिये	२६६
२४५	चौबीस दंडक स्त०	३३	पूर मनोरथ पास जिनेसर	२७०
२४६	समवगरण स्त०	२८	श्री जिन शासन सेहरो	२७४
२४७	चौदह गुणस्थानक स्त०	३४	सुमति जिणद सुमति दातार	२७८
२४८	चौरासी आगातना स्त०	१८	जय जय जिण पास जगत्र घणी	२८४
२४६	अट्ठावीस लब्धि स्त०	२५	प्रणमु प्रथम जिणेसरू	२८६
२५०	आलोचना स्त०	३०	ए धन शासन वीरजिनवरतणो	२९०
२५१	वीस विहरमान स्त०	२६	वदु मन मुध वडरतमाण	२९५
२५२	अष्ट भयनिवारण गौडी	२६	सरस वचन दे सरसती	३००
२५३	श्री जिनचद्रसूरि अ० ध्व०	१	रतन पाट प्रतपं रतन	३०६
२५४	उपकार ध्रुपद	३	करणी पर उगार की	३०६
२५५	सप्ताक्षरी कवित्त	६	गिहीकेकि के अगिहकेकि के	३०७-

सख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
२५६	गूढ आगीर्वाद सवैया	१	घोरी के घणी के नीके	३०७
२५७	कवित्त		नुखत इकबोल कहा न गिनेको	३०७
२५८	समस्या दोहरा हमारे देस	१	एक एक ते विशेष	३०८
२५९	„ नैन के भरोखे बीच	१	हरि सा संकेत करी	३०८
२६०	सर्वतोमुख गोमुत्रिका	१	अति संत गुणी	३०९
२६१	नारी कुजर सवैया	१	शोभतघणीजु अतिदेहकी वणीहै	३१०
२६२	अन्तर्लपिका	१	आदर कारण कौन	३१०
२६३	शील रास	६४	शील रतन जतने धरो	३११
२६४	श्रीमती चौढालिया	७२	खीर खाड मिलीया खरा	३१८
२६५	दशार्णभद्र चौपई	६८	वीर जिनेसर वंदनै	३२६
संस्कृत स्तोत्रादि संग्रह				
२६६	श्री वीर भक्तामर	४५	राजद्वि वृद्धि भवनाद्भवने	३३७
२६७	सरस्वत्यष्टकम्	६	प्रग्वाग्देवी जगज्जनोप कृतये	३४६
२६८	श्री जिनकुशलसूर्यष्टकम्	६	यो नप्तृ निव सेवकानिप सदा	३५१
२६९	चतुर्विंशति जिनस्तवनम्	२५	स्वस्ति श्रियेश्री ऋषभादि देवं	३५३
२७०	व्याकरण संज्ञा म० स्त०	१५	यस्तीर्थराज त्रिशलात्मजात	३५८
२७१	समसंस्कृत पार्श्व० स्त०	५	संसार वारिनिधि तारक	३६१
२७२	पार्श्वनाथ लघु स्त०	७	विश्वेश्वराय भवभीति निवा०	३६२
२७३	पार्श्व जिन वृहत्स्त०	१२	वाँछित दान सुरद्रुम तुभ्यं	३६४
२७४	चतुरक्षर पार्श्व स्त०	१४	भो भो भव्या कीर्तिस्तव्या	३६६
२७५	पार्श्व लघु स्त०	७	प्रवर पार्श्व जिनेश्वर पत्कजे	३६७

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठक
२७६	पार्श्व लघु स्त०	५	भजे ऽश्वसेन नन्दनम्	३६६
२७७	श्री ऋषभदेव स्त०	३	जय वृषभ वृषभ वृषविहित सेव	३६६
२७८	नवग्रही न्याय परोक्षा	१०	सख्ये सत्यपि दहनाद्रक्षति	३७०
२७९	शांतिनाथ स्त०	३	स्तुवंतु त जिन	३७१
२८०	गौडी पार्श्वषट्भाषास्त०	१०	प्रणमतियः श्री गौडी पार्श्व	३७१
२८१	पार्श्व वृहत्स्त०	११	सर्व श्रिया ते जिनराज राजतः	३७४
२८२	नेमिनाथ स्त०	२	जिगाय यः प्राज्य तरस्मराजी	३७६
२८३	पार्श्व स्तोत्र	४	तवेश नामतस्त्वरा	३७७
२८४	पंचतीर्थी स्तोत्र	४	योऽचीचलद्दुश्च्यवनोरसिस्थित	३७७
२८५	अष्टमंगलानि	१	स्वस्तिक चारु सिंहासनम्	३७८
२८६	चतुर्दशस्वप्ना	१	श्वेते भो वृषभो	३७८
२८७	श्लोक	१	गीर्वाणसिंघाबहि मगिनोबहून्	३७९
२८८	पार्श्वनाथ स्तोत्रम्	१	प्रसर्सति पार्श्वेश	३७९
२८९	बीकानेर आदीश्वर स्तोत्र	३	प्राज्या चरीकर्ति सुखस्य पूर्ति	३८०
२९०	समस्यामय महावीर स्त०	१२	श्री मद्दीरतथा प्रासीद सततं	३८१
२९१	प्रश्नमय काव्य	२	के पत्यो सतिभूषणोत्सव घरा	३८३
२९२	रामे १८ ऽर्थाः	१	त्व सबोधय काम केशवविधि	३८३
<u>समस्या पदानि</u>				
२९३	समस्या	४	गीर्वाणा तत्रिकका	३८४
२९४	"	१	प्राग दुःकर्म वशान्	३८५
२९५	"	१	भर्त्राऽऽवश्यक कार्यतः प्रवसता	३८५

संख्या	कृति नाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक
२६६	समस्या	१	साधुना पुरतो मयाद्य विधिना	३८५
२६७	"	४	परिणय जनताया यातियो भा०	३८६
२६८	" षट्कम्	६	आयत्त नायकं वोक्ष्य	३८७
२६९	"	४	श्रीकृष्णोऽम्बुधि तश्चतुर्दिशभृश	३८७
३००	"	१	हृष्टाशया वर दगानन	३८९
३०१	"	१	चारुश्रिया बहु विचारि.	३८९
३०२	"	२	नमन गुणवानेव कुरुते	३८९
३०३	"	१	चक्रे श्री पार्श्वमीली	३९०
३०४	"	५	सुषमा भिरनेक सूनृतैः	३९०
३०५	"	१	सखि दृणि समपत्त	३९१
३०६	"	३	उत्तमोहं सदावर्ते	३९१
३०७	"	१	ज्वलत् कषायीऽपि तवोपदेशाः	३९२

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली :—

तत्क देवान

आतउमगारशे

२

॥पिगागीतघणकठसांणियाइनादामषोडशिताकेइवदेदशानाटनाटेघणसाटनाटेवाटपभैतिकोक्त
 तवाटेवेदाधद्वैकीपरकइबिरुदकाटेराकीयांवादिचोटगठकोटकवइंकीयावइसंबलबलवल
 क्रियादीव्यात्वालियाकितानेकितानवलिहालसी।डिंयांगुणकियातिथोधनजीया।शोडकमस्रदे
 बलोउधलापवदादलोनारोत्रककांगलावातकाईध देवदलोवेलंअटकदिनचारशैलवारीसलो।कर
 दसीसलाई।शोसारकोवारसमारलोनैससाधारसऊसारपीकतेव देसीसावकारिधार्धमसीनसंसारम
 रिधुइगिसारउपगारंदसांधंश्री।।गीतश्री सरिइदेवताशो।शं।ऊदेलोकडिणरउदेधुदेसऊकामऊ
 इजनीकांसिरेदेवइहो।सानरीदातसऊसानलोसेवकोदेवकोसूरसमगदीइहो।।रासदसकिरणधरे
 देइंधकारसदि।नमेइदसमतिथोकसटनाधो।वगटपरतापपरताघणहरतो।अवरकणअमररविगम
 श्रवो।यांपनिरुदरातैमूषिथापंधियाऊ अंदरसाणसकोरादहो। सोसयादेसुरंसुरंअ
 सुरंकिदरंमिदश मिदरसुरकतणमिडो।इतयेइगजपारोडपसऊकोतर्यैसुलो अछतांकरमधरमसाव
 समयदऊवइसऊरुद्रेइहशऊवी।समोरइवटघगटशतिशभा।धऊदंण।श्रीः सहिसवलोनिबला
 करेससालावाहिनदिईसंवीमारणवाला।डीवपभेमतेनऊऊंजाला।वसुसावासऊवावतिपाला।।रेग
 ललदेमलीदमणमणाकीमाउदूरेताइंकणकणा।डिशेवशेतिथेरेइणऊणधरेतौईसआवणपया।।प

५३५

॥गोशुक्ति॥

॥पशुशुक्ति॥

कविवर धर्मवर्द्धन की स्वहस्त लिखित संग्रह प्रति का आदिपत्र ।

कविवर धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली



धर्म बावनी

ॐकार महिमा

सर्वैया तेवोसा

ॐकार उदार अगम्भ अपार, संसार में सार पदारथ नामी ।
सिद्ध समृद्ध सरूप अनूप, भयो सबही सिरि भूप सुधामी ॥
मंत्र में यंत्र में ग्रन्थ के पंथ में, जाकुं कियो धुरि अंतरयामी ।
पंच ही इष्ट वसैं परमिष्ट, सदा धर्मसी करै ताही सलामी ॥१॥
नमो निसदीस नमाइ कै सीस, जपौ जगदीस सही सुख दाता ।
जाकी जगत में कीरति जागत, भागति है सब ईति असाता ॥
इन्द नरिंद दिणिन्द फुणिन्द, नमाए हैं वृन्द आणद विधाता ।
धोरी धरम को धीर धरा धर, ध्यान धरे धर्मसी गुण ध्याता ॥२॥

गुरु महिमा

महिमा तिनकी महिमें महिमे, जिन दीनो महा इक ज्ञान नगीनो ।
दूर भग्यो भ्रम सौ तम देखत, पूर जग्यो परकास नवीनो ।
देत ही देत ही दूनो बधै, अरु खायो ही खूटत नाहि खजीनों ।
एसो पसाउ कीयो गुरुराउ, तिन्है धर्मसी पद पंकज लीनो ॥३॥

सर्व गुरु ऋक्षर सरस्वतीकी स्तुति

सर्वेया इकतीसा

सिद्धा रूपी साची देवा, सारै जीकी नीकी सेवा ,
 रागै आए लागै पाए, जागे मोटी माई है ।
 चंगी रंगी वीणा वावै, रागै सारै रागै गावै ,
 हाव भाव सोभा पावै, ज्ञाता जाकुं गाई है ।
 हंसी कैसी चाली चालै, पूजी वंदी पीड़ा टालै ,
 लीला सेती लालै पालै, शुद्ध बुद्धिदाई है ।
 सो है वानी नीकी वानी, जाकुं ज्ञानी प्राणी जानी ,
 ऐसी माता सातादानी, धर्मसीह ध्याई है ॥४॥

सर्व लघु ऋक्षर साधुकी स्तुति

भफरा की चालि

धरत धरम भग, हरत दुरित रग
 करत सुकृत मति हरत भरमसी ।
 गहत अमल गुन, दहत मदन वन
 रहत नगन तन सहत गरम सी ।
 कहत कथन सन बहत अमल मन
 तहत करन गण महति परमसी ।
 रमत अमित हित सुमति जुगते जति
 चरन कमल नित नमत धरमसी ॥५॥

मैत्रीया प्रीति

सर्वथा तेवीसा

अपने गुण दूध दीये जल कुं, तिनकी जल नै फुनि प्रीतिफलाई ।
 दूध के दाह कुं दूर कराइ, तहा जल आपनी देह जलाई ।
 नीर विछोह भी खीर सहै नहीं, ऊफणि आवत है अकुलाई ।
 सैन मिल्यै फुनि चैन लह्यो तिण, ऐसी धम्मसी प्रीति भलाई ॥६॥
 आपही जो गुन की गति जानत, सोई गुनीनि कौ संग गहै है ।
 जो धर्मसि गुण भेद अवेद, गुमार कहा सु गुनी कुं चहै है ।
 दूर सुं दौर्यो ही आवें दुरेफ, जहा कछु चारिज वास वहै है ।
 एक निवास पै पास न आवत, मैडकु कीच कै वीचि रहै है ॥७॥
 इणै भव आइ, जिणै धन पाइ, रख्यो है लुकाइ, भख्यो नहीदीनों ।
 हाइ धंधै ही मै धाइ रख्यो नित, काइ नही कृति लोभ सुं लीनौ ।
 कोल्हु के बैल ज्युं कोइ नहीं सुख, भूरि भर्यो दुख चित सुचीनौ ।
 जेण धर्मसी धर्म धर्यो न, कहा तिण मानस होइ कै कीनो ॥८॥
 ईइति हैं जिण कु सबही जन, आस धरै सब पास रहैया ।
 पडित आइ प्रणाम करै, फुनि सेवत है सबने समभैया ।
 आइ गरज्ज अरज करै, जु धरै सिरि आण भलै भले भैया ।
 साच की वाच यहै धर्मसी जग, सोइ बडौं जाकी गाठ रुपैया ॥९॥
 उमगि उमगि कर्यो धर्म कारिज, आरिज खेत में वित्त ही वायौ ।
 देव की सेव सजी नितमेव, धर्यो गुरु को उपदेस सवायौ ।
 आचरतैं उपगार अपार, जिणै जश सों दिगमंडल छायो ।
 ऐसी क्रतूत करी धर्मसीह, भलैं तिण मानव को भव पायो ॥१०॥

सवैया इकतीसा

ऊपर सुं मीठे मुख अंतर सुं राखत रोप,
 देखन के सोभादार भादुं कैसी चीभ है ।
 गुनियनि के गुन ठारि, औगुन अधिक धारि,
 जौलुं न कहत कहुं तौलु मन डीभ हैं ।
 तजि के भी प्राण आप और सुं करै संताप,
 ऐसो खलको सुभाउ मच्छिका सनीभ है ।
 धर्मसी कहत यार मंडै जिण वासुं प्यार,
 मानस के रूप मानुं दूसरो दुजीभ है ॥११॥

सवैया तेवीसा

ऋद्धि समृद्धि रहै इक राजी सुं, एक करै है ह हांजी हाजी ।
 एक सदा पकवान अरोगत, एक न पावत भूको (खो) भी भाजी ।
 एक कूं दावतवाजी सदा, अरु एक फिरै हैं पईसै के प्याजी ।
 युं धर्मसीह प्रगट्ट प्रगट्ट ही देखो, वे देखो वखत की वाजी ।१२।
 रीस सुं बीस उदेग वधै, अरु रीस सुं सीस फटै नितही को ।
 रीस सुं मित भी दात कुं पीसत, आवत मानु खईस कही को ।
 रीस सुं दीखत दुर्गति के दुख, चीस करंत तहां दिन ही को ।
 युं धर्मसीह कहै निसदीह, करै नहीं रीस सोइ नर नीको ॥१३॥

सवैया इकतीसा

लीयौ नहीं कछु लाज, संचे पाप ही कौ साज ,
 नरक नगर काज, गैल रूप गणिका ।
 अंतर की बात ओर, ठगिवैं की ठकैं ठौर ,

नित की करै निहोर, जाहि ताहि जनका ।
 जूअनि को जालौ अग कोढ़ी महाकालौ रंग,
 ताही सुं वनावै संग, धारै लोभ धनका ।
 ऐसो कहे धर्मसीह, रहैं वासुं राति दीह ;
 सो तौ भैया चाक हुं, बड़ा रोभ वन का ॥ १४ ॥

सवैया तेवीसा

लीजत ही जल कूप को निर्मल, सैथि धर्यो दुर्गंध ही द्वै है ।
 फूलनि को परै भोग भलो, पुनि राति रहै कोई हाथि न लैहै ।
 दूर तजो चित की तृष्णा नर, जौ लुं कोऊ दिन पुन्य उदै है ।
 युं धर्मसीह कहे कछु देहु,
 दिलाउरे गाडि धर्यो धन धूरि हू जै है ॥ १५ ॥

एक कै पाइ अनेक परै फुनि एक अनेक के पाइ परै है ।
 एक अनेक की चित हरै, अरु एक न आपनो पेट भरै है ।
 एक खुस्याल सुवै सुख साल में, एककुं खंथ न खाट जुरै है ।
 देखो वे थार कहै धर्मसी जग,
 पुन्यरु पाप परतिक्ष फुरै है ॥ १६ ॥

ऐ ऐ देखो दइ गतिया, वतिया कछु ही न कही सी परै है ।
 रंक कुं राज (उ) रु राउ को रक, पलक में ऐसी हलक करै है ।
 एक विचित्र ही चित्र वनावत, एक कुं भाजत एक घरै हैं ।
 वात धरम्मसी वाही कै हाथ,
 है टार्यो न काहु कौ ईस टरै है ॥ १७ ॥

ओ जगि मूढपति जिनकी दृग, आद्र सकें उपमान कही हैं ।
 दर्पण में प्रगटे सब रूप ल्यु, मूढ में द्रव्य दशा उमही हैं ।
 सम्यगवन्त मुदा दि सिला सम, और की छाह सु काज नहीं है ।
 दीसत एक मयूर ही नृत्यत,

ल्युं चितवतके आत्तम ही हैं ॥ १८ ॥

उत को गेह, कुपात को नेह, रू भंखर मेह जूआर को नाणो ।
 ठार कौ तेहरू छारकौ लिपन, जार को सुख अनीति को राणो ।
 काटि कडंवर जीरण अंवर, मूढ सुं गूढ टक्यो न पिछाणौ ।
 युं धर्मसीह कहै सुणि सज्जन,

आथि इ नाहीं' की साथि न जानो ॥ १९ ॥

अंग मरोरत तोरत है वृण, मोरत है करका अविच्छन ।
 राति रहै डरतौ घर भीतरि, भी फिरतो फिरतो करै भच्छन ।
 भूमि लिखै भिसलै पग सुं, जु अटट्ट हसै मसलै पुनि अच्छन ।
 सोइ रहै न गहै धर्मसीख कुं,

लच्छि कहां जहा ऐते कुलच्छन ॥ २० ॥

अनूप ही रूप कलाविद कोविद, हैं सिरदार सबै सुमति कौ ।
 साहसगीर महा वडवीर, सुधीर कहर करारी छती कौ ।
 सार उदार अपार विचार, सबै गुण धारि अचार सती को ।
 एती सयान हैं धर्मसी पुनि,

एक रती विनु एक रती कौ ॥ २१ ॥

काकसी कोकिल श्याम सरीर है, क्रोध गभीर धरै मन माहिं ।
 और कै वालक सुं धरै दोष, पै पोखत आपहीके सुत नाहिं ।

एसो सुभाऊ बुरौ उनको पुनि, एक भलौ गुन है तिन पाहीं ।
वोले धर्मसी बैन सुधारस,

तातें सुहाते जहां ही तहां ही ॥ २२ ॥

खोदि कुदाल सुं आनी है रासभ, भू पटकी छटकी जल धारै ।
लातन मारे कै चाक चहोरी है, डोरी सुं फासी सी देइ उतारै ।
कूट टिपल जलाइ है आगि में, तो भी लोगाइया टाकर मारै ।
युं धर्मसी सगरी गगरी भैया,

कोउ न काहू की पीर विचारै ॥ २३ ॥

गुण रीति गहै हठ मै न रहै, कोऊ काज कहै तसु लाज वहै ।
कछु रीस न है सब वोले सहै, अपनै सबही कु लियै निवहै ।
चित्त हेत चहे पर पीर लहै, न चलै कबहु पथ में अव है ।
धर्मसीह कहै जगि सोऊ वहडौ,

जिनके घट में गुण ए सब है ॥ २४ ॥

घुरराटि करै घर द्वारहि तैं, घुरकै घर के पति सूर रानी ।
सासु को सास ही सोखि लयो, पुनि जोर कहा धुं करैगी जिठानी ।
धूजत है घर को जु धनी, फुनि पाथर मारत मागत पानी ।
देखो धरमसी दूठी है भूठी है,

नारि किधु घर नाहरि व्यानी ॥ २५ ॥

डान में काहु कुं आनत नाहि, गुमान सु गात चलावत गोबू ।
सोभै घरी घरी पाघरी पेच कुं, पेखत आरसी में प्रतिबिंबू ।
भूठो सरव्व गरव्व धरावत, जौलुं न काल कहुं अजगीवू ।

आज धरौ नहीं हो धर्मशील पै,
 ल्यौगे घणे जु तिसै दिन लीवू ॥ २६ ॥

सवैया इकतीसा

चाहत अनेक चित्त (चीत), पाले नहीं पूरी प्रीत ,
 केते ही करै है मीत, सोदौ जैसे हाट को ।
 छोरि जगदीस देव, सारै ओर ही की सेवु ;
 एक ठोर ना रहै, ज्युं भोगल-कपाट को ।
 जाणे नहीं भेद मूढ, ताणे आप ही की रुढ़ ;
 हूँ रह्यो मदोन्मत, जैसे भैसों ठाट कौ ।
 धर्मसी कहै रै सैन, ताकों कवहुं न चैन ,
 धोवी कसौ कूकरा है, घर को न घाट कौ ॥ २७ ॥

सवैया तेवीसा

छोरि गरव्व जु आवत देखि कै, आदर देइ कै आसन दीजै ।
 प्रीति ही कै रुख की मुख की, सुखकी दुखकी मिलिवात वहीजै ।
 दूर रहै नित मीठी ही मीठी ही, चीज रु चीठी तहा पठइजै ।
 साच यहै धर्मसीउ कहै भैया,

चाह करै ताकी चाकरी कीजै ॥ २८ ॥

जो तप रूप सदा अपकै, अपनो वपु पूत पखार करैंगो ।
 जो तप की खप पूर करै, नर पाप कै कूप मे सो न परेगो ।
 मोक्षपुरी तसु पंथ प्रयान कुं, पुन्य पक्कान की पोटि भरैंगो ।
 धर्म कहै सब मर्म यहै,

तप तै निज कर्म को भर्ष हरेगो ॥२९॥

भगरा उलटा ही गहै कुलटा, कवहुं न रहै कुल की वट में ।
 बहु लोकनि में निकसै करि लाजरू, यार कुं घेरत घु घट से ।
 लहिहुं कव घात करू वह वात, यही घटना जु घटै घट में ।
 उनकी धर्मसीह गहै जोऊ लीह,

मितैं तसु माम चट्टा पट में ॥ ३० ॥

नैन सुं काहू सुं सैन दिखावत, वैन की काहु सौ वात वनावै ।
 पति की चित्त में परवाह नहीं, नित की जन और सु नेह जणावै ।
 सासूकौ सास जिठानीको जीउ, दिरानीकी देह दुखै ही दहावै ।
 कहै धर्मसीह तजो वह लीह,

लराइ कौ मूल लुगाइ कहावै ।३१।

टैंटि धरै मन में तन में न नमै, नही मेलतं मीटि ही ऐसी ।
 काहिकुं आपनौ जानियै ताहिकुं, आनीयै चित्त में को परदेसी ।
 ताको न नाम ठाम न लीजियै, कीजियै आप ही तैसै तैसी ।
 साच यहै धर्मसीउ कहै,

भैया चाह नहीं ताकी चाकरी कैसी ॥ ३२ ॥

ठीककी वात सबै चित्तकी, हितकी नितकी तिन सोज कहीजै ।
 सो पुनि आपनसों मिलिकै ढिलकै सुध जो कहै सोउ कीजै ।
 कोउ कुपात परै उलटो, कुलटौ करि चीत कुं भीतसौं खीजै ।
 जो धर्मसीह तजै हित लीह तिन्है,

मुखि छार दे छार ही दीजै ॥ ३३ ॥

सवैया इकतीसा

डौलैं परवार लार वैन कहै वार वार,

हाल सेती माल ल्याहु ढीलन पलक है ।

भोजन कुं नाज साज, लाज काज चीर ल्याह जाहु,
 जाहु ल्याहु देहु ऐंसी ही गलक है ।
 व्याहुनिकी पाहुनिकी कहा करूं भैया मोहि,
 ऐतें है जंजाल जेते सीस न अलक है ।
 धर्मसी कहै रे मीत, काहे कुं रहै सचीत,
 दैवै कुं है एक देव खैवै कुं खलक है ॥ ३४ ॥

सौंया तेवीसा

ढीठ उलूक न चाहत सूरिज, तै सैं मिथ्याती सिद्धंत न ध्यावै ।
 कूकर कुंजर देखि भसैं, पुनि त्युं जड़ पंडित सुं घुररावैं ।
 सूकर जैसै भली गली नावत, पापी त्युं साधु के सग न आवै ।
 लंपट चाहत ना धर्मसीखकुं,
 चोरकु चादणो नाहि सुहावै ॥ ३५ ॥

नहीं कोउ पाहुणो ना कछु लाहणो, नाहि उराणो कहू को होवौ ।
 गरज्ज परैं ही अरज्ज कै कारण, काहुं सुं ना कर जोरि कै जोवो ।
 घर की जर की पुनि वाहिर की, डर की परवाह न काहू कूं रोवो ।
 कहै धर्मसीह बड़ो सुख है भैया,
 माग कै खाइ मसीत मे सोवो ॥३६॥

तीछण क्रोध सुं होई विरोध रु, क्रोध सुं बोध की सोध न होई ।
 क्रोध सो पावैं अधोगति जाल कु क्रोध चडाल कहै सब कोई ।
 क्रोध सुं गालि कढै वढै वेढ, करोध सुं सजन दुज्जण होइ ।
 युं धर्मसीह कहै निसदीह सुणो,
 भैया क्रोध करो मति कोई ॥३७॥

थान प्रधान लहै नर दान तै, दान तै मान जहा जहा पावै ।
 दान तै ह्वै दुख खानि की हानि, जु रान मसान कहुं डर नावै ।
 दान सु भानु विमान लु कीरति, दान विद्वान कुं आनि नमावै ।
 दान प्रधान कहै धर्मसी सिव-

सुन्दरि सौं पहिचान बनावै ॥३८॥

सवैया इकतीसा

देखत खुम्याल देह नैन ही मे धरे नेह,
 करत बहुत भाति आदर कौ देवै की ।
 नीके ही पधारे राज, कहो हम जैसो काज,
 पूछै फुनि वात-चीत पानी और पैवै की ।
 ऐसी जहा प्रीति रीति चाहे हम सोइ चीत,
 और है प्रवाह हम कहा कछु खेवै की ।
 धर्मसी कहत नैन, सवही सुणेज्यो सैन,
 मैलपोहि देखै तहा सोहि हम जैवै की ॥३९॥

सवैया तेवीसा

धंध ही मे नित धावत धावत, टूटि रह्यो ज्युं सराहि को टट्टू ।
 पारकै काज पचै नित पापमे, होइ रह्यो जैसे हाडी को चट्टू ।
 छारे नहीं कव ही धर्मसीख कुं, मुक्ति रह्यो है अज्ञान मखट्टू ।
 चित ही माफि फिरै निस वासर,
 जैसै सजोर की डोर को लट्टू ॥ ४० ॥

नाचत-वश कैं ऊपर ही नर, अग भुजग ज्युं कल तल पेटा ।
 जौरह प्यार की ठौर परै जहा, सोइ सदै रण माहि रपेटा ।

तैसें कहै धर्मसीह याही वात राति दीह,

मूरख कुं सीख दे कै युं ही वैन खोयी है ॥४८॥

लंक कलंक कुं वंक लगाइ है, रावन की रिधि जावनहारी ।
नीर भयौ हरिचंद नरिदं हि, कंस को वंश गयो निरधारी ।
मुंज पर्यो दुख पुंज के कुंज, गयो सब राज भयो है भिखारी ।
मीनरू मेख कहै ध्रम देख पै,

कर्म की रेख टरै नहीं टारी ॥४९॥

विनय विनु ज्ञानकी प्राप्ति नाही रू, ज्ञान विना नहीं ध्यान कही कौ ।
ध्यान विना नहीं मोक्ष जगत में, मोक्ष विना नहीं सुख सही कौ ।
तातैं विनय ही धरौ निस दीह, करौ सफली नरदेह लही कौ ।
यार ही वार कहै धर्मसी अब,

मान रे मान तुं मेरी कही कौ ॥५०॥

शील तैं लील लहै नर लोक में, शील तैं जाय सबै दुख दूरै ।
शील तैं आपड ईलति भाजत, शील सदा सुख सम्पति पूरै ।
कोरि कलंक मिटै कुल कुल के, कलि में बहु कीरति होइ सनूरै ।
सार यहै धर्मसीउ कहै भैया,

शील ही तैं सुर होत हजूरै ॥ ५१ ॥

ख्याल खलक में देखो सनिसर, तात सूरिज सो दुब्जन ताइ ।
वाप निसापति ही सौं टरै नहीं, बुद्ध विरुद्ध धरै है सदाइ ।
केसव को सुत काम कहावत, तात सुं नाहि टर्यो दुखदाइ ।
मानस की धर्मसीह कहा कहैं,

देवहुं कै घर माहि लराइ ॥५२॥

सत की सगति नाहि करी, न धरी चित में हित सीख कही कू ।
 प्रीति अनीति की रीत भजी न, तजी पुनि मूढ में रूढ़ि गही कुं ।
 या जमवार में आइ गवार में, मारी इता दिन भार मही कुं ।
 रे सुन जीउ कहे धर्मसीउ,

गइसो गइ अब राख रही कुं ॥५३॥

हाथ वसैं अरु आथि नसैं, जु वसैं चित्त में उदवेग क्रोधू आ ।
 सगे सुनि कूर कियो घर दूर, दिखाइ न मूह दीयो यह दूआ ।
 दुकै लहणात सुकै मन माहि, तकै मरिवैकुं वावरी कुआ ।
 कहै धर्मसीह गहै सुख लीह तौ,

भूलि ही चूक रमो मत जूआ ॥ ५४ ॥

लंछन चद्र में ताप दिणद में, चंदन माफि फणिद कौ वासो ।
 पंडित निद्धन सद्धन है सठ, नारि महा हठ को घर वासौ ।
 हीम हिमाचल खार है वारिधि, केतक कंटक कोटि कौ पासौ ।
 देखो धर्मसी है सबकुं दुःख,

कोउ करो मत काहू कोहासौ ॥५५॥

क्षमाही को खड्ग धर्यो जिण धीर, करी है तयार सुज्ञानकी गोली ।
 सुमति कवाण सुवैण ही वाण, हलक ही सुं भरि मुठि हिलोली ।
 ऐसो सज्यो ही रहै धर्मसीउ, कहा करै ताको दुरजन कोलि ।
 सदा जगि जैत निसान घुरै,

गृदधुं गृदधु करि कोडि कलोली ॥५६॥

ज्ञान के महा निधान, बावन वरन जान,

कीनी ताकी जोरि यह ज्ञान की जगावनी ।

संकट कोटि विकट सहैं नर, पूरण कुं अपनै रह पैटा ।
देखो धर्मसीह जोर पखावज,

चूण कै काज सहैज चपेटा ॥४१॥

पंकज मांझि टुरेफ रहै जुगहै मकरद चितै चित ऐसौ ।
जाइ राति जु हँ है प्रभात, भयै रवि दीत हसै कज जँसौ ।
जाउंगो मै तव ही गज नै जु, मृनाल मरोरि लयौ मुहि तँसौ ।
युं धर्मसीह रहै जोउ लोभित,

हँ तिनकी परि ताहि अदेशो ॥ ४२ ॥

फूल अमूल टुराइ चुराइ, लीए तौ सुगन्ध लुके न रहेंगे ।
जो कछु आथि कै साथ सुं हाथ हँ, तो तिनकुं सवही सलहँगै ।
जो कछु आपन मे गुन है, जन चातुर आतुर होइ चहँगे ।
काहे कहो धर्मसी अपने गुण,

बूठे की वात बटाऊ कहँगे ॥४३॥

बोल कै बोल सुं बोझल वात, भइतौ गइ करुं जानै न ऐसौ ।
फोज अनी अनी आइ वनीतौ, लुकावै कहा जव जोर हँ जँसौ ।
प्रीति तुटै पुनि चीत फटै, तौ कहा धर्मसी अब कीजँ अदेशौ ।
देखण काज जुरे सवही जन,

नाचत पैठी तो घुंघट कैसौ ॥४४॥

भाव संसार समुद्र की नाव है, भाव विना करणी सब फीकी ।
भाव क्रिया ही कौ राव कहावत, भाव ही तँ सब वात है नीकी ।
दान करौ बहुध्यान धरौं, तप जप्प की खप्प करौ दिन ही की ।
बातको सार यहै धर्मसी डक,

भाव विना नहीं सिद्धि कहीं की ॥४५॥

सर्वैया इकतीसा

मैरो वैन मान यार, कहत हुं वारवार,
 हित की ही बात चेत काहे न गहातु है ।
 नीकें दिल दान देहु, लोकनि में सोभ लेहु,
 सुंव की विसात भैया मोहि ना सुहात है ।
 खाना सुलतान राउ राना भी कहाना सब,
 वातनि की बात जगि कोऊ न रहात है ।
 ऐसौ कहै धर्मसीह, धर्म की ही गहौ लीह,
 काया माया वादर की छाया सी कहात है ॥४६॥

सर्वैया तेवीसा

यह खेह कैं खंभसी देह असार, विसार नहीं खिनका-खिनका ।
 जबही कछु दक्षिण वाउ वग्यौ, तव ही हुइगी कनका कनका ।
 कबहु तुम यार करौ उपकार, कहै धर्मसी दिन का दिन का ।
 कर के मणिके तजि कैं कछु ही अव,
 फेरहु रे मनका मनका ॥ ४७ ॥

रन्न मे रूदन्न जैसैं, अंधक कुं दरपन्न जैसैं,
 थल भूमि में मृनाल काहू वौयौ है ।
 जैसैं मुरदा की देह, भूपन कीए अछेह,
 जैसैं कौआ कौ शरीर, गंगनीर घोयौ है ।
 जैसैं बहिरा के कान, कोरि कीए गीत गान,
 जैसैं कूकरा कैं काजु खीर घीउ ढोयो है ।

पाठत पठत जोड़, संत सुख पावै सोड़;

विमल कीरति होई सारै ही सुहावनी ।

संवत्स सतरै पचीस, काती वदि नौंसि दीस,

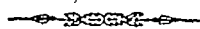
वार है विमलचन्द्र; आनंद वधावनी ।

नैर गिनी कौं निरख नित्त ही विजै हरप,

कीनी तहां धर्मभीह नाम धर्म वावनी ॥ ५७ ॥

—:ॐ:०:ॐ:—

कुण्डलिया वावनी



ॐ नमो कहि आद थी, अक्षर रै अधिकार ।
पहली थी करता पुरप, कीधौं अँकार ।
कीधो अँकार सार, तत जाणे साचौ ।
मंत्र जंत्रे मूल, वेद वायक धुरि वाचौ ।
सहु काम धर्मसीह दीयै रिद्धि सिद्धि औ दोऊं ।
वावन आखर बीज, आदि प्रणमीजे ओ ऊं ॥ॐ॥१॥

नमीयै मस्तक नामि नें, नमो गुरु कहि नित्त ।
वहु हितकारी जिण बगसीयो विद्या रूपी वित्त ।
विद्या रूपी वित्त, चित जिण कीधो चोखो ।
दावै तिम दीजता जलण जल चोर न जोखौ ।
सुगरा रे सहु सिद्धि ज्ञान गुण निगुरै गमियें ।
सीख कहै धर्मसीह नामि मस्तक गुरु, नमीयै ॥ न म. १२।

तृष्णा

मनरी तिष्णा नहु मिटै, प्रगट जोइ पतवाण ।
लाभ थकी वहु लोभ ह्वै, हैं तृष्णा हैं राण ।
है तृष्णा है राण, जाण नर पिण नवि जाणें ।
पास जुड्या पंचास, आस सौ उपरि आणें ।
सौ जुडिया तव सहस, धरै इच्छा लख धन री ।
धापै किम धर्मसीह, मिटै नहीं तृष्णा मन री ॥ म. वृ. ॥३॥

कर्म

सिरजित मेट न कौ सकैं, करौ कोडि विधि कोई ।
 एहवी हिज बुद्धि उपजै, होणहार जिम होई ।
 होणहार जिम होई, जोइ धर्मसी इण जगो ।
 चलयौ सुभूम चक्रवै, उदधि जल बूडि अथगो ।
 सोल सहस सुर साथ, हुंता सेवक करता हित ।
 ए वालै कीयो अंध, सही ब्रह्मदत्त नैं सिरजित । सि० । ४ ।
 धंध करि करि जोड़ि धन, संचे राखै सुव ।
 भागवसै केइ भोगवै, बले न वाहर बुं व ।
 बले न वाहर बुं व, लुंवि रहै माखी लालची ।
 कण कण ले कीड़ीया, पुज मे लें पोतैं पचे ।
 मेल्यो नदे माल, कोई न गयौ लक धे ।
 कलि में कीधोकुजस, धरम विण करि करि धंधै । ध० । ५ ।
 अति हितकरि चित्त एकथौ सु विटक्यो किणहिक वार ।
 मिलिया बले मनावता, पिण ते न मिलैं तिण वार ।
 ते न मिलैं तिण वार, ठार ओन्हो जल ठामैं ।
 जीयैतो इ पहिल रौ, पुरुष ते स्वाद न पामैं ।
 तोडे सांधो तुरत, गाठि रहै डोरे गुफ्फित ।
 धरि लो ते धर्मसीह हे, वैन हुवै ते अति हित ॥ अ० । ६ ।
 आरति मीठी अप्पणी, आइ नमै सहु आप ।
 गद्धा ने गांमंतरै, बोलावैं कहि वाप ।
 बोलवैं कहि वाप, आपणी आरति आवैं ।

पड़ीइ मादे पूत, वाप कहि वैद बुलावै ।
 श्रावण में धर्मसीह, नटै कहै छासा नीठी ।
 दूध जेठ में दीयै, मानि निज आरति मीठी । अ० ॥७॥
 इतरौ में पिण अटकल्यो, सोचे सारौ दीह ।
 निंदा जिहा पर नी नहीं, धरम तठै धर्मसीह ।
 धरम तठै धर्मसीह, जीह निज अवगुण जपै ।
 त्रेवड़ि इण में तत्त, काइ कसटे तन कपै ।
 तप जप निंदा तठै, हुवै नही कोइ हितरौ ।
 निदा हुंती नरक, अम्हे अटकलीयो इतरौ । इतरौ०८॥

परउपगार

ईख केनक उत्तम अंगर, चावा ए जगि च्यार ।
 निज सुभाउ मेटै नहीं, आवै पर उपगार ।
 आवै पर उपगार, सार रस ईख समपे ।
 छोलता छेदतां दुगुण, दुति सोवन दीपे ।
 अग्नि प्रजाल्यो अंगर, सुरभि घैँ सहु सरीखैँ ।
 अवगुण ठालि अलग्ग, एक उत्तम गुण ईखैँ । ईख० ॥६॥
 उत्पति साभल आपरी, गरवै पछैँ गमार ।
 उपजेतै तें उदर में, अशुचि लीयो अहार ।
 अशुचि लीयो अहार, वार तिण हीज ऋतु वीरिज ।
 मुख ऊ घे मल मांहि, दुख सहीया दिलगीरज ।
 तुं पछताणो तरैँ, कीया नहीं पूरव सुकृत ।
 साभलि तुं धर्मसीह, एह थारी छैँ उत्पति । उत्प० ॥१०॥

कर्म

आदर ऊंचे कुल अधिक, ऋद्धि घणो नीरोग ।
 धरम थकी हँ धरमसी, सैणा रो संयोग ।
 सैणां रो संयोग, सोग री वात न सुणिजैँ ।
 महिपति वँ बहुमान, गाम में पहिलो गिणीजैँ ।
 सहु को बोले सुजस, फलै पुण्य वृक्ष इसा फूल ।
 मनवाद्धित सहु मिलैँ, आइ उपजैँ ऊंचे कुल । आदर । ११६

गर्व

ऋद्धि त्यागौ रन में रहो, रहो परीसा सर्व ।
 तत्त सधैँ नहीं कौ तिणैँ, गयो नहीं जा गर्व ।
 गयो नहीं जा गर्व, सर्व तप निफल सधीया ।
 जोइ बाहुवल जती, वप्पु उपरि खड वधीया ।
 गरव तज्यो तत्र ज्ञान, तुरत हिज उपज्यो तन मैँ ।
 धयें गर्व नहीं धर्म, ऋद्धि त्यागौ रहो रन में । ऋ । १२।

रीस दमन

रीस दवट्टे राखीजैँ, तिण उपजतैँ तागि ।
 पलैँ नहीं प्रगटी पल्लेँ, उन्हालैँ री आगि ।
 उन्हालैँ री आगि, सही जाये नहीं सहणी ।
 हुवैँ घणी जिण हानि, देह पिण दुखैँ दहणी ।
 सैण हुवैँ सहु सत्तु, फिरैँ जायैँ मन फट्टे ।
 मुणे सैण धर्मसीख, राखीजैँ रीस दवट्टे । रीस । १३।

कर्म

लिखिया ब्रह्म लिलाट में, लोक सकै कुण लोप ।
 भायै सुख दुख भोगवै, किसु किया ह्वै कोप ।
 किसु किया ह्वै कोप, रोप काठलि घण वरसै ।
 वाचीहीयौ वापड़ो, तोइ जल काजे तरसै ।
 देखे सहु को दिने, अंध ह्वै घूघू अंखीया ।
 धोखो तजि धर्मसीह, लाभिजै सुख दुख लिखिया । लि० १४।
 लीजै च्यारे-तुरत लगि, द्यूत द्रव्य नृपदान ।
 गुरु शिक्षा प्रस्ताव गुण, न करो ढील निदान ।
 न करो ढील निदान, जाय धन हारे जुआरी ।
 चुंगल मिलै चौ तरै, रहे वगसीस राजारी ।
 गुरु पिण न दीयै ज्ञान, कह्यो जौ तुरत न कीजै ।
 सुभ प्रस्ताव सिलोक, गिनै तुरतज लीजै । ली० १५।
 एको ह्वै जो आप मै, कजीयै काम कुटब ।
 तौ को न सकै तेहनै, भगडै भाटै भुंव ।
 भगडै भाटे भुंव, वुव पिण लागै बहुनी ।
 बोली एकण वध, साच माजै मा जैनी ।
 सहुनी जिण रै फट जूजूआ, न ह्वै सु धन रहैं नेकौ ।
 धुरि हुंती धर्मसीह, आप मे कीजै एकौ । एको १६।
 ऐ देखौ ब्रह्मड इण, इक इक वडौ अचभ ।
 धरा भार इवडौ धरै, सु थभी किण विध थभ ।
 थंभी किण विध थंभ, दंभ पिण कौ नवि दीसै ।

मंड्यो किम करि मेह, दडड पाड्या निस दीसै ।
 अंवर विण आधार, सूर शशि भमै सपेखौ ।
 सागी कहै धर्मसीह, ए ए अचरिज देखौ । ए० ११७
 ओहिज भूतल ओहिज जल, वाया एकण वेर ।
 अंवं निंव पात्रै इसौ, फल में पड़ीयो फेर ।
 फल मे पड़ीयौ फेर, मेर सरसव जिम मोटौ ।
 स्वाति विन्दु सीप में, आइ पड़यो अण चोटौ ।
 मोती ह्वै बहु मोल, सरप मुखि विष ह्वै सोइज ।
 पात्रै अन्तर पड़यो, उदक कहै धर्मसी ओ हिज । ओ० ११

अन्न

औपध मोटो अन्न इक, भाजै जिण थी भूख ।
 सालैं अन विण सामठा, देही माहिला दूख ।
 देहि माहिला दूख, उख ह्वै सहु नै अन्न री ।
 उदर पडै जां अन्न, मौज ता लगि तन मन री ।
 आखर अन्न रैं अंश, पलै पूरा व्रत पौपध ।
 धीरज ह्वै धर्मसीह, अन्न इक मौटौ औपध । ओ० ११६

स्वभाव

अव कौऔ निंव कोइला, लुं व्या किहा इक लागि ।
 काग भणी कहे कोइला, कोइल नै कहै काग ।
 कोइल नै कहै काग, जाइगा कारण जाणै ।
 भूलैं माणस भमर, अंग सरिखे अहिनाणै ।
 विहु जव वोलिया, अगुण गुण लीधा अटकल ।
 न रहै छांता नेट, अंवं कौऔ निंव कोकिल । अ० १२०

पर स्त्री गमन निषेध

अपणी तिय थी अवर नै, मानै घगुं मसंद ।
 लखमीजी नै तजि लग्यो, गोपीयां सूं गोविंद ।
 गौपिया सूं गौविन्द, इन्द्र पण तजि इन्द्राणी ।
 अहिल्या नै आदरी, जगत सगलै ए जाणी ।
 अतिधन ह्वै उन्मान, जाय नहीं वाता जपणी ।
 प्राये परतिय प्रीति, अधिक ह्वै न हुवै अपणी । अ० १२१।

आठ अंधे

क्रोधी कामी कृपण नर, मानी अनै मदध ।
 चोर जुआरी नै चुगल, आठों देखत अंध ।
 आठे देखत अंध, भध रस लागा धावै ।
 तन धन री हाणि, नेटि तोइ नजरै नाचै ।
 कुकरम कुजस कुमीचि, सोइ देखै नहीं सोधी ।
 धरमसीख नहिं धरै, करै इम कामी क्रोधी । क्रो० १२२।

कपूत

खाए नै खेरू करै, सगलै घर रौ सूत ।
 कूत न काइ कमाइवा, कहियै एम कपूत ।
 कहियै एम कपूत, भूत जिम बोले भडकी ।
 सखरी देता सीख, तुरत कहै पाछौ तडकी ।
 साच कहै धर्मसीह, उणै सुत सदा अंधेरू ।
 म खट्टू मौजी मन्न, करै खाए धन खेरू । खा० १२३।

सपूत

गुरु जण सैवे तज गरव, कम्मावें घरि कूत ।
 निवला नै ले निरवहै, साचा तिकै सपूत ।
 साचा तिके सपूत, दूत जिम दौडें द्रुकै ।
 खरा द्रव्य खाटि नै, मात पित आगलि मूकै ।
 मुखि मीठा सुभ मना, देखि सारा हँ दुरजण ।
 सुपूत्र तिकै धर्मसीह, गरव तजि सेवें गुरुजण । गु० १२४।

सात सुख और दुख

घट नीरोग शुभ घरणि, बलि नहीं रिण भय वात ।
 सुपूत्र सुराज कटुं व सुख, धर्मसीह कहै सात ।
 धर्मसीह कहै सात, सात दुःख जाय न सहणा ।
 दीसै घरि मे दल्लिद; लोक बलि मांगै लहणा ।
 कलहणि नारी कुपुत्र, फिरण परदेस सगे फट ।
 सवलै दुख सातमौ; घणौ बलि रोग रहैं घट । घट० १२५।

पाडोस

न रहे पाडोसैं निखर, करै मता घरि कूप ।
 दुड विढता मत देखिजै, भूँडौ न कहै भूप ।
 भूँडौ न कहे भूप, जूप मत मोटा जोड़ी ।
 भगडौ न करै भूठ, आल न रमे धन ओडी ।
 वारी न करै वैद, गरथ पर नौ मत गर है ।
 सुणे सैण धर्मसीख, निखर पाडोसैं न रहे । न रहै । २६ ।

बुढापा

च्यार जणा नै सुणि चतुर, सोहै जरा सिंगार ।
 राजा मुहतौ वैद रिधि, गरढ पणै गुणकार ।
 गरढ पणै गुणकार, सार बहु बुद्धि रसायण ।
 विणसैं मल्ल वेसीया, गिणौ तिम चाकर गायन ।
 करैं घणी जौ कला, मन्न तोइ किणै न माने ।
 कहै धर्मसी युं करै, जरा आइ च्यार जणा नै । च्यार ० २७

बाप

छत्र करैं व्युं छाहड़ी, तुरत हरै सहु ताप ।
 छोरुं नै गुणकार छै, वूढा ही मा-बाप ।
 वूढा ही मा-बाप, आप जीवै ता अमृत ।
 सखरी आखै सीख, साचवै घर में सुकृत ।
 लाज काणि करै लोक, तरुण तिय सोह रहै तिम ।
 धरैं हित धर्मसीह, जतन बहु छत्र करै जिम । छं ० २८

जूआ

जूअैं सो कीधी जिका, कही न जायें काय ।
 नल पाडव सिरखा नृपति, मूक्या हार मनाय ।
 मूक्या हार मनाय, हार करि अलगा होवौ ।
 कलह सोग बहु कुजस, जूए साम्है मत जोओ ।
 हासो नै घर हाणि, सुख पिण कदै नै सूवै ।
 सुणज्यो कहै धर्मसीह, जिका कीधी छै जअैं । ज० २९ ।

मास

भ्रामै मल सूत्र भरै, अङ्ग तणा सहु अंश ।
 तौ पिण खावा तरसीया, माणस पापी मंस ।
 माणस पापी मस, अंस पिण सुरा न आणै ।
 परगट्ट जीवा पिंड, जीभ स्वादें नचि जाणै ।
 दुरगति लहिस्यै दुःख, सबल आ करणी सामे ।
 अधरम महा असुचि, भरै मल सूत्रे भ्रामे । भा० १३०

मदिरा

न हुवे सुधि बुद्धि नजर मे, जायै लक्षण लाज ।
 परगट्ट मदिरा पान थी, एहा होई अकाज ।
 एहा होइ अकाज, खाज अखज पिण खावै ।
 नावै कोई नजीक, अन्ध री ओपम आवे ।
 इण कीधा अनरत्थ, द्वारिका नगरी दहवै ।
 सुणै नहीं धर्मसीख, नजर मे सुद्धि बुद्धि न हवै । न० १३१

वैश्यागमन

टिपस करै लेवा टका, नहीं मन माहे नेह ।
 राग करे इण सुं रखे, गणिका अवगुण गेह ।
 गणिका अवगुण गेह, छेह विन दाखै छिन में ।
 सिल धोवी री सही, ओपमा छाजै इण मे ।
 गया बहु लाज गमाइ, विहल हुआ वैश्या वसि ।
 जाति कुजाति न जोअै, टका लेवा करैटिप्पस । टि० १३२

शिकार

ठग बगला जिम पग ठवै, पाडैं जीवा पास ।
 कुविसन रौ वाह्यो करै, आहेड़ा अभ्यास ।
 आहेड़ा अभ्यास, प्यास भूखैं तनु पीडैं ।
 मार्यो श्रेणिक मृग, नरक गयो न रह्यो नीडैं ।
 कहे धर्मसी इण कर्म, सुकृति ह्वै निःफल सगला ।
 रहै तकता दिन राति, वहाँ जीवा ठग बगला । ठग० ।३३।

डाका चोरी

डाकै पर घर डारि डर, कूकरम करैं कठोर ।
 मन में नाहि दया मया, चाहै पर धन चोर ।
 चाहैं पर धन चोर, जोर कुविसन ए जाणो ।
 मुसक बंधि मारिजै, घणी वेदन करि घाणो ।
 फल बीजा सम फलै, अब लागै नाही आके ।
 धरम किहां धरमसीह, डारि डर पर घर डाकै । डा० ।३४।

पर स्त्री गमन

हुंढा कीधा ढाहि गढ, लक तणी गइ लाज ।
 पर त्रीरे कुविसन पड़्या, रावण गमीयो राज ।
 रावण गमियो राज, साज तौ हुंता सबला ।
 परत्रीय कुविसन पड़्या, पाप केइ लागा प्रबला ।
 अपयश जीव उदेग, मान तौ नहीं छै मूढा ।
 सुणि भारथ धर्मसीह, ढाहि गढ कीधा हुंढा । हु० ।३५।

सप्त व्यसन

नरक रा भाई निरखि, साते कुविसन सोई ।
 इण हुंती रहिज्यो अलग, करौ रखे संग कोइ ।
 करै रखे संग कोई, जोइ तिहा पहली जुआँ ।
 मास खाण मद पान, संग ढारी मत सूओ ।
 आहेडौ धन अदत्त, संग पर त्रीय साता रा ।
 इण मे महा अधर्म, निरखि भाई नरका रा । न० १३६।

तूळारा

तुंकारो काढै तुरत, मुंह मुलाजौ मेट ।
 कुल उत्तम जन्म्या किसुं, नीच कहीजै नेट ।
 नीच कहीजै नेट, पेट रो खोटो पापी ।
 तुरत वैण तोछडो, सैण नै, कहै संतापी ।
 चाप तणो नहीं बीज, बीज किणहिक बीजा रो ।
 धिग तिण नर धर्मसीह, तुरत काढै तुंकारो । तु० १३७।
 थाका भूखा ही थका, धोरी नर धर्मसीह ।
 निज भुज भार निवाहि ल्यै, लोपे नहीं शुद्ध लीह ।
 लोपे नहीं शुद्ध लीह, दीह ल्यै अंचा दावै ।
 सीह होइ संचरै, जीह नहु भेद जणावै ।
 आखर ते आपणा, जस्स खाटै हुंइ जाका ।
 घुरा भार ले धीग, थेट ताइ आणै थाका । था० १३८।

सज्जनदर्शन

देखो सैणा रो दरस, मौटौ छै कोइ माल ।
 दूर थकी पिण देखता, नयणा हुवै निहाल ।

नयणा हुवै निहाल, हाल दे हीयो हरखै ।
 वरषै अमृत वैंण, प्रीति अति ही चित्त परखै ।
 वि घड़ी मिलि वेसता, लहै सुख नहीं ते लेखौ ।
 धन दिन गिण धरमसीह, दरस सैणा रो देखौ । दे० १३६।

धनवान

धनवंता री धर्मसी, आवै सहु धरि आस ।
 सरवर भरीयो देख सहु, पंखी वेसै पास ।
 पखी वेसै पास, आस पिण पुगइ इण थी ।
 सूको सरवर सेवता, तृपा काइ भाजे तिण थी ।
 दीयै किसुं दलदरी, सबल रीभवीयौ संता ।
 सगलौ ही ससार, धरै आस धनवंता । ध० १४०।

कृपणदान

न दीयै काइ कृपण नर, सहु इम कहै संसार ।
 सात थोक कहै धर्मसी, द्यै ओहिज दातार ।
 द्यै ओहिज दातार, वार^१ द्यै काठा वीडी ।
 द्यै उतर द्यै कुमति, पूठ द्यै पात्रा पीडी ।
 धरि द्यै लछि नै घोर, कटुक गाल्या दे कदीये ।
 आडौ पग द्यै आइ, निपट किम कहो छो न दीयै । न० १४१।
 पर हुंती तप पामिनै, निपट दीये दुःख नीच ।
 सूरिज तपता सोहिलौ, पिण वेल्ह बालें वीच ।
 वेल्ह बालें वीच, नीच नर ह्वै बहु बोलो ।
 उत्तम नर रहै अटक, गालि द्यै तुरत ज गोलो ।

अक्ख दीयौ पद ऊंच, पीड्यै तोइ पनु ती ।
धरै उत्तम नर धर्म, पापिनै तप पर हुंती । प० १४२।

यमराज

फौजा में मौजा फिरै, गाहण गढा गडंढ ।
फुकै काल फण्ड री, उडि गया नर इन्द ।
उडि गया नर इन्द, चंद विणद चकीसर ।
साथ न को धर्मसीह, कित वाल्हा गया वीसर ।
सगला तालगि सूर, जम्म आवै नहीं औ जा ।
है चोटी पर हाथ, मान मत खोटी मौजां । फौजा० १४३।

मिष्ट वचन

वहु आदर सूं बोलियै, वारु मीठा वैण ।
धन विण लागा धर्मसी, सगला ही ह्वै सैण ।
सगला ही ह्वै सैण, वैण अमृत वदीजै ।
आदर दीजे अधिक, कदे मनि गर्व न कीजै ।
इणा वातै आपणा, सैण हुइ सोभ वदै सहु ।
मानै निसचै मीत, बोल मीठो गुण छै बहु । बहु० १४४।

भारी कर्मा

भारी करमा दुरभवी, जग मे जे छै जीव ।
सीख न मानै सर्वथा, सहज मिटै न सदीव ।
सहज मिटै न सदीव, टेव थी जाइ न टलीयै ।
स्वान पुंछि न ह्वै समी, नित भरिराखौ नलीयै ।
कासुं ह्वै बहु कह्या, वदै नहीं कदे विसरमा ।
सुगुरु तणी धर्म सीख, करै नहीं भारी करमा । भा० १४५।

नमो नमो दुखतर

मन्मथ नमो नमो, नमिधरि केहरि सह ।
 नमो नमो सोहिला, नमो नमो मुस्तकल ।
 नमो नमो मुस्तकल, चल जियरी जति चंचल ।
 रूढ़ नही थिर दिन राति, अधिक वायें ध्वज अंचल ।
 म्निण दिखीर खुत्याल, दुख कै सीला तत्ता ।
 रूढ़ धर्मसी मुस्तकल, मन्मथ दमणा नयमत्ता । म०॥४६॥

दान

योजन वारें जाणियें, आवें गाज अवाज ।
 दुनिया में दातार रौ, सगलै जस सिरताज ।
 सगलै जस सिरताज, आज लागि वलीयौ आवें ।
 अरवक^१ सदा उगता, करण रौ पहर कहावें ।
 साधु सुपात्रे सैण, भगित करि दीजै भोजन ।
 धरम अनै धर्मसीह, जस हौ फेइ जोजन ।

शील

राखीजै जतने रतन, खड्यां हौ बहु खोड ।
 सील तणा तिम धर्मसी, कीजै जतन करोड ।
 कीजै जतन करोड, होड इणरी किण होवें ।
 सीलै सुर सेवक, जगत जस कहि मुख जोवें ।
 नित सतीया रा नाम, उठि परभात अखीजै^२ ।
 सीलै लहीजै लील, रतन जतन राखीजै । रा०॥४७॥

१ सूर्य २ कहने में आता है ।

तप

लहियै शोभा लोक में, तप करि कसता तन्न ।
 परतखि वीर प्रशंसियौ, धन्नौ मुनिवर धन्न ।
 धन्नो मुनिवर धन्न, मन शुद्ध जास भली मति ।
 पहिलौ फल ए प्रगट, कन्न सुणीयै निज कीरति ।
 रहीयै तप सुं राचि, दूठ आठे कर्म दहीयै ।
 धरता इम धर्मसीख, लच्छि सिवपुर नी लहियै । ल०॥४६॥

भाव

वपु शोभे नहीं जीवविण, जल विन सरवर जेम ।
 विन पति त्रिय गृह दीप विण, तरवर फल विण तेम ।
 तरवर फल विण जेम, प्रेम विण जेम सखापण ।
 प्रतिमा विन प्रासाद, कहौ तुस जेम विना कण ।
 भण इण परि विणभाव, खोट सगली तप जप खपु ।
 सोभै नहीं धर्मसीह, भाव विण जीव विना वपु । व०॥५०॥
 सीखो दाखौ शास्त्र सहु, आगम ज्ञान अछेह ।
 साइ रे हाथे सही, मीच रिजक नै मेह ।
 मीच रिजक नै मेह, एह छै वाता ऊंडी ।
 कासु भूटै कहां, हाथ परमेसर हुंडी ।
 जोइ धर्मसीह जोतिष, सोचि करि करौ सधीखो ।
 आखर जाणै ईस, शास्त्र सहु दाखौ सीखौ । सी०॥५१॥

कर्म

खटवानै सहु को खपै, उद्यम करै अनेक ।
 लिख्यौ ह्वै सो लाभिजै, अधिकौ रंच न एक ।

अधिकौ रंच न एक, देखि मथीयौ दधि दोऊ ।
 लाधि गोविद लाछि, शमु लाधो विप सोऊ ।
 वखत तणी सहु वात, लाख करै केइ लडुवा ।
 कोइ माटीपण करै, खपै सहु करिवा खटवा । ख० ।५२।

सूम की सम्पदा

सुवा केरी सम्पदा, नपुंसक री नारि ।
 ना धर्मसील धरें सकै, न भोगवै भरतारि ।
 न भोगवै भरतारि, कीया था पातिक केइ ।
 इण घरवासै आइ, वोइ नाख्या भव वेइ ।
 कर फरसै रस करै, आस नहु फलै अनेरी ।
 धर्मसी कहै धिग स, संपदा सुवा केरी । सुवा०।५३।

घट बढ

हयवर जिण घर हीसता, गज करता गरजार ।
 किण हिक दिन तिण घर करै, पडीया स्याल पुकार ।
 पडीया स्याल पुकार, वार नहीं सरखी वरतै ।
 चढत पडत हिज चलै, चंद जिम विहु पखि चरतै ।
 चौपड़ करै चाव, घटत बढती ह्वै घर घर ।
 सुणि तिण विध धर्मसीह, हिंसता जिण घर हयवर । ह०।५४।

मर्यादा

लघीजे नहीं लोक में, लाज मर्यादा लीक ।
 जायै पाणी जू जूओ, न करीजै जो नीक ।
 न करीजै जो नीक, लीक नहु सायर लघै ।

मरयादा मेटता, सदा टालीजै संघै ।
 वरतीजै विवहार, कदे निज रूढि न कीजे ।
 सदाचार धर्मसीह, लीह कहो केम लघीजै । ल० १५५।
 क्षमा करंता कोइ खरच, लागै नहीं लगार ।
 मिटै कदा यह मूल थी, सँण हुवै संसार ।
 सँण हुवै संसार, सार सहु मै ए साचो ।
 किण सारु करै क्रोध, कुह्यो काया घट काचौ ।
 सफल हुवै धर्मसीह, धरम डण सीख धरंता ।
 लहै मोह लोक मे, कहै सहु क्षमा करंता । क्षमा० १५६।
 अक्षर वावन आदि दे, कवित्त कुंडलिया किद्ध ।
 धरम करम सहु मे धुरा, प्रस्ताविक प्रसिद्ध ।
 प्रस्ताविक प्रसिद्ध, शहर जोधान सल्हीजै ।
सतरसे चोतीस, भलै दिवसै भा वीजै ।
त्रिजयहर्ष वाचक, शिष्य धर्मवर्द्धन साखर ।
 कीधा वावन कवित्त, आदि दे वावन आखर । ॥ ५७ ॥

इति कुंडलिया वावनी ।

छप्पय वावनी

गुरु गुरु दिन मणि हस, मेघ मेरहि मुगतागण ।
मति टुति गति अति सोभ, वाणि मणि गुण जाकै तण ।
सुरग पुव्वसर राज, गयणधर धुरि वारिधि थिति ।
वासव ग्रह अति चतुर, जगत सुर पारिख सेवित ।
प्रभात पंकति सहित, गरजित निरमल ग्रथित गुण ।
अहु ज्ञान तेज केली वरिप, धरि पवित्र धर्मसीह गुण ॥१॥

गुरु वर्णन रूप ३६ विधानीक कवित —

ऊंकार वलि अरक, उदयगिरि उपर ऊगो ।
अलग गर्यौ अन्धार, पार इणरै कुण पूगौ ।
चाहे सहजग चक्खु, उदय पूरें सह आसा ।
सुर नर मानै सर्व प्रसिद्ध सगलै परकासा ।
स सार सार परतिख समै, सिद्धि रिद्धि दायक सासता ।
धरि ज्ञान ध्यान धर्मसीह धुरें, अधिक इणरी आसता ॥१॥

नम्रता

नम्या चढे गुण नेट, नम्या विण गुण ह्वै निःफल ।
तरवर नमै तिकोज, माखि फल फूलें सफल ।
नमता वाधै नेह, नमै सो मोख नजीकी ।
नमै सुजाणें नीति, नम्यां सह वाता नीकी ।

तुरत हिज परखि धर्मसी, तुला धडी जणावै सीस धुणि ।
हलकौ तिकोज ओछो हुवै, गरुओ कहिजै नमण गुण ॥२॥

मन मे न धरै मैल वदै वलि मीठा वायक ।
देह आपसु दमै, गरव विण सहु गुण ज्ञायक ।
आदर पर उपगार, सत्यवादी सन्तोषी ।
न करै निंदा नेट, चलै निज कुलवट चोखी ।
न्याय रीति तिण दिसि नजर, देखे नहीं स्वारथ दिसा ।
धर्म सील विनय सूधौ धरै इण जुग के विरला इसा ॥३॥

सिला सेज सूवणें, वले वृन धगहने वासा ।
नगन गगन गुण मगन, अगनि जग ने अभ्यासा ।
जटा धरै केई जूटा, मुंड के घुरड मुंडावै ।
बहुली केइ वभूत, लेइ अंगे लपटावै ।
जिण जिणै रुढि झाली जिका, तपौ तपावौ कष्ट तन ।
साच ह्वै मन्न धर्मसी सफल, मन भूठै सहु भूठ मन ॥ ४ ॥

धंध धरे करि द्वेष, वात मे हेत वितौड़ि ।
आप कियौ ते अवल, वले पर किया विखौड़ि ।
छत्ता गुण छावरै, अगुण अछत्ता ही आखै ।
कोइ हितरी कहै, रीस मन माहै राखै ।
वलि लहै सुख परकै विघन, काम पगे पग कूड रौ ।
धर्मसीय कहै तिण रै धरम, वोल्यो खातौ वूड रौ ॥ ५ ॥

अटकलि कुल आचार, शोभ अटकलि सक जाइ ।
विद्या अटकलि वित्त, देह अटकलि दे खाइ ।

त्रिय अटकलि सुविशेष, आठ गुण वीदह अटकल ।
 परणा पुत्रिका इतें, मावी तड सिंकल ।
 वल ती जिकाड सम्पति विपति, निवलें सवलें नखतरी ।
 किण ही न दोम धर्मसी कहै, वात पछें सहु वखतरी ॥ ६ ॥

धर्मलाभ

आ खा जौ बहु आऊ काउ, चिरजीव कहिजें ।
 पुत्र वधौ परिवार स्वान शूकर सलिहिजें ।
 दाखां बहुलो द्रव्य हुवें अधिकौ कुल हीणो ।
 चल पामौ अति बहुल प्रवल हुड सरपे पीणो ।
 सुत वित्त जोर जीवित सकल आंशा पूगै धरम इण ।
 असीस एक सहु में अधिक भलौ वैण धर्मलाभ भण ॥ ७ ॥

विद्या बुद्धि

इक नीरोगी अङ्ग वले, गुण बुद्धि वखाणो ।
 वलि साचविजै विनय अधिक गुण उद्यम आणो ।
 शाम्त्र राग सुविशेष पिंड थी ण गुण पाचें ।
 पाचे वलि परतख सही वाहिज गुण सन्चे ।
 पंडित प्रथम पुस्तक पछें, सुधिर वास साथी सधं ।
 तिम नहीं चित्त भोजन तणी, विद्या दस थोके वधै ॥ ८ ॥

ईहै स्वाद अनेक आलसू, जे वलि अगं ।
 दुहरी न करै देह, सुखी विषयारस संगे ।
 नित रोगी बहु नीद, रग वाता रो रसीयौ ।
 रामनि मे मन रहै, ताकिल्यें सहु रौ तसियौ ।

लालचं दाम खाटण लुब्ध, दुसमन शास्त्रारा दसै ।
कर डता दूर धर्मसी कहै, विद्या भणिवा ने वसै ॥ ६ ॥

ऋष्ट मद

उच्च जाति मद एक महा कुल मद सू मातौ ।
लाभ तणें मद लोल, तेम तप मद सु तातौ ।
रूप मदें वलि रसिक, बहुल बल मद पिणं वाहे ।
विद्या मद वलि विविध, अधिक अधिकार उच्छाहे ।
मद आठ ईयै मत ह्वै मसत, अस्त उदय रवि अटकली ।
आविया देखि करीवा अमल, प्यादा जमराए पली ॥१०॥

कुपात्रप्रीति

ऊगत अरकरी मडी तब छाया मोटी ।
दोड पहुर मै देखि, छीजती छिण छिण छोटी ।
त्युं कुपात्र की प्रीति, आदि-बहु आगे ओछी ।
सजन प्रीति सुरीति, सही धुरि होइ सकोछी ।
बधता विशेष धर्मसी बधे, बलत छाह जिम विस्तरै ।
दृष्टांत गण सज्जन दुज्जण, परखी देख पटंतरे ॥११॥

कर्मगति

ऋतु ग्रीष्म रान मे, तृपो मृग दव थी त्राठो ।
पडियो पासि पाउ नेट साइ तोडै नाठै ।
ओ नौ कुडि उलंघि, आयो जिण दिसि आहेडी ।
तेण चलायो तीर, फाल माहि टाल फंफेडी ।
नासता कूप आयौ निजर, निस मेटण पडियौ तठै ।
कर्म गति देखि धर्मसी कहै, कहौ नाठौ छूटै कठै ॥ १२ ॥

कर्म

रीस भर्यो कोइ राक, वस्त्र विण चलीयौ बाटे ।
 तपियौ अति तावडौ, टालता मुसकल टाटै ।
 बील रुख तलि बैसि, टालणो माडयो तड़कौ ।
 तरु हुती फल त्रूटि, पडयो सिर माहे पड़कौ ।
 आपदा साथि आगै लगी, जायै निरभागी जठे ।
 कर्मगति देख धर्मसी कहै, कहौ नाठो छुटै कठे ॥ १३ ॥

लक्ष्मी किणहीक लाभि, खरची दीधी वली खाधी ।
 कहौ नहीं कारण किणै, बहसि किए के बाधी ।
 दातारै धुरि देखि, दान रो लाधो दहो ।
 सुत्र ननौ संग्रहै, माहरै इण सु मुहो ।
 दातार घरै दिन दिन ददौ, नित सु बा घर ननौ ।
 विहु जणा जाणिं बहसे बहसि, पालै इण परि पडवन्तो ॥१४॥

लीजै पर गुण लागि, लागि नै अन्त न दीजै ।
 दीजै ऊंचौ दाव, दोष अणहुत न दीजै ।
 कीजै पर उपगार, कार निज लोप न कीजै ।
 खरै हित खीज जै, खोट वाते मत खीजै ।
 भीजै सुसाम (?) धीजै भला, पीजै जल छाण्या पछै ।
 धर्मसीख सुबुद्धि मनमें धरै, इतरा थोके अवगुण अछै ॥१५॥

एक एक थी अधिक सबल सूरुा संग्रामे ।
 एक एक थी अधिक नकल ने ठाहे नामे ।

एक एक थी अधिक चुंप सगली चतुराइ ।
 एक एक थी अधिक कला विद्या कविताइ ।
 व्याकरण वेद वेदक विविध, भला उदर सहुको भरौ ।
 धर्मसीह रतन बहुला धरणी, कोई गरव रखे करौ ॥ १६ ॥

ऐ वेलि एकरा, उपना तुंवा आवै ।
 साधु तणी संगते, पात्र री ओपम पावै ।
 विलगा जिके सुवंश, गुणी संगि मीठो गावै ।
 गुण सुं जे गुंथिया, तरै निज अवर तरावै ।
 एक एक माहि बलती अगनि, चेढंता लोही चुसै ।
 उपजै वुद्धि धर्मसी इसी, वास आइ जेहवै वसै ॥ ७ ॥

ओछौ नर ओहिज, नजरि तलि बीजां नाणै ।
 " " " ओछौ बलै आप वखाणै ।
 " " " नडा दाक्षिण्य न राखै ।
 " " " आप म्है परन्तु आखै ।
 दूहवै कवण मुख कहि दुरस, आचरणै सहु अटकलै ।
 पारखा देखि जल घट प्रगट, ओछौ ते हिज अलै ॥ १८ ॥

अवगुण ह्वै आलम्, अवल धिरता गुन आणै ।
 चपल होई चल वित्त, बडौ उद्यमी वखाणै ।
 महा मुंक ह्वै मुखे तौ मनै नहीं घोल म घोला ।
 क्यु कहता क्यु म्है, भला छै मन रा भोला ।
 पात्रे कुपात्र धन च प्रगट, बड दाता धन ज्युं वरै ।
 धर्मसीह देखि परमाद धन, अवगुण ही गुण आचरै ॥ १९ ॥

आज के मित्र

आखि लाज करि आज, रीति रस री रुख राखै ।
 हसते लातैं सहीयै, भेद सुख दुख रा भाखै ।
 अलगा हुवा अंस, नेह तिल मात न आणै ।
 जुदा न गिणता जीव, जीव परदेशी जाणै ।
 आज रा मीत बहुला इसा, कोइ गिणैं नहीं हित कीयौ ।
 कहौ इसै मित्र धर्मसीह कहै, हेजैं किम विकसैहियौ ॥२०॥

स्वार्थ

अफल रुख अटकले, परा उड जाये पंखी ।
 सर सूको सपेख, कोइ न हुवै तसु कंखी ।
 वले पुहप विणवास, भमर मन माहि न भावै ।
 दव दाधो वन देखि, जीव सहु छोडि जावै ।
 निरधना वेस नाणे नजरि, किणरौ बलभ कवण कहि ।
 म्वारथै आवी सेवे सहु, स्वारथ रौ संसार सही ॥ २१ ॥

कहै पाखा मुणि केकि, कत तुम्ह लागि केडे ।
 करि कु मया तु काइ, फूस ज्यु अम्ह पा फँडै ।
 सुन्दर माहरे सङ्ग, कहै सहु तोने कलाधर ।
 नहीं तर खुथड़ो निरखी, नेट निन्दा करसी नर ।
 अम्ह घणी ठाम बीजी अवर, धरमी आदर करि धरै ।
 माहरै सुगुण सोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरै ॥२२॥

खिसता निज खाण थी, रयण कहै साभलि रोहण ।
 अठै अम्है उपना, महिर थारी मन मोहण ।
 करिजे तुं कल्याण, इसौ मन में मत आणै ।
 ठाम चूकवे ठिक्क, ठहरसी किसे ठिकाणे ।
 वास मे जाड जिण रे वसा, घर री पुण्य दशाधिरै ।
 माह रै सुगुण शोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरै ॥२३॥

धन गर्व निषेध

गरथ तणै गारवे, हुओ गहिलौ विण होली ।
 नेट करै निवलरी ठेक हासी ठकठोली ।
 मन ही मन जाण मूढ, मूल ए किण री माया ।
 साच कहै धर्मसीह, छती छवि वादल छाया ।
 उलटी सुलट्ट सुलटी उलट, ए थिति आदि अनादिरी ।
 घडी माहि देखि अरहट्ट घडी भरि ठाली ठाली भरी ॥ २४ ॥

परोपकार

घडी घडी घड़ियाल, प्रगट सद एम पुकारै ।
 अवर भवै ऊंघता, जगिज्यो मनुष्य जमारै ।
 दुखिया रै सिर ढड, घड़ि घड़ि आयु घटता ।
 काठ मिरं करवती, किती इक वार कटता ।
 तिण हेन चेत चेतन चतुर, धर्म सीख सविशेष घर ।
 सहु वात सार संसार मे, कोइक पर उपगार कर । २५ ।
 इड़िया जिम गुछलौ, खाइ वैठो मन खौटे ।
 गिल ढी हीया गोढ, छेहडै आदर छोटै ।

मुहडै सुं पिण मिलै, नाक सु अधिकै नाते ।
 विहु मुहडौ बोलतौ, खत्त पत्त गिणै न खाते ।
 व्यवहार शुद्ध व्यापार थी, तजियो सहु लोके तिणै ।
 बोलै न कोइ इण सुं बहुत, डडियो फल सरिखा गिणै ॥ २६ ॥

चातक नुं छै चतुर, सीख सुणि वयणे साचे ।
 पिउ पिउ करे पोकार, जलद सगला मत याचे ।
 के जल थल इक करै, उणा थी पूगै आसा ।
 मरड फरड केइ गरजि, नेटि उडिजाइ निरासा ।
 लहणीये जोग आफे लहिसि, पुरालब्धे पुन्य पापरी ।
 धर्मसीउ कहै धीरज धरे, ओ ही मत छै आपरी ॥ २७ ॥

छात्र तिकौ छावरै, दोष गुरु निजरा देखे ।
 पाचा माहे प्रसिद्ध, सुजस बोले सुविशेषै ।
 छाप धरै सिर छती, ग्राहकी होइ गुणारो ।
 विद्या तसु वरदायी, उदय बलि होइ उणारो ।
 छल छिद्र ताकिल्ये छीटका, छानो कहै अछती छती ।
 पाचमै तास ऊंधी पडै, गुर लोपी सो दुरगति ॥ २८ ॥

जो हालाहल जयों, जोइ मन्मथ रिपु तै ।
 भाल नैत्र महि भयों, बले वन अनल वदीतै ।
 शकर ऐही शक्ति, होइ तोइ रजवट हालण ।
 ससि गिरजा सुर सरित, पासै राखै तिहुं पालण ।
 तिण रीति सु बुद्धि धर्मसी तिकौ, धुरा दृष्टि ऊडी धरै ।
 जल वालि पालि बाधै जरु, काज रजनीति हि करै ॥ २९ ॥

ऋडी पडी भुंपडी, किया दर उदर कोले ।
 गंधीला गूढ़ा, खाटपिण बंधण खोले ।
 कामणि सोड कुहाड़, कलहणी काली काणी ।
 करती जीमण करै, धान सगलौ धूड धाणी ।
 रोगियो आप माथै रिणो, रोज दुख सुख नहीं रती ।
 मोहनी देखि धर्मसी महा, जाणें तोइ न हुजै जती ॥ ३० ॥

बञ्जीयौ कहै हुं निवल, नाम किण ही में न पडुं ।
 छिप्पो वरग रैं छेह, देखि तोइ कहै मुक्क दुपडुं ।
 भगड़ा भाटा भाम्भ भूमौ सहु वाते भूठौ ।
 पहिली ते हुं पछे, एह किम न्याय अपूठौ ।
 दीसैं न न्याय भोगवि दसा पडछो सुदि वदि पख रौ ।
 देखे नैं साच दाखैं दुनी, खाड़ो चादौ ए खरौ ।

गर्व

टीटोडी निज टाग, सही ऊंची करि सौवें ।
 औ पड़तो आकास, दुनी नैं रखैं दु खौवें ।
 थाभसि हुं विण थंभि, इसो मन गारव आण ।
 कूअति सो मैं किसी, जीउ मे इतो न जाणें ।
 मोहनी छाक परवसि मगन, ससारी ऐ जीव सहु ।
 ओछो न कोइ मन आपरैं,

किण किण नैं नहीं गरव कहु ॥ ३२ ॥

ठिक्क वचन ताहरौ भलौ हितकारी भाखैं ।
 प्रसिद्ध बधैं परतीत जास सहु कोड राखैं ।

मर कह्यँ कोइन मरँ, जीव कहै कोइ न जीवै ।
तोइ खारो जल तजै, प्यार करि अमृत पीवै ।
गाठि रो कोइन लगै गरथ, सिंगला हुइ जिण थी सयण ।
धर्म नै कर्म सहु मे धुरा, वडी वस्तु मीठौ वयण ॥ ३३ ।

डाहो हुइ सो डरँ कोइ मत भूडौ कहसी ।
घर डर कुल डर घणो, सुगुरु डर डाकर कहसी ।
माण तणै डर मुदै लाज डर करणो लेखँ ।
मावी ता डर मानि, सामि डरकर सुविशेषे ।
दुरगतँ दुख परभव डरै, जाण करँ डर नव जिको ।
धर्मसीह कहै सहु धर्म को, तत्व सार जाणे जिको ॥ ३४ ।

ढीली वात मढाहि पुण्य रो कारिज पडता ।
" " " न्याय सुधो नीवडता ।
ढीली वात मढाहि बहस सु पडियँ बोले ।
" " " ढमकीए वाहर ढोले ।
सहु करँ पूछि आगे सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै ।
आवियँ दाव औठभता, कुल धर्मसीह कहाइजै ॥ ३५ ॥

अपनी अपनी

नर मादौ निरखि नें, वैद कफ वात वतावे ।
जो पूछँ जोतसी, लार ग्रह केइ लगावै ।
भोपो कहै भूत छै, लोभ वीभासणि लीधौ ।
जंत्र मंत्र रा जाण, कहै कोइ कामण कीधौ ।

मंदवाड़ एक नव नव मता, मूल न जाणे को मरम ।
 कहै साधु अशुभ पूर्व करम, धरि सुखकारी इक धरम ।३६।
 तीन कोडि तरु जाति, आणि वलि लाख इक्कासी ।
 सहस्र वार एकसौ, भार इक संख्या भासी ।
 आठ भार ते इसा, फल्या लाभै फल फूलै ।
 भार च्यार विण फले, भार पट लता म भुल्लै ।
 करि शास्त्र साखि धर्मसी कहै, भार अठार वनस्पती ।
 विणलीया सु स खाधा विगर, छहु ऋतु मे हिसा छती ।३७।
 थिर दीसै थि गति, अलग आकाशै उड्डि ।
 पिण पल पल पवन सुं, गुडथला खाये गुड्डि ।
 जिण रो न चलै जोर, डोर परहत्थ दवाणी ।
 पर सिद्ध कीध पुकार, नेट किण ही मन नाणी ।
 नूटै न डोर छुटै न तिम, ऊची तलफै आफलै ।
 प्राणीयै इम परवस पड्या, गमियौ नर भव गाफिलै ॥३८॥

उद्यम

दूहिजै उद्यम दूध, जतन करि दही जमावै ।
 वलि परभात विलोड, उदिम सेती घृत आवै ।
 करि उद्यम सहु कोड, भला नित जिमें भोजन ।
 खवरि आणै खेपीयौ, जाइ नै केड भोजन ।

१ अडमट्टि कोडि सट्टि लख सतरै वलि सहस्र ।

उपरि मेलौ आठ सौ भार अठार वणम्स । १ ।

व्यापारि विणज विद्या विभव,

ज्ञान ध्यान धर्मसीख गिण ।

सहु काज करण उद्यम सिरै,

विणसैँ सहु इक उद्यम विण ॥ ३६ ॥

धरिजें मन धीरज्ज हाणि ह्वै म करे हा हा ।

लागा वहै ज लार, हांणि दुख त्रोट्टा लाहा ।

भाति अनैँ ऊभत्ति प्रगट दिन राति पटतर ।

ऊगें वलि आथमैँ निरखि रवि चंद निरन्तर ।

ग्रह राह परव आंयो ग्रसैँ, परगट देखि पारिखा ।

किण हीक देइ धर्मसी कहैँ, सहु दिन न हुवैँ सारिखा ।४०।

नारी विरहणी निरखि ताम कोकिल कुहकी घन ।

चद त्रिविध पुनि पौँन, मदन अति व्यापि लयौँ मन ।

वायस राहु भुयग रुद्र च्यारु अरि लखैँ ।

तिन कौँ करि हैँ नास बहुरि इक वात विशेषैँ ।

कोकिला कठ शशधर बदन पौँन स्वास पुनि मदन मन ।

मेरेहु एहुँ जिन ज्यान हुइ, लिखि-२ मेटण इण जतन ॥ ४१ ॥

पुण्य पाप पातिसाह चाउ सहु दिसि पग चल्ले ।

साच भूठ हुइ सचिव, हुस आछु दिसि हल्ले ।

ज्ञान ध्यान भ्रम गरब, पील चल्ले चिहु पट्टे ।

शम दम छल बल अश्र, अढी पग फिरैँ उवट्टे ।

चखु चलण ऊठ कोणे चलैँ,

प्यादा गुण मट पग पगि ।

सतरज सजण दुज्जण सजें,

जोड ख्याल धर्मगीह जगि ॥ ४२ ॥

फल किहा थी विण फूल, गाम विना मीम न गिणजें ।
 गुरु विण न हुवै ज्ञान, विगर पूजी किम विणजें ।
 पिया विना नहीं पुत्र, बुद्धि विण शास्त्र न वूमै ।
 भीत विना नहीं चित्र, सुदृष्टि विन वस्त न सूमै ।
 विण भाव सिद्धि न हुवै, रस विण न करै कोई रुख ।
 शोभा न काइ धर्मशील विण, सतोपह विण नहीं सुख ॥ ४३ ॥

१० वर्ण

ब्राह्मण क्षत्रिय वंश्य शुद्र, चिहुं वरण संभाली ।
 कदोई कुम्भार कठी मरदनीया माली ।
 तंबोली सुथार ठीक भैसात ठंठारु ।
 नव नारु इण नाम कहै हिव पाचे कारु ।
 गाछा सुनार छीपा गिणौं, मोची घाची इण महि ।
 धर्मसीह कहै निज निज धरम, समझौ वरण अडार सहि ॥ ४४ ॥

धन को सार्थकता

भाया भीड भाजता, पोखता उत्तम पात्रे ।
 प्रिया हुंस पूरता जावता तीरथ यात्रे ।
 वीवाहे विलसता दुज्जण जड़ काढण दावै ।
 संतोष तां सौण कविय मुख सुजस कहावै ।
 इण आठ ठाम खरच्यो उत्तम, मत चीहा पै आप मन ।
 साधिजै काज सु क्रियारथा, धन धन धर्मसीह सोइज धन ॥ ४५ ॥

मित्र

मिलता मुहा मुंह, हेज हियै मिले हीसै ।
 पल एक फेरया पूठ, नेह तिल मात न दीसै ।
 आरीसा जिम आज, मीत बहुला जग माहे ।
 कलि चातक जिम कोइ, नेह राखै निरवाहे ।
 मेह नै देखि पिउ पिउ मगन पिउ पिउ कहै पर पूठ पिण ।
 कीजीये मीत धर्मसी कहै, गुणवतौ कोइक गिण ॥ ४६ ॥

याचना

यश रस सिद्धि बुद्धि सिरी, सदा ए पाच सनूरै ।
 देह वसै देवता, दे कछा नासै दूरै ।
 शोक अने सन्ताप, पिंड आवै परसेवो ।
 भय कपणि गति भंग, निसत निज लाज न सेवो ।
 ताणतौ माण ताकै तिको, ऊंधै मुख सु आगणो ।
 लेखवौ दुरस सगले लखण, मरण सरीखो मार्गणो ॥ ४७ ॥

दान

राजा राखै रजा वांगिया प्रसिद्ध वधारै ।
 वैरी न करै वुरो, सेवक सहु काम सुंधारै ।
 भाइ सहु ह्वै भीर, गुणी जन कीरति गावै ।
 स्वासणि व्वै आसीस, सासरै रछौ सुहावै ।
 सहु भूत प्रेत ग्रह ह्वै समा, सुपात्रे ह्वै धर्मसी सही ।
 देखिज्यो दान दीधौ थकौ, नेट कठे निष्फल नहीं ॥ ४८ ॥

बुढापा

ल्यें हाथ लक्कड़ी, लाल मुखि पडं अलेखे ।
 लिच पिचती कडि लाक, लाज मन माहि न लेखे ।
 साभलता धर्मसीख, धीर्य विण माथो धुणें ।
 को न गिणें कायदो, खाटले पड़ियो खुणें ।
 लघुनीति लोभ लिग लिग लहरि, लाल लीख वलि लाल्हरा ।
 ले आइ साथि साते लला, जिका काड कीधी जरा ॥ ४६ ॥

बढना बुरा

वर वध्यो हिज बुरौ, अधिक उपद्रो ह्वं आगे ।
 वध्यो बुरौ वासदे, लाय जिण सेती लागे ।
 व्याधि वधी हिज बुरी, छिजै देही जिण छिण छिण ।
 वाद वध्यो हिज बुरौ, खसा खेधौ ह्वं खिण खिण ।
 वधियो बुरो ज सगलौ विसन, धर्मसीख धरिजो धुरा ।
 करिज्यो विवेक ज्युं ह्वं कुशल, ववा पाच वधिया बुरा ॥ ५० ॥

नीति

सैं मुख गुरु रैं सुजस, प्रसिद्ध कीजें परसंसा ।
 सगा सणेजा सैंण, वरणवो पूठा वासा ।
 सेवक री परसस, काम सिर चढया केडे ।
 सहु भाड परसस, छिड कहावण केड छेडै ।
 पूत री परसंस न करे प्रगट, प्रशंम त्रिय धकिया पछें ।
 धर्मसीह राजनीति हि धरे, न्याय विना वाता न छे ॥ ५१ ॥

खल

खल न तजे मन खार, जरा हुई वूढौ जोइ ।
 पीलो हुवो पाकि, तूस खारौ फल तोइ ।
 वूढौ हुओ विलाड़, मूपका तौ पिण मारे ।
 सखरी छां धर्मशीख, धेख जे अधिको धारे ।
 विष में मिठास न हुवै वली, दूधा ही सूं पुट दीया ।
 हठ ताणि आप न गिणै हितू कामूं तिणसूं हित किया ॥ ५२ ॥

बहू

मावटि सीरख सेज, पुंजिं घर आणें पाणी ।
 धोइ सहु वासण धरै, रुडा चूल्हें रंधानी ।
 पीसण खांडण प्रसिद्ध वले गो दूहि विलोवे ।
 जीमण राधि जिमाव लाज सु जिमें लुकोवै ।
 सिर गु थि विनय संतोपणी, सासू जिठाणी सहू ।
 कुल धर्मशील शाभा करण, बड़े कष्ट जीवें बहू ॥ ५३ ॥

जल

हुवै पिंड जल हुता, बेल जल ही ज वधारै ।
 जल सहु रो जीवन्न, सहु ब्रह्मंड सुधारै ।
 नीर तहा ही ज नूर, आव तिहा आवादानी ।
 सरस सुभिक्ष सुकाल, प्रचल वरसे जिहा पाणी ।
 धर्मसीह सरब कारण धुरा, अम्बर पृथ्वी पवन अगि ।
 पचभूत माहि अधिको प्रगट, जल उपरात न कोइ जगि ॥ ५४ ॥

गृह प्रवेश निषेध

लपट तजि प्रौलीयौ निगुण प्रभु नीलज नारी ।
 चौक्रीदार ज चोर, जोर वर जोध जुआरी ।
 ठिक विण वामण ठोठ भ्रमी मित्र कायथ भोलौ ।
 वलि रीसट वाणीयो, दूत बोले डमडोलौ ।
 विन सिद्धि वैद जोसी जडौ, धर्मसीख विण धारणै ।
 मानि जो वैण आणौ मता, बारै ही घर बारणै ॥ ५५ ॥

क्षमावत सौ खरो, सकज हुइ गाल्या सासै ।
 नेही तेहिज नेट, बिछड़्या भूरै वासै ।
 पडित तेहिज परखि, शास्त्र अरथ समभावै ।
 ज्ञानी तेहिज गिणौ, वस्तु पहिली ज वताव ।
 सांकड़ आइ पंडिया सही, सैण सोइ राखै सरम ।
 दातार छतै ऊतर न छै, धीर सोइ न तजै धरम ॥ ५६ ॥

सतरै से रावत, वरस तेपनौ वखाणाँ ।
 श्रावण सुदि तेरसै, जोग तिथि शुभ दिन जाणा ।
 राजै वीकानेर, सूरि जिणचन्द सवाइ ।
 भट्टारक बडभाग, गच्छ खरतर गरवाइ ।
 श्री विजयहर्ष वाचक सुगुरु पाठक श्री धर्मसी पवर ।
 बावनी गृह प्रस्ताव बहु, कीधी छप्पय कवित्त कर ॥ ५७ ॥

दृष्टान्त छतीसी



श्रीगुरु को शिक्षा वचन, दिल सुध धरि निरदभ ।
हितकारण सचकुं हुवैं, अड़वडताँ औठंभ ॥ १ ॥

हितूआ हितकारी हुवैं, वाकौ ही कोइ वैंण ।
पारिख रतन परीखता, निरखैं वाकी नैंण ॥ २ ॥

दूषण दीधैं दुरजणे, ओपे कवित असल्ल ।
लूअ भलकके लागतै, आवै स्वाद अवल्ल ॥ ३ ॥

दूजा नै सुख देखिनै, निपट दुखी हूँ नीच ।
सूकैं जव्वासो सही, वरिपा जलरइ वीचि ॥ ४ ॥

ध्रमसी कहै वधतैं धनै, त्रिसना वधै अथाग ।
धुरथी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिलिया आगि ॥ ५ ॥

स्वारथ अणौ ना सधैं, मित्र धरेता मेलि ।
माली फल पाम्या पछै, काटे पर ही केलि ॥ ६ ॥

मोटा री पिण पाति मै, नान्है काज कराय ।
काम पड्ये क्यु कोडिया, नाणा में न गिणाय ॥ ७ ॥

बल इकवीस विश्वा-वधइ, एका वीयै आइ ।
पातैं वैसे पाधरा, तौइ वारा बल बोलाय ॥ ८ ॥

मुखी सलामत पातिमै, तौ सकजा बोले सर्व ।
तिण ठामै हूँ सून्यथा, तौ गयौ सहूनौ गर्व ॥ ९ ॥

पग मेलहीजें पाधरा, वधीयों जो बहु वित्त ।
 निज निंदा थी कीध नृप, चीतारी दृढ चित्त ॥ १० ॥
 गुरु निदा करणी नहीं, माठौ देखे मग्न ।
 सेलग गुरु मदवसि सूअँ, पथग चापै पग्न ॥ ११ ॥
 पाप किया जायै परा, जो पछतावै जोइ ।
 गौसालौ स्वर्ग गयौ, अत समै आलोय ॥ १२ ॥
 दूजा द्विपावै दीप ज्यू, आप धरै अधार ।
 पहुचाया शिवपाचसै, खदक पोतै ख्वार ॥ १३ ॥
 बल सगलौ वैठौ रहें, देव हुवें दुख देण ।
 बारवती नगरी बलै, निरखै केसव नैण ॥ १४ ॥
 करि हितनै पीडा करे, ते तौ पुण्य तरक ।
 स्वर्ग गयौ श्री वीररा, खीला काढि खरक ॥ १५ ॥
 अवसर सभा अटकले, वायक वंधा संवाद ।
 दूहा दे जीतउ जती, वृद्धोवादी वाद ॥ १६ ॥
 सवला री हँ पृठि सिरि, निबला रौ रहै नीर ।
 चमर शक्र साम्हौ चढयौ, वासौ राखण वीर ॥ १७ ॥
 कोप वसै कारिज करै, बलि सोचै मतिवत ।
 इन्द्र दौड़ि लीधौ उररौ, वज्र भगति भगवंत ॥ १८ ॥
 धरम्यानै पिण तजि धरै, सहु वखतावर सीर ।
 इन्द्र चेडा नै अवगिणी, भयौ कोणिक री भीर ॥ १९ ॥
 जतन करें जो देवता, क्रूर मिटै नहि कर्म ।
 वीर श्रवण में कील कै, महापीड हुइ मर्म ॥ २० ॥

मोटा ही ध्रम काम मै, अधिकौ करै अदेख ।
 दसारण री रिधि देख नै, शक्र सज्यो सुविसेष ॥ २१ ॥
 मोटा रें पिण कष्ट मे, जतन नेह सहु जाय ।
 रात रमणी रान मै, नाखि गयौ नलराय ॥ २२ ॥
 राज लेंण माहे रहै, बडा तणी मति बक्र ।
 भरत मारण भ्रात नै, चपल चलायौ चक्र ॥ २३ ॥
 दान अदान दुहं दिसी, अधिक भाव री ओर ।
 नवल-सेठ नै फल निवल, जीरण नै फल जोर ॥ २४ ॥
 धरमी जे धरमैं धरे, निसचौ न तजै नेट ।
 चद्रवतसक ना चलयौ, थिर दिवालगि थेट ॥ २५ ॥
 दिढता धरमै देखिनै, भलौ करै सुर भाव ।
 हित जयू देवी हण्यौ, प्रभवा तणौ प्रभाव ॥ २६ ॥
 प्रापति होवैं पुण्यरी, वखत खुलै तिण वेल ।
 सगम पायस सग मे, मुनिवर संगम मेल ॥ २७ ॥
 दान सराहै देवता, चेला दीध विशेष ।
 मूलदेव नै राजपद, देवै दीधो देखि ॥ २८ ॥
 पापी नै दुख पाडिजै, तो इ पाप न तजत ।
 कालकसूरे कूप मै, मन सौ मारे जंत ॥ २९ ॥
 आप कष्ट अंग आगमै, पडित टालै पाप ।
 सुलस दया पाली सही, पग पोता रो काप ॥ ३० ॥
 मुनीसरा सिरि मोहरा, ताजा वाजै तूर ।
 अगज मृति आख्या भरी, श्री शय्यभवसूरि ॥ ३१ ॥

पण अपणौ नहि पालटै, धरमी धीरिज धार ।
 लाडू हरि लवधइ लह्या, तजिया ढंढण त्यार ॥ ३२ ॥
 वृत लीधौ ही ह्वै वृथा, करम उदय अधिकार ।
 वरस चौवीस गृहे वस्यो, मुनिवर आद्रकुमार ॥ ३३ ॥
 पतित थका ही परभणी, गुणी करै उपगार ।
 नर दश दश नंदषेण नित, बोधै वेश्या वार ॥ ३४ ॥
 काम विपम न सधै किम्ही, सो ल्यै शील सुधार ।
 चालणीयै करि सीचीयौ, नीर सुभद्रा नारि ॥ ३५ ॥
 रे कलियुग गज मत गरज, हुं हिज आज अवीह ।
 तुम्ह मद उत्तारण तपै, सकजौ जिन ध्रमसीह ॥ ३६ ॥

इति श्रीसद्गुरु शिक्षा दृष्टात षट्त्रिंशिका ।

परिहां (अक्षर वतीसी) वतीसी



काया काचे कुंभ समान कहैं क कौ ।
धाखै धेखी काल सही देसी धको ।
करवट वहतां काठ ज्युं आउखो कटै ।
परिहा न धरै तोइ धर्मसीख जीव नट-ज्युं नटै ॥ १ ॥

खमिजैं गालि हितूनी इम कहै ख खौ ।
रीस करी कहै तेह कहीजे हित रखो ।
आणा सैणा वैण सुं आख्या उपरैं ।
परिहा धर्म कहै सुख होइ धूअें ही धूप रैं ॥ २ ॥

गरथ पामी गुण कीजे इम कहे गगो ।
साहमी साधु सुपात्र संतोषीजै सगौ ।
लाधि छै जो लाछि कहै धर्म लाहल्यौ ।
परिहा सची राख्या सैण अपानै स्वाढ सौ ॥ ३ ॥

घड़ि माहे घड़िजाहे, आयु कहै घ घो ।
अमर न दीठौ कोई जीव अठा अघौ ।
पहिली को दिन च्यार दिन को पछै ।
परिहा आखर कहै धर्मसीह सही चालणो अछै ॥ ४ ॥

नेह वधै नहीं नेट, हुए अंगुल ढीहीयै ।
लुलिनमीयौ तो का मुं लोक लजा लीयै ।

गाठि हीयै धर्मसी कहै सुख मतां गिणौ ।
 परिहा औ गुण इणहिज ड डि थो आमण दूमणौ ॥ ५ ॥
 चकवा ज्युं चल चित्त, न दूजे कहे चचो ।
 पर वसि प्रीति लगाइ तलफिके क्युं पचो ।
 सिरज्यो हें सम्बंध किसु हा हा कियै ।
 परिहा धीरज धर धर्मसीह रखे हारे हीयै ॥ ६ ॥
 छक देखि खेलीजै एम कहो छ छै ।
 पछतावो जिण काज सही न हुवे पछै ।
 आखर जे धर्मसीह हुवै उतावला ।
 परिहा विणसाडे निज काज सही ते वाउला ॥ ७ ॥
 जोवन जोर गिणै नहीं केहनै कहै ज जो ।
 गरव चलें ता सीम हुवे देही गजौ ।
 धीरो रहे धर्मसी कहै हासी होइसी ।
 परिहां जोवन वीते कोइ न साम्हो जोवसी ॥ ८ ॥
 भगाइं म करै भूठ, कहै छै युं भ भै ।
 थै नहीं कोइ साखि दुखे देही दमै ।
 कूटै की परतीत न, साचो ही कहै ।
 परिहा रागा विना धर्मसी कहै चेजो क्युं रहे ॥ ९ ॥
 न धरो तिण सुं नेह, मिले नहीं जे मुखै ।
 दुपडौं दीसै दूर, अनै बोले दुखै ।
 आखर एह अछै जो इणहिज वेतरो ।
 परिहा चीतारै नहीं कोइ बवयो भाट चुलेतरो ॥ १० ॥

टलिये नहीं विवहार, ग्रही निज टेक रे ।
 वात सह नौ दीसे एह विवेक रे ।
 निखरौ ही धर्मसी कहै ल्यो निरवाह रे ।
 परिहा महादेव विप राख्यो ज्यु गल माहि रे ॥ ११ ॥
 ठाम देखि उपगार करो कहियौ ठठै ।
 तत्त तणी तू वात म नाखि जठे तठै ।
 कीजै नहीं धर्मसी उपगार कुजायगा ।
 परिहा सीह नी आखि उघाड़्या सीह ज खायगा ॥ १२ ॥
 डेरा आइ दीया दिन च्यार कहे डडौ ।
 गयो हस तव काय बलो भावै गडौ ।
 वाय वाय मिल जायें, मट्टी मट्टीया ।
 परिहा खूब किया धर्मसीह, जिणें जस खट्टीया ॥ १३ ॥
 डुँढो ढाढस लागि, दोस मिस कहै ढ ढो ।
 पारद गोली पाक करौ पोथा पढो ।
 जंत्र मंत्र बहु तत्र जोवो जोतिष जडी ।
 परिहा घाट बाध धर्मसीह न होइ तिका घड़ी ॥ १४ ॥
 नहु लघीजै लीह, एक मावीत री ।
 राखीजै बलि लीह सदा रज रीति री ।
 ईस तणी इक लीह धरो धर्मसीह अखी ।
 परिहा राणें आखर न्याय त्रिणे रेखा रखी ॥ १५ ॥
 तत्त जाणी इक वात तिका कहै छै त तो ।
 माया संचै सुं व तिको खोटौ मतो ।

खाडि गाडि राखी ते कोइ खायसी ।
 परिहा थेट नेट धरती में धूड़ ज थाचसी ॥ १६ ॥
 थिर न रहीं जगि कोइ इसो बोले थ थो ।
 फोगट फिरि फिरि काइ माया जालें फथो ।
 टलै केम धर्मसीह कहै आयौ टांकड़ौ ।
 परिहा माडी आप जंजाल उल्लूधौ माकडौ ॥ १७ ॥
 देइ आदर दीजैं दान कहै द दौ ।
 माणस रैं धर्मसी कहै आदर सुं मुदौ ।
 पाणी ते पिण दूध गिणो हित पारखी ।
 परिहां आदर विण साकरही काकर सारिखी ॥ १८ ॥
 धरौ सीख मोटानी एम कह्यो ध धै ।
 बालक जीव्या हंस पड्या घाजै वधै ।
 शुकै दीधी सीख कढ़ी काना तलै ।
 परिहा राज गमाइ गयो वलिराइ रसातलै ॥ १९ ॥
 न करो मन मे रीस कह छै युं न नौ ।
 मानी छै जो रीस तोइ वडगा मनो ।
 ताण्या अति धर्मसीह कहै तूटै तणी ।
 परिहा राइ पड्यां मन मोती जाइ न रेहणी ॥ २० ॥
 परदेसी सुं प्रीति म करि कहीयो प पे ।
 जोरै उठी जाय तठा सुं तन तपै ।
 वार वार चीतारैं धर्मसी वक्तियां ।
 परिहा छूटै नयणा तीर भरायै छक्तिया ॥ २१ ॥

फल दीधं फल होइ कहै छै युं फ फौ ।
 निफल पहिली हाथ किसुं आणै नफो ।
 सेवा कीधा ही ज सही कारिज सरै ।
 परिहा दाखै धर्मसीह दिह्ल ठरै तो द्वाफुरै ॥ २२ ॥
 बोल्या मोटा बोल किसुं कहियो बवे ।
 दीसैं आयौ दाव तठै नचो दबै ।
 साच नहीं जिणरें मन तिणसुं सरम सी ।
 परिहा धँठे माणस सुं हित केहो धर्मसी ॥ २३ ॥
 भलपण कीजैं काइक एम कहो भ भौ ।
 लोका माहे जेम भली शोभा लभौ ।
 जीव्या रौ पिण सार इतौ हिज जाणीयै ।
 परिहा उपगारें धर्मसी कहै काया आणीयै ॥ २४ ॥
 मित्राइ रो मूल कहै धर्मसी म मौ ।
 नयणे देखौ मित्र तरै पहिली नमौ ।
 दीजे लीजे कहीजे सुणीजे दिह्ल री ।
 परिहा खावै तेम खवावै प्रीति तिका खरी ॥ २५ ॥
 या यौ कहै यारी करि तिण हीज यार सुं ।
 पडीया आपढ माँहि बुलावै प्यार सु ।
 पूरौ प्रीतो ते जे तलफै तिण पगा ।
 परिहा सुख मे तो धर्मसी हुवे सहु को सगा ॥ २६ ॥
 रक राउ इक राह चलै बोले र रौ ।
 द्वेष राग धर्मसी कहै एता क्युं धरौ ।

एता नव नव रग वणावै अग सुं ।
 परिहा राख सहुनी होस्यै एकण रंग सुं ॥ २७ ॥
 लोभ गमावै शोभ कहै छै यु ल लौ ।
 भाखै लोक सहु को लोभी नहीं भलौ ।
 लालच वसि धर्मसी कहै थोड़ो लग्गीयै ।
 परिहा मान महातम मोह रहै नहीं मग्गीयै ॥ २८ ॥
 वात वणी वणसाड हुवै कहै छै व वो ।
 निखरी नीकलि जाड उदेग हुवै भवो ।
 बहु गुण छै धर्मसी कहै थोड़ो बोलीयै ।
 परिहा थोड़ी वस्तु सदाड मुंहगी तोलीयै ॥ २९ ॥
 शीख न माने सुंआलारी को सही ।
 कलियुग माहे खँडै री पृथ्वी कही ।
 आंकत्रीयो ते लाठी ले ने जरडियो ।
 परिहा मान्यो अखरा मे पिण शशियो कोठा मुरडियो ॥३०॥
 क्षेत्र सहे खण धार खरै रिण नाखिसै ।
 खेले खीले वास खले खेत्रे खसं ।
 पेट काज धर्मसीह इता दुख पाडीयै ।
 परिहा फाड्यो पेट सुन्यायै ख खे फाडीयै ॥ ३१ ॥
 सत्त म छाडौ सैण कह्यो छै यु समै ।
 कष्ट पडे ते ईस कसोटी मे कसै ।
 जोवो सत्ते सिद्धि हुड विक्रम जिमी ।
 परिहा साकौ राखै सोइ सही कहै धर्मसी ॥ ३२ ॥

हरखै हियो जिण नै देखि कहै ह हौ ।
 पूरव भव री प्रीति कइ तिणसैं कहौ ।
 हेत कहै धर्मसीह- छिपायौ ना छिपै ।
 परिहा चु वक मिलिया लोह तुरत आवी चिपै ॥ ३३ ॥

संवत सतरैसार वरस पेंत्रीस (१७३५) में ।
 जोड़ी अखर बतीसी श्री जोर में ।
विजयहरष जसवास सुं लोका मे लहै ।
 परिहा करि कंठ प्रस्तावी, धर्मसी जे कहै ॥ ३४ ॥

सवासो सीख

श्री सद्गुरु उपदेश सभारो, धर्मसीख ए सुबुद्धि धारो ।
विधि सहु माहि विवेक विचारो, सगला कारिज जेम सुधारो ॥१॥
प्रथम प्रभाते शुभ परिणाम, नित लीजे श्री भगवंत ना नाम ।
धणी रा स्वामिधरम मे रहिजै, कथन न मुख थी भूठ कहिजै ॥२॥
धरम दया मन माहे धार, अधिको सहु मै पर उपगार ।
वात म करि जिहा वसिवौ वास, वैरी नौ म करे विश्वास ॥३॥
वरजे सन स ठामि व्यापार, चालें अपणें कुल आचार ।
माइतारी आण म खंडै, मोटा सेती हठ म मंडै ॥४॥
मगडे साख म देजे भूठी, आप वडाइ न करि अपूठी ।
म लडे पाडोसीसुं मूल, अपणा सुं होजे अनुकूल ॥५॥
सजि व्यापार तुं पुजी सारू, अटकलि ठाम देइ उधारू ।
रखे वधारे ऋण नै रोग, लखण लीजै ज्युं हसै न लोग ॥६॥
वसती छेह म करिजे वास, पापी रै मत रहिजै पास ।
ऊचौ मत सूए आकाश, वित्त छतैं म करै देखास ॥७॥
दिल रौ खी नै भेद न दीजै, कदे ही सामै पंथ न कीजे ।
सुत भणावे डर डाकर साधे, म चाढे लाड म मारै माथै ॥८॥
नान्हा ते मत जाणे नान्हा, छिद्र पराया राखे छांना ।
अविकारी म करे अटिखाइ, भंभेरे मत भूप भखाइ ॥९॥

राजा मित्र म जाणे रंग, सुमाणस रो करिजे संग ।
 काया रखत तपस्या कीजै, वान वलै धन सारु दीजै ॥१०॥
 जोरावर सुं मत रमे जुआँ, करिजे मत घर माहे कुआँ ।
 वंदा सुं मत करजे वेंर, गालि बोले तो ही न कहै गैर ॥११॥
 नारि कुलक्षण नै धन नास, हलकौ पडीयो पाम्यो हास ।
 अति पछतावै चित्त उदास, पच मे पाचे मत परकास ॥१२॥
 अमल न कीजै होडें अधिका, दरा करीजै घर मे विधिका ।
 गरथ परायौ तुं मत गरहे, निखरै पाडोसै पिण न रहे ॥१३॥
 दोड विद्वता एकलौ मत देखे, धणीनै वुरौ म कहिजे घेखे ।
 जूपे मत मोटा नी जोडे, छोकरवाद री रामत छोडे ॥१४॥
 गाम चलता सुकन गिणीजे, हणतौ विण किणही न हणीजै ।
 विण ग्रहणै दीजे मत व्याज, निश्चै वरस नो राखे नाज ॥१५॥
 दुसमण ने दुसमण मत दाखै, रीस हुवै तोही मन राखै
 खत्त लिखावै मत विण साखे, माण पोता नौ गालि म नाखे ॥१६॥
 लाज न कीजै नामै लेखे, वद्धारै परतीत विशेषे ।
 धरिजे मेल ज गाम धणी सुं, इकतारी कर अपणी स्त्री सुं ॥१७॥
 चलता वसता सहु ची चीतारे, वाल्हा सैण मता वीसारे ।
 जवाव करतौ रातै जागै, न हु सुइजै अगे नागे ॥१८॥
 जे करतो हुवै चोरी जारी, उण सु अति नहीं कीजै यारी ।
 वसत न लीजै चोरी वाली, लूवै मत तुं निबली डाली ॥१९॥
 दे फुका म बुझावै दीवौ, पाणी अणझाण्या मत पीवौ ।
 छीक कीया कहिजे चिरजीवो, रुस्यौ मनावे फाटो सीवौ ॥२०॥

म करे रवि साम्हो मल मूत्र, लखण म करिजे लावा लूत्र ।
 पाप तजे तु सकजें पूत्र, सांभलिजे शुभ शास्त्र मूत्र ॥२१॥
 मुंडा सुं पिण करे भलाड, परिहरि पाचे जेह पलाड ।
 वैठा वात करें वेड् जौ, तेड्या विण तिहा म हुवे तीजौ ॥२२॥
 कारिज सोच विचारी कीजें, खता पड़्या ही अति मन खीजें ।
 सुधयं काम कहे सावास, न करे याचक निगट निरास ॥२३॥
 न करे मूल किण हि री निंदा, छावीजें वलि गुरु रा छंदा ।
 नाम लोपी नै न हुजें निगरा, नवि थापीजै कीडी नगरौ ॥२४॥
 आदर दीजै माणस आये, जिहा नहीं आदर तिहां मत जाये ।
 हसजें मत विण कारण हेत, कपडौ पिण म करे कुवेत ॥२५॥
 बहु विषमे आसण मत वेसैं, परघल अणजाण्या मत पेसे ।
 पाणी अति ताणीय न पीजै, सारौ ही दिन सोइ न रहीजै ॥२६॥
 वाधे मत मल मूत्र अवाधा, खाजे मत फल जीवा खाधा ।
 वसत पराइ मत्तिय विछोडें, छानी पर नी गांठ म छोडें ॥२७॥
 जिमिजें अगले भोजन जरीयै, शत्रु न हुजै कारज सरीयै ।
 पेने मत अण कलीयै पाणी, तोडे प्रीति अता मत्ति ताणी ॥२८॥
 घर मे मत खा फिरतो घिरतो, न कहे मरम बोलीजे निर तौ ।
 तारुं सु मत तोडें तिरतौ, वडा रै काम म थाए विरतौ ॥२९॥
 पंथ टलें तव लीजें पूछ, मोटा साख्ही म मौडे मुंछ ।
 तुच्छ वचन म कहै तुंकार, मत वेमै वलि ठासणी मार ॥३०॥
 भोजन उपमा म कहे सुडी, अपणी जाति विचारे ऊंडी ।
 जिण सामलतां उपजे लाज, एहो म कहे वैण अकाज ॥३१॥

कीजे नहीं पग पग कचाट, अणहुंतौ उपजे ऊचाट ।
 माहिला सु न हुजे मन मठ्ठइ, हाणि न कीजे अपणे हठ्ठे ॥३२॥
 टेढ़ा न हुजे जंगी टट्टू, ललचाये मत थाए छट्टू ।
 पडित मूरख कीजैं परिखा, सगला नै मत कहिजैं सरखा ॥३३॥
 न कहें फिर फिर अपणो नाम, ठिक सु वेसे देखी ठाम ।
 सुं व नो नाम न लेइ सवारौ, कोई हुसी अणहुंतौ कारौ ॥३४॥
 वरजे पर ही वेट वेगार, आप वसे जिहा ह्वै अधिकार ।
 दुटपी वात कहै दरबार, सहु नौ समझीजैं तत सार ॥३५॥
 सीख सवासो (१२५) कही समभाय, साचवता सहुनै सुखदाय ।
 थिर नित विजयहर्ष जस थाय, इम कहै श्री धर्मसी उवभाय ॥३६॥

गुरू शिक्षा कथन निसाणी

इण संसार समुद्र कौ ताकैं पेलौ तट्ट ।

सुगुरू कहै सुण प्राणीयां तु धरिजै धर्म वट्ट ॥ १ ॥

सुगुरू कहै सुणप्राणिया, धरिजै धर्म वट्टा ।

पूरव पुण्य प्रमाण तैं मानव भव खट्टा ॥

हिव अहिलौ हारे मता, भाजे भव भट्टा ।

लालच मे लागै रखै, करि कूड कपट्टा ॥ २ ॥

उलझें नौं तु आप सु ज्युं जोगी जट्टा ।

पाचिस पाप संताप मे ज्युं भोभरि भट्टा ।

भमसी तुं भव नवा नवा नाचै ज्युं नट्टा ।

ऐ मंदिर ऐ मालिया ऐ ऊचा अट्टा ॥ ३ ॥

हयवर गयवर हींसता, गौ महिपी थट्टा ।

लाछ दु लीपी भूवका पहिंग सु घट्टा ।

मानिक मोति मूदड़ा परवाल प्रगट्टा ।

आइ मिल्या है एकट्टा जैसा थलवट्टा ॥ ४ ॥

लोभे ललचाणा थकौ, मत लागि लपट्टा ।

काल तकै सिर उपरै करसी चटपट्टा ।

ले जासी इक पल में ज्युं वाउ छलट्टा ।

राहगीर सध्या समै सोवै इक हट्टा ॥ ५ ॥

दिन उगो निज कारिजे जाये दहवट्टा ।

त्युं ही कुटंव सवै मिल्यौ मत जाणि उलट्टा ।

एहिज तो कुं काढिसी करि वेस पलट्टा ।

साथि जलैगे वपड्डे दुइ चार लकुट्टा ॥ ६ ॥

स्वारथ का संसार है विण स्वारथ खट्टा ।

रोग ही सोग वियोग का सबला संकट्टा ।

दान दया दिल मे धरो दुख जाइ दहट्टा ।

धरम करौ कहै धरमसी सुख होइ सुलट्टा ॥ ७ ॥

वैराग्य निसाणी

काया माया कारिमी, चिहुं दिन तणी चट्की,
इण माहे तुं आत्मा, उलमै रखे अटक्की ॥ १ ॥

इण माहे तुं आत्मा उलमै न अटक्की,
पहिली तौ पोता तणी, करि शोध घटक्की ।
कूड धूड री कोथली मद मैल मटक्की,
माली मूढे पंडिते, मंभेडि मटक्की ॥ २ ॥

जोध विरोध वृथा करै, कन्है काल कटक्की,
मान मछर मन जाणि मत, मृति नैण मटक्की ।
ठग माया भूठी ठटें खल रूप खटक्की,
फोगट जाइस फु कि तुस जाइ फटक्की ॥ ३ ॥

एकणि लोभै आवता छए जाय छटक्की,
धरम सरम हित धीरता गुण ज्ञान गटक्की ।
मन मातै मृग ड्युं भमै, ब्रग साथि वटक्की,
पर निंदा क्षेत्रे पडैं हिव राखि हटक्की ॥ ४ ॥

नाच्यो वेसे नव नवे धरि रीति नटक्की,
पुण्यै नर भव पामियौ भवे भव भटक्की ।
सुगुरू वचन सहकार री लुलि लुवि लटक्की,
इण विलग्या सुख फल अवल त्रुटे न टक्की ॥ ५ ॥

नंदे माया मेलवी पिण नेट न टिककी,
 वाविसु क्षेत्रै ज्युं बले वधै रीत्ति वटक्की ।
 श्रीधर्मसी कहै ज्ञान री अमृत गुटक्कि,
 पीयां दुख जाये परा, सुख होई सटक्की ॥ ६ ॥

—:❀:०:❀:—

उपदेश लिखाणी

नोह वसै केइ मानवी, माड्या घोलमघोल,
 गमियो नर भव गाफिलै, वयविन धरम विटोल ॥१॥
 विण वरमे ते जीवड़ा, वय सर्व विटोली,
 दस मासां यिति उदर री, बहु दुख मे बोली ।
 कोडि अठावीस कट तें खमिया इण खोली,
 जनम्या दुख हुंता जिके, भूल्या भ्रम भोली ॥ २ ॥
 मातां धोतां त्रमल, सुलरायौ भोली,
 हालरि हुलरावियौ, हीडोल हिचोली ।
 बलि रमीयौ अठ दस वरस तुं बालक टोली,
 परणाचौ तुं नड पछें दयिता हुइ दोली ॥ ३ ॥
 मगर पचीसी माणतौ, करै काम कल्लोली,
 गाहड मे वुमे घणु. गिलि मफरा गोली ।

धन खाटन धपटै धरा, धंधै धमरोली,
 लेता देता लालचे लुब्धो लपचोली ॥ ४ ॥
 मावीता ही ना मनै दुख चै दंदोली,
 गरहै न सरै का गरज नाणें विण नौली ।
 परहा सडिया पान ज्यु तजीया तंबोली,
 पूता नवा नव पान ज्युं पाले पपोली ॥ ५ ॥
 छहु रितु मद मातौ छिलै, छवि छाका छोली,
 अफल गमावै आउखो, ठाली ठग ठौली ।
 उडिसी सास अचाणरौ डिगसी डमडोली,
 आभ्रण सगला ले उरा करै काया अडोली ॥ ६ ॥
 फूक्यौ लकड़ फूस मे, होइ जाणे होली,
 विण भानें डण जीव री, वय सगली वोली ।
 आदर पर उपगार हिव मन आणि इलोली,
 सुखदाइ धर्म सीख सुणि तत लीजै तोली ॥ ७ ॥

वैराग्य सभाय

ढाल—मुरली वजावै जी आवां प्यारो कान्ह—
 जोवनीयो जायै छै जी लेज्यो काइक लाह ।
 परवत श्री उतरतौ पाणी, कहौ फिर चहै न काह जो० ॥ १ ॥

चित्त धरज्यो धर्म चाह, यौवनीयौ ॥आकणी॥
 च्यार दिना री एह चटक छै नेट नहीं निरवाह ॥जो०॥
 यौवन रूप अथिर ए जाणौ, ज्युं वीजली जल वाह ॥जो०॥२॥
 भव इण जो तुं करिस कमाइ, (भलाइ) तौ सहु करिस्यै सराह ।
 बल चलिस्यै नहीं आये वूढापा, रोकै चंद ज्युं राह ॥जो०॥३॥
 पाको पीलौ पान पीपल नो, थिर न रहै इक थाह ॥जो०॥
 ज्युं आया त्यौ सगला जास्यै, सिरखा रंक पतिसाह ॥जो०॥४॥
 रग पतंग तणै मत राचौ, काचौ घट कलि माहि ॥जो०॥
 कहै धर्मसी भलपण करिवा, आदर करज्यो उमाह ॥जो०॥५॥

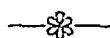


वैराग्य सभाय

करिज्यो मत अहंकार ए तन धन कारिमा,
 हिव लही नर अवतार तु आलै हारि मा ।
 वावरीयउ नहीं हाथ जिणइ इण वार मा,
 माणस हुइ दस मासे मारी भार मां ॥ १ ॥
 आचरिज्यो उपगार तरुण वय आज री,
 दिन दिन जास्ये देह जरा ये जाजरी ।
 उठणन हुस्यै आय काय किण काजरी,
 सत्त नही नही स्वाद ज्युं वोदी वाजरी ॥२॥

ठगै काल आउ धन किम करि ठाहरै,
 सिंहा री जिम छानो माखण साहरै ।
 कोइ जाणे नहीं ले जास्यै काहरै,
 वैगा होइ चढो हिव किण हिक वाहरै ॥ ३ ॥
 दोइ दोड तरवार कटारि दावता,
 जोरावर जोधा करै जे जावता ।
 करता मौजा फौजा माहि फावता,
 सुभट तिकौ पिण काल न राख्या सावता ॥४॥
 जड़ीयउ कुविसन जीवज्यु तणीए ताकड्डी,
 फ़ैलैं लोका माहि कुजसनी फाकडी ।
 पापै तो पिण राचि रह्यौ हठ पाकडी,
 पीतौ दूध विलाड़ मिणै नहीं लाकडी ॥ ५ ॥
 जीव जंजाले उलझ्यो ज्युं जोगी जटा,
 पाचै पाम मभार ज्युं भोभर मे भटा ।
 नाणैं मन में धरम करै साटा नटा,
 घेरी जास्यै काल जेम वाउलि घटा ॥ ६ ॥
 भव भव भमते परवसि प्राणी वापडैं,
 कोडि सहा जो कष्ट सूजी वसि कापडै ।
 विलवै जीव घणुं ही तलफैं तापडै,
 आखर अपणी कीध कमाइ आपडै ॥ ७ ॥
 परनै वचै सचै पोते पापरो,
 ए तुं पोखे पिंड नहीं ते आपरौ ।

खोटो चोर वसै जिण मै मन खापरौ,
 तप हथियारे तोडि तुं तिण रो टापरौ ॥ ८ ॥
 सुहिणा माहें राक हुआँ राजा सही,
 मन माहे खुसीयाल हरष मावें नहीं ।
 मोजै पहिस्व्या माणिक मोती मुंढडा,
 जागी जोवै गोहें घर रा गूढडा ॥ ९ ॥
 जुड़ियौ तिम संवध सहु सुहिणा जिसौ,
 वीखरता नहीं वार गरथ गारव किसौ ।
 देइस जोतुं कान सुगुरू वचना दिसौ,
 तौ दुख नहीं जिण ठाम लहिस थानकतिसो १०
 क्रोध मान माया बलि लोभ मता करौ,
 दान शील तप भाव अमल मन में धरौ ।
 विजयहरप जसवास सु लोकां मे वरो,
 धरमसीह कहै एक धर्म मन से धरौ ॥ ११ ॥



हितोपदेश स्वाध्याय

राग सामेरी

चेतन चेत रे चलि मा चपलाइ, सुगुरू कहै छै साचौ ।
 संवल काइ क लेजो साथे, काया घट छै काचौ । चेतन । १ ।

पूर्व पुन्यइ नर भव पायौ, उत्तम कुल पिण आयौ ।
 सगली वात विशेषे समझ्यौ, सुकृत सच सवायो । चे० । २ ।
 बहै जीव बलि भूठौ बोलै, राखै पर धन राचै ।
 मैथुन सैवे परिग्रह मेले, परिहरि आश्रव पाचे । चे० ३ ।
 च्यार कपाय तिके चकचूरौ, बंधन त्रोटो वेही ।
 कलह कलंक न करि तु निंदा, करै अरति रति केही । चे० । ४ ।
 परिहरि तुं परही पिसुनाइ, माया मोस म धारै ।
 मन माहे मिथ्यात न आणै, ए छै पाप अठारै । चे० । ५ ।
 म रमे जूअँ आमिष मदिरा, बलि वेश्या नी वाते ।
 आहौडौ चोरी पर स्त्री, सवला कुविसन साते । चे० । ६ ।
 बाइ माइ आई वावड, सहु संसार सगाई ।
 स्वारथ काज मिल्या छै सगला, साथै धरम सखाइ । चे० । ७ ।
 सामझ भेला आइ सराहइ, हेकण हाटइ हूया ।
 परभाते पौताने पथे, जाय सहु को जूआ । चे० । ७ ।
 जोरै रीस रहै छै जलतौ, तल तौ छाती ताती ।
 जोता जोता में जलि जासी, वीतइ तेलइ वाती । चे० । ८ ।
 सींग माडइ छइ सहु सु साम्हा, ऊंचौ रहै छै ऊडी ।
 तूटी भोरि किहा ही पडसी, गुडथल खाती गूडी । चे० । १० ।
 मोसै लोक घणा करि माया, वगलौ होइ अवोलो ।
 दोलै ताकि रह्यौ छै दुस्मण, सीधे हाथ गिलौलौ । चे० । ११ ।
 लोभै लागौ खाय नै खरचै, राक मनै लछि राखी ।
 घाटौ मिलीयां हाथ घसेलौ, महु त्रुटै जिम माखी । चे० । १२ ।

जतने राखीजै जीवाणी, पाणी छाणे पीजै ।
 सहु ठामै परिणाम द्यारा, रूडी विधि राखीजै । चे० । १३ ।
 दया धरै ते न हुवै दुखीया, विनय किया जस वारू ।
 सद्गुरु सीख कहै छै सखरी, साचवर्णी तुम्ह सारू । चे० । १४ ।
 सहु ससार अथिर समझी नै, कोई प्रमादम करिजो ।
 विजयहरप सुख साता वंछो, धरम सीख चित्त धरिज्यौ । चे० । १५ ।

—:—:

सप्त व्यसन त्याग सभाय

ढाल-चतुर विहारी रे आतमा

सात विसन नौ संग रखे करौ,
 सुणि तेहनो सु विचार । विवेकी ।
 सात नरक ना भाइ सातए,
 आपइ दुख अपार । विवेकी सा० ॥ १ ॥
 प्रथम जूआ नै विसन - पड्यां थका,
 पाडव पाच प्रसिद्ध । विवेकी ।
 नल राजा पिण इण विसने पड्यां,
 खोइ सहु राज ऋद्धि । विवेकी सा० ॥ २ ॥
 वीजै मास भखण अवगुण घणा,
 करि पर जीव संहार । विवेकी ।

महाशतकनी नारि रेंवती,
 नरक गड निरधार । विवेकी सा० ॥ ३ ॥
 तीजो मडिरापान व्यसन तजि,
 चित्त धरी वलि चाहि । विवेकी सा० ।
 दीपायन ऋषि दूहव्यो जादवै,
 द्वारिका नो थयो दाह । विवेकी सा० ॥ ४ ॥
 चौथे विसने वैश्या नै वसै,
 लोक में न रहे लाज विवेकी ।
 कयवन्नादिक नौ गयो कायदौ,
 कुविसन विणशौ काज । विवेकी सा० ॥ ५ ॥
 पाप आहेडे कुविसन पाचमै,
 प्राणी हणिय प्रहार । विवेकी ।
 मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो,
 पहिली नरक मंभार वि० सा० ॥ ६ ॥
 छठे चोरी नै कुविसन करी,
 जीव लहै दुख जोर । वि० ।
 मूलदेव राजाये मारीयो,
 चावौ मंडक चौर । वि० । श० ॥ ७ ॥
 परत्रिय सगत कुविसन सातमै,
 हाणि कुजस बहु होइ । वि० ।
 राणै रावण सीता अपहरी,
 नास लंका नो रे जोय । वि० । सा० । ८ ।

इम जाणी भव्य प्राणी आदरो,

सीख सुगुरु नी रे सार । वि० ।

इण भव पावइ आणद अति वणा,

कहै धर्मसी सुखकार । वि० । सा० ॥६॥

—:०:—

तम्बाकु त्याग सभाय

ढाल-प्राज निहेजो दीसी

तुरत चतुर नर तम्बाकु तजौ, इण मे दोग अनेक ।
 विरती करौ पाछौ मन वालिनै, वारू धरिय विवेक ।१। तुरत०
 स्वाद नहीं इण माहै सर्वथा, माहै नहीय सिठास ।
 दूषण देखे तो पिण नवि तजै, पडियौ विसन नै पास ।२। तुरत०
 कुटड एह अछौ छकायनौ, सुंस करौ मन शुद्ध ।
 पोतै पुण्य हुवै तो तुम पियौ, दही घृत साकर दूध ।३। तुरत०
 होठ विन्हेइ दान काला हुवै, वलिमुखि भुंड़ी वास ।
 वलै तम्बाकु तिम छाती वलै, सोपायै तिम स्वास ।४। तुरत०
 नइ एठी मुख बालै नविगिणै, काइ जात कुजात ।
 पर नौ थूक तिकौ मुंह मे पडै, विसन तणी ए वात ।५। तुरत०

ढाल (२) कम परिक्षा करण लु वर चलयौ । रहनी ।

मूद्धम पाचै काय संसार मे रे. ठावा सगली ठाम ।

धुअै करि नै तेह धुखाइयै रे, अधिकी हिंसा छै आम ।६। तुरत०

वनस्पति फुलणि वरसात मे, उत्पति जीव अपार ।
 पाणी तम्बाकू नौ जिहा पडैरे, सहुनो होइ संहार ।७। तुरत०
 चिलम भरै हाथा सुं चोली नै रे, अंधारा में आइ ।
 केइ कीड़ा माखी कथूआ रे, माहि घणा मसलाइ ।८। तुरत०
 जाणै नहीं छै तुं हिव जीवड़ा रे, प्रकट करै छै पाप ।
 वैर पौतानौ ए सहु वालिस्यै रे, ए दुख सहिस तु आप ।९। तु०
 तोवाकू छै नामे तेहनै रे, तंवाखू वलि तेम ।
 नाम तणौ पिण अरथ भलौ नहीं रे, कहौ पीवे गुण केम ।१०। तु०
 वजर पीयै ते वजर हीयौ हुवै रे, वज्र करमी कहिवाय ।
 वज्रलेप लेपायै ते वली रे, नाम द्वियौ वज्र न्याय ।११। तु०
 पर न आदर करि नै पावता रे, पापै भरियै रे पिड ।
 आरंभ ते पिण लागै आपनै रे, पछइ अनरथ दड ।१२। तु०
 पुन्य सयोगे नर भव पाभियौ रे, श्रावक नौ कुलसार ।
 विसन तम्बाकू नो तुम्है वारज्यौ रे, इण मे पाप अपार ।१३। तु०
 एसाभलि नै काइक ओसरै रे, जेह हुवै भव्य जीव ।
 धर्मनी सीख धरौ कहै धर्मसी रे, ज्यु सुख लहौ रे सदीव ।१४। तु०

रात्रिभोजन सहाय

ढाल-केसरीयों हाली हल सड़ें हो

कर जौड़ि कामण कहैं हो, कंत भणो सुखकार ।

भोजन रात्रि नहीं भलौ, इण माहे हो इण में दोष अपार ।

पिउ रात्रिभोजन परिहरौ हो,

सहु माहे हो सहु मे ए धर्म सार । पि०

वलि मन सुं हो मन सुं जोइ विचार । पिउ ॥ १ ।

आहार माहे आवता हो, जीव इता दिन ज्यान ।

कीड़ी तो निरवुद्धि करै,

वलि माखी हो माखी वमन विधान । पि० ॥२।

कोठ करै कुलियातड़ो हो, जुंअ जलोदर जेह ।

कांटौ फाटौ काकरौ, तिम वीधैं वीधैं हो तालुओ तेह । पि० ॥३।

आवी चाल गलैं अडै हो, साद रहैं ग्रहैं सोष ।

जोवौ थे निस जीमता, ए तो दीसे हो दीसे

परतिख दोष । पि० ॥ ४ ।

पंच महाव्रत पाखती हो, ए छट्टो व्रत अँन ।

पालैं जेह भली परं, जगि जाणो हो जाणो ते शुद्ध जैन । पि० ॥५।

शिव पिण ते चौमास मे हो, जीमैं नहीं निशि जाण ।

इण व्रत लाभ घणो अछैं, इम अधिकैं हो अधिकौ हिज

फल आण । पि० ॥ ६ ।

साभलियै शिव शासनै हो, सहु मान्या नहीं सुस ।

वनमाला लखमण भणी,

इण सुसै हो दीध विदा भली हूस । पि० । ७ ।

सूरज आथमियै ही हो, अभख समौ अनपान ।

व्रत पालै मन वालि नै सुख पामै मोक्ष प्रधान । पि० । ८ ।

हितकारी सहु मे हुवे हो, एह भलौ उपदेस ।

श्रीधर्मसी कहै साभलौ,

ग्रहि लेज्यो हो लेज्यो ज्युं गुरू सेस । पि० । ९ ।

:—:—:

औपदेशिक पद

(१)

राग—भैरवी

ज्ञान गुण चाहै तो सेवा कर गुर की ,

घृत नाली जैसी जाकी गाली घुरकी ।

• कोड पढौ हिन्दुगी को कोऊपढौ तुरकी ,

इक गुरू संगकुलफ खुलै उर की । १ । ज्ञा० ।

जानतौ न अच्छर सो जानै वानी सुर की ,

प्रगट वचनसिद्धि सिद्धि शिवपुर की । २ । ज्ञा०

दिन सुध भजि तजि मुर का दुर की ।^१

धर हित धारि धरमसीख धुर की । ३ । जा० ।

(२)

राग—वैलाउल

सुग ग्यानी सभाल तुं अब अप्पा अप्पणा ;

निसनेही सुं नेह सों विनु त्रैहै वपणा ।

स्वारथ को संसार है सुख जैसा सपना ,

च्यार घड़ी की चटक है ज्युं तिलका तपना । २ । सु० ।

धीरज आऊ छिन छिनै ज्युं करवत कपना ;

धरि सुबुद्धि श्रीधरमसी थिर शिव पढ थपना । ३ । सु० ।

(३)

राग—वैलाउल

गुणग्राहक सो अधिको ज्ञानी, अवगुण ग्रहिवो सोइ अग्यानी
अवगुण गुण रहइ एकहि आश्रय,

पिण विष तजि करि अमृपान । १ । गु० ।

परनिदा करिकै तुं प्राणी, मल सुं मुख क्यों करे मलान ,

अपनी करणी पार उत्तरणी,

तुं क्युं फोगट करैय तोफान । २ । गु० ।

दूर सु डूगर बलती देखै, पग तल जलती क्यु न पिछान ,

धर्मसीख जौ इतनी धारै, तौ हुइ तेरै कोडि कल्याण । ३ । गु० ।

(४)

राग वेलाउल, अलहीयउ

मूढ मन करत है ममता केती ।

जासुं तु अपणी करि जाणत, साइ चले नहीं सेती । १ । मू० ।

माया करि करि मेलत माया, काणी करत कुवेती ।

देखत देखत आए परदल, खाइ गए सब खेती । २ । मू० ।

पल पल पवन सुं उलट पलटसी, रहत न थिर ज्युं रेती ।

धर तुं रिद्धि घरमवरधन की, या सुखकारक जेती । ३ । मू० ।

(५)

राग—रामकला

मेरे मन मानी साहिव सेवा ।

मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा । मे० । १ ।

आत(म) राम कली ज्युं उलसे, देखण दिनपति देवा ।

लगन हमारी यों सों लागी, रागी ज्युं गज रेवा । मे० । २ ।

दूर न करिहुं पल भर दिल तें, थिरयुं मुहरी थेवा ।

श्रीधर्मसी कहै पारस परसैं, लोह कनक करि लेवा । मे० । ३ ।

(६)

राग—तलित

करहुं वश सजन मन वच काया ।

और मसकीन हो, वश की न होवत कहा,

ए महा मत गज कवज नाया । १ । क० ।

तुरग ज्युं चपल अति उरग ज्युं वक्रगति,

ठगत जिन जगत आया ठगाया ।

बचन बहु बंचन सत्य जहाँ रंच न,

कंचन कामिनी लोभ लाया । २ । क० ।

खह की गेह इण देह सुं नेह खिण,

छिन ही बदलात ज्युं बदल छाया ।

आप प्रभात प्रभात प्रगट्यो प्रगट,

उदय धर्म-शील उपदेश आया । ३ । क० ।

(७)

राग—वसत

वह सजन मेरे मन वसत,

उनके गुण सुनि अग उलसंत । व० ।

तजि क्रोध विरोध हितै त्रसंत,

पर निदाने परहा नसंत । १ । व० ।

खलता करि ढोऊ कैसे खसंत,

हठता शठता तजि कहै संत । व० ।

प्रभुता अपणी नही प्रशसत फंतु,

आफि सीयाद मेना फसंत । २ । व० ।

शुभ ध्यान, विज्ञान माहे धसंत,

वाणी अमृत रस वरसत । व० ।

करि विनय विवेक काया कसत,

साचा श्रीधर्मसी उहिज संत । ३ । व० ।

(८)

राग—प्रभाति जाति

प्रणमीजे, गुरु देव प्रभाते,
 बोलें मत दिन विकथा वाते । १ । प्र० ।
 मूके मत ल्युं पच पच मिथ्याते,
 समकित धर गुण पंच संघाते । २ । प्र० ।
 दिल शुद्ध धरि धर्म-शील दयाते,
 सहु विध थाय सदा सुख साते । ३ । प्र० ।

(९)

राग जैतश्री

सब मे अधिकी रे याकी जैतसिरि,
 काहू और न होड करि । १ । स० ।
 आठौ अंग योग की ओटें
 उद्धते मार्यो मोह अरी । स० ।
 अंतर वहि तपतेज आरोवे,
 जोर मदन की फौज जरी । २ । स० ।
 ज्ञानी हनी ज्ञान गुरजा सुं,
 ममता पुरजा होइ परी । स० ।
 अनुभौ बलसुं भव दल भागे,
 फाल फते करि फौज फिरी । ३ । स० ।
 श्री धर्मसी आत्म नृप दाता,
 देत सदाना मुक्तिपुरी । ४ । स० ।

(१०)

राग—आशा

आतम तेरा अजब तमासा ।

खलक सुं खेलं बणावै खोटा,

खिण तोला पुनि खिण में मासा ।१।आ०।

परणी अपनी तजि प्यारी,

और सुं अधिकी आसा ।

पद्मनी छोर संखनी परचै,

एक तो दुःख अरु दूजा हासा ।२।आ०।

दीपक बुझाइ अघेरे दोडें,

फंड विचे पग फासा ।आ०।

परच्या धर्म-शील सुं पावै.

अविचल सुख लील विलासा ।३।आ०।

(११)

राग—आशा

कवहु भे धर्म को ध्यान न कीनो ।

आर्त रौद्र विचार अहोनिश,

दुर्गति घर करिवे थर दीनो ।क०।१।

दीप ज्युं और न पथ बतायो,

आप ही लागि रह्यो तमसीनो ।

मेरे तन धन कहि सुख मान्यो,

मणि परखे पिण अतर मीनो ।क०।२।

परमारथ पथ नाहि पिछान्यो,
 स्वार्थ अपनो मानी सगीनो ।
 सुगरु कहे धर्मसीख न धारी,
 निष्फल गयो नर जन्म नगीनो । क० । ३ ।

(१२)

राग—तोड़ी

तुं करे गर्व सो सर्व व्यथारी ।
 स्थिर न रहे सुर-नर विद्याधर,
 ता पर तेरी कौन कथारी । तु० । १ ।
 कोरि क जोरि दाम किये इक ते,
 जाकै पास विदाम न थारी ।
 उठि चल्यो जब आप अचानक,
 परिय रही सब धरिय पथारी । तु० । २ ।
 संपद आपद दुहु सोकनि के,
 फिकरी होइ फंद मे कथारी ।
 सुधर्म शील धरें सोड मुखिया,
 मुखिया राचत मुक्ति मथारी । तु० । ३ ।

(१३)

राग—मारू

वारू वारू हो करणी वारू हो ।
 पामै सुख दुख प्राणीयो, सह करणी सारू हो । क० । १ ।

एका रै धन मिलै, मोटा थल मारु हो ।
 एक एकही टंक नै, अन्न आणें उधारु हो । क० । २ ।
 मोटा माणस इक मुद्रै, एक काजर कारु हो ।
 के नीरोगी काय के, नित रीचै नारु हो । क० । ३ ।
 दौलति लहीये दान, सील सद्गति सारु हो ।
 जागे तख की जाम की, उड जायै दारु हो । क० । ४ ।
 भावना मन शुद्ध भावियै, सहु वात सुधारु हो ।
 धन धर्म-सील जिके धरै, ते भव जल तारु हो । क० । ५ ।

(१४)

राग—नट

नट वाजी री, नट वाजी, संसार सवही नट वाजी ।
 अपने स्वार्थ कितने उजरत, रस लुब्धो देखन राजी । स० । १ ।
 छिकरी ककरी के करत रूपयै, वह कूदत काठ को वाजी ।
 पख ते तुरत ही करत परेवा, सवही कहत हाजी हाजी । स० । २ ।
 जानी कहै क्या देखे गमारा, सवही भगल विद्या साजी ।
 मगन भयो धर्मसीख न मानत ।

जो मन राजी तो क्या करे काजी । स० । ३ ।

(१५)

राग—वेहागड़े

ठग ज्युं इहु घरियाल ठगे ।
 घरि घरि जातु है रहट घरी ज्युं, लेखे न कोड लगै । १ । ठग ज्यु० ।

इण खिण पिण न मिले आउखो, मोल दये मुंह मगे ।
 खेरु होत है औसौं खजीनो, जीवन तौहि जगे । २ । ठग० ।
 ठग काल सुं जोर नहीं काहुको, देत ही सबहिं दगै ।
 धर्मसीख कहै इक ध्यान धर्म को, भय सब दूर भगे । ३ । ठग० ।

(१६)

राग केदारौ

कलि मे काहु को नहीं कोइ ।
 तामे मूरख अधिक तृसना, तजै नाही तोइ । १ । कलि० ।
 काहु सो उपगार करिवो, सार जग मे सोइ ।
 जीव रे तुं चेत जोलुं, देखवै की दोइ । २ । कलि० ।
 काल दुस्मन लग्यो केरै, जागि के तुं जोइ ।
 धर्मसी इक धर्म सबकु, हित हित को होइ । ३ । कलि० ।

(१७)

राग—गौडो

जीव तुं करि रे कछु शुभ करणी ।
 और जजाल आल तजि जो तुं, मुक्ति गौरी चाहे परणी । १ । जी० ।
 मात तात सुत भ्रात सकल तजि, तज दूरे घरणी ।
 जास सग पापान्नि प्रकटत, आक अनै ज्यु अरणी । २ । जी० ।
 जौ लु स्वार्थ तौलुं सगपण, नहीं तर आवत लरणि ।
 ऐसो जाणी पाप गज भजण, धर्म सिंह धरौ सरणी । ३ । जी० ।

(१८)

राग—गौड़ी

कछु कही जात नहीं गति मन की ।
 पल पल होत नई नइ परणति, घटना सध्या घनकी । क० । १ ।
 अगम अथग मग तु अवगाहत, पवन के धज प्रवहण की ।
 विधि विधि बध कितेही वाधत, ज्यु खलता खल जनकी । क० । २ ।
 कबहु विकसत फुनि कमलावत, उपमा है उपवन की ।
 कहै धर्मसीह इन्है वश कीन्हे, तिसना नहीं तन धन की । क० । ३ ।

(१९)

राग—सामेरी

दुनियां मा कलयुग की गति देखो ।
 किह पाई काई अधिकाई, उणको करेय अदेखो । १ । दु० ।
 अनुचित ठौरें खरच अलैखैं, लेत सुकृत में लेखो ।
 माननि कह्यो साच करि मान्हो, घर पित मात सुं घेखो । २ । दु० ।
 करि बहु प्यार पढाइ कियो है, सुविज्ञानी सुविसेषो ।
 कहै धर्मसीह करे ताही सुं, पीछी फेरि परेखो । ३ । दु० ।

(२०)

राग—सामेरी

मन मृग तुं तन वन से मातौ ।
 केलि करे चरै इच्छाचारी, जाणें नही दिन जातो । मन । १ ।
 माया रूप महा मृग त्रिसना, तिण में धावे तातो ।
 आखर पूरी होत न इच्छा, तो भी नहीं पछतातो । मन । २ ।

कामणी कपट महा कुडि मंडी, खबरि करे फाल खातो ।
कहे धर्मसीह उलंगीसि वाको, तेरी सफल कला तो । मन । ३ ।

(२१)

राग—कल्याण

हु तेरी चेरी भई, तु न धरे हेत रे ।
एक पखी प्रीति कौसौ, आइ वण्यो चेतरे । १ । हु ।
दूर छोड जाइ कै, सदेसहु न देत रे ।
लोक लाज काजहुं न, मेरी सुधि लेत रे । हुं । २ ।
तु ठौर ठौर करै और सुं सकेत रे ।
रंग बिना सग करै, तामे परो रेत रे । हुं । ३ ।
तोही सुं सचेत मे तौं, तो विन अचेत रे ।
मेरो धर्मसील रहै, तोही सु समेत रे । हुं । ४ ।

(२२)

राग—जयवती

काया माया वादल की छाया सी कहातु है ।
मेरो बैन मान यार, कहत हुं वार वार ।
हित ही की बात चेत, कहा न गहात है । का० । १ ।
नीकै दिल दान देहु, लोकनि मे सोभ लेहु ।
सुं व की विसात भैया, मोहे न सुहात है । का० । २ ।
खाना सुलताना, राउ राना ही कहाना सब ।
वातनका बात जग कोऊ न रहात है ।

ऐसो कहै धर्मसिंह, धर्म की गहो लीह ।

काया माया वादर की छाया सी कहात है । का० । ३ ।

(२३)

राग—सौरठा

रे सुणि प्राणिया, लही गरथ अरथ अनेक, म करे गर्व रे ।

वहि जाइ, एक्कैजहि प्रवाहै, सवल निवला सर्व रे । सु० । १ ।

चंद सूर ही राहु चिगल्या, प्रगट जोइ तुं पर्व रे ।

नर असुर सुर सहु काल नाख्या, चवीणा ज्युं चर्व रे । सु० । २ ।

मूढ धी पुदगल पिंड मैलें, अरथ अर्व ने खरवरे ।

सुज्ञान सु धर्मशील सुखियो, देखि आत्तम दर्व रे । सु० । ३ ।

(२४)

राग—काफी

मानोवैण मेरा, यारो मानो वथणा मेरा ।

सैन तुं मोह निद्रा मत सोवे, है तेरे दुस्मन हेरा । यारो ॥१॥

मोह वशे तुं इण भव माहे, फोगट देत है फेरा ।

चार विचार करो दिल अंतर, तुं कुण कौन है तेरा । यारो ॥२॥

कीजै पर उपगार कछु इक, लीजै लाह भलेरा ।

धर्म हितु इक कहै धर्मसी और न कछु अनेरा । या० ॥३॥

(२५)

राग—धन्याश्री (कवहु में नीके नाथ न ध्यायो)

किण विध थिर कीजे इण मनकु ।

वचन करुं वशि मौन ग्रहैते, त्योथिर आसन तनकु । किन ॥१॥

मन उद्धत इन्दिय सु मिलकै, घूरि करै तप धनकुं ।
 यह चचल शुभ क्रिया उड़ावै, ज्युं वायु मिली घनकु । कि० ॥२॥
 मन जीते विन सवही निःफल तुस वोए तजि कनकु ।
 मन थिर कुं धर्म सीख वतावइ,
 सुगरु कहै शिष्यजनकु । कि० ॥३॥

(२६)

राम—धन्याश्री (आद्यो २ री समरता दादौ आद्यो)

कीजइ कीजै री, मन की शुद्धि इण विध कीजै ।
 आलस तजि भजि समतारसकु, विषयारस विरमीजैरी । म० ॥१॥
 राग नै द्वेष दुहुं खल कै बल, मन कसमल मल भीजे
 दे उपदेश दुहुं दुस्मन को, ताथइ संग तजीजैरी । म० ॥ २ ॥
 शुद्धातम कइ ध्यान समाधि हि, परम सुधारस पीजे ।
 श्रीधर्मसी कहै थिर चित कारण,
 कारिज अलख लखीजै री । म० ॥३॥

(२७)

धन्याश्री

धर मन धर्म को ध्यान सदाइ ।
 नरम हृदय करि नरम विषय मे, करम करम दुखदाइ । ध० ॥१॥
 धरम थी गरम क्रोध के घर मे, पर मत परम ते लाइ ।
 परमातम सुधि परमपुरष भजि, हर म तुं हरम पराइ । ध० ॥२॥
 चरम की दृष्टि विचर मत जीउरा, भरम रे मत भाइ ।
 सरम वधारण सरम को कारण, धरमज धरमसी ध्याइ । ध० ॥३॥

प्रस्ताविक विविध संग्रह

सरस्वती स्तुति

अगम आगम अरथ उतारै उर सती,
वयण अमृत तिके रयण ज्यु वरसती ।
हुअइ हाजर सदा हेतु आ हरसती,
सेविजै देवि जै सरसती सरसती ॥ १ ॥
विद्या दे सेवका विनौ वाधारती,
अडवड्या साकडी वार आधारती ।
इंठ नरिंद जसु उतारे आरती
भणा तुम्ह नै नमो भारती भारती ॥ २ ॥
वेलि विद्या तणी वधारण वारदा,
हुआ प्रसन्न सहु पामिजे वारदा ।
प्रसिद्ध सकल कला नीरनिधि पारदा,
शुद्ध चित्त सेव नित सारदा सारदा ॥ ३ ॥
अधिक धर ध्यान नर अगर उखेवता,
व्यास वाल्मीक कालीदास गुण वेवता ।
सुबुद्धि श्री धर्मसी महाकवि सेवता,
दीयह सहु सिद्धि श्रुतदेवता देवता ॥ ४ ॥
परमेश्वर

महि सवला निवलां करे संभाला, वलि नहि ईस विसरण वाला ।
जीव पडे मत बहु जंजाला, प्रभु साचा सहुचा प्रतिपाला ॥१॥

मेगल लहै मलीदा मण मण, कीडी उदर भरै ताइ कण कण ।
 जितरौ वरौ जियेरें जण जण, पूरें तितो ईस आपण पण ॥२॥
 चूण दियें सहु नें विधि चंगी, हसती गज रंज हीनंगी ।
 अति अदोह धरें मत अंगी, साहिव आस पूरै सरवगी ॥ ३ ॥
 ध्रुविजै सदा चूरमे धिधंगर, चीटी चख इक चूण लहै चर ।
 धर्मसीह मन चित मता धर, पूरण आस सहु परमेसर ॥ ४ ॥

सूर्य स्तुति

हुदें लोक जिण रें उदै,
 मुदै सहु काम ह्वै पूजनीका सिरे देव पूजौ ।
 साचरी वात सहु सामलौ सेवका,
 देव को सूर सम नहीं दूजौ ॥ १ ॥
 सहस किरणा धरै हरै अंधकार सही,
 नमैं प्रहसमै तिया कष्ट नावै ।
 प्रगट परताप परता घणा पूरतौ,
 अवर कुण अमर रवि गमर आवै ॥ २ ॥
 पडि रहै रात रा पखिया पथिया,
 हुवै दरसण स कौ राह हींढें ।
 सोभ चढे सुरा सुरा असुरा शिहर,
 मिहर री मिहर सुर कवण मीढें ॥ ३ ॥
 तपे जग ऊपरा जपै सहु को तरणि,
 सुभा अशुभा करम धरस साखी ।
 रूडा ग्रह हुवइ सहु रूडै ग्रह राजवी,
 रूडा रजवट प्रगट रीति राखी ॥ ४ ॥

धमाल (वसत वर्णन)

ढाल-जगती

सकल सजन सैली मिली हो, खेलण समकित ख्याल ।
ज्ञान सुगुन गावै गुनी हो, खिमारस सरस खुस्याल ॥१॥
खेलो सत हसत वसंत मे हो,

अहो मेरे सजना राग सु फागरमत । खे० ॥२॥

जिनशासन बन माहे मौरी विविध क्रिया वनराय ।
कुशल कुसम विकसित भये हो, सुजस सुगंध सुहाय । खे० ॥३॥
कुहकी शुभमति कोकिला हो, सुगुरु वचन सहकार ।
भइ मालति शुभ भावना हो, मुनिवर मधुकर सार । खे० ॥४॥
प्रवचन वचन पिचरका वाहै, यार सु प्यार लगाइ ।
शुभ सुण लाल गुलाल की हो, मोरी भरी अतिहि भुकाइ ॥५॥
वर महिमा मादल वजे हो, चतुराइ मुख चग ।
दया वाणी डफ वाजती हो शोभा तत्व ताल संग । खे० ॥६॥
राग सहित जिनराज आलापै, दौलति सु निसदीह ।
सव दिन विजयहर्ष सुख साता, धमाल कहै धर्मसीह ॥७॥

एपदेश

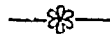
अव तौ सव सौ वरसा लगि आउसु,
तामे तो आध गयौ निसि सूता ।
चौस गयौ रस रामति रौस,
खट गृह धध कै धुंस मे खूता ॥

केस भए सव सेत तुं चेत रे,

देख दिखाउ दियो जमदूता।

जातैं सधैं अपनौ कहु स्वार्थ,

सो ध्रमसील धरौ रे सपूता ॥१॥



दीपक—छप्पय

अलग टलै अंधार, सार सारग वलि सूमै ।
 जीव जंतु जोइ नै, सरव विवहार समूझइ ॥
 मन संशा सहु मिटै, वलि पुस्तक वाचीजै ।
 दिल सुद्ध गुरुदेव नै, रूप दरसन राचीजै ॥
 वलि लाछि आइ वासौ वसइ, सुख पावै सहु सेवता ।
 सहु लोक माहि दीसै सही, दीवौ परतिख देवता ॥ १ ॥

पर उपकार—घणा कट्टु साणोर

दुनी दाम खाटै केता केइ दाटे दरव,
 नाट नाटे घणा साट माटै ।
 वाट पाडै तिकौ काल वाटै वहै,
 खट्ट्यो सो पर कजू विरुद खाटै ॥ १ ॥
 कीया चढि चोट गढ कोट कवजै किया,
 वहस छल वल प्रवल किया बीया ।
 हालिया किता ने किता वलि हालसी,
 जिया गुण किया तियां धन जीया ॥ २ ॥
 हुकम सुं हल चला उथल पथला हला,
 करौ अकला गलां वात काइ ।
 चहल वहला चलें चट्टक-दिन च्यार री,
 भला री भला एक रहसी भलाइ ॥ ३ ॥
 भार कोठार भडार लोभै भर्या,
 वार सहु सारखी कट्टै वहसी ।

साच कर धार 'धर्मसी' संसार में,

रिधू जग सार उपगार रहसी ॥ ४ ॥

मेह (वर्षा)

सबल मेंगल वादल तणा सज करि,

गुहिर असमाण नीसाण गाजै ।

जंग जोरै करण काल रिपु जीपवा,

आज कटकी करी इंदू राजै ॥ १ ॥

तीख करवाल विकराल वीजलि तणी,

घोर माती घटा घर र घालै ।

छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,

चटक माहे मिल्यौ कटक चालै ।

तडा तडि तोव करि गयण तडकै तडित,

महाभडि भडि करि भूम मंड्यौ ।

कडा किडि कोध करि काल कटका कीयौ,

खिणकरै बल खल सबल खंड्यौ ॥ ३ ॥

सरस वांना सगल कीध सजल थल,

प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रघला ।

लहकती लाछि बलि लील लोको लही,

सुध मन करै धर्म-शील सगला ॥ ४ ॥

मेह (वर्षा) गीत

मंडि भडि घमड कर ईस ब्रह्मण्डरा तुम्ह घर मांहि किण बात त्रोट।

सार इतरी गरज परज री अरज मुणि,

मेह करिमेह करि धणी मोटा ।

खेत कुम्हाइजै रेत उडै खरी, हेति हिन्ना गया चेत हारे ।

वैत एहै धरौ नितरी वीनती, ध्रवौ करतार जलधार धारै ॥२॥

घणै धन होइ धन धान धीणा घणा,

पाल्हवै भार अड्डार प्राप्ता ।

दरद मन रा मितै मितै जगरा दलिद,

जलद वरसाड जगदीस भाप्ता ॥३॥

सफल करि आस अरदास धर्मदास री,

तुरत तिण दीस जगदीस तूठा ।

हुआ उमाह उछाह सगला हुसी,

वाह हो वाह जलवाह वूठा ॥४॥

मेह (वर्षा) अमृतध्वनि

जल थल महियल करि जलद, सहु जग होइ सुभक्ख ।

इक घण तो अण आवतै, दिखै खलक सु दुख ॥ १ ॥

दिखै खलक सु दुख खिजि खिजि,

सुख खिण नहीं दुख खिण खिण भुख ।

खल हल करव खद्विय, चख खड विण पख खय पशु ।

कु ख खु ह वसि तुख खुटि खुटि, लुख खजि कजि ।

लख खिजमति अखै खलक अरज्ज ॥१॥ जल थल महियल०

दोहा

जग सगलै जगदीसरी, पूरण कृपा प्रसिद्ध ।

घण वरण्या हरख्या घण, सिद्ध धरि सहु रिद्ध ॥ १ ॥

चालि

सिद्धे द्वरि सहु सिद्धि, धन धन किद्ध, द्वरणिय वृद्धि द्वन्नह ।
 खुद्ध द्धम, गय लद्ध, धीरज, द्धु वि पुणि द्धि द्विपिय ।
 रिद्धि द्धण भर वद्ध द्धामह दिद्ध द्धन रिण,
 वुद्धि धर्मसी शुद्ध द्वरि हित सज्ज ॥ २ ॥ जग सगलैं जग०

—:०—:

सीत उष्ण वर्षा काल वर्शन

ठड सवली पडें हाथ पग ठाठरें,

बायरो उपरा सवल वाजै ।

माल साहिव तिकै मौज माणे मही,

भूखियइ लोक रा हाड भाजै ॥ १ ॥

किड-किडै दात री पात सीसी करै,

धूम मुख ऊखमा तणा धखिया ।

दुरव सुं गरव सौ जाणि गुजें दरक,

दरव हीणा सबै लौक दुखिया ॥ २ ॥

सौडि विचि सूइजे तापिजें सिगडिए,

सवल सी माहि पिण सद्रव सोरा ।

एतिण वार में पाण ती ओजगी,

दोजगी भरै निसदिस दौरा ॥ ३ ॥

भाड उन्हाल री भाड ह्वै भाखरा,

जल तजे पालि पाताल जावैं ।

साधन वैठा पियै मालिए सरवता,

निधन नइ पिण नीर हाथ नावैं ॥ ४ ॥

किनौ सीतकाल उन्हाल सगवौ नग्न.

हुदो नुग्र दुग्र तणा देव नार्थ ।

आविये जेण संसार रो हें उदो.

मुदो नद्य धान रो बेह माथे ॥ १ ॥

धुरा जलधर धूर्व धान धीण धना.

सरस नान नर नयो सगिया ।

फमल फल फूल री हंस सगले फल.

वडी ऋतु सह गित माहि वरिपा ॥ ६ ॥

दुःकाल दर्शन

मन में धरता मरट घरट जिम भूगें भूमें.

मेले घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमें ।

वेटा नें मा वाप वेचि द्ये जीमण वेड,

रुलतां रिगता गंक करे वेललाटा केड ॥ १ ॥

कोह काल महा दुस्मण कहा, आखा देस उजाड़ीया ।

ए देव वरस इकावनें, पडतें बहु नर पाडिया ॥ १ ॥

पण धरि घण पोखता निहोरे कण पिण नापें,

कवल एक कारणे वहस हुवे वेटा वापें ।

हीओ माइ हारि नें छोलआ उभा छोडें,

ऊचें कुला आदसी आइ नीचा कर जोडें ।

गति मत्ति उगति भूलें गड, गिणें न को आभौ गितो,

कोई आप पाप प्रगट्यो प्रवल एवो वरस इकावनो ॥२॥

दुनियां दीवौ दुख वरस इण इकावनें,

पहुती जाय पुकारइन्द्र सांभलि विण अन्ते ।

आप कहायौ इन्द धीरज मन माहे धरिजो,

वहु वरषा वावनो करिस सखरौ धर्म करिज्यो ।

धन धान घमंड धीणा घणा, परजा बहु सुख पावसी ।

सहु थोक भला होसी सरस, उमगि वावनौ आवसी ॥ ३ ॥

इकावन्ने आइ दुनी दुरभख डुलाइ,

काढ्यौ सौ कूटि नै भीर वावनै भाइ ।

वावना वाहिरौ त्रिपट पडीयौ तेपन्नो,

दातारे तजि ददौ, निपट करि भाल्यो नन्ना ।

काढिस्याँ सोइ जिम तिम करै, मत चिंता आणइ मनइ

सत भालि काल्हि सखरइ सुभिख, चहचंद होसी चोपनै ॥४॥

कुस्त्री-सुस्त्री वर्णन

सुकलीणी सुन्दरी मीठ बोली मतिवती,

चित चोखे अति चतुर जीह जीकार जपती ।

दातारणि दीपती पुन्य करती परूकासू,

हस्तमुखी चित्त हरणी, सेवि संतोपे सासू ॥१॥

सुकलीण शील राखें सुजस, गहै लाज निज गेहनी ।

धरमसी जेण कीधो धरम, तिण गुणवत पामी गेहिनी ॥ २ ॥

गुण हीणी गोमरी बडक बोली बहु रंगी,

चचल गति चोरती अधिक कुलटा ऊधंगी ।

सत विहुणी सुंवनी दूत् जिती दुरभासू,

करणी घर से कलह, मूकती जायै सासू ।

नाहरी नारी गूजें निपट, धूजे नित घर रो धणी ।

धरमसी जेण न कियौ धरम, पामी इण परि पापणी ॥२॥

पुण्य पाप फल कथन

गीत सप्तराी ।

सभै साली चित्रसाली ढाली पौढै के सुहाली सेज,
 खंडाली कूटी में एक उखराली खाट ।
 दिखाली विनाही भाली सुखाली दुखाली दसा,
 नेह पाप पुण्य वाली विचाली निराट ॥१॥

सोना थाली माहे के आरोगै साली ढाली,
 सुखी वीया के हथाली, जिमें पीयै वृक ।
 एकां लील लाली लाली पाली, धंधाली जंजाली एक,
 सढ़ाली अढालीवार कमाइ सलूक ॥२॥

एका उन वाली छाली दूकाली न दीखै एकां,
 थूंभाली क्रमाली हेकां दूकै काली धाट ।
 सदारा सुगाली एक दुकाली फिताक दीसै,
 वंसाली कमाइ चाली वाली जायै वाट ॥३॥

सम्भाली ल्यै वडां सोह, सुचाली कलत्त सुत्त,
 क्या करै ककाली नाली अनाली कपूत ।
 बाणी के रसाली वदैं विरसाली एकां वात,
 कली कालि उजवालि आपरी करतूत ॥४॥

दाढ़ाली बाढ़ाली बंधै रंढाली करतां दौड़,
 मानै नहीं मच्छराली, मझाली सरम्म ।
 उदाली उलाली जग्गि, ताली दियै जायै आड.
 धारौ हितवाली वात, संभाली धरम्म ॥५॥

प्रभात आसीस—छप्पय ।

आलस ऊंघ अज्ञान, तमस तस्कर पिण त्रसीया ।
 श्रावक साधु सुपात्र, वले धर्म करणी वसीया ॥
 पडिकमणा पचखाण, गुणे गुरूदेवा गावै ।
 सुणीजै भालर संख, सुकवि आसीस सुणावै ॥
 भलै भाव कमल विकसै भविक, महिमा जिन धर्म रीमुदै ।
 सु प्रताप सयल संगल सदा, अरक ज्योति धर्मसी उदै ॥१॥
 जव ऊगे जग चक्ख तिमिर जिण वेला त्रासै ।
 प्रगट हसै जव पद्म, इला जव होइ उजासै ॥
 चिडीया जव चहचहै, वहै मारग जिण वेला ।
 धरस सील सहु धरै, मिलै जव चकवी मेला ॥
 घुम घुमै माट गोरस घणा, पूरण वंछित पाईयै ।
 जिनदत्तसूरि जिनकुशल रा, गुण उण वेला गाईयै ॥२॥

संध्या आसीस—छप्पय

संध्या वढन साध, सज्ज सावधान स कोइ ।
 विवेकी श्रावग सजै, पडिकमणा सोई ॥
 चौवीहार दुविहार ग्रहै, व्रत करि निज गरहा ।
 सारै दिन संचीया, पाप नासै सहु परहा ॥
 धर्म ध्यान साधु श्रावक धरै, धोरी धर्मरथ ना धुरी ।
 सुखकरण सघ धर्मसी सदा, सकतिरूप संध्या सुरी ॥१॥
 धुरि देवल धर्मसालि, पंच सद सुणिजै प्राप्ता ।
 भालर रा भणकार, देवगृह दीपक भाभा ॥

पशु पथी पंखिया, आपणी ठामै आवैं ।
 आरंभ किया अलग्ग, सको थिर चित्त सुख पावैं ॥
 आकास चंद्र तारा उदैं, दिन चित्ता अलगी दुरी ।
 सुखकरण संघ धर्मसी सदा, सकति रूप संध्या सुरी ॥२॥

—:❀:०:❀:—

सर्व सघ आशीर्वाद

परव अवसर सदा द्रव खरचै प्रघल,
 गरव न करै करइ सरव उपगार ।
 धरवि जलधार जिम दान वरसै धरा,
 जगतपति संघ रौ करौ जयकार ॥ १ ॥
 सूध मन सेव गुरु देव री साचवैं,
 सखर समझै अरथ सूत्र सिद्ध त ।
 दियै बहु दान मन शुद्ध पालइ दया,
 भलौ नित संघ रौ करौ भगवंत ॥ २ ॥
 राय - साधार वडिछोडि मोटा विरुद,
 साह पतिसाह सम मौज महिराण ।
 संघ सुप्रसन हुआ श्वे निध संपजै,
 करौ प्रभु संघ रौ सदा कलियाण ॥ ३ ॥
 वरण अढ़ार ने जिकै दिये वरा,
 खरा द्रव्य खटिन करै धर्म काज ।
 कहैं धर्मसीह सुकवि लोक सहि को कहैं,
 महाजन तणौ उदो करै महाराज ॥ ४ ॥

दुँडिया रो कवित—छप्पय

आया नै उपदेस, प्रथम प्रतिमा मत पूजौ ।
 वादौ मत अम्ह विना, दरसणी यति को दूजौ ।
 दीजै नहीं वलि दान, भवे वीजे भोगवणा ।
 आगम केइ उथपै, लोह सुं जड़ीया लवणा ।
 सीख द्यौ लाख नहुवै समा, खोटी जड रा खुढीया ।
 पारकी निंद करता प्रगट, धरमी किहा थी दुँडिया ॥ १ ॥

(२)

अधिक आदि अनादि री मातवटि उथपै,
 देवपूजा तणा सुस दीधा ।
 देखि अन्याय आचार अंदेस मै,
 काल नै चाल जगदीस कीधा ॥ १ ॥
 प्यास मरता पसू पखिया पथिया,
 पाप ह्वै पावज्यो मता पाणी ।
 भरमिया भल भला लोक एहै भरम,
 धरम कियौ तिगै धूल धाणी ॥ २ ॥
 गिणइ नहीं शास्त्र वलि मूलगा देवगुरू,
 लाज विण लोक इण कुमति लागै ।
 ऊधली रीति ऊधा तिके ऊठीया,
 ऊठिसी ई ए उतपात आगै ॥ ३ ॥
 मेलि परवान मान महाराज कीधा मन्है,
 लोपीयो हुकम करतूत लहसी ।
 हुइ सहुको कहै हाकमै हाकमी,
 रैत वर वैत दुष्ट दूर रहसी ॥ ४ ॥

माकण (जवा) छप्पय

आवैं केइ अथगारा, हलवें हलवे हेर ।
 साकण माडें मामला, मेवासें रा मेर ।
 मेवासें रा मेर, करे कोचर मे, भाभा ।
 रतिवाहा घै राज, प्राञ्ज करि जायइ प्राभा ।
 छलवल करि छेतरेँ, चूसैं लोही चटकावैं ।
 चावा चिहु दिसि चोर, नींद कहो किहाथी आवैं ॥१॥आवैं०

सर्वयो

खाट में पाट मे हाट मे त्राट में आसन वासन थिर थानें ।
 आवत जावत भी चटकावत, नावत हाथ छिपै कहुं छानैं ।
 रैन मे नैन मे नींद परै नही, दौंस ही रूस भरैं दुख दानैं ।
 गउ न राक न को गिनै हाकन, साकण काहु की साक न मानैं ।

—०—

धरती री धणियाप किसी

भोगवि किते भू कित्ता भोगवसी, माहरी माहरी करइ मरैं ।
 ऐंठी तजि पातला उपरि, कु वर मिलि मिलि कलह करैं ॥१॥
 धपटी धरणी केतेइ धुंसी, धरि अपणाइत केइ ध्रुवै ।
 धोवा तणी शिला परि धोवी, हुं पति हुं पति करै हुवै ॥२॥
 इण इल किया कित्ता पति आगैं, परतिख कित्ता कित्ता परपूठ ।
 वसूधा प्रगट दीसती वेश्या, भूमै भूप भुजग सु भूठ ॥३॥
 पातल सिला, वेश्या, पृथ्वी, इण च्यारा री रीति इसी ।
 समता करै मरै सो मूरख, कहै धर्मसी धणियाप किसी ॥४॥

—:❀:—

छप्पय

रावण करता राज, लीक लका तै लागी ।
जीवतें किसन जी, द्वारिका नगरी दागी ॥
चावा रवि चंद्र नइ, राह आवी नै रोके ।
पाडव कौरव प्रसिद्ध, सहु पडिया दुख शोकै ॥
सकजो न कोइ मो सारिखौ, बहु मुख गर्वें बके ।
धर्मसीख धारि धोखो म धर, जीती कुण जाइ सकै ॥१॥

छप्पय

गुर थी लहियै ज्ञान, शास्त्र सहु तत्त सिखावइ ।
बलि सगली ही वस्तु दोष निरदोष दिखावैं ।
चूल्हा रौ जे चंद्र कर, तिण काज कला धर ।
गुरू सेवा कर गिण्या, नहीं उसरावण को नर ।
बलि अलग टालि छठुड वर्ग, अधर होठ अलगा रहै ।
त्यु रहै अलग निंदा तठै, कवित सीख साची कहै ॥ २ ॥

“शोभनीय वस्तु”—छप्पय

नरपति शोभा नीति, विनय गुणजन त्रिय लज्जा ।
दपति दिल संतोष, शोभ गृह पुत्र सकज्जा ।
वचने शोभा साच, बुद्धि शोभा कविताइ ।
वपुं शोभा विज्ञान, शान्ति द्विज शोभ बताइ ।
सकज की शोभ अधिकी क्षमा, शोभ मित्र राखैं शरम ।
गृहवास शोभ संपति सुधन,
सबहि शोभ निज निज धरम ॥ २ ॥

राजनीति—छप्पय कवित्त

सकले गुणे सकज्ज, पाच दस परिखा पुहतौ ।
 आण्यौ म्हे इतवार, मन शुद्ध थाप्यौ मुहतौ ।
 सहु आगै कहँ मान, वान इम अधिक वधारे ।
 तिणरौ वाधँ तोल, सही सहु काम सुवारे ।
 प्रभु काज साधि पोतँ पछै, काज प्रजा रा पिण करँ ।
 परसिद्ध भली परधानरी, राज काज सगला सरँ ॥ १ ॥
 पुखतौ गुणे प्रधान, कदे नहीं मन में कावल ।
 पिण काइ पर कृति, साम नहीं मन में सावल ।
 कहँ म्हेइज सहु करा, मंत्रि रो कह्यौ न माना ।
 म्हा थी वीजी ठाम, छेतरावौ मत छाना ।
 सहु नै इकात इम सीखवँ, अदेखाइ आणै इसी ।
 अधिकार तणो जिहा नहीं अमल,

कहौ तिणमें वरकत किसी ॥ १ ॥

—:❀:—

वरसी दान

त्रणसँ कोडि अठ्यासी कोडि,

असी लाख उपर वलि जोडि ।

इतरा सौनइया नौ मान. दे सहु अरिहत वरसीदान ॥ १ ॥

छप्पय छत्तीस विधान रो

गुरु गुरु^१ दिनमणि^२ हंस,^३ मेघ^४ मंदर^५ मुगता गण^६ ।

मत्ति^१ दुत्ति^२ गति^३ अति सोह, वाणि^४ मणि^५ गुण^६ जाके तण ॥

सुरेग^१ पुव्व^२ सर राज^३, गयण^४ धर^५ धुरि वारिध^६ थिति ।
 वासव^१ ग्रह^२ अति चतुर,^३ जगत^४ सुर^५ पारिख^६ सेवित ॥
 उव्वह^१ प्रभात^२ पंकति^३ सहित, गरजित^४ निरमल^५ ग्रथित^६ गुण ।
 वहु^१ ब्रान तेज^२ केली^३ वरिस,^४ धीर^५ पवित्र^६ ध्रमसीह भण ॥१॥

एकवक्त्र उत्तरा

वन्दे नहीं क्युं देव गुरु, विकै न वस्तु विवेक ।
 छोडैं अँठों अन्न क्यु, उत्तर त्रिहुं रो एक ॥१॥ भाव नहीं ।
 दूधै केम स्वाद नहीं, दीधै किम फिर दिद्ध ।
 दाडिम कण ज्यो पोस्तकण, जुदा नहीं किण विद्ध ॥२॥ थर नहीं
 हाथी जनमि किसौं न ह्वै, वैद दियै किम पत्थ ।
 नर आदर किम ना लहै, उत्तर त्रिहुं इक अत्थ ॥३॥ जर नहीं
 देशै नीपति क्युं नहीं, क्यु न घडै लोहार ।
 किम वसता मुहंगी विकै, उत्तर एक प्रकार ॥४॥ घण नहीं

हीयालिधे

(१)

कुण नारी रे कुण नारी रे, पंडित कहौ अरथ विचारी रे ।
 चतुराइ बुद्धि तुम्हारी रे, सहु कोइ वखाणै सारी रे । कुण० ॥१॥
 मन मोहन सुन्दरि माती रे, रहै पच भरतारे राती रे ।
 सखरी पहिरै ते साड़ी रे, तौ पिण सहु अंगै उघाड़ी रे । कुण० ॥२॥
 आइ वैसे मुजरै ऊंची रे, तिण घरि नहीं ताला कुंची रे ।
 दिन उगै घाहडी उठी रे, पल मै जइ वैसे पूठी रे ॥ कुण० ॥३॥

वूढी पिण वाली भोली रे, तनु केसर चंदन खोली रे ।
कहै धर्मसी एह हियाली रे, मति करज्यो वात विचाली रे ।

॥कु० ॥४॥

(थापना)

(२)

ढाल—गाठलदे सेत्रुजे हाली

कहौ पंडित ए हीयाली, मत करिज्यो वात विचाली रे । कहो०१
निरखी मैं सुन्दर नारी, धरमी आदर करि धारी रे । कहो०२॥
नव नव विधि कूदैं नाचैं, पिण सहु वखाणै साचै रे । कहो०३॥
करैं घुघट पिण तिण च्यारै,

सकुचैं पिण नहीं किणहीक वारैं रे । कहो॥४॥

फिरती रहै सहु अंग माथै, हिरदैं ने वैसे हाथै रे । कहो० ॥५॥
वोलता आड़ी आवै, पिण तेहनो भेद न पावै रे । कहो० ॥६॥
निदैं तै भारी करमी, धर्मसी कहै धरस्यै धरमी रे । कहो०७॥

(मुहपत्ता)

(३)

ढाल-चतुर बिहारी रे अतम रहनी ।

अरथ कहौ तुम वहिलौ एहनौ, सखर हीयाली रे सार ।
चतुर नर एक पुरष जग माहे परगड़ो, सहु जाणै संसार चतु०१
पग विहुणो पिण परदेसे भमै, आवै तुरतउं जाय ।
वैठो रहै अपणे घरि वापड़ो, तौ पिण चपल कहाय । च०अ०१२
कोइक तो तेहनै राजा कहै, कोई तो कहै रंक । च०

साचौ सरल सुजाण कहै सहु, बलि तिण गाहे रे वक ।च०अ०३।
पोते स्वारथ सुं पाचा मिलै, आप मुरादौ रे एह । च०
धन तिकै नर कहै श्री धर्मसी, जीपै तेहने रे जेह ।च० अरथ ।४।
(मन)

(४)

ढाल—नायक मोह नचावियो

चतुर कहौ तुम्है चुंप सु, अरथ हीयाली ऐहो रे ।
नारी एक प्रसिद्ध छै, सगला पास सनेहो रे । चतुर ॥ १ ॥
ओलै वैठी एकली, करै सगलाई कामो रे ।
राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठामौ रे । चतुर ॥ २ ॥
चाकर चौकीदार ज्युं, बहुला राखै पासो रे ।
काम करावै ते कन्हा, विलसै आप विलासो रे । चतुर ॥ ३ ॥
जोडै प्रीति जणे जणे, त्रोडे पिण तिण वारो रे ।
करिब्यो वस धर्मसी कहै, सुख वाछौ जो सारो रे । चतुर ॥४॥
(—जीभ)

—:०—:

आदे अक्षर, ममस्वरौ, अतस्वरौ नैं वलैं
ममस्वरौ सर्व एक कवित्त माहे सांगठा ही ज आरथा छै ।

कवित

रक्षक बहु हित साधु, राति सूरज दिन नक्खत ।
सहु भोजन कटु जीह, नहींय सुचि पीड़ा दुक्खित ॥
वृद्ध अछेह धन वयण पहिल हिव सुसतैं तूनै ।
रिसि छोरु पति तेज, ग्राम रिधि दुखित धुनै ॥

लखमी सुबुद्धि तारण सरव रयण पुन्य निरजर सुवर ।

धुरि मरु अंत मरु अक्वरै, पारसनाथ प्रतापकर ॥१॥

पा ल क	अ पा र	कि र पा	सु पा त्र
र ज नी	अ र क	वा स र	ता र क
स र व	अ स न	वि र स	र स ना
ना का र	स ना न	वे द ना	अ ना थ
थ वि र	अ थ ग	ग र थ	क थ न
प्र थ म	सा प्र त	अ क्षि प्र	तो प्र ती
ता प स	सं ता न	भ र ता	प्र ता प
प हु र	स प ति	सं ता प	क प न
क म ता	अ क ल	ता र क	स क ल
र त न	ध र म	अ म र	ध र शी

च्यार वार अक्षर दसे, एक कवित्त में आँणि ।

कवि माहे धर्मसी कहै, तौ कहुं तौकुं जाण ॥१॥

सवैया—सर्वगुरू अक्षर देवाधिदेवस्तुतिः

साई तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया मायकच्ची,
साता दाता माता भ्राता, तू ही दूजा दमा है ।
मोटा ही तू ही मोटा, मैं तो छोटा ही में छोटा,
तेरी ओटा धोटा ज्युं मैं लेख्या ही का लंभा है ।
तेरें पासा खासा दासा, पासा वासाहि का प्यासा,
मेरी आसा वेलि फैली तू ही इख्या अंभा है ।
दूजा को है तेरै दावै, ज्ञानी लोका तोकु गावैं,
रातै प्रातै धर्म ध्यावै तेरा ही ओठंभा है ॥ १ ॥

—:०:—

सवैया—तेवीसा

गग तरंग के सग उरग सु, मनु विना बहु जंतु मारै ।
ताहि समै विनता सुत ताहि जु, जाति विरोध संभारि संहारै ।
सौ मरि कै अहि होइ चतुर्भुज, ताहू कै ही सिर आसन धारै ।
अहो अहो यों सुखी सरिता सु तो, पानी के संग ही पार उतारै । १।

—:०:—

यति वर्णन—सवैया

केड तौ समस्त वस्तु चातुरी विचार सार,
चैन भी दुरस्त वदैं अँन सरस्वती है ।
केड तौ प्रशस्त काव्य भाषा गुण चुस्त करैं,
और कवि अस्त होत एतौ दिव्य दुती है ।

केइ राग रंग माफि रस्त गुस्त होत जात,

केइ तर्क विद्या मे विहस्त शुद्ध मती है ।

हस्त सिद्धि धर्मसीह वादि हस्ति गस्त होहि,

जैन मे जवरदस्त ऐसे मस्त जती है ॥१॥

—:०:—

समस्या—मान कयों के पतिव्रत पार्यों

ठौर संकेत की आगैते आइ कै, नायक सेज को साज सुधार्यों ।

आइ तिचा तव आई गइ रितु, ह्वै के उदास विलास विसाख्यो ।

वैठि सकोचि सलज्ज न बोलत, नायक केतौ निहार कै हार्यों ।

साच कहौ अब क्यो न मिलौ तुम,

मान कयों कै पतिव्रत पार्यों ॥ १ ॥

:—❀—:

भोजन विच्छती—सवैया इकतीसा

आछी फूल खड के, अखंड से जौ लड्डू होइ ।

ताकै संग ताजै ताजै खाजै फुनि खाईयै ॥

पैडनि सुं प्रीति पूरी, लापसी तौ थोरी थोरी ।

सीरै के स्वाद काज बूढा कुं बुलाईयै ॥

हेसमी की भइ हुंस, साबूनी कौ नहीं सूस ।

घी के भरे घेवर जलेवी युं अघाईयै ॥

फूल हुं ते भीणी फीणी, सब ही में खाड चीणी ।

धर्मसी कहत कीनी पुण्य जोग पाईयै ॥१॥

चोखे नान्है कैर चूणै, चोखे छमकारे चणै ।

आछे से अथाने घने और भी कुं बोल है ।
चीरडी पटीरडी सीरावडी वड़ी पुड़ी ।

हरद सौं जरद आछे भुजिया कौ मोल है ॥
सागरी निरोग फोग राइ खेलरा के जोग ।

भाजी भली भाति की मे, नीवू को निचोल है ॥

एकली मिठ्ठाइ तो धिठाइ कहै धर्मसीह ।

सालणा के साथ सुं वोलावै कौसी बोल है ॥२॥

सवैया तेवीसा

दाख वदाम अखोडै सिंघोडे, गिंढोडै सौं जोडै सबे ही सुहावै ।
खारक खोपरे याही के भेट, छुहारी गिरी है पै न्यारी कहावै ॥
पूछहुधौं गुजरातिय लोक, निवात भिलें निमजे भलै भावै ॥
मेवे इते नितमेव लहै, सु कहै धर्मसीह भैया पुण्य प्रभावै ॥३॥

चटपट में पकवान चलावत, खावत है खीर खाड भी खातै ।
तो से चाउल दाल तजै नहीं; पालि करै फुनि घीड की घातै ॥
सुधारी धुंगारी पीयै फुनि छाछहि, पाछै कै जाइ चलू किये पातै ।
वचै सु लुकाइ कै देण की देरहि, ताली युं देत दिखावत दातै ॥४॥

—:०:—

अध्यात्ममतीया रो —सवैया इकतीसा

आगम अनादि के उथापी डारे आपै रुद्धि,
अबके बणाए वाल - बोध मानै संमती ।
जोगी जिंदे भक्तनि पै, दूरहुं ते दोरे जात,
देखे न सुहात ताहि एक जैन के यती ।

ऐसो उदें क्रोध मान, दूर कीए क्रिया दान,

ऐसे पछिपाती गुण काहू कौ न ल्यै रती ।

वावन ही अच्छर कुं, पूरे से पिछानै नाहि ,

कैसे कै पिछानै कहां आतमा अध्यामती ॥ १ ॥

शरीर अस्थिरता—सगैया इकतोसा

ज्ञान के अभ्यासा मिसि, आवत उसासा सासा,

छिन न विसासा तहा कहां दिन मासा है ।

पग्यौ प्रेम पासा, तामैं मानत विलासा खासा,

देखै जो विमासा घरि हानि लोक हासा है ।

आसा तो अकासा जेती, खेलत दुवासा सेती,

केती है उजासा घन वीजुरी का वासा है ।

अतर प्रकासा कर धर्मसी सुवासा धर,

पानी में पतासा जैसा तन का तमासा है ॥ १ ॥

रूपैया—सवैया तेवीसा

आपणी देह सुं नेह नहीं पुनि, जानत खेह के गेह छिपैया ।

मोह नहीं मन में धन मे, वन मे तन में तप ताप तपैया ॥

लोक वडे वडे पाय लगे, जु सवै गुण सोभत लोभ रुपैया ।

वाटन कौ नउ उभाटन को डर, सोइ वडौ जाकै माठ रुपैया ।१।

कोइ तो पाइ छिपाइवा धन, धारे नहीं धर्मसीख कहैया ।

सुं व कहाइ खवाइ नं खाइ, भखाइ लगाइ लरावत भैया ॥

कौन कहै तिनकुं जुं वडौ है, मडौ सब ही सुं करै है लडैया ।

वाट वंटाइ उडाइघै फाट तें, सोइ वडौ जाकै माँठ रुपैया ।२।

१४ शोभा—सवैया इकतीसा

नृपति^१ की शोभा नीति, गुनिन^२ की विनै रीति,
 दपति^३ के प्रीति जो निवाहे धुरि छेह की ।
 ललना^४ की शोभा लाज, वचन^५ की शोभा साच,
 बुद्धि^६ शोभा कविताइ, पुत्र^७ शोभा गेह की ।
 गृह^८ की हैं शोभा वित्त, मित्र^९ की चितारै चित्त,
 सकज^{१०} की क्षमा ल्युं, कला^{११} विचित्र देह की ।
 द्विजन^{१२} की शोभा शांति, रत्न^{१३} की शोभा कांति,
 साधुन^{१४} की शोभा धर्म, शील कै सनेह की ॥ १ ॥

वस्त्र शोभा—सवैया इकतीसा

दूर तै पोसाकदार, देखियत सिरदार,
 देखिकै कुचील चीर ह्वै है कोऊ वपरा ॥
 सुन्दर सुवेश जाणै, ता को सहु वैन मानै,
 बोलै जो दरिद्री तो लवार कहै लपरा ॥ १ ॥
 पीताबर देख के, समुद्र आप दिनी सुता,
 दीनौ विष रुद्र कुं विलोकी हाथ खपरा
 धर्मसी कहै रे मीत, ऐसी है संसार रीति,
 एक नूर आदमी हजार नूर कपरा ॥ २ ॥

आशिकबाजी—सवैया इकतीसा

देखिवैकुं दौरि दौर, ठाढौ रहै ठौर ठौर,
 बाध्यो प्रीति रीति डौर किधौं नाथ्यौ बह है ।

आस पास वास चहै, भूख दुख प्यास सहै,

दास सौं उदास कृक^१ लासकी सी नह^१ है ॥ १ ॥

नैन वान लगै मर्द^१, हर्द^१ सौं जरद भयौ,

मोह मद छर्दि किधुं सीतांग की सर्द^१ है ।

हैं कोइ न कौ हकीम, धारैं धर्मसीम नीम,

आसिकी कें दर्द^१ आगैं और दर्द^१ गह^१ हैं ॥ २ ॥

—:०:—

छ जनो को दुख न देना

सर्वैया इकतीसा

हैंसी नर देह दाता, पूजनीक पिता माता,

इनकुं असाता दे असाता बीज वावैगो ।

देत गुरुदेव ज्ञान, या कुं मन शुद्ध मान,

इनकैं वुरैं ब^१ का न निगुरौ कहावेगो ॥

साचा सगा वाल्हा सैन इणो सेती दगा देंन,

वात वुरी करैं सो कुपात खाक खावैगो ।

आपकुं जो चाहै सुख, मानौ धर्मसीख मुख,

छ जना कु दुख दै सौ विशेष दुख पावैगो ॥१॥

—:०:—

आशादरामजी नाजर की दी हुई समस्याओं की पूति
समस्या—भावी न टरे रे भैया भावै कछु कर रे
सवैया इकतीसा

अटक कटक विचि भटक निभाट मांभि,

एक टूक होत जात एक कुं न डर रे ।

आधन में मुंग ऊरे करडू रहै हैं कोरे

कीनो है, जतन किनि देखि भावी भर रे ।

करै एक करतार कहन कौ विवहार,

होत सब भावी लार, धर्मसीख धर रे ।

भावी को करणहार सो भी भम्यो दश वार,

भावी न टरत भैया भावै कछु कर रे ॥ १ ॥

श्रवण भरै तो नीर, मार्यो दशरथ तीर,

ऐसी होनहार कौण मेटि सकै पर रे ।

पांडव गये राज हार, कौरव भयौ सहार,

द्रौपदी कुदृष्टि मार्यो कीचक किचर रे ।

केती धर्मसीख दइ, सीत विप वेलि बइ,

रावन न मानि लइ जावन कुं घर रे ।

भावी कौ करनहार, सो भी भम्यो दश वार,

भावी न टरत भैया, भावै कछु कर रे ॥ २ ॥

सच्छ कच्छ होइ पीवै, वनकौ वराह भयौ,

नरसिंह एक पिंड दोइ रूप डर रे ।

वामन परशुराम.राम कृष्ण बौद्ध रूप,

केते ही चरित्र कीने एते रूप धर रे ।

दसमौ कलंकी नाम, हूँ हैं कहुं ही न ठाम,
 अजहुं अधुरौ कांम देखि भावी पर रे ।
 भावी कौ करणहार, सो भी भन्यौ दस वार,
 भावी न टरत भैया भावै कछु कर रे ॥ ३ ॥
 यंत्र मंत्र तत्र जाल, मंफि धुं हुताश झाल,
 पैठ धौ पताल वीचि, वैठ भावै घर रे ।
 देसते विदेश जाहु, देखि मेख मीन राहु,
 भटकी सवेर साकि, सिंधु माम् तर रे ।
 जैसे ही संयोग योग, भोग रोग सोग भावी,
 धर्मसी सुवुद्धि धार, भावी लार नर रे ।
 भावी कौ करणहार, सो भी भन्यौ दश वार,
 भावी न टरत भैया, भावै कछु कररे ॥४॥
 फासी तैं निकास ग्रीव, देत फाल पर्यौ जाल,
 जाल कौ जंजाल तोरि, पड्यौ आगि भर रे ।
 जीवन जरी के जोर, जयौ नाहि मर्यौ रान,
 वागुरीनि डार्यौ वान टार्यौ सोऊ सर रे ।
 कहैं धर्मसीह मृग, केते ही मिटाइ कष्ट,
 भावी आगे पर्यौ कूप साकि रह्यो सर रे ।
 भावी कौ करणहार, सो भी भन्यो दस वार,
 भावी न टरत भैया, भावै कछु कर रे ॥५॥

समस्या

सर्वैया इकतीसा

द्वार कौं न गहें मौन कहै मैं हुं नीलकंठ,
 करहु म्निगौर कला देखि जलधार कु ।
 सूली न बढ़ाउ रीस चोर कुं चढ़ाउ सीस,
 ईस हुं बढ़ैया देहै खाट कैं आधार कुं ॥
 मैं तो हु इशान सोहै प्राची उदीची कैं वीचि,
 रुद्र हुं कपाली जाहु प्रेत वन छार कुं ।
 लीनौ महाव्रती लील धारै क्युं न धर्म शील,
 गोरी ठग ठोरी करै अैसे भरतार कुं ॥ १ ॥

—❀—

सर्वैया इकतीसा

वाकैं तुम्ह जीवन हो, जीवन तुम्हारैं वह,
 दुहुं एक जीउ देह देखवे कु द्वै धरी ।
 देव प्रतिकूल होत, होत प्रतिकूल सब,
 ऐसी अनुकूल ही सौं कैसी तुम्ह या करी ॥
 आप रहै कहुं भूलि भामिनी वक्त भूलि,
 अजहुं न आए सो तौ मोही सुं मन धरी ।
 तजि कै अमूल तूल सूलज्युं विडारी फूल,
 पीपर कैं पात पर च्यारो पात पापरी ॥ १ ॥

समस्या—चरण देख चतुरा हसी

इक दिन ख्याल हि अटकि, अरघ निशी प्रीतम आयौ ।
नीद माझि तिय निरखी, लेइ महावर पगि लायौ ॥
बहुरि गयौ वाजार, बहुत विधि देखी वाजी ।
पुनि आयौ परभात, रसिक कोतक चित्त राजी ॥
निसनेह नाह तुम मोहि तजी, डुसक डुसक रोवइ डसी ।
अध दृष्टि इतइ अलतै अरूण, चरण देखि चतुरा हसी ॥१॥

—:❀:—

समस्या-वामन के पगते जु वची

धरि जानत है विरलो जग कोऊ ।

धरि जानत है विरलो जग कोऊ ।
सूखत ना कवही सब ही रस,
जागत है वरपा विनु जोऊ ।
जोर करै तै लाइ नहिं जातु,
है है पुनि नाहि गहै विधि दोऊ ॥
पावत पार न को धर्मसी कहै,
शेष उपारि सकै नहीं सोऊ ।
वामन के पगते जु वची धरि,
जानत है विरलो जगि कोऊ ॥ १ ॥

समस्या-हरि शृगनि ते असूआ ढरि आइ ।

एक समै शिव शैल सुता रति रीति रसै विपरीत वणाई ।
संभु डस्यौ अधरा अध तैं तिण पीर पीया दृग नीर बहाइ ।
भाल कै चंद परी वहुं विद धरी है कुरंग के शृंग सखाइ ॥
ऊठत ईस ही सीस धुण्यौ

हरि शृंगनि तै असूआ ढरि आइ ॥ १ ॥

वनमें मृग एक मृगीकै वियोगहि,
वैठि रह्यो निज ठौर निसाइ ।
तब ही दोइ पथक वात करै,
अधरात भइ हरिणी सिरि छाई ।
आनन ऊरध कै चितयौ,
मृग देखत व्योम प्रिया नहीं पाई ।
दुख तै मुख ऊरध रोवतही,
हरि शृगनि तै असूआ ढरि आई ॥२॥

—:०:—

समस्या-‘आरसी मे मुख देखौ मुख ही मे आरसी’

सुन्दर पलंग पर बैठौ है चतुरवर,
आगे आइ वैठी प्रिया देव की कुआरसी ।
ताहि समै प्यारी प्रिया देखि आपु दार्षणक,
पीउ कु दिखावै भावै कीनै मनुहारसी ।
देखत हौं तेरौ मुख में तो अति पाउ सुख,
वीचि धरी आरसी तौ लागत है आर सी ।

मेरौ रूप तेरि नैन कहा तुं कहत वैन,
आरसी में मुख देखौ मुख ही में आरसी ।१।

—:❀:—

समस्या-चप कैसे च्यार फूल फूले ही रहतु है ।

अति ही अनूप नाभि रूप कूप उपरितैं,
मोतिनि की माला घटमालासी वहतु है ।
नूर नीर ऊर पूर रभ थंभ बाहुलता,
आनन कमल स्वास सौरमु गहतु है ।
नाक कीर भौंहि भीर आली कौ सुहाग बाग,
साचौकरि देख्यो है पै धर्मसी कहतु है ।
आंखनि उरोजनिकी एती अधिकाइ पाइ,
चंप के से च्यार फूल फूले ही रहतु है ॥१॥

—०—

समस्या—ठाढे कुच देख गाढे प्राण अकुलात है ।

गोरी तेरी देखि गति दूर हु विसारि मति,
देखत न कैसे मन ठौर ठहराति है ।
घुंघट की ओट माझि नैननि सो चोट करै,
जाकैं लागैं सो तो लोट पोट होइ जाति है ।
सो नै सु सुधारे सारे आधे से उचारे भारे,
काठ तौ चोगान के निसान से कहातु है ।
कहै धर्मसीह कसे ऊभै पौरीयै से ऐसे,
ठाढे कुच देखै गाढै प्राण अकुलात है ॥ १ ॥

—❀—

समस्या-नीली हरी विचि लाल ममोला -

थोरी सी वेस में भोरी सी गोरीसी,

गोरी चलावति नैन गिलोला ।

जाकै लागै ते डिगै मुन ही, मनहि महि मारत मार फलोला ।

मोहै सवै मन मोहै अचंभजु, कौहै कहौ यह रैन अमोला ।

हसै घट घुंघट ओट में आनन

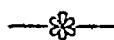
नीली हरी विचि, लाल ममोला ॥ १ ॥

एक समे वृषभान कुमारि, सिंगार सजै मनि आनिइ लोला ।

रंग हर्ये सब वेस वणाइ कै, अंगुल काइ लए तिहि ओला ।

आए अचाण तहा घनश्याम, लगाइ भरी करै केलि कलोला ।

घु घट मे एकरी अधरामनु, नीलहरी विचि लाल ममोला ॥२॥



समस्या पूर्ति—टेरण के मिस हेरण लागी

चंप सुंच्यार सखी मिलि चौक में, गीत विवाह के गावन लागी ।

गौख तें कान्ह कौ साद सुणै तैं, भइ वृषभान सुता चित रागी ।

जाइ नही चितयौ उत ओर, सखीनि कै बीचि में बैठी सभागी ।

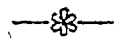
उतै कर कौ सुकराज उडाइ कै, टेरण के मिसि हेरण लागी ॥१॥

भानि मै वद ज्यु गोए के वृद में, बैठे है नद के नंद सोभागी ।

एते में आइ घटा घुरराइ, घनाघन की वरसै भर लागी ।

आधि कै राधिकै कान कै अंग, आलिगनु काजु भइ अनुरागी ।

आइ कै गाइ वताइ घौ कान्ह यौ, टेरण के मिसि हेरण लागी ॥२॥



सवैया—समस्या, हरिसिद्धि हसै हरि यो न हसै

हनुमान हरौल कियैं चढै राम,
 तयौ निधि सनिधि लक ध्वसे ।
 करि रौद्र संग्राम लकेश कुं मारि,
 कियौ सुखवास की नास नसे ॥
 शिव चिंत्यो त्रिलोक कौ कंटक सोउ,
 नमावतौ मो पद सीस दसे ।
 उत दैत्य हसे उत देव हसे,
 हरि सिद्धि हसे हर यौ न हसे ॥ १ ॥
 अपणै भुज भार पहार उपारि,
 गोवर्द्धन धार जो धार जसे ।
 तिण माखण ले मटकी पटकी,
 अपराध ते कौल के नाल कसे ॥
 अब खोल दे गात जसोदह मात,
 न माखन खाऊं न जाऊं नसे ।
 उत दैत्य हसे उत देव हसे,
 हर सिद्धि हसे हरि युं न हसे ॥ २ ॥

समस्या—योग, भोग पर

रिण-देंगौ घणौ लहणौ न कछु,

गहणौ घर मे कर एक छलौ है ।

इत भूतसौ पूत कुपात है तीय,

कहा^१ कहि वात में जात ललौ है ॥

नित गेह कै नेह में देह दहै,

न गहै ध्रमसीख न तत्त तलौ है ।

नहि जानत है चित मे इतनौ,

इण भोग हुते जति जोग भलौ है ॥ १ ॥

कहै नाम अत्तीत अनीति धरावत,

पावत लोक अलोक गिलौ है ।

विह साव सौ वेप धरै बहु घेख,

अलेख कहै पें अलेख ललौ है ॥

न सरें जत्र काज गरें जु परै,

भगरैं बहु सुं पकरै जु पलौ है ।

कहौ साध्यौ कहा इण जोग गहे,

इण जोगहु तै गृह भोग भलौ है ॥ २ ॥

समस्या—चतुराई पर

एक एक चातुरी सौ अकल नकल आनै,

सकल सयाने लोक सुनि के थगतु है ।

सू.या (समस्या)

अरे विधि तुं विधि जाणत थौं पुनि,

एक विचार कहा यह कीनों ।

गोरी करी पतरी करि की कुच,

कै उच कौ पुनि वोम ही दीनों ।

जो कवहु बहु पौन वसै करि,

दूटि जैहँ करि के जु करीनों ।

ता तव ऐसे ही कैसे वणावेगो,

धर्म कौ वैण तै मोनि न लीनों ॥ १ ॥

समस्या—कर्म की रेख तरै नही टारी

नीर भयौं हरिचंद्र नरिंद ही, कंस कौ वंस गयौं निरधारी ।

मुंज पर्यौं दुख पुंज के कुंज, गयौं सब राज भयौं हँ भिखारी ।

लंक कुवंक कलंक लगाइ है, रावण की रिधि जावण हारी ।

मीन रु मेख कहै धर्म देख पै, कर्म की रेख तरै नहीं टारी ॥१॥

समस्या—टारी तरै नही कर्म की रेखा

छप्पय

एक कौ एक रु दोइ न आवत, एक करै केई लाख के लेखा ।

एक कै रासम ही नहीं एक कै, द्वार हजार करै ह्य हेखा ।

कोऊ सुखी जगि कोऊ दुखी जन,

काहँ कौं काहू कौ कीजै अदेखा ।

कोडि उपाय करौ धर्मसी कहँ,

टारी तरै नहीं कर्म की रेखा ॥ १ ॥

समस्या—सवैया तेईसा

तत्त की या धर्मसीख धरौजु, कहा बहु गल्ल कथा विस्तारौ ।
मोल नहैं मणि की मणिहारीयै, अमृत बिंदु न कूपक खारौ ॥
चद् उद्यौत करै सबहुं दिशि, तारक कोरि छतें ही अधारौ ।
सारकी होडि कहा करै टार, सपूत घरी न कपूत जमारौ ॥१॥

—::—

समस्या—निसाणी घर जानकी सवैया इकतोसा

आयौ जाकौ दूत जमदूत को सौं पौनपूत,
या तौ देखौ वावि की प्रसिद्धि लोक वानि की ।
कीनौ उतपात पात, पात सौ आराम कारि,
बैठो है आराम करि, कैसैं लंक थान की ॥
महोदरी कहै राज, मटौ दरीखानौ आज,
धारौ वर्म सीख पै न, धारौ सीख आनि की ।
कानि कानि फौली बात, कानि तैं न कही जात,
आनी वरि जानकी, निसाणी घरि जान की ॥ १ ॥

—::—

एक तौ विचित्र चित्र शत्रु मित्र जंत्र मत्र,

राग रंग रस माफि जावता जगतु है ॥

कर्म कला करण मे धर्मसीख धरण मे,

चातुरी तें भूषण हैं दुख न भगतु है ।

पूरे वेद पाठी तेउ चातुरी कुं चित्त चाहै,

चारुं वेद चातुरी के चेरे से लगतु है ॥ १ ॥

समस्या—मान पर

मित्र उदै मेरा जीव राजी हैं राजीव सम,

जासुं मन मेल सो तौ दूर ही नजीक हैं ।

प्यार धरि सीख सो मे मानु कुल लीकजैसी,

प्यार विन सीखसो मो लागति अलीक है ॥

हित सुं दे तिनको सो मोतिनि को हारमानु,

हेत विनु हार सोऊ तिनिके की सीक है ।

मान कौ तौ वीरा मेरे हीरा कैं समान मानु,

विना मान हीरा मेरे वीरा कैं सी पीक है ॥१॥

:—❀—:

समस्या—साहिबी न भावें ताकु साहिबी फकीरी है ।

देश की विदेश की निसे की न चिंता कछु,

हीनता न दीनता न काई तकसीरी है ।

सग्गकी न जग्गकी न ढग्ग की न चाहि काहि

काहू की प्रवाहि ना न कोई दिलगीरी है ॥

सोच कौ सकोच कौ न पौच कौ आलोच मत्र,

आप है स्वतंत्र काहू जोर न जंजीरी है ।

साहिव के नाम धर्मसील गह्यो एक टेक,
 साहिवी न भावैं ताकुं साहिवी फकीरी है ॥१॥
 मन के महल मांझि समता प्रिया के सग,
 अनुभौ के अंग रंग सुखनि कौ सीरी है ।
 समता न मोह द्रोह रमता है आपा राम,
 ज्ञान गुन कला धारी ध्यान दशा धीरी है ॥
 काहू की न सक वंक तैसो राउ राना रक,
 सवही कुं मानै सम कुंजर सुकीरी है ।
 मट्टिर रुचै न जाहि कंदर कौ वास ताहि,
 साहिवी न भावैं ताकुं साहिवी फकीरी है ॥२॥

—:०:—

समस्या—थारी मे यु ठहरात न पारौ ।

दूर सौं दौरि मिलै छिन मे, छिन में गहि लेत है एक किनारौ ।
 भौर से खात फँलात चहुं दिसि, नैकु अटै नहीं होतनि नारौ ।
 एक न ठौर कहौ ठहरात, ग्रह्यो नहीं आवत हाथ अतारौ ।
 यु तृष्णामें भमै चित्त चंचल, थाली मे ज्युं ठहरात न पारौ ॥१॥
 में हर वीरज धीरज कारण, गौरी कौ प्राणनि होतै पियारौ ।
 में कियौ कारितिकेय कुमार, करुं उपगार स धातु सुधारौ ।
 कासी में होडगी हासी हमारि, निकारि वतातलि पीसही डारौ ।
 त्रिधातु त्रिकूट त्रिजांती मै ना रहु, थारी में यु ठहरत पारौ ॥२॥

:—❀—:

समस्या—काकै के दोठे कुटव ही दीठी ।

मोहनभोग जलेवीय लहूअ, घेवर तामै कहौ कहा मीठौ ।
वाढ भयौ धर्मसी कहै नागर, न्याउ कु जंगल जट्ट प्रतीठौ ।
सौ कहै वूरै कै पूर भये सब, ताकौ भाइ गुड लाल मजीठौ ।
सो गुड दीठौ है में अति मीठौ तौ,

काकै के दीठे कुटुम्ब ही दीठौ ॥ १ ॥

:—❀—:

समस्या—युं कुच के मुख स्याम कीये है ।

तीय कौ रूप अनूप विलोकत, लोकनि के लख मोहि लिये हैं ।
कोऊ कहै कुच कंचन कुंभ धुं, श्रीफल मंगल रूप ही ए है ।
लगै जिनु दृष्टि विचारि विरंचहि कज्जल के दुइ बिंदु दीये है ।
वात कौ मर्म कहै कवि धर्म जुं, युं कुच के मुख

स्याम किये हैं ॥ १ ॥

:—❀—:

समस्या—छानोरे छानो रे छानो रे छैया ।

काम कलोल मे लोल भयौ, पिऊ तीय करै ओहि ओहि रे दैया ।
नैकु हरै हरै मानि बुलाइ ल्यो, कोउ सुणै जिनु लोक पछैया ।
सेज के उपर नुपर के सुर, बाल जग्यो लग्यो रोवन मैया ।
दे तेरें वाप कै थाप डरें जिनु,

छानुं रे छानुं रे छानो रे छैया ॥ १ ॥

:—❀—:

सवैयो बात करामात

शास्त्र घोष कंठ शोष पंडिताई करै पोष,

पूछ्यौ होत राग दोष रोष न समात है ।

एक ही वचन कला दूझै कामधैनु तुला,

याही कला आगै और सवे कला मात है ॥

माने सुलतान खान रीझै सब राउ रान,

पावै दान मान थान हित की हिमात है ।

सब कु सुणै सुहात मुख की है मुलाखात,

धर्मसी कहै रे भ्रात वात करामात है ॥ १ ॥

चोरनि की करामात, चाहत अधारी रात,

साहिनि की करामात घर में विसात है ।

वालनि की करामात, पास अपणी है मात,

पछनि की करामात जागत प्रभात है ॥

जोगिनि की जाति मे जमात करामात कहीं,

गणिका की करामात सुन्दर सुगात है ।

सबहु कुं सुण्यै सुहात मुख की है मुलाखात,

सब ही कु धर्मसीह वात करामात है ॥ २ ॥

दीहा

ओरंग पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि दाराह ।

रज्ज पियारा रज्जिया, भाइ दुपियाराह ॥ १ ॥

स्वारथ मिट्टा सब ही कुं, विण स्वारथ खाराह ।

रज्ज पियारा रज्जिया, भाइ दुपियाराह ॥ २ ॥

मुलतान रे अर्ध्यातमीये प्रश्न पूछाया रो उत्तर, सवीया १ काव्य २ दूही १
नवा करिने मुक्या, दुरस्त बात जाणी ने खुशी थया ॥

सवीया इकतीसा

तुम्ह जे लिखे है प्रश्न, ताके भेद भाव वूके,
तुम ही सौं नाहि गुमे सुमे है सुदच्छ सौं ।
मानो “परमात्मा—प्रकाश” ‘द्रव्यसंग्रहादि’
और न प्रमाणौ ग्रन्थ ताणौ आप पच्छि सौं ।
ता तें और आगम के उत्तर न आवैं चित्त,
लिखि कै बतावैं केते हेतु युक्ति लच्छ सौं ।
दुर हुंते तैं भ्रम होइ, सैली नाहि कहै कोइ,
बात तौ वणै जो ज्ञान (दृष्टि) हूँ प्रतिच्छ सौं ॥१॥

श्लोक

युष्माभिर्लिखिता विचित्र रचना प्रश्नाः परीक्षार्थिभिः ।
केचिच्छास्त्रभवाः सुबोध विभवा केचित्प्रहेलीमया ।
ते वो नो मिलनादृते नहि कृते भ्रातेर्हतेवः क्षमा ।
स्तत्प्रत्युत्तर जाल मंगन मनो मीनौ धुनानीयते ॥ १ ॥

दोहा

तजै नाहि व्यवहार कुं, भजै नाहि पछपात ।
तत्व धरें दूषण हरें, सोइ मुझ कहान ॥१॥

सवैया

उपजी कुल शुद्ध पिता हनि के, फुनि शुद्ध भई करि दोष विलैं ।
करि सग पितामह सुं प्रसयौ, पित आप कुवारि कैं खेल खिलैं ॥
जग भिन्न जिवाइ चरित्र वणाइ पवित्र भलै धर्मसील भिलै ।
कहि कौन सखी पित कैं पित सु, विछुरै टुरिकैं फुनि जाइ मिलै ॥१॥

—:❀:—

सवैया—तीवीसा

चम्पक माफि चतुर्भुज राजत, कुंद मे आप मुकुन्द विराजैं ।
केतकी माफि कल्याण वसैं नित, कूजकै कूच में केसव छाजैं ॥
मालती माधौ मुरारी जु मोगरैं, गुलाव गुपाल सुवास सुसाजैं ।
कान्ह वसैं कल्पतरु माफि, नरायण फुलनि हुं कु निवाजैं ॥१॥
केतकी में केसव, कल्याण राइ केवरा मै,

कुज में जसोद सुत कुंद में विहारी है ।
मालती में मुकुन्द मुरारि वास मोगरैं,

गुलाव मे गुपाल लाल सौरभ सुधारी है ।
जूही में जगतपति कृपाल पारजात हु मे,

पाडल मे राजै प्रभु पर उपगारी है ।
चप मे चतुर्भुज चाहि चित्त चुभि रह्यौ,

सेवत्री मे सीताराम स्याम सुखकारी है ॥२॥

वैद्यक विद्या

(डभ क्रिया)

शंकर गणपति सरस्वती, प्रणमु सत्र सुखकार ।
वैद्यनिके उपकार कुं, अग्नि कर्म कहुं सार ॥ १ ॥
जो चरकादिक ग्रन्थ में, विविध कह्यौ विस्तार ।
वाग्भट्ट तैं मे कहु, भापाबंध प्रकार ॥ २ ॥
रोग सरुया सग्रह

ताप सन्निपात जाणी अतीसार सग्रहाणि,
फीहौ विध राल पाडु गोला सूल खैन है ।
हीया रोग सास खास रुधिर प्रवाह रूप,
सीस पीड रोग अरू जेतें रोग नैन है ॥
और उन्मादवात कटीवात सीत अंग,
मृगीवात कंपवात सोफोदर अैन है ।
जलोदर अंडवृद्धि धनुष चोवीस रोग,
ताकि कहै दभक्रिया वैद्य ग्रन्थ वैन है ॥ ३ ॥
दोहा

संनिपात ज्वर नाश कु, डभ वतावै च्यार ।
प्रथम तालवै दीजिये, दंभ गोल परकार ॥ ४ ॥
दूजौ लंबो ग्रीव परि, जहा धरिजै जोत ।
दो लवणै द्यौ-वत्तुला, च्यारे इहि विधि होत ॥ ५ ॥

अतीसार ग्रहणी विषे, दम्ब बतावे पच ।
 नाभि चिह्नं दिसि च्यार दत्थौ, क्रूरम पद कै सच ॥ ६ ॥
 त्रय अंगुल फुनि नाभि तजि, अधो भाग शुभ ठाण ।
 लंबो अगुल च्यार कौ, पचम डंभ प्रमाण ॥ ७ ॥

परिहा

पूठि दशा सुं आणि उदर कर सु ग्रहै,
 फीहा की जहा पीर आगुली अग्र है ।
 दीजै तिहा दंड डंभ एक एक उपरै,
 परिहा, एहि विधि वैद सुजाण तुरत वेदन हरै ॥ ८ ॥
 डम्ब तीन विध राल तहा विधि सु करै,
 लावो आगुल च्यार एक तिहि उपरै ।
 दूजौ हिरदौ मूल दंभ वत्तुल धरौ,
 परिहा, पूछै जहा बहु पीर, तहा धरि तीसरौ ॥ ९ ॥

चौपाई

पाडु रोग सोफोदर सही, तीजो रोग जलोदर लहि ।
 च्यारे डम्ब चिकित्सा जाणि, ज्युं कीजै त्युं कहु बखाणि ॥१०॥
 हृदे मूल वत्तुल इक होइ, दुहु कुखे लावा दत्थौ दोइ ।
 इक अगुल तजि नाभि प्रकार, चउथौ डंभ चूड़ी आकार ॥११॥
 फीहै जो विधि कहु बखाणि, गुलम रोग पिण सो विधि जाण ।
 पेट सूल जो होइ अगाध, सूल डंभ तै नासे व्याध ॥१२॥
 प्रबल होइ जव खैन प्रकार, बोली दम्ब क्रिया तहा बार ।
 एक तालवै दीजै गोल, दूजौ ग्रीवा जोत्रे ओल ॥१३॥

ऐतिहासिक व्यक्ति वर्णन

दीकानेर नरेश

अनूपसिंह सवैया

केई तौ विकट घाट लंघत अलघ घाट,

वीते है मुहीम में वरस वीस वीस जू ।

केइ उमराउ राउ चाकरी चपल कीनै,

भीनै वरसाति गति दौरै निस वीस जू ।

तेऊ सिरपा कु उपा करै कोरि भाति,

तो भी ताकू नानति है दिल मे दिलीस जू ।

धन्य महाराज श्रीअनूपसिंह तेरौ तेज,

वैठे ही कुंपातिसाह भेजे वगसीस जू ॥ १ ॥

—:❀:—

सस्कृत

भुज्यत इष्ट जनैः सह मृष्ट मऽवे हि तदेव हि भोजन मिष्टं ॥

स्मर्यत एव परोक्षतया किल वर्ग्यम ऽजर्ग्य मथेह विशिष्टं ॥

ज्ञान गुणत्व मिदं भुवि वर्णय यत्र हि कर्म वचश्च न दुष्ट ॥

छद्म विना द्वियते रूचिरं शुभ धर्म विधान महोऽपदिष्टं

कवित—(स० १७२६ मध्ये माघ मासे कह्यौ)

बीकपुर तखत महाराज मोटै बखत,

बजै सुजसा तणा जास बाजा ।

बड़ो उमराव दिल्लेस बखाणियो,

रूप भूपा अनूपसिंह राजा ॥१॥

कहर अरि कटकी काटि काने किया,

विरूढ मोटा लिया आप बाहे ।

करण तण आपणौ सुजस सगले कियौ,

सही परसंसियो पातिसाहे ॥ २ ॥

पाट ब्रैठा प्रथम हरप हुयौ प्रजा,

दसो दिस भूपते भेंट दीधी ।

सूरडर आप सुलतान साराहि नै,

कुंजरा धना बगसीस कीधी ॥३॥

हिन्दुआ मौड राठौड़ मौटे हसम,

पुहवि पत्ति माहि परताप प्राभौ ।

अनूपसिंह राजवी अटक कटके अडिग,

आप श्रीजी करै जास आभो ॥ ४ ॥

अमरसिंह जी सवैया ।

तेरे तो प्रताप के प्रकाश त्रास पाइ अरि

नास सरणै की आस डोलत घराघरी ।

तेरे ही नि देस देस नेस न प्रवेस कहुं

वन में निवेस काज धर की धराधरी ।

सिंह न कौ डर डारि कन्दर कै अन्दर ही

वैरि ह्विये तेरौ भय भयौ हैं खराखरी ।

ग्रहणी रोग वताये पंच, तिण विधि सुं देणा तिण संच ।
 पंच उदर हिरदै प्रकार, इहि विधि द्वादश डंभ विचार ॥१४॥
 हिरदै रोग स्वास अरू खास, डंभ क्रिया तिहा पंच प्रकास ।
 हुदै लीक अरू वत्तुल च्यार, दंभ अस्थि के मध्य विचार ॥१५॥
 रुधिर वहै नासा मुखि जबै, सीस डंभ वत्तुल इक तवै ।
 डंभ कह्या सन्निपाते जोइ, सीस रोग सीतागै सोइ ॥१६॥

परिहा

मृगी धनुष वात जव जाणियै,
 दीजै खट खट डंभ क्रिया पिहिचाणियै ।
 दो लवणे दोइ पाय एक पुनि तालवै,
 परिहा गुदड़ी उपरि एक इणै विध चालवै ॥१७॥
 कटी वात जव जाइ न ओपध गौलीयै,
 कटि नीचै दोइ डंभ वणावौ चूलीयै ।
 अंड वृद्धि जव होइ दंभ इक दीजियै,
 परिहा, पाय अंगुली पास समभि विधि लीजियै ॥१८॥
 वामी दिसि जो होइ कुरंड विथा घणै,
 दक्षिण दिसि घौ दंभ तुरत पीडा हणै ।
 षड अंगुल दश जाण तहा दश दंभ है,
 परिहा, पंच पच दोइ जानु सधि विचि थभ है ॥१९॥

नेन पीड अति ही जन औषध औसरै,

दो लवणे द्यौ दंभ, तुरत पीड़ा हरै ।

अग्नि क्रिया के श्लोक वागभट ग्रन्थ में,

परिहा, कही भाषा सुं सरल वचन के पंथ मै ॥२०॥

सतरै चालीस विजयदशमी दिनै,

गच्छ खरतर जगि जीत सर्व विद्या जिनै ।

विजयहर्ष विद्यमान शिष्य तिनके सही,

परिहा, कवि धर्मसी उपगारै दंभक्रिया कही ॥२१॥

—:०:❀:०:—

राज श्री अमरसिंह नामै सिंह सम ह्वै पै

मुरापन कैसे सिंह करिहै वरावरी ॥ १

दोहा

खड लाराखेसि, अमरेसै लीधी उरा ।

राख्यो नही बहु रोस, दोइ आखर बगसे दीया । १ ।

अमरेसै वाह्यौ सु असि अटक्यौ अरि उर आइ ।

तिण अरि धार बाधी तुरत, जोयौ मन्त्र जगाय ॥ २ ॥

काव्य

श्री मच्छी अमरादिसिंह भवता नूनं रणे वैरिणा ।

वास्तारित मित्थमत्रमयकावाक्किं वदंत्या श्रुता ।

मन्ये नाह मिति त्वया त्वति तरां तत् स्त्रीपु सिक्तंदकं ।

नोचेन्निर्जरवन् साद् प्रवहति स्त्री दगंभः कथं ॥ ६ ॥

अमृतध्वनि

सबल सकल विधि सबल सुत, गढ़ जेसाण गरिद ।

अमरसिंघ इल मैं अखी, सोभत जाणि सूरिंद ॥ १ ॥

चालि—तौ सोभ सुरिन्द दूदुतिहि दिणंद हंविण धनदहानसमंद ।

दूदुथिय दरद हलित दरिद दसहि दिशिंद ।

दधितां हद दूदेव विरूद हल बलरूद दूदूठ द्विरद द्विदद

असि वृन्द ।

दूदुदभि नदूद दूदुसह सबदूद दूदुयण दहद दहवट दद ।

दूर सिस हद द्विल विहसद दूदुनिय कुमुदद

दूदीपति चन्द दूदेखि नरिंद दिन कविंद

दू जयसदूद दूदीरघ आजख तास ॥ २ ॥ स० ॥

गीत—राउल अमरसिंहजी रौ -

बलोचारा माडला रौ सवत १७२६ जेठ माहे श्री जैसलमेर मे कह्यो ।

कवित

जेठ तपते तपत जीव जगरा जिके,

आपणी ठाम सहु रहै अटकी ।

छोडि सहु काम तार्के सहु छाहडी,

कीध तिणवार अमरेस कटकी ॥१॥

साभली वात वडलोच सीमा हुता,

धपटिया धेगुआ करे धाडौ ।

खलकती लूअ मै खण्ड करिवा खला,

आवियो अमरसिंह तेथि आडौ ॥२॥

काटि खग भाटि अरि धाटि दहवाटि करि,

अधिक जस आपरे तखत आयौ ।

भलभली भेट भूपा तणी भोगवै,

सवल तण आज प्रतपै सवाथौ ॥३॥

दौलति परजि सहु एम आसीस द्यै,

जीपिया जग तिम वले जीपौ ।

दूथिया पाल सु दयाल दयाल हर,

दीपते सूर जिम सदा दीपौ ॥४॥

कवित्त जसवन्तसिंहजी (जोधपुर महाराज) का स० १७३६ रे पोस माह मध्ये कर्ह्यौ महाराजा जसवन्तसिंहजी देवलोक हुआ पछली । देहरा पड्या तिण समीर्ये रो ।

हुतौ जसवंत ता थोक सगला हुंता,

हुती हिन्दुआं तणै वात हाथै ।

देखसी असुर कवण तजि देहरा,

सलकिया देव जसवन्त साथै ॥१॥

पड्यै जिण जोध पौकार सगलै पड़ी,

धरै नहीं अरज पातिसाह धीठौ ।

राह वंधी हुड रखे कोइ रोकसी,

देवै जसवंत रौ साथ दीठौ ॥२॥

हुतौ हिंदुआ तणौ धरम सूरा हरौ,

सबल चिंता पड़ी देस सारै ।

दुख मरुधर तणा रखे हिव देखस्या,

ललकिया देव जसवंत लारै ॥३॥

सुणी सुर लोक में वात गजसीहरै,

हुसी हिंदुवा तणी रखै हासी ।

आपण वीज निज अंश अवतारिया,

आवियौ आप हिव देव आसी ॥४॥

कवित्त न० २ (जसवन्तसिंहजी रा समईया पछली)

मरुधर देस महाराज मोटौ मरुद,

कदै नहीं परज ने चित काड ।

असुर सुं वीहते इन्द्र आलोचि नै,

भीर नैं तेडियौ जसू भाइ ॥ १ ॥

जाइ सुरलोक में अमल कीवौ जसु,

असुर सहु नाति मृतलोक आया ।

कसर सहु आपणी मूलगी काढ़िवा,

लागतै जोर जजाल लाया ॥ २ ॥

लोक सगला कन्हें जीजीया लीजियै,

देहरा ठाम महिजीद दीसै ।

थरहरै गाय इण राव इन्द्रसी थका,

हियौ इण राज सु केम हीसै ॥३॥

खुंदिजै परज चिहु पाखती खोसिजै,

सहु कहै लोक इम केम सरसी ।

धरौ मन धीर सुख हुसी हिंदू धरम,

कुअर जसराज रा राज करसी ।४।

कवित दुर्गादासजी का

(महा) मौड मुरधर तणा खला दल मौडता,

दौड पतिसाह सु करै दावा ।

रौड रमता थका चौड रिम्म चूरता,

ठौड ही ठौड राठौड ठावा ॥५॥

छात ढलतैं जसू हुइ नाका छिली,

साक तजि साह सुं करै साका ।

दाव पाका कीया सुजस डाका दिया,

जोध वाका करै नाम जाका ॥६॥

आगला भूप श्री अजीतसिंह आगला,

डागला दौड़ज्यू दिली कति दूर ।

भागलै भुजा बल खला करि खागलै,

सागलै कीध जस सूर हर सूर ॥३॥

खीजीया यवन ल्यै जीजीया खूटिवै,

खेचला वीजीया रैत खाखी ।

प्राण जोधाण रै पाजीया पी जीया,

रेख दूर्गदास राठौड़ राखी ॥४॥

गीत श्री शिवाजी रो

श्री सूरत मध्यै कहाँ स० १७३३ आसाठ माहे ।

सकति काइ साधना, किना निज भुज सकति,

बड़ा गढ़ धूणिया वीर वाकै ।

अवर उमराउ कुण आइ साम्हौ अडै,

सिवारी धाक पातिसाह साके ॥ १ ॥

खसर करतां तिके असुर सहु खुंदिया,

जीविया तिके त्रिणौ लेहि जीहै ।

शब्द आवाज सिवराज री साभले,

विली जिम दिल्ली रो धणी वीहे ।२।

सहर देखे दिली मिले पतिसाह सु ;

खलक देखत सिवौ नाम खारै ।

आवियौ बले कुसले दले आपरे,

हाथ घसि रह्यौ हजरति हारै ॥३॥

कहर म्लेच्छा शहर डहर कन्द काटिवा,

लहर दरियाउ निज धरम लौचै ।

हिन्दुओ राउ आइ दिली लेसी हिवै,

सबल मन माहि सुलताण सोचै ।१।

नाजर आनदराम जी रो सर्वोथो

जायक गुणै अगाह, न्याय कौ करै निवाह,

आलोची वडौ अथाह धीरज को धाम जू ।

सज्जन फल्यो उमाह, दुज्जना के हिये दाह,

पुण्य को सदा प्रवाह जाको शुभ नाम जू ।

चित्त मे धरते चाह नित्त ही उडीके राह,

पूज्यौ इष्ट देवताह कीनौ इष्ट काम जू ।

सब ही करै सराह वाह वाह वाह वाह,

आयौ तो भयौ उच्छाह श्री आनन्दराम जू । १ ।

:—❀—:

वर्त्तमान जिन चौबीसी

१ आदि जिन स्तवन

राग भैरव

आज सुदिन मेरी आस फली री ॥ आज० ॥

आदि जिणंद दिणद सो देख्यो,

हरख्यो हृदय ज्यु कमल कली री ॥ आज सु० ॥१॥

चरण युगल जिनके चितामणि,

मूरति सोइ सुरवेनु मिली री ।

नाभि नरिंद को नंदन नमता,

दूरित दशा सब दूर दली री ॥ २ ॥

प्रभु गुण गान पान अमृत को,

भगति सु साकर माहि मिली री ।

श्री जिन सेवा साइ धर्म सीमा,

ऋद्धि पाइ साइ रंग रली री ॥ ३ ॥

२ अजितनोथ स्तवन

राग—भैरव

प्रभु तूं अजित किन्हीं नहिं जीतो,

सोभत रवि ज्युं तेज सदीतो ।

अधिको को नहीं तोहि अगीतो,

तेरी महिमा जगत जगीतो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥

सुर नर सब मे अनग अजीतो,
 काम कठिन सो ते वश कीतो ।
 जल सब अनल बुझाइ वदीतो,
 पानी सोइ वडवानल पीतो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
 विन प्रभु दरसण काल बितीतो,
 भवभय भमीयो बहु भयभीतो ।
 गुणवत तेरी सेव ग्रहीतो,
 श्री धर्मशील सुशील लही तो ॥प्रभु०॥३॥

३ श्री सभव स्तवन

राग—सोरठ

सेवा बाहिरो कइयै कोइ सेवक (ए देशी) ॥

सभवनाथ जी सब कु सुखदाइ, किम ए विरुद कहावै ।
 इहा आछी दीसैं अपणांयत, सेवै ते सुख पावै ॥ सभव ॥ १ ॥
 खिजमत करि कर जोडि खिजमत, आप नरीमैं औजाह ।
 मोल द्वियै पिण मसकित माफक, मोटा री नहीं मौजाह ॥२॥स ॥
 भगति करै त्या राखै भेला, कठै न फेरैं कबही ।
 श्री धर्मशील कहै सुणजो साचो, स्वारथ राचै सबही ॥स०॥३॥

४ श्री अभिनन्दन स्तवन

राग—वसत

धन धन दिनकर उग्यो उछाह,
 अभिनन्दन जिन वदन उमाह ॥१॥

सब तमस मिट्यौ प्रगट्यौ सराह,

वर्त्यौ शुभ ज्ञान प्रकाश बाह ॥२॥

चित कोक विलोकवै करत चाह,

सब सुर नर जिनकी करत सराह ॥३॥

फरस्यौ शुभ यश परिमल प्रवाह,

लुलि नमता समकित रतन लाह ॥४॥

इनके गुण गण महिमा अथाह,

गावइ धर्मशी गुण गीत गाह ॥५॥

५ श्री सुमति जिन स्तवन

राग—वैलाउल

मेरे माई सुमति की सेवा साची ।

जिनके नाम प्रसाद—जयी है, राधा आप सुं राची ॥१॥

वादी कुबुद्धि किए बहु कामण, नटवी ज्युं बहु नाची ।

दूर निकार दइ बहु दूती, वृष्णा मारी तमाची ॥२॥

सुजानी कै परप्यारी सुं, करनी प्रीति सुकाची ।

सुधर्म शीलवती सुखदाइ, युवती याहीज राची ॥मेरे०॥३॥

६ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन

राग—तोडी

हृदय पद्मप्रभु राचि रह्यो री ।

मंगल सकल हर्ष भयौ मेरे, लाभ अनोपम रतन लह्यो री ॥१॥

काम क्रोध प्रवेश न पावत, गेह सुज्ञानी आप गह्यो री ।
 दुश्मन सकल निकल गये दूरे, सबल प्रताप न जाइ सह्यो री ॥२॥
 अब अपने घर साहिव आयौ, चरण न छोडुं चित्त चह्यौ री ।
 शासन बगस्यौ जिन धर्म सीमा,
 करिहौं मैं पिण आप कह्यौ री ॥ ३ ॥ ह० ॥

७ श्री सुपाश्वर्ण जिन स्तवन

राग—सारंग-वृन्दावन

सही, न तजुं पार्श्व सुपास कौ ॥न०॥
 सकल मनोरथ पूरण सुरमणि, सुरतरु लील विलास कौ ॥न०॥१॥
 सुरनर और की करि करि सेवा, हुइ थानक कुण हास कौ ।
 अधिकौ लही साहिव को आदर, दास हुवै कुण दास कौ ॥२॥
 शुद्ध समकित धर जिनवर सेवा, करण पातिक नास कौ ।
 श्री धर्मसींह कहै मोमन मधुकर, प्रभु पद पद्म सुवास कौ ॥३॥

८ श्री चद्रप्रभु जिन स्तवन

राग—मारु

चद्रप्रभु नी कीजइ चाकरी रे, चित्त चोखे हित चाहि ।
 सूधी कीधी सेवा स्वामिनी रे, लीधौ तिण भव लाह ॥१॥च०
 चाकर होइ रह्यो जसु चंद्रमा रे, लछन मिशि पग लाग ।
 स्वामी नै सेवक उपमा सारखी रे, जुगति नहीं इण जागि ॥२॥च०
 प्रभ नी ठामै प्रभु एहवौ पढ्या रे, योग्य अर्थ ए जाण ।
 श्री धर्मशी कहै सूधो समभियै रे, पंडित कहै ते प्रमाण ॥३॥च०

६ श्री सुविधि जिन स्तवन ।

राग—आसा

कवहु मै सुविधि कौ ध्यान न कीनड ।

आरत रौद्र विचार अहोनिश,

दुर्गतिवर करिवै घर दीनों ॥ १॥

दीप ज्यु औरनि पंथ दिखायौ,

आपहि लाग रह्यौ तम लीनों ।

मेरो तन धन करि सुख मान्यौ,

मणि परखी पिण अन्तर मीनों ॥२॥

परमारथ पथ नाहि पिछ्छाण्यौ,

स्वारथ अपणौ मानि सगीनों ।

सुविधि कही धर्म सीख न धारी,

निकल गयौ नर जन्म नगीनों ॥३॥

१० श्री शीतलनाथ स्तवन ।

राग--कान्हरी

सुखदाड शीतल स्वामी रे, शुभ सुमता रस विशरामी रे ।

उपकारी गुण अभिरामी रे, नमीयै एहनै शिर नामी रे ॥ १ ॥

केड क्रोवी कपटी कामी रे, खल केड केहि में खामी रे ।

अज्ञानी अगुण अथामी रे, करु तनु सेवा किण कामी रे ॥२॥

जिनवर जग अन्तर्यामी रे, गुण गावै ते शिवगामी रे ।

ध्यावै धर्मशी धर्म धामी रे, पुण्ये प्रभु सेवा पामी रे ॥ ३ ॥

११ श्री श्रेयास जिन स्तवन

राग—सामेरी

केवल वाला रे केवल वाला, कोउ मिलि है केवल वाला ।
 ताको पूंछु कब तूटेगा, जन्म मरण दुख जाला ॥ के० ॥१॥
 भव र ममते पार न पायो, मोह रहट की माला ।
 पावु ज्ञानी तो अब पूछु, कब यह मिटय कशाला ॥ २ ॥
 धन अपनै की शोध न धारी, मद आठू मतवाला ।
 सो दिन सफल वचन सद्गुरु के, पीवुं अमृत प्याला ॥३॥
 श्रेय भयौ लह्यौ श्रेयास साहिव, आया समकित आला ।
 सब सुख कारण अनुभव सानिधि, सु धर्मशील संभाला ॥४॥

१२ श्री वासुपुज्य जिन स्तवन

वाह वाह वासुपुज्य नी वाणी, वासव पण आय वखाणी ।
 आवइ भावइ आफाणी, उवारणा लेइ इन्द्र इन्द्राणी रे ॥१॥
 मधुर ध्वनि गाज भंडाणी, योजन लगि सर्व सुणाणी रे ।
 सुर नर तिरि सहु समझाणी, अतिशय पैत्रीस आणी रे ॥२॥
 वैर वाता सहु विसराणी, पशु ए पिण प्रीति पिछाणी रे ।
 धर्मशील सूधा सचाणी, शिवरमणी तणी सहनाणी रे ॥३॥

१३ श्री विमल जिन स्तवन

राग—मल्हार

विमल जिन विमल तुम्हारा ज्ञान ।

परखै लोक के सकल पदारथ, पट् द्रव्य नीकी खान ॥१॥ वि०

मिथ्या, अविरती योम कषायै, बंध सत्तावन जान ।

अष्ट कर्म, इक सौ अट्टावन, प्रकृति तजी पहिचान ॥२॥ वि०

आपहि आप सुं आप पिछाण्यौ, परगुण नाहिं प्रमाण ।

थरि धर्म ध्यान पिछान सुक पथ, थिर बैठो शिव थान ॥३॥वि०

१४ श्री अनन्तनाथ स्तवन

राग—सोरठ

अनन्तनाथ रा गुण अगम अनन्ता, साभलजो सहु संता ।

रयणायर में गिणती रयणे, मुनि न कहै मतिमन्ता ॥१॥

मध्य अनन्तान्त छयें में, थोवा सिद्ध अनन्ता ।

एक निगोदी जीव अनन्ता, बलिय वनस्पति वन्ता ॥२॥

काल पुगल आकार अनुक्रम, अधिक अनन्तानन्ता ।

श्री धर्मशी कहै ए सर्दहिजो, साखी सूत्र सिद्धता ॥३॥

१५. श्री धर्मनाथ स्तवन

राग—धन्याश्री

धर मन धर्म को ध्यान सदाइ ।

नरम हृदय करि नर म विषय में, कर म करम दुखदाई ।धर।१॥

धरम थी गर्म क्रोध के घर में, परमति सरमति लाई ।

परमात्म शुद्ध परमपुरुष भज, हर म तुं हरम पराई ॥२॥

चरम की दृष्टि विचर मती जिवड़ा, भर म भरम मत भाई ।

शरम वधारण शर्म को कारण, धर्म ज धर्मशी ध्याई ॥३॥

१६. श्री शान्ति जिन स्तवन

राग—वेलाउल अलहियौ

श्री शान्ति जिनेश्वर सोलमौजी, शान्तिकरण सुखदाइ ।

नाम प्रसिद्ध जस निर्मलो, पूजै सहु सुरनर पाय हो ॥श्री०॥१॥

आयउ शरण उवारियौ जी, पारेवो धरि प्यार ।

दान दियौ निज देह नौ, इम मोटा ना उपगार हो ॥श्री०॥२॥

उदरे आवी अवतर्याजी, अधिकाई करी एह ।

मरकौ उपद्रव मेटियौ, हष्यौँ सहु देश अछेह हो ॥श्री०॥३॥

भव एके हिज भोगवी जी, दीपत पदवी दोय ।

चावौ चक्रवर्ती पाचमौ, सोलम जिनवर सोय हो ॥४॥

समरथ ए लह्यौ साहिवौ जी, कमणा नहीं हिवै काय ।

सेव्या वाञ्छित हुवै सदा, इम कहै धर्मशी उवकाय हो ॥श्री०॥५॥

१७. श्री कुथुनाथ स्तवन

राग—पंचम

शुभ आतम हित साधि रे साधि,
 उलभ्यौ परसु म करि उपाधि ॥शु०॥
 तु हिज राजा तुं हिज रंक, सुणि दृष्टान्त ज्युं होइ निशक ॥१॥
 करि नव नव भव कीडी कुंथु, क्रमि सर्वारथ सुर जिन कुंथु ।
 छठौं चक्रवर्ती साधी छः खड, पदवी दोइ पाई परचंड ॥२॥
 इण हिज बलि दे उपदेश, केई तार्या टालि कलेश ।
 आप तुं अतरदृष्टिसुं ईख, साची धर सदा गुरु धर्मशीख ॥३॥

१८ श्री अरनाथ स्तवन

राग—कडखी

कह अरनाथ इम. अरति रति क्यों करौ,
 आधि अरहट बडी एम आखी ।
 भगिच खाली हुचै नाई खाली भरी.
 मूर्य शशि भमड इण बात साखी ॥ १ ॥
 अरहु मन ठाम नै काम पिण बस करौ,
 अरहु मत द्रैप मत मान धारौ ।
 काल रक नाव नै केड़ि फिगतौ रहे.
 बहै मगिगौ नहिं कोड वारौ ॥ २ ॥

सुणौ अरनाथ अरदास सेवक तणी,
 स्वामी कही एह धर्म शीख साची ।
 तेह पलिस्यै नहीं तोड तरिसुं तिणै,
 राज री भगति में रहिस राची ॥ ३ ॥

१६. श्री मल्लिनाथ स्तवन

राग—सिन्धु

मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल ।
 पिता तणी पिण चिन्ता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल ॥१॥
 अहो अहो ताहरी अथग अकल्ल, आपणै रूप रचाइ अवल्ल ।
 करि जीमण इक एक कवल्ल, भरय तिहा भोजन भल्ल भल्ल ॥ २ ॥
 आपणा जे अरि मित्र असल्ल, एकान्ते धरि एक एकल्ल ।
 जुगति देखाई तें भल्ल जल्ल, दुर्गंध नासै भूत दहल्ल ॥ ३ ॥
 तिण सु अपणड केहो तल्ल, चारित्र लीधौ चोखी चल्ल ।
 अरिहन्त पद धर्म शील अदल्ल, पाली पहुतो मुगति महल्ल ॥४॥

२०. श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग—जैतश्री

सब मे अधिकी रे याकी जैतश्री, काहू और न होड करी ॥स०॥
 आठों अंग जोग, उद्धत मायौ मोह अरी ॥ १ ॥

अन्तर वहि तप जप आरा वे, जोर मदन की फौज जरी ।
 ज्ञानी हनी ज्ञान गुरजा सु, ममता पुरजा होइ परी ॥ २ ॥
 अनुभव वल सु भौदल भागे, फाल फतह करी फौज फिरी ।
 कहइ धर्मशी मुनिसुव्रत दाना, देत सदाइ मुगतिपुरी ॥ ३ ॥

२१. श्री नमि जिन स्तवन

राग—श्री राग

नित नित नमिजिन चरण नमुं ।

मनहि मनोरथ उपजत मेरे, भमर होइ प्रसु पास भसु ॥ १ ॥
 न नमु और कौ तव सब निंदा, खलक करौ तोइ वचन खसुं ।
 लालच लोभ किही नही लागुं, राति दिवस जिन रंग रसूं ॥२॥
 गुण गण गान इन्हीं के गावुं, दुर्गति के दुख दूर गसूं ।
 श्री धर्मशी कहै इण सें राचुं, दूजा इन्द्रिय विषय दसूं ॥ ३ ॥

२२. श्री नेमिनाथ स्तवन

राग—वसत

करणी नेमिकी, काहू और न कीनी जाय । क०

तरुण वय परणी नहीं हो, राजिमती यदुराय ॥ १ ॥
 जीव पुकार सुणी जिणें हो, करुणा मन परिणाय ।
 गज रथ तजके पुनि गद्यौ हो, शिलाग रथ सुखदाय ॥ २ ॥
 ममता वादी-सूकि के हो, सुमता ली समभाय ।
 सिद्ध वधु विलसै सदा हो, प्रणमैं धरमसी पाय ॥ ३ ॥

२३ श्री पार्श्वनाथ स्तवन

राग—रामगिरी

मेरे मन मानी साहिव सेवा ।

मीठी और न कोड मिठाइ, मीठा और न मेवा ॥ १ ॥

आत्म राम कली ज्यो उलसै, देखत दिनपति देवा ।

लगन हमारी यासुं लागी, रागी ज्युं गज रेवा ॥ २ ॥

द्र न करिहुं पल भर दिल ते, स्थिर ज्यु मुदरी थेवा ।

श्रीधर्मशी प्रभु पारस परसै, लोह कनक कर लेवा ॥ ३ ॥

२४ श्री वीर जिन स्तवन

राग—वेलाउल

प्रभु तेरे वयण सुपियारे, सरस सुधा हुं ते सारे ।

ममवसरण मधि सुणि मधुर ध्वनि, वृक्षति परपद वारे ॥

सुनत सुनत सब जन्तु जन्म के, वैर विरोध विसारे ॥ १ ॥

अहो पैतीस वचन के अतिशय, अचरज रूप अपारे ।

प्रवचन वचन की रचना पसरत, अब ही पंचम आरे ॥ २ ॥

वीर की वाणी सवहि सुहाणी, आवत बहु उपकारे ।

धन धन साची एह धर्मशी, सब के काज सुधारे ॥ ३ ॥

२५ चौवीसी कलस

राग—धन्याश्री

चितधर श्री जिनवर चौवीसी ॥

प्रभु शुभ नाम मंत्र परसादे, कामित कामगवीसी ॥ १ ॥

रागबन्ध द्रुपद् रचनापै, माहै ढाल मिली सी ।

रोटली गहुं की सब राजी, मागे स्वाद् कुं मीसी ॥ २ ॥

सतरसै इकहुत्तर गढ जेशल, जोरी यह सुजगीसी,

श्री सद्य विजयहर्ष सुख साता, श्री धर्मसीह आशीशी ॥ ३ ॥

—:०:—

चौवीस जिन सबैया

आदि ही कौ तीर्थंकर, आदि ही कौ भिक्षाचर,

आदि राय आदि जिन च्यारौ नाम आदि आदि ।

पाचमो रिपभ नाम, पूरै सब इच्छा काम,

कामधेनु कामकुभ कीने सब मादि मादि ।

मनसौ मिथ्यात भेट, भाव सौ जिणद भेट,

पावौ ज्युं अनन्त सुख, गावो गुण वादि वादि ।

साची धर्म सीख धारि, आदिहि कुं सेवो यार,

आदि की दुहाई भाई जौ न वोलेँ आदि आदि ॥१॥

राजा जितशत्रु संग राणी विजया मुरंग,

खेलै पासत सार पै. तमासा कैमी बात है ।

आप भूप हारि आई, पटराणी जेत पाई,

या तौ अधिकाई गर्भ अर्भ की हिमात है ।

गुण को निपन्न नाम 'धाम कौ 'सहस्र धाम,

असौ है अजित स्वामी, विश्व मे विख्यात है ।

दूसरे जिनद जैसो, दूसरौ न देव कोउ,

ध्यावौ एक यौही धर्म सीख जो धरातु है ॥२॥

संभव कौ अनुभौ धरि जातैं मिटै समता समता रस जागें ।
 पाप सताप मिटैं तत्र ही जव आपसुं आपही की लय लागें ।
 धरौ ध्रम सील लहौ निज लील, जहाँ गुण ग्यान अनंत अथारें ।
 संभव संभव भाव भलें भज, संभव सौं भव के भय भागें ॥३॥
 पिता कहें नंदन नीख सुनौ, जु चलौ अभिनन्दन वन्दन हेतैं ।
 नन्दन संवर कौ सुध तवर, 'स्यंदन धारत हूँ सिवग्वेते ।
 कंद के फंद निकंदन दंदन, जा तनु कुन्दन की छवि देतैं ।
 पदम चद सौंहे जस उज्जल, चौबीस जिनद नमो सुभ चेतैं ॥४॥
 मेघकौ अंगज मेघ जुं गाजन, वाणि वखाणि मुजाण सुहाता ।
 चौतीस आपके हें अतिनं, अधिकें इक एकही वाणी विख्याता ।
 जैन के जैन महाजग मंगल, न्याय तुं मंगल मंगला माता ।
 पीयूषई ईख धरौ ध्रम नीख, भजौहु सुमत्ति सुमत्ति कौ दाता ५
 आज फल्यौ सुर को तन अंगण, आज चिंतामणि सो कर आर्यौ
 काम कौ कु भधर्यौ निज धाम, सुवा मनु पांन कराइ धपायौ ।
 आज लहौ रसना रस कौ फल, जा दिन तैं जिन कौ जस गायौ ।
 आज मुदंही उदं ध्रम सील, भयौ पदमप्रभु साहिव पायौ ॥६॥
 पारस फास प्रस ग कुं पाय, भयो हें कला यस कंचन जाचौ ।
 तो भी मिटैं नहि छेदन भेदन, बंदन तातैं सब गुण काचौ ।
 जैन कुं भेट मिश्यात कु मेदि, जु केवलजान ही कै रंग राचौ ।
 न्याय सकार धर्यौ धुर नाम कें, पारस हूं तैं सुपारस साचौ ७
 चंद्र की मोल कला सबही, वदि पल्लमे मद्र दसा मढती हूँ ।
 यार्कें तो चौगुणी चौ दुगुणी पुनि, वान विसेप सदा वढती हूँ ।

ग्यान प्रकास कहै ध्रमदास, सदा जसवाम दुनी पढती है ।
लछन चन्द्र करै नित चाकरी, चद्रप्रभू की कला चढती है ॥८॥

वीने है अनादि काल १योनि कै जजाल जाल,
चोरासी की फासी सहै तू भी ताकै मधिकौं ।
पुण्य कै प्रकार अवतार आयौ मानव कै,
पायौ है जिहाज सोड जन्म जलनिधिकौं ।
यारी समतासौं जोरि ममता सौं ताता तोरि,
आप ही धणी है तू तौ आपणी ही रिधिकौं ।
ध्यावौ धर्म सील ध्यान पावौ ज्युं अनंत ग्यान,
सुविधि बतायौ असौं मारग सुविधि कौं ॥९॥

क्रोध विरोध सबे मिटि जात है, धारत हैं मति राग न धेखें ।
मूलतै २सात मिटात है घातक, आवत सम्यक भाव अलेखें ।
ताप मन्ताप मिटें भवके सब, ३ढंड दसा कवहुं नहि देखें ।
शीतल कौ मुख देखत ही मुक्त, ४हीतल शीतल होत विसेपें ।१०।
पाय श्रेयास जिणिद के पाय, उपाय श्रेयासि ५अपाय मिटाए ।
मातही विष्णु पिता पुनि विष्णु, बडे दुहुं के इक नाम बताए ।
इन्द्रवाकु कै वस वृषें अवतंस है, उच्चकै चन्द्र सबै ही सुहाए ।
इग्यारमे साहिव की लही सेव, इग्यारमी रासि सबे ग्रह आए ११

१ चोरासीलाख जीवायोनि २ चार अनतानुबंधिया, तीन गोहिनी एवं
सात

३ कलह ४ हियो ५ विघन

केईतौ ^१कैलास कौ रहास करि बैठि रहे,
 काहू को तौ वास है वंवूल ^२बोधितरू को ।
 कोऊ ^३जल-राशि सेप नाग पास सोवत है,
 काहू को रहास कामधेनु पूछ खुरको ।
 कौऊ तौ अकास अवकास माहे भटकत,
 कोऊ कहै मेरौ मेर मैं हूं धणी धुरको ।
 केवल प्रकासी अविनासी हैं अनैसी ठौर,
 तहाँ कीनौ वास वासपूज सिधपुरको ॥१२॥
 विमल विसेप ग्यान विमल कला निधान,
 विमल विचार सार मुद्ध साधु मगमे ।
 केते करे उपगार तारे भव्य नर नारि,
 बूडते ससार वार अबुधि अथग मे ।
 एक तेरी करी सेव सब ही मनाए देव,
 सबही के पग पैंठे एक गज पग मे ।
 सुद्ध धर्म सील साथ, असौ देव कौन आथ,
 जैसौ है विमलनाथ तेरो जस जग में ॥१३॥
 आदि के ^४अनंतानत, सिद्ध सबे जीव सत,
 दूसरें निगोड जीव तीजें ^५वनरास है ।

१ महादेव २ कृष्ण वासी बोधितरू, पीपल ३ समुद्र ।

४ सिद्धा निगोय जीवा, वशस्सई काल पुगला चैव ।

सव्वमलोगनह पुण, तिवगाऊ केवल गामि ॥ २ ॥

५ वनस्पती

चौथो काल कौ मरूप, पंचमों पूगल रूप ।

छट्टो भेद वेद तू अलोक को आकाश है ।

इण के त्रिवर्ग मान, केवल दरस ग्यान,

असै धर्म सीख ध्यान अतर प्रकास है ।

आप तू अनतनाथ, नाम है अरथ साथ,

पाचु ही अनंत कहे, ते भी तेरै पास है । १४१

पुद्गल कै संग सेती, पुद्गल ही आई मिलै,

ज्ञान दृष्टि जगी नाहि लगी दृष्टि चर्म चर्म ।

आत्म अनंत ज्ञान सोई धर्म थान मान,

और ठौर दौर दौर, कर सोइ कर्म कर्म ।

विश्व मे रहे है व्याप, प्राणी करै पुन्य पाप,

आपकुं न जानै आप, भूल्यौ फिरै भर्म भर्म ।

व्यावौ प्रभु धर्मनाथ, शुद्ध धर्म शील साथ ।

धर्म की दुहाई भाई, जो न बोलै धर्म धर्म । १४१

छोरि पटखड भार, चौसठि हजार नारि ,

छन्नु कोरि गाम छोरि तोरि नेह तंत तत ।

वाजै वाजै तीन लाख, लाख लाख अभिलाप,

तजिकै चौरासी लाख, तेजी रथ दति दति ।

चित्त मे बेराग धारि, चित्त के भडार छारि,

भीनौ उपशात रस, कीनौ मोह अत अंत ।

चाके गुण है अनन्त, धर्मसी कहै रे संत ।

संति की दुहाई भाई, जो न बोलै संति सति ॥ १६ ॥

जल के उपल जैसें करणें यथाप्रवृत्ति,
 कर्म थिति तुच्छ के परस देस ग्रंथ ग्रंथ ।
 कीनो हें अपूरवकरण अनुभौ प्रमान,
 ज्ञान के मथान सु मिथ्यात मोह मथ मथ ।
 करण अनिवृत्ति आयो, धर्मसील ध्यान ध्यायौ ।
 पायौ है उदं सरूप समकित कौ पंथ पथ ।

कु थ कु थ सम लीनौ, चक्रि पद हेय कीनौ,
 कु थ की दुहाई भाई, जो न वोलै कु थ कु थ ॥१७॥

सुदर्शन गात सुदर्शन तात है, देवीय मात माहा जसनामी ।
 लह्यो अवतार भयौ चक्रधार, तिथंकर ह्वै पदवी दोइ पामी ।
 जाके प्रताप मिटै सब ताप, जपौ जप ताप सु अन्तरजामी ।
 तरौ भव पाथ^१ सदा सुख साथ, नमौ अरनाथ अढारम
 सामी ॥१८॥

जिनके मुर कु भसौ कु भ पिता पुनि, मात प्रभावित पुन्यकी पोपी
 सुपने दम च्यार लहै सुविचार, भयौ जिनको अवतार अदोषी
 कितने नृप तारि किए उपगार, लह्यौ सिव द्वार भवोदधि सोपी
 मति को मतभेद कहौ कोउ कैसें हुं, मल्लिकी चह्लि असह्लिकी
 चोखी ॥१९॥

मात के कूखि लह्यौ अवतार, भयौ व्रत्त कौ अभिलाख^१ अमदौ^२
 तात कियौ व्रत्त उच्छ्रव देस में, सेस प्रजाहु यही परिछंदौ^३ ।
 मोटी भई तप की महिमा मुनि-सुत्रत नाम कीयौ निज नदौ ।
 तीनहु लोक कौ नाथ तिर्यंकर, वीसमौ वीम विसे करि
 वंदौ ॥२०॥

आलस^१ मोह-कथा^२ अवहीलन,^३ गर्व^४ 'प्रमाद निद्रा'^५
 भय^६ भ्रामी ।
 तद्धनता^७ पुनि सोग^८ अग्यान^९, विषय^{१०} कुतूहल^{११} रामनि
 कांमी ।

त्याग छ सातक घातक काठिए, धारि भली ध्रमसीखसु घामी ।
 अनाथकौ नाथ नमौ नमिनाथ, सनाथ किए सवही सिग
 नामी ॥२१॥

राजीमती सती सेती नवा भवाहु कौ प्रेम
 तोत्यौ पुनि जोख्यो भाव प्रेम न अप्रेम प्रेम ।
 अंसौ महा ब्रह्मज्ञांती, शुद्ध धर्मशील ध्यानी,
 यासौ निकलंक कोहैं. सोहैं सम हेम हेम ।
 धन्य सिवादेवी मात, जाकैं सोलैं अंग जात,
 महा सत्य दृढ शुभ रिष्ट पांचौ नेमि नेमि ।
 छट्टौ रहनेमि नामी, तारे सव नेमि स्वांमी,
 नेमिकी दुहाई भाई, जो न बोलैं नेमिनेमि ॥ २२ ॥
 देवलोक दसमे तैं आप अवतार आयो,
 पायो धुरि दसमी जन्म पोस मास मास ।

कासी देसवासी पुरी दुरी नाहि वानारसी,

आससेन पिता, माता वामा जसवास वास ।

जैन धर्मसीह जागैं, पाप दुख पील भागैं,

जाकैं आगैं देवनिके, देव भए दास दास ।

पूरैं सब ही की आस, पद्मा निवास पास,

पास की दुहाई भाई, जो न बोलैं पास पास ॥ २३ ॥

गुण कौ गंभीर खीर, सोनैसो सरীর वीर,

असो देव महावीर, धीरनि में धीर धीर ।

दान को उदौ उदीर दुनी कीनी दवा गीर,

दीनौ सवा लाखहु कौ, देवदुष चीर चीर ।

मारै मोह द्रोह मीर ग्यानी गुने गंगनीर,

तारे तकसीर वारें, पायौ भवतीर तीर ।

साचौ जैनधर्म सीर वीर मे वीराधिवीर,

वीर की दुहाई भाई, जो न बोलै वीर वीर ॥ २४ ॥

साधु भला दस च्यार हजार, हजार छतीस सु साधवी वदौ ।

गुणसट्टि सहस्स सिरैं लख श्रावक, श्रावकणी दुगुणी दुति चदौ

चौबीसमे जिनराज कौ राज, विराजत आज सबै सुखकंदौ ।

श्रीधर्मसी कहै वीरजिणिंदकौ, शासनधर्म सदा चिरनदौ ॥ २५ ॥

इति चौबीस तीर्थकरा रा सवैया संपूर्ण ॥ ५० सामजी लिखत

वीकानेर मध्ये सवन् १७८१ वर्षे मिति आसाढ सुदि ६ दिने ।

नवकार छंद

कामित संपय करण, तम भर हरणं सहस्स कर किरण ।
पणमसि सद्गुरू चरण, वरणिस नवकार गुण वरण ॥ १ ॥
वरणिस नवकारं सहु तत सारं, एहिज आतम आधार ।
अनादि अपार इण ससारं, जिन शाशन में जय वारं ॥
इण पचम आर इण अवतार, श्रावक कुल लहि श्रीकार ।
सहु मंत्रे सारं सब सुखकार, नित चित धारं नवकार ॥ २ ॥
सहु में सिरवार, अगम अपारं, अक्षर मे जिम उंकारं ।
ध्याने चित धारं विपमी वार, अडवढिया नै आधारं ॥
राखे इकतारं अति हितकारं, परभव पण ए उद्वारं ॥स०॥ ३ ॥

पढ पच मभारं पंच प्रकारं, पंच परमेष्ठि अवतारं ।
वरतें इण वारं केवल धारं, बोल्या अरिहत गुण वार ॥
कर्म अष्ट क्षयकारं मुगति मभारं, सिद्धगुण आठे सभार ॥स०॥४॥

गुण दुगुण अठारं धुरि गणधारं, आचारज शुभ आचार ।
उवभाय उदार सुत्र सुधारं, गुण पचवीसे आगार ॥
भल तप भंडारं ए अणगारं, इण गुण दडढा अठारं ॥सहु०॥५॥

शिव नाम कुमारं, कष्ट मभारं, ठग वसि पडियो इकतारं ।
तिहागुण नवकारं खडग प्रहारं, नाखि कडाहे निरधार ॥
नलि कीध तयारं सीधो सार, सोवन पुरिसौ श्रीकार ॥सहु०॥६॥

पति क्रीध विचार जिन मति नारं, श्रीमति मारवीय धार ।
 घटथी पुफभारं आणि अवारं, तिय किय घट कर संचारं ॥
 फीटी अहि फार, हुवउ हार, धन ए जिनमत जप धारं ॥स०॥७॥
 वलि विणठी वार साभ सवारं, ढडाकार कातार ।
 शात्रव सिरकारं सिंह शिकार, दावोदार दरवार ॥
 गिण बैठि वेगार कारागार जय सहु ठामे जयकार ॥सहु०॥८॥
 विणजे व्यापारं वलि विवहार, लक्ष्मी आप वहै लारं ।
 परिवल परिवार पुण्य प्रकार, बोले बहु जस वाजार ॥
 वाहें इम वार कुशल करार, करे सहु उपरि कण वारं ॥सहु०॥९॥
 इम बहु अधिकारं गुण विस्तारं, पामें कहता कुण पार ।
 धुरि ॐ ह्री धारं सौ हजार, जपता हुवै जय जेतार ॥
 पूरव दस च्यार सूत्रे सार, ढोउ भवसुख दातार ॥सहु०॥१०॥
 नित चित धरि नवकार, जप्या दुख दूरे जावे ।
 नित चित धरि नवकार, परवल संपति सुख पावे ।
 नित चित धरि नवकार, शत्रु भय न गिणै साकौ ।
 नित चित धरि नवकार, बाल पिण न हुवे वाकौ ।
 तिम रोग शोक चिन्ता टलै, सकट जावै दूर सही ।
 हुवै सकल सुख विजयहरख, कवि धर्मशी उवभाय कही ॥११॥

ऋषभदेव स्तवन

ढाल—सफल ससारनी

त्रिभुवन नायक ऋषभ जिन ताहरौ,
सुजस साभलि मन ऊमह्यौ माहरौ ।
तारण तरण नहीं को तो सारीखो,
पुहवि सहु सोफि नै ए लह्यौ पारिखौ ॥१॥
बलि सुणौ आदिजी माहरी वीनति,
तुम्ह सेवा तिका लहीय निवि तीन ती ।
त्रिकरण सुद्ध इकतार तोसुं कीयौ,
हिव विशेषै करी हरखियौ मुक्त हियौ ॥२॥
भगवन माहरै तुं हिज साहिव भलौ,
तुं किम लेखवै नहीय मोसुं तलौ ॥
विरुद्ध धारो विया चाल वीजी चलौ ।
पूछस्यू हुं पिण जाव पकड़ी पलौ ॥३॥
धरिय सहुनी दया प्रथम महाव्रत धरौ,
अरि हणी नाम अरिहंत किम आदरौ ।
व्रत वीयौ धरी मृषावाद तजियौ बली,
तुं हिज कहै वात अणदीठ अणसांभली ॥४॥
दाखवै कांड लीजै नहीं अणदियै,
लालची तुं हिज जिण तिण तणा गुण लिये ।

जाणि नववाडि शुद्ध शीलव्रत जोगवै,

पंच अंतराय हणि भोग सहु भोगवै ॥५॥

घरि घरिग्रह तजी कीध इच्छा घणी,

सहस चौरासी शिष्य लाख त्रण शिष्यणी ।

मुखि कहै कोई सेवक नहीं माहरै,

अणहुतै कोडि इक देव सेवा करै ॥६॥

नयण निरखौ नहीं श्रवण ना साभलौ,

अंश पिण जीभ सुं स्वाद ना अटकलौ ।

किणही इन्द्रिय सुं काइ जाणौ नहीं,

तोई सर्वज्ञ रौ विरुद धारौ सही ॥७॥

क्रोध अलघौ करी कीध कोमल हियौ,

किण विधै काम रिपुहणिय दहवट कियौ ।

कीजै नहीं मान उपदेश एहवा कही,

नेट तुं किणही नै शीश नामें नहीं ॥८॥

कपट नहीं कोय तौ भगत किम भोलवौ,

अवगुण पारका देखि किम ओलवौ ।

किणहि बातें कटे लोभ जो ना करौ,

धरिय त्रण रतन नै केम जतने धरौ ॥९॥

भिक्षु अणगार निज नाम मन शुद्ध भणौ,

तीन गढ छत्र त्रिण राज त्रिभुवन तणौ ।

वचन गुप्ते वली नाम वाचंयमा,

योजन वाणि सुं गाजै च्यारुं गमा ॥१०॥

कनक आसण ग्रहै कहै अकिंचणा,
 वीजवै चमर नै बलिय निर वीजणा ।
 समिती तीनज धरौ तौ इ साचा यति,
 पास राखौ नहीं ओघौ नै मु हपति ॥११॥
 पर भणी कहौ मत थाओ परमादिया,
 काइ राइ प्रायश्चित आप न करो क्रिया ।
 जाव हसावरा जुगति मुं जाणस्यौ,
 आखर महिर मो उपर आणिस्यौ ॥१२॥
 विहुं मुखे बोलतो लोक निन्दा लहै,
 केवली होइ नै चिहु मुखे तुं कहै ।
 भला भला भव्य तोइ साच करि मर्दहै,
 जम तणी रात जाया तिके जम लहै ॥१३॥
 प्रकृति म्हारी इसी काइ छै पापिणी,
 ओछी अधिकी सही ना सकुं आपणी ।
 बडिय ताहरी क्षमा वात तिण सहु वणी,
 ध्यान हिव ताहरौ तु हिज माथै धणी ॥१४॥
 अवगुण माह्रा ते सहु अवगणी,
 भगवन देव सेवक करो मो भणी ।
 स्वामी सेव्या विजयहर्ष शोभा घणी,
 वृद्धि बलि थाय जिन धर्मवर्द्धन तणी ॥१५॥

॥ कलश ॥

इम बिलसी श्राअरिहंत पदवी, धन्य जगगुरु जगधणी,
 हिव सिद्ध हुवा आपरूपी जाव न दीये पर भणी ।
 इण गुण प्रशंसा माहि निन्दा काइ जाणौ आपणी,
 आपजो अमनै उरि गहिज अरजश्री धर्मशी तणी १६॥

शत्रुंजय वृहत् स्तवन

(आलोचना पचीसी)

सैत्रुंजै नायक वीनति साभलौ, श्री रिपहेसरु स्वाम ।
दीनदयाल तुम्हाने दाखिवू, अतर वीतग आम ॥ सै० ॥१॥
नटवानी परि भव भव नाचता, विविध वणाया वेश ।
कर्म वसे करि भमते में किया, केइ पाप किलेश ॥ सै० ॥२॥
केवलज्ञानी तुम्ह आगल किसु, देखावीजै दाख ।
पिण आलोयण लीजै आपणी, श्री अरिहतनी साख ॥ सै० ॥३॥
पाप टलै नही आलोयण पखै, कहै ज्ञानी सहु कोय ।
परही मूक्या सिरनी पोटली, हलवी गावड़ी होय ॥ सै० ॥४॥
अरिहत देव सुसाधु गुरू इसा, जैन धरम तत्त जाण ।
समकित साचौ एनवि सर्दह्यौ, अधिक मिथ्यामति आण ॥ सै० ॥५॥
पहिले आश्रव हिंसा प्राण नी, कीवी केइ प्रकार ।
जयणा कायनी जीवनी, पामिस किम भव पार ॥ सै० ॥६॥
कूड कपट कलि विकला केलवी, कीजइ छै केइ काम ।
मृपावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वाम ॥ सै० ॥७॥
अधिको लीजै ओछो दीजिये, रीति इसी दिन रात ।
अदन्नादान घणा लागै इसा, तरिसु किण परि तात ॥ सै० ॥८॥
तीन विधेड सुर नर त्रियच ना, मैथुन मुं मन लाय ।
काम विटवन केम कही सकुं, जाणै तूं जिनराय ॥ सै० ॥९॥

नयणे करि निरखो जी, हियडै वलि हरखौ ।
 सत्रु जय सरीखो जी, पुहवि न कौ परखौ ॥ ३ ॥
 मद मच्छर छोड़ी जी, जिन सु मन जोड़ी ।
 केइ सीधा कोड़ी जी, ठावा इण ठोड़ी ॥ ४ ॥
 सूत्र सिद्धान्ते जी, भाख्यो भगवन्ते ।
 अनादि अनन्ते जी, भेटड तजि भ्रन्ते ॥ ५ ॥
 भवसमुद्र तिराजै जी, परवत नी पाजै ।
 जाण्यो चठीय जिहाजै जी, सिवपुर ने साजै ॥ ६ ॥
 सिद्धक्षेत्र समीपै जी, पाप न को छीपै ।
 देहरा अति दीपै जी, जग चखने जीपै ॥ ७ ॥
 जिण पहिलड जाणी जी, प्रतिमा पहिचाणी ।
 आसति बहु आणी जी, पूजौ भवि प्राणी ॥ ८ ॥
 वाचन देहरिया जी, परिदखणा परिया ।
 वंदड त्रिण वरिया जी, धर्म ध्यानइ धरियां ॥ ९ ॥
 रायणि तलि पगला जी, आदि तणा अगला ।
 संघ वादै सगला जी, धरम तणा ढिगला ॥ १० ॥
 शिववारी दिस ही जी, वलि खरतरवमही ।
 अदबुद ऊलसही जी, सबला विव सही ॥ ११ ॥
 सूर कुंड सवाइ जी, देख्या सुखदाइ ।
 चेलणा^१ तलाइ जी, उलकाभूल आई ॥ १२ ॥

सिद्धवडहि सदाई जी, दीपै सुर दाई ।

प्रगटी पुण्याई जी, जिण यात्रा पाई ॥ १३ ॥

सहिनाण संभार्या जी, श्री धर्मसी धार्या ।

जिण आइ जुहार्या जी, तिण आतम तार्या ॥ १४ ॥

शत्रुञ्जय गीत

सरव पूरव सुकृत तीये किया सफल,

लाभ सहु लाभ में अधिक लीया ।

सफल सहु तीरथा सिरे सैत्रुज री,

यात्रा कीधी तिया धन्न जीया ॥ १ ॥

सुजस परकासता, मिले सघ सासता,

शास्त्रे सासता विरुद सुणिजे ।

ऋषभ जिणराज पु डरीक गिरि राजीयो,

भेटिया सार अवतार भणिजे ॥ २ ॥

काकरै काकरै कोडि कोडी किता,

साधु शुभ ध्यान इण थान सीधा ।

साच सिद्धक्षेत्र शुद्ध चेत सु सेवता,

कीध दरसण नयन सफल वीधा ॥ ३ ॥

केड उपाय करी मेलण करूं, परिग्रह विविध प्रकार ।

विरति करूंपिण मन न रहै वलि,

तौकिम हुवै भव पार (निस्तार) ॥सै०॥१०॥

इन्द्रिय पाचे आप मुराहिदा, अधिक करे उन्माद ।

सवर भाव न आवै सर्वथा, पड़्यो जे प्रमाद ॥ सै० ॥११॥

कोड स्वभावे रेकारो कहै, चटकी तुरत चढंत ।

क्रोध विरोध बधारू केतला, आवै किम भव अंत ॥सै०॥१२॥

आपणा जाणपणा नै आगलै, गिणुंन केहनै गान ।

विनय वेयावच्च नहीय विवेकना,

अति मोटो अभिमान ॥सै०॥१३॥

मीठी मीठी बात कहूं मुखे, जीजी करे मिलि जाइ ।

पाइ पसारूं पेसी पेट मे, माया सगी ज्युं माइ ॥सै०॥१४॥

महारो महारो करि धन मेलवु, लोभ वसे लयलीन ।

नरक तणा घर द्युंछु नव नवा, इण मे मेख न मीन ॥सै०॥१५॥

मन तौ खिण पिण वस नहीं म्हारौ, भ्रामो वचन भ्रखाल ।

काय चपलता कहियै केतली, जासी किम भव जाल ॥सै०॥१६॥

अद्धता पण गुण वर्णुं आपणा, परनिन्दा परकाश ।

अवर अदेखो आपुं अति घणौ, एहवौ मूल अभ्यास ॥सै०॥१७॥

राजकथादिक विकथा राग सु, वारू कहूंअ वणाय ।

समता धरि न करी मन शुद्धसुं, सूत्र सिद्धान्त सक्काय ॥१८॥

काणौ आधौ टंटौ कूवडौ, देखि हंसू निशदीश ।

आखिर कर्म उदय ते आविस्यै, जाणे ते जगदीश ॥१९॥सै०॥

पनरै कर्मादान न परिहस्व्या, आदर्या पाप अठार ।
 निस्तारौ वीजुं थासै नहीं, तु हिव मुक्क नै तार ॥२०॥सै०॥
 जीवायोनि चौरासी लाख जे, दीधा तेहनै दुःख ।
 वाद न वास भेलोकहो क्यु वणै, मुक्क नै दे हिव मुक्ख ॥२१॥सै०॥
 जाण अजाण किया जिकै, सहु भमता ससार ।
 देइ मन शुद्ध मिच्छामिदुक्कडं, आलोऊं वार वार ॥२२॥सै०॥
 तारण तरण विरुद छैं ताहरौ, अशरण शरण आधार ।
 आयौ आश धरी तुम आगलै, समकित दे मुक्क सार ॥२३॥सै०॥
 समकित ताहरौ आया साहिवा, परहा जायै पाप ।
 राति अघारो किम करि रहि सकै, उगैं सूरज आप ॥२४॥सै०॥
 इम सकल सुखकर विमल गिरिवर आदि जिनवर आगलै ।
 आलोवता मनशुद्ध इण विधि सफल सहु आशा फलै ॥
 शुभ गच्छ खरतर सुगुरु वाचक विजयहर्ष वखाणए ।
 उवक्काय कहै श्रीधर्मवर्द्धन धर्म ध्यान प्रमाणए ॥२५॥

शत्रुञ्जय तीर्थ स्तवन

तीर्थ सैत्रुंजे जी रहिवा मन रजे,
 (सेवकना) भव भय भंजै मल पातक मंजरे ॥१॥

सिद्धाचल सीमैं जी यात्रा करि जीमे,

निश्चय इन नीमैजी भमय न भव भीमइ ॥२॥

तासु दुरगति न ह्ये नरक त्रियच री,

सुगति सुर नर लहं सुगति सारी ।

विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी,

धनो धन श्री धर्मसील धारी ॥ ४ ॥

सिद्धाचल महिमा वर्णन

रतन मे जैसे हीर नीरनि में गंगा नीर,

फूलनि की जाति मे अमूल फूल केतकी ।

सब ही उद्योत मे उद्योत ज्युं प्रद्योतन को,

ज्योति मे सुज्योति ज्युं मुदैं ह्ये ज्योति नेतकी ॥ ५ ॥

सब ही मुशीख मे सुधर्म सीख हेत की है,

तेजनि तूरिने टेक राखी जैसे रेतकी ।

योजन पैताल लक्ष सिद्धनिके खेत है पै,

सेत्रुंजे विशेष रेख राखी सिद्धखेत की ॥ ६ ॥

विमलगिरि स्तवन

राग—मल्हार

विमलगिरि क्युं न भये हम मोर ।

सिद्धवड रायण रुंख की शाखा, भूलत करत भुकोर । वि० ११

आवत सब रचावत अरचा, गावत धुनि घन घोर ।

हम भी छत्र कला करि हरखत, कटते कर्म कठोर । वि० २१

सूरति देख सदा उल्हसै मन, जैसे चद चकोर ।

श्री रिषहेसर सुं श्रीधर्मसी, करत अरज कर जोर । वि० । ३ ।

धुलेवा ऋषभदेव छन्द

दोहा

सत्य गुरू कहि सुगुर रा, प्रणमुं मन शुद्ध पाय ।
हुता मूढ ते पिण हुआ, पण्डित जासु पसाय ॥ १ ॥
सेवा लहिजै सुगुर री, पुण्य उदै परतख ।
ज्योति अधिक दीधी जिणै, चावी तीजी चख ॥ २ ॥
जिकौ न पूरौ जाणतौ, ठठौ मीडौ ठोठ ।
वाचै अविरल वाणी सु, पुस्तक भरिया पोठ ॥ ३ ॥
दीपक जिण हाथै दियै, गुरे बतायौ ज्ञान ।
धरम करम माहे धुरै, धरिजड तिणरौ ध्यान ॥ ४ ॥
प्रथम नमी गुर जिण प्रथम, गाउ तसु गुण ग्राम ।
कविजन कंठ शृंगार कुं, ढीपै मोतीदाम ॥ ५ ॥

मोतीदाम छन्द

दिपे गुण निम्मल मुत्तियदाम,
सेवुं मन शुद्ध तिको हिज स्वाम ।
सुरासुर सर्व करै जसु सेव,
दियै सुख वछित ऋषभदेव ॥ ६ ॥
केइ जगि देवल देवा कोडि,
हुवै नहीं कोइ इयें री होडि ।

नमै नर नारी सको नितमेव,
 दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ७ ॥
 पूरै प्रभु आस सदा परतख,
 वढा सुरकुंभ किना सुरवृक्ष ।
 बहु जिण दान दिपाया वेव,
 दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ८ ॥
 छती छती देखि पवन छतीस,
 जपै सहु ध्यावै जेम जतीस ।
 भजै डक चित्त लह्यो जिण भेव,
 दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ९ ॥
 खलका मालम देश खडग,
 जपै ए तीरथ तेम अडिग ।
 धुनो धन धन्नहि गाम धुलेव,
 दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ १० ॥
 उदपुर हुती कोस अढार, ए ओ वाट विपम अपार,
 सल गात्र सजैव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ११ ॥
 पुलै पगवट्ट उजाड पहाड, दहुं दिशि केइ कराड दराड,
 म्फराड मागी रा म्फाड भुकेव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ १२ ॥
 पुढाणा खाला नाला खाड, चिहुं दिसि ताकै चोर चराड ।
 निकेवल जात्र्या नाम न लेव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ १३ ॥
 किता केइ मारग माहि कलेस, आवै केइ यात्री लोक अशेष ।
 सरै छै काम तिया सतमेव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ १४ ॥

दुर हु देवल शोभा देख, वढै वाह वाह प्रकाश विशेष ।
 रह्यौ रवि भूमि विमान रचेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव १५
 तिलक्का तोरण धोरण तत, भला चित्त चोरण कोरण मंत ।
 बहु हुं वखाण किताक अवेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव १६।
 जिणेसर विंन भिगामिग ज्योति, अहोरति आठु जाम उदोत ।
 विजोडी देहरी वावन वेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव ॥१७॥
 घसीजै केसर चदन घोल, रचीजै पूज सदा रग रोल ।
 अवल्ले फूले धूप उखेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव ॥१८॥
 जाणौ तिण वेला जीवों जाय, भला केह जात्री आइ भराय ।
 हजारै गानै लाभे हेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव ॥ १९
 रहै नहीं नामै कोई रोग, वली सहु जायै सोग वियोग ।
 सदा हुवै भोग संयोग सवेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव ॥२०॥
 सही सहु तीरथ मै सिरदार, इणै इहरत्त परत्त उधार ।
 टली अन्तराय भली सहु टेव, दीयै सुख वञ्छित ऋषभदेव ॥२१॥

कलश

अलग टली अतराय, प्रगट सफली पुन्याइ ।
 गणधर गुरु गच्छराज, सूरि जिणचन्द सवाइ ॥
 गच्छ खरत्तर गहगाट संवत सतरै से सट्टिम, (१७६०)
 वसत ऋते वैसाख, अवल उजवाली अट्टम ॥
 जातरा कीध सखरी जुगति, बडा साध साथै वडिम ।
 सुख 'त्रिजयहरष' जिण सानिधै, आखै श्रीधर्मसीहइम ॥ २२ ॥

श्री शांति जिन स्तवन

सेवो भाई सेवो भाई शांति जिन सेव रे ।

दूजो नहीं कोइ ऐसो देव रे ॥ १ ॥

क्रोध विरोध भर्या सुर केवि रे ।

निकलंक निरदोष यहु नित मेव रे ॥ २ ॥

हाथ रतन आयो छै हेव रे ।

काच तजो पाच गहौ परखेव रे ॥ ३ ॥

केशर चदन पूज करेव रे ।

लाहो नरभव इह विध लेव रे ॥ ४ ॥

कहै ध्रमसी जोडि कर वेव रे ।

तुम्ह सेवा मुम्ह याहीज टेव रे ॥ ५ ॥

चन्द्रपुरी शांति जिन स्तवन

जग नायक जिनवर पुहवी माहे प्रत्यक्ष ।

सोलम संतीसर सुखदायक कल्पवृक्ष ॥

जसु यात्र करेवा लोक मिले तिहा लक्ष ।

दरसण देखत ही आणद पावै अक्ष ॥१॥

दों दों दों दप मप द्रागिडिक दमके मृदंग ।

भृण रण रण म्मै म्मै भाभरि भूमकित भूङ्ग ॥

ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि सग ।

ताकिटि ताकिट थेंइ थेंइ नृत्य करत मन रग ॥२॥

केसरि करि पूजत छीजत अशुभ जे कर्म ।

भावन भावता भाजै भव नौ भर्म ॥

नित नाम जपे जे निजमन करि अति नर्म ।

हरखै ते पहुंचे मुगति रमणि ने हर्म ॥३॥

छाक्यो रहे छहुं रितु मस्त महा मतवाल ।

हाथी भरणा जिम भरतौ मद् असराल ॥

परवत सम सवलौ घूठ पड्यो सुन्डाल ।

ततखिण जिण नामें अस करै नहीं आल ॥४॥

हुंकारव करतौ, वाघ महा विकराल ।

नहरा अति तीक्ष्ण, जिम करवत ढताल ॥

पुछा छोट करतौ फदकल्यै तीजी फाल ।

प्रभु नाम प्रसादै, सींह भगै ज्यु स्याल ॥५॥

दावानल बलतो भलहल नीकले भाल ।

बहु वृक्ष सघन वन बलै पसु पखी बाल ॥

किण हीक कारण नर आयौ अग्नि विचाल ।

जिण नाम जलै अगि ओल्हायै तत्काल ॥६॥

फुं फु फण करतौ धरतौ कोप कराल ।

रहै आख्या-राती काजल सम महाकाल ॥

गह्वौ उरंडतौ देखी दो जीहाल ।

तुम्ह नामें साँप ते जाणै फूल री माल ॥७॥

सवलै संग्रामै भिडंता भूप भूपाल ।

अति राता ताता वहै गोला हथनाल ॥

खडकै तलवारा खलकै रुविरा खाल ।

तिहां पिण जिण नामै न हुवै वाको वाल ॥८॥

दरीयो जल भरीयो ऊंडो जेह अपार ।

उछलता तरंगा सुणि जलधर गरजार ॥

वाहण त्रिचि लिवि पिवि वूडण नै हुवो त्यार ।

ते पिण जिण नामै पहुचै पेले वार ॥ ९ ॥

गढ गुंवड फोडी हीया होडी तेह ।

खैन खाजनै खासी हरस सहित जन जेह ॥

सोलह कोटादिक उपज्या रोग अछेह ।

प्रभु पद फरसत ही दिनकर दुति हुड देह ॥१०॥

जन सांकल जडीयौ पडीयौ वन्दीखाण ।

भय आठै भाजै न रहे पलक प्रमाण ॥

सिर संती जिणेसर सेवत ही सुख खाण ।

इणभव लहें लीला परभव पद निरवाण ॥११॥

कलम

संवत्त सतरै वरस वीसैं मास मिगसर जाण ए ।

चन्द्रापुरी थी संघ चाल्यौ, चढी जात्र प्रमाण ए ॥

गणि विजयहर्ष पठारविदे, भ्रमर ओपम आण ए ॥

कहे 'धर्मवर्द्धन' धर्मवद्धन, संघ कुशल कल्याण ए ॥१२॥

॥ नेमि राजिमती वारहमासा ॥

दिल शुद्ध प्रणमं नेमि जिनेसर परमदयाल,

रोक्या जीव तें मूक्या तोरण थी रथ वाल ।

राजिमति सती नेह वशै किय विविध विलाप,

नौ पिण तसु तणु नाड सक्यो विरहानल ताप ॥१॥

श्रावण मास में विरहणि जामनी जाम न जात,

सजि आडंबर जवर दामिणी मिले वरसात ॥

मुक्त वर गयो हरिणाखी नाखी दीध निरास,

विल विलै राजुल आखीय भरि भरि नाखी निरास ॥२॥

भादव मे गयो यादव मुक्त हिया दव लाय ।

पावस जल पडताल पडै पिण ते न बुझाय ।

माडै मोर भिंगोर करै पपियो पीड पीड ।

पीड विरहै थड पीड ते जाणे माहरौ जीव ॥३॥

आसू मे सासूनौ अंगज ते गया अग जलाय ।

चढ नी चाढणी देखत चौ गुणी पीडज थाय ।

निरमल सरवर भरीया नीभरणे भरै नीर ।

नयणा नीर तिये पिण माड्यौ जिण सुं सीर ॥४॥

माती खेती पाती नीपनी काती मास ।

कातीय विरहणि छाती मे काती वहै नहीं जास ।

दीप दीवालीय वलिय सुहालिय नैं पकवान ।

खलक रचे पिण मुक्त नैं न रूचै खान नैं पान ॥५॥

सखी री करसणीयां फलियौ काती, निपजी सब खेती पाती ।
हिल मिलि सब करत है वाती,

पीउ विणु मोहि फाटत छाती हो लाल ।४।

सखी री अब मिगसर महिनौ आयौ, सब ही कौ नेह सवायौ ।
भोगीजन के मन भायौ,

गयौ छोरि शिवादे को जायौ हो लाल ॥ रा० ५ ॥

सखी री आयौ महिनो अब पोसो, रगै रमै सहु तजि रोसो ।
दीनों मुझ जादव दोषो,

सबलौ तिण कारणि सोसो हो लाल ॥ रा० ६ ॥

सखी री अति शीत परतु है माहे, सब सोवत माहोमाहे ।
देही मुझ विरह की दाहै,

न मिटै विनु आयै नाहे हो लाल ।रा०७।

सखी री फागुण पकवान नैं पोली,भरि लाल गुलाल की भोली ।
खैले नर नारी की टोली,

पिउ विन में न रमें होली हो लाल ।रा०८।

सखी री सब मिलि नर नारी संतो, चैतै धरि हरष हसतौ ।
खैलैं अति ही उलसतौ,

वालंभ विनु कैसो वसंतौ हो लाल । रा०९ ।

सखी री कोइल बोले वैशाखैं, भरता करता वै साखैं ।
पहिलैं कीनो आसाखैं,

दूजैं आगै अब साखैं हो लाल । रा० १० ।

सखी री जल शीतल पीजै जेठो, पीउ नायौ अजहु घेठौ ।
जाण्यौ कुण करिहै वेठौ,

नाणी मुझ नजरा हेठौ हो लाल ।रा०११।

सखी री आयो अब मास असाढो,

कालाहणि अंची काढो ।

वालंम हित बन्धन वाढो,

वैरागै मन कियो गाढो हो लाल । रा० १२ ।

सखी री मिलि अरज करत है आली,

कहा वात करत है काली ।

नवलों कोइ कुमर निहाली,

तुम परणावा ततकाली हो लाल । रा० १३ ।

सखी री अब राजुल बोली एमौ,

इण भव मुझ प्रीतम नेमो ।

दूजौ परणण अब नियमौ,

न तजुं नवभव कौ प्रेमौ हो लाल ॥१४॥

सखी री योगी नहीं नेम सौ कोई,

राजल सम नारि न होइ ।

संसारी दुख सब खोई,

सिवपुरी सुख विलसै दोइ हो लाल ॥ रा० १५ ॥

सखी री मन धारे बारेमासा,

आणौ वैराग उलासा ।

गुरु विजयहरष जस वासा,

बधते धर्मशील विलासा हो लाल ॥ १६ ॥

मगसिर मासि गामातरैँ मगसिर हुआ लोग ।
 हु पिण छोडी मग सिरनी हिवैँ लेस्यु जोग ।
 धरैँ सहु निज मंदिर में खल खेत्र ना धान ।
 हुं पिण धरिस निश्चल मन मे नेमि ध्यान ॥६॥
 पोस मे ओस पड़े निस रूदन करैँ वनराय ।
 दोस विना पिउ रोस करैँ तैँ सोस ज थाय ।
 धंहरि पडय अथाह ते विरहानल नो धूम ।
 वैगा जावौ कोइ पिघलावौ प्रिय मन मूम ॥७॥
 माह में माहट माड्यो मेह ते आहट रूस ।
 तौ पिण माहरैँ नाह न पूरी माहरी हुंस ।
 जो कोई आइ वधाइ चैँ आयौ पति जदुनाथ ।
 नाथ धरुं इक नाक नी आपुं सगली आथि ॥८॥
 फागुन फरहरैँ वात प्रभात नौ सीत अपार ।
 नाह सु फाग रमें बहु राग सुहागणि नारि ।
 चंग अनैँ मुख चग वजावैँ उडावैँ गुलाल ।
 लालन जे तजी ललना तिण कौ कवण हवाल ॥९॥
 जे तरु भाड़िया मोर्या ते तरु चेतार मास ।
 वास सुवास प्रकासीय मधु करैँ रे विलास ।
 बोले रे कागा आगा जागा वेसीरे ऊंच ।
 पावुं पीउ तौ तुम भरावुं चुर में चूंच ॥१०॥
 मौरीय दाख वैसाखैँ पसरीय वेल प्रलंव ।
 ऊचिय साख विलंबिय, कोयल कुहकैँ अब ।
 भौगवैँ रवि सक्रात वसत मे मीन नैँ मेख ।
 तौ पिण मुक पीउ तजि गयौ इण मे मीन न मेख ॥११॥
 जल करैँ सीतल हीयतल जेठ मैँ ए ठहराय ।

जो ठिक जोतपी ते कहौ कदि मिलै जेठ कौ भाय ।
यादव कुल ना सेठ नै जेठ कहौ समभाय ।
नाणी ट्रेठ नै हेठते मोमें कवण अन्याय ॥१२॥
वलीय कौलाहणि काढि आसाढ़ मे वलियोँ मेह ।
नेमजी नाह विसार्योँ (न सार्योँ) नव भव नेह ।
मुझ नै विलखत छोड़ी वहि गया बारै मास ।
पिण हु न तजु एह नै वसिस्या एकण वास ॥१३॥
धन धन राजल साज ले दीक्षा नौ तजि धाम ।
केवल लहिनै पहिली हिज पहुंचती शिव ठाम ।
जोगीसर नेमीसर सिव सुख विलसै सार ।
श्री भ्रर्मसीह कहै ध्यान धर्या सुख है श्रीकार ॥१४॥

॥ नेमि राजिमती वारहमासा ॥

सखी री ऋतु आइ सावण की, घुररंत घटा बहु धन की ।
बानी सुनि सुनि पपीहनि की,

निशि जायँ क्युं विरहनि की हो लाल ॥१॥

राजुल वालभ जपती, इकतारी नेमि सुं करती ।

धन सील रतन नै धरती, तिम विरह करि तनु तपती हो लाल ।
सखी री भादु मैं भर वरसाला, खलकै परनाल नै खाला ।

विजुरी चमकत विकराला,

जादु विनु मोहि जंजाला हो लाल । रा० २ ।

सखी री आसू सब आसा धरीया, निरमल जल सुं सर भरीया ।
रात्यौँ शशि किरण पसरीया,

पिउ विनु क्योँ जात है घरीया हो लाल ।३।

नेमि राजिमती स्तवन

राजुल कहै सजनी सुनो रे लाल

रजनी केम विहाय हे सहेली ।

अरज करी आणौ इहा रे लाल,

साहिवियौ समभाय हे सहेली ॥१॥

मोहन नेमि मिलाय दे रे लाल,

नेह नवौ न खमाय हे सहेली ।

दिन पिण जाता दोहिलौ रे लाल,

जमवारो किम जाय हे सहेली ॥ २ मोहन ॥

इक खिण खिण प्रीतम पखे रे लाल,

वरस समान विहाय हे सहेली ।

पाणी के विरहै पड्या रे लाल,

मछली जेम मुरभाय हे सहेली ॥ ३ मो० ॥

चकवी निस पिड सुं चहै रे लाल,

त्युं मुक्त चित्त तलफाय हे सहेली ।

कोडि विरख तज कोइली रे लाल,

आवा डाल उम्हाय हे सहेली ॥ ४ मो० ॥

अधिकौ विरहौ अंग मे रे लाल,

ते किम दूरे थाय हे सहेली ।

जमवारौ जलमे वसै रे लाल,

चकमवि अगन उल्हाय हे सहेली ॥ ५ मो० ॥

कंत विणा कामिनी तणा रे लाल,

भूषण दुषण प्राय हे सहेली ।

फल फूलै ढाली थकी रे लाल,
 छाव छदाम विकाय हे सहेली ॥ ६ मो० ॥
 ऊची अधिक चढाय नै रे लाल,
 नाखी धरि ध्रसकाय हे सहेली ।
 प्रीतम क्युं मुक्त परिहरी रे लाल,
 अवगुण एक वताय हे सहेली ॥७ मो०॥
 मुगति कामिणी कामण कीया रे लाल,
 तौ मुक्त नै तजी न्याय हे सहेली ।
 सिव नारी देखण सही रे लाल,
 आप गइ उम्हाय हे सहेली ॥ ८ मो० ॥
 मुगति माहे वेहु मिल्या रे लाल,
 विलसैँ सुख वरदाय हे सहेली ।
 प्रणमैँ पंडित धरमसी रे लाल,
 नमता नव निधि थाय हे सहेली ॥ ९ मो० ॥

—❀—

सिधी भाषामय पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—अमल कमल रहनी ।

अज्जु सफल अवतार असाड़ा, दिठ्ठा पारस देव ।

बुद्धा मेह, अमियदा, तुद्धासाहिव सत मेव ॥ १ ॥

सयाने साइ असाड़ा वे, अरि हा पियारे पास जिणंदा वे ।आ०।

अरजू हूदा तैडै अगौ, अखदा हा इक गल्ल ।

सुख वैदा है सभनि कुं चोखीय तुसाड़ी चल्ल । स० २ ।

नंदरे नींगर दे ज्यु अम्मा, त्यु मैडै तुं साम,

जौलुं अन्दर जेद हैं, नहीं भुला तेडा नाम । स० ३ ।

सञ्जी एक तुसाडी सेवा, दूजी गल्ल न दिह,

आस पूरौ हुण दास दी, करंदा हो काहे दिह । स० ४ ।

देव अवर दी सेव करंदै, दिह्वा मै दोजग ।

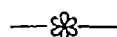
हुण उण उज्जड ना भमू, मन मान्या तैडा मग । स० ५ ।

रज्या होइ सु कित्थुं जाणै, भुखादा दिह दुक्ख ।

नाही देंदा न्याय तुं, सिवपुरदा मैनु सुक्ख । स० ६ ।

नव निधि सिद्धि तुसाडै नामै, दौलति हदा दीह,

विजयहरष सुख सपजै, धरे ध्यान सदा ध्रमसीह । स० ७ ।



पार्श्वनाथ स्तवन

नैणा धन लेखु देखुं, देखुं मुख अति नीकौ,

जीहा धन जाणु गावु, गावुं जस जिनजी कौ ।

धन धन मुक्क सामी, तुं त्रिभुवन सिरि टीकौ ॥ १ ॥

चित्त सूधे करि हु नित सुणिवा, चाहूं तुक्क उपदेस अमी कौ ॥ २ ॥

देवल देवल देव घणा ही दीसें, तुक्क नम जस न कही कौ ॥ ३ ॥

पुन्ये करि प्रभु साहिव पायो मोई, पायौ मे राज पृथी कौ ॥ ४ ॥

कीजै मया मुक्कसेवक कीजै साचौ, कीजौ मत अवर हथीकौ ॥ ५ ॥

रूप अनूपम तेज विराजै तेसौ, सूरिज कौ न ससी कौ ॥ ६ ॥

पास जिणेसर सहु मनवंचित पूरै, साहिव श्री 'ध्रमसी' कौ ॥ ७ ॥

लोद्रवा पार्श्व जिन स्तवन ।

महिमा मोटी महियलै, प्रगट चिंतामणी पासौ रे ।
 सफलौ नाम करे सदा, आपै वल्लित आसौ रे ॥ १ ॥
 अधिक सफल दिन आज नै, भेट्यौ श्री भगवतौ रे ।
 कहीजै जीभै केतला, एहना सुजम अनतो रे ॥ २ ॥
 मोटौ जेसलमेर ए, मेर व्यू महीयलि मोहे रे ।
 तीरथ लौद्रपुरो तिहा, शुभ नदनवन सोहे रे ॥ ३ ॥
 दिन दिन दीपै देहरा जिहा श्री पास जिणदो रे ।
 साथ ले सुधरम सभा, आयौ जाणे इन्दो रे ॥ ४ ॥
 सुन्दर त्रिगढा सम विचे, वृक्ष अशोक विराजै रे ।
 सागी जाणे सरग नौ, कल्पवृक्ष हित काजै रे ॥ ५ ॥
 सहस्रफणा विहु साम नौ, सौहे रूप सवायो रे ।
 थिर जस तै क्रीधो थिरू, वित दस क्षेत्रे वायो रे ॥ ६ ॥
 सतरसे गुणत्रीस (१७२६) मै, भिंगसर मास मभारो रे ।
 यात्रा करी जिनवर तनी, धर्म शील चित्त धारो रे ॥ ७ ॥

—:❀:—

लोद्रवा पार्श्व स्तवन ।

त्रुलि लुलि वदो हो तीरथ लोद्रवो, अधिक्री आसति आणि ।
 सजन जन जिनवर नी पामीजै जातरा, पुण्य तणै परमाणि । १ ।
 शकादिक द्रूण छोडो सहु, समकित्त धारो रे सार । स० ।
 अरचौ भाव धरी अरिहत नै, पामौ जिम भवपार ॥ स० । २ ॥

नयणे पाच अनुत्तर निरखेवा हुवै मन माहे जो हुंस । स० ।
 तौ गहिज तीरथ भेटो तुम्है रचना तिण हिज रुंस ॥ स० । ३ ।
 धन जेसलगाढ जिहा धर्मात्मा सघनायक थिरुसाह । स० ।
 जिण प्रासाद कराया जिनतणा, आणी अधिक उमाह ॥ ४ ॥
 सुन्दर सहसफणे करि सामली, द्वीप मूरति दोइ । स० ।
 मेघ घटा नै देखी मोर जु . हरखित मुक्त मन होइ ॥ स० । ५ ॥
 पास सदा चिंतामणि नीपर, आपै वंछित आस ॥ स० ॥
 नाम गुण करी साचौ नीपनौ, प्रगट चिंतामणी पास । स० । ६ ।
 सतरैसे त्रीसें मिगसर मुढे, वारस बहु संघ साथ ।
 वाचक विजयहरप हरे करी, प्रणम्या पारसनाथ । स० । ७ ॥

—०—

लोद्रवा पार्श्व स्तवन

राग—सौरठ

पूजो पास जी प्रभु परता पूरै, चितनी चिंता चूरै ।
 सहसफणा शोभंत सनूरै, दरसण थी दुख दूरै ॥ १ ॥
 सुणता काने कीरति सारी, परसिद्ध लोद्रपुरा री ।
 जिन मूरति हिव नयण जुहारी, साचा गुण सुखकारी ॥ २ ॥
 नीलकमल सम मूरति निरखी, सहसफणा वे सरिखी ।
 पास चिंतामणि साचा परखी, हिव सेवो मन हरखी ॥ ३ ॥
 सुन्दर तिलको तोरण सोहे, मंडप पिण मन मोहे ।
 ऊंची धज आकाश आरोहै, कहौ मुक्त समवड को है ॥ ४ ॥

च्यार प्रासाद चिहुं दिशि राजै, विच मे एक विराजै ।
 कोरणी भीणी केम कहाजे, पेख्या मन पतियाजै ॥ ५ ॥
 रचना पाच अणुत्तर रयणे, गमविण ऊची गयणे ।
 विधि साभलता जे गुरू वयणे, निरखी तेहिज नयणे ॥ ६ ॥
 अष्टापद जे सुणता आगी, सो विधि दीठी सागी ।
 त्रिगडो देखि मिथ्यामति त्यागी, जिन धर्म महिमा जागी ॥ ७ ॥
 जिन प्रतिमा जिन हीज सरूपी, पौतै जिनज प्ररूपी ।
 सेवे ते शुद्ध समकित रूपी, अज्ञानी ए उथूपी ॥ ८ ॥
 अधिकै भावै यात्री आवै, गुण जिनवर ना गावै ।
 रागे बहु विधि पूज रचावै, प्रभु सानिध सुख पावै ॥ ९ ॥
 गावते गीत मन गमती, राग धरम नै रमती ।
 नर नारी नी टोली नमती, भावधरी चै भमती ॥ १० ॥
 प्रशोभा जेसलमेर सदाइ, श्री खरतर सुखदाई ।
 करणी जिणोद्वार कराइ, संघपति थिरू सवाई ॥ ११ ॥
 कलशः—सवत गुण युग तुरग धरणी चंत्र वदि छठि दीस ए ।
 श्रीसघ श्री जिनचन्द्र सानिध, सफल यात्रा जगीस ए ॥
 भु पास नामै आस पामै, जपे जे जस जीह ए ।
 गुरू विजयहरप सुसीस पाठक, कहै श्री धर्मसीह ए ॥ १२ ॥

लोद्रवापार्श्व स्तवन

विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली—रहनी

धन धन सहु तीरथ माहि धुरै, परसिद्ध घणी श्री लोद्रपुरै ।
 भले भावे आवे यात्र घणा, सुखदायक सेवो सहसफणा ॥ १ ॥
 केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखण नै हीसै ।
 वाखाणै सहु विश्वा विसै, यात्रा दीधी ए जगदीसै ॥ २ ॥
 त्रेवीसम श्री जिनराज तणी, फलदायक प्रतिमा सहसफणी ।
 घन स्याम घटा जिम शोभ घणी, वाह वाह अगी छवि अंग वणी ३
 चउ जिणहर चउगड दुख चूरै, पंचम पंचम गति सुख पूरै ।
 अष्टापद त्रिगढे शोभ इसी, कुण डण ममओपम कहुंअ किसी ॥४॥
 केसरि चंदन घनसार करी, धोतीय अछोती अंग धरी ।
 पूज्यां मिथ्यामति जाय-परी, शुभ पामे समकित रतन सिरी ॥५॥
 प्रणम्यां सहु पीड़ा दुरि पुलै, छल छिद्र उपद्रव कोन छलै ।
 दुख दोहग ढालिद दूर दलै, मन वंछित लीला आइ मिलै ॥६॥
 जेसलगढ गुरु गच्छपति जाणि, तिहा आया श्री संघ मुलताणी ।
 संघ तिण मु श्री जिनचन्दमूरै, प्रणम्या प्रभु पास नवल नूरै ॥७॥
 सतरै चम्मालै चेत्र सुदे, महिमा मोटी तिथि तीज मुदै ।
 खरतर गुरु गच्छ सोभाग खरै, पाठक धर्मसी कहै एण परै ॥८॥

गौडी पार्श्व स्तवन

राग—मल्हार

मूरति मन नी मोहनी सखि सुन्दर अति सुखदाय ।
 नयन चपल ह्वै निरखिवा, सखी भ्रमर ज्यु कमल लोभाय रे ॥
 दीठा हिज आवे दाय रे, कीधी तकरीर न काय रे ।
 जोता सगला दुख जाय रे, थिर मन ना वछित थाय रे ॥ १ ॥
 मुनै प्यारो लागे पास जी ॥
 कुण वीजा नी हर करै सखी, प्रभु ए समरथ पामि ।
 हाथ रतन आयौ हिवै सखी, काच तणौ स्यो काम रे ।
 नित समरू एहनो नाम रे, सहु वाते समरथ स्वाम रे ।
 हिव पुगी हिया नी हाम रे, औहिज मुक्त आतमरामरे ।२। मुं०
 स्वामि कल्पतरू सारिखौ सखी, वीजा बाबल चोर ।
 मनवछित दायक मिल्यो सखी, न करू अवर निहोर रे ॥
 दिल बाध्यो इण विण डोर रे, मेहा नै चाहे मोर रे ।
 चंदा नै जेम चकोर रे, जिन सु मन लागो जोर रे ॥३॥ मु नै०
 कमल कमल चढती कला सखी, सोहे रूप सुरंग ।
 एहनै रूपनी ओपमा सखी, आवि न सकै अग रे ।
 उलसै मिलवा नै अंग रे, सही छोडण न करू सग रे ।
 एहवौ मन मे उच्छरग रे, अविहड मुक्त प्रीति अक्षग रे ।४। मुनै०
 हुंस घणी मिलवा हुंती सखी मन माहि नितमेव रे ।
 ते साहिव मिलीया तरै सखी बहु हित पग गहुं वेव रे ॥

हरख्यो मुक्त हिवडौं हेवए, साहिव नी न तजु सेव रे ।
 ढिल सुध मुक्त एहिज देवए, टलिस्युं नहीं ए लही टेवरे ।५। मुनै०
 इण मन मोहन ऊपरै सखि हुंवारी वार हजार ।
 देस विदेशे दिह मे सखी साभरिस्यै सौ वार रे ॥
 इक इण हिज सुं इकतार रे, हीयो नो अतर हार रे ।
 कदे ही नहिं लोपिस कार रे, वात सी कहियै वार वार रे ।६। मु०
 गाजै नित गौड़ी धणी सखि अकल सरूप अवीह ।
 भवना भय गय भाजिवा सखी सादूलो ए सीह रे ॥
 लोपै कुण एहनी लीह रे, जपतां जस सफली जीह रे ।
 यै विजयहरप निसदीह रे, धरि हेत कहै धर्मसीह रे । ७ मुनै०।



पार्व जिन स्तवन

ढाल—धरारा ढोला रो

त्रिभुवन माहे ताहरौ हो,

सुजस कहै सहु कोइ । जिन रा राजा ।

देव न कोइ दूसर हो,

होइ जे ताहरी होइ । जिन रा राजा ।

सुनिजर कीजे हो सुजान, सेवक कीजै

दीजै दिन दिन वद्धित दान मन रा मान्या ॥ १ ॥ आकणी

देवा मांहे दीपतौ हो, तुं परता शुद्ध पास ।

सोहे तारा श्रेणि में हो, एकज चन्द आकाश ॥ २ ॥ जि० सु०॥

पाम्थौ में तुमने प्रभु हो, सेवुं अवर न साम ।
 सूरिज उगै साहिवा हो, केहो दीपक काम ॥ ३ ॥ जि० सु० ॥
 सैवक नै तु सासता हो, यै छै वछित देव
 तौ सेवे छै ते भणी हो, नर नारी नितमेव ॥ ४ ॥ जि० सु० ॥
 चूकौ हु तुम्ह चाकरी हो, इतरा द्विस अयाण ।
 गुनहौ तेह रखे गिणो हो, मोटा होड महिराण ॥ ५ ॥ जि० सु० ॥
 मो उपरि पिण करि मया हो, आपौ सुख अछेह ।
 सगले रुखे सारिखा हो, महियल वरसै मेह ॥ ६ ॥ जि० सु० ॥
 त्रिकरण शुद्ध इण ताहरौ हो, एकज छै आधार ।
 करज्यो तुम धर्मसी कहै हो, अवसर नौ उपगार ॥ ७ ॥ जि० सु० ॥

श्री फलोधी पार्श्व स्तवन

सुगुण सुज्ञानी स्वामि नै जी, स्युं कहियइ समभाइ ।
 पण प्रभु सुं विनती पखै जी, नेट ए काम न थाइ ॥ १ ॥
 परम प्रभु सुण फलवधिपुर स्वामि ।
 साहिव हीयडै मुम्ह सही जी, नित ही तुम्हारौ नाम ॥ २ ॥
 आवंता सहीया अम्हे जी, भर तावड त्रिष भूख ।
 तुम्ह दरसण दीठो तरै जी, दूर गया सहु दुख ॥ ३ ॥
 मन मोहन तुम्ह सुं मिल्या जी, उपजै सुख मुम्ह अग ।
 आवै मन माहे इसी जी, सही न छोडु सग ॥ ४ ॥
 परदेसे पिण प्रीतडी जी, अधिकी दिन दिन एह ।
 मन तुम पासे मोहियो जी, दूर रहै छै देह ॥ ५ ॥

अधिक उपाय कृत् अष्टु जी, भेटण श्री भगवत ।
जोग जुडै नही जुगति मु जी, ग्वरीय रहें मन ग्वत ॥ ६ ॥
अमन जाणी आपणौ जी, मेळो दे महाराज ।
तुम मिलिया विण अमतणा जी, किम करि फलिन्यें काज ॥७॥
पाय तुम्हारा परमीये जी, जोलति हें तिण ग्रीह ।
विजयहरप वद्धित फलें जी, ध्यान धरे धर्मसीह ॥ ८ ॥

—:०:—

गौडी पार्ज्व स्तवन

आज भलें दिन उगौ जी, अधिक धरम उदें ।
प्रगट मन्तोरथ पूगो जी अधिक धरम उदें ।
पास जी नो दरसन पायो जी अधिक धरम उदें ॥ १ ॥
एहवें पाचम आरें जी अधिकें० त्रेवीसम जिन तारें जी । अ० ।
देव इसौ नही दूजो जी अधिकें० पास जिनेसर पूजो जी ॥ २ ॥
गुण गौडी ना गावोजी अ०, नरक निगोदें नावो जी अ० ।
भावना मन शुद्ध भावौ जी अ०, पंचम गति मुख
पावो जी अ० ॥ ३ ॥
छाक मिथ्यामति छोडो जी अ०, जिनवर सुं हित जोडो जी अ० ।
जिन प्रतिमा जिन जेही जी अ०, कहौ इहा शका
केही जी अ० ॥४॥
सुन्दर सूरति सौहें जी अ०, मूगति जन मन मोहें जी अ० ।
सुख विजयहरप सवाया जी अ०, गुण धर्मसी मुनि
गायाजी अ० ॥५॥

—:०:—

श्रीपार्श्व स्तवन

राग—खभायती

आज नै अम्हारै मन आसा फलीया ।

नयणे पार्श्व जिनेश्वर निरख्या, हरख्या मन हुइ रंग रलिया ॥ १ ॥

त्रेवीसस जिन त्रिभुवन तारण, मनमोहन साहिव मिलिया ।

मो मन जिनगुण लागे मीठा, जिमै दूधै साकर मिलिया ॥ २ ॥

विहसत मूरति नयण विराजै, कोमल कमल तणी कलिया ।

दरसन दीठे पाइ दौलति, दुख दोहग दूरै दलीया ॥ ३ ॥

समकित दायक लाधो साहिव, मुह माग्या पासा ढलीया ।

धरमसीह कहै धरमी जन नै, सुख थायै जस साभलीया ॥ ४ ॥

—:०:—

गौडी पार्श्व स्तवन

ढाल—सु बरदेरा गीत रे ।

आणी आणी अधिक उमाह भवियण भावौ हो

भावन श्री भगवतनी रे ।

लीजै नर भव लाह, कीरति कहीजै हो

एक मना अरिहत नी रे ॥ १ ॥

मन थी दुविधा मेट अडिग आणीजै हो,

अधिकी मन में आसता रे ।

नामै एहने नेट पातक पुलायै हो,

थायइ शिव सुख शासता रे ॥ २ ॥

राचौ समकित रंग साचौ नें सदाइ हो
 सेवो जिन त्रेवीसमौ रे ।
 माचौ मत मद संग, काचौ नै कहीजै हो
 काया घट ए कारमो रे ॥ ३ ॥
 किणहिक पुण्य प्रकार प्रगट पाम्यौ हो,
 नरभव पंचेन्द्नी पणो रे ।
 आरिज कुल अवतार तिस वली लाधो हो,
 शासन तीर्थकर तणो रे ॥ ४ ॥
 इण भव जिणवर एक अवर न सेवुं हो
 आसत मन माहे इसी रे ।
 विजय हरप सुविवेक, धरि बहुभावे हो
 गावैं गुण इस धरमसी रे ॥ ५ ॥

—:❀:—

श्री गौडी पार्श्व गीत

गीत सपस्करौ जाति

जगि जागें पास गौडी लोक दोडी दोडी आवैं जात ।
 कोडी लाख देखो देव जोडी नावैं कोइ ।
 सारिखा घणा ही नाम तिणें काम सरे न कौ ।
 जैन मोटी आरिखा सौं पारिखाले कोइ ॥ १ ॥
 विकट्टे प्रगट्टे थट्टे निपट्टे उवट्टे वट्टे सकट्टे
 निकट्टे दुखा चूरणैं समाथ ।

आपे आप हाथो हाथ ईहना अथग आथ,
 नामथी करै निहाल अनाथां रो नाथ ॥ २ ॥
 एहौ एक देव पास, पूरवें उलास आस,
 तेज कौ प्रकास वास जास त्रिभुवन्न ।
 पास साम पास साम नामचै प्रणाम पामें,
 माम काम ठाम ठाम माणै सुक्ख मन्त ॥ ३ ॥
 ओपियोँ इखाग वश आससेण अग जात,
 वामा विखियात मात जात आवै वृन्द ।
 एकीह् अवीह् सीह् लोपेँ कुण लीह्
 एहौ जाप धरे धर्मसीह् गौडीचौ जिणद ॥ ४ ॥

—:ॐ:—

जैसलमेर पार्श्व स्तवन

ढाल—दादेरे दरबार चापो मोह्य रह्यो

उगौ धन दिन आज सफलौ जन्म सही री
 सफल फल्या सहु काज, जिनवर यात्रा लही री ॥ १ ॥
 जगगुरू पास जिणद, भेट्यौ भाव धरी री ।
 इण ससार समद, तारण तरण तरी री ॥ २ ॥
 जिनवरजी ने जाप, परहा पाप पुलै री ।
 उगौ सूरिज आप, किम अधार कलै री ॥ ३ ॥
 भयभजण भगवंत, जैसलमेर जयौ री ।
 उपगारी अरिहत, दरिसण दुक्ख गयौ री ॥ ४ ॥

द्रव्यत भावत दोड, पूजा विविध परै री ।
 हित करि करता होड, समकित शुद्ध तरै री ॥ ५ ॥
 हंत धरी मन माहि, मूरत जेह नमै री ।
 लाधो नर भव लाह, भूला अवर रुमै री ॥ ६ ॥
 सानिध प्रभु सुविलास, लीला अविह लहै री ।
 विजयहरप जसवास, कवि 'धर्मसीह' कहं री ॥ ७ ॥

—:❀:—

श्री मगसी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—आदरजीव क्षमा गुण०

- भविष्यण भाव धरी नै भेटो, नगसीपुर महाराज जी ।
- जेहनो मन सुद्ध नाम जपता, सहीय मिले सिवसाज जी । भ० । १ ।
- त्रिभुवन माहे ण जिन तारण, वारण दुख वन बन्हिजी
- आपण कर जे जिनवर अरचै, धरणी ते नर धन्न जी । भ० । २ ।
- पाये अवर सुरा ने पाड्या, मदन महामणिमत्थजी ।
- तिण ने पिण जिण खिण मे जीत्या, सहु मे ए समरत्थ जी । भ० । ३ ।
- सोवन सिंहासण ऊपरि सोहे, श्याम वरण तनु मारजी ।
- गुहिर हेम गिरू परि गाजंतौ, जाणं करि जलधार जी । भ० । ४ ।
- अवर देव सेवा तजि अलगी, पूजौ नित प्रति पास जी ।
- भव दल सगला दूरै भांजी, विलसौ मुक्ति विलास जी । भ० । ५ ।
- आखै दिन सुर गुर गुण गावै, आवै नही तोइ अंत जी ।
- कर भरि नीर समुद्र थी काढ्या, जलनिधि ओछ न जत जी । भ० । ६ ।
- नवनिधि थायै प्रभु ने नामै, विजयहरप विलसंत जी ।
- धर्मसीह नित आज्ञा धारइ, अमल मन एकंत ज । भ० । ७ ।

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—नशदल री

सहियर हे सहियर आवौ मिलो हे उतावली,
सुन्दर करि सिणगार । स० ।

जिनवर देव जुहारिवा, आज सफल अवतार । स० ॥ १ ॥
मनडो जिनवर मोहीयो ए ।

पहिली देइ प्रदिक्षणा, त्रिकरण शुद्ध त्रिणवार ।
गुण जिनवर ना गाइयै, आणी हर्ष अपार ॥ २ ॥

मूरति अति रलियामणी, निरखण चाहै नैण ।
जेह करावै जातरा, साचा ते हिज सैण ॥ ३ ॥

सुखदायक मुख मोहतौ, कुंडल वेऊ कान ।
भाल विसाल मुगट भलौ, दिन दिन वधते वान ॥ ४ ॥

जिम जिम मूरति ज़ोड्यै, मन तिम तिम मोहाय ।
प्रभु दरसण दीठा पछी, दूजौ नावै डाय ॥ ५ ॥

प्रीति करी इक पास सु, रहियौ मो मन राच ।
पाच रतन नै परिहरी, कहौ कुण भालै काच ॥ ६ ॥

धन धन ते नर धरणीयै, जेहनी सफली जीह ।
जस कहै पास जिणत्र नौ, सुह भावै धर्मसीह ॥ ७ ॥

श्री संखेश्वर पादार्ण स्तवन

ढाल—वितसैं रिद्धि समृद्धि मिली

महिमा मोटी त्रिभुवन माहे, आवैं यात्रा जग उमाहैं ।

कल्पतरू फलियो हितकामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।१।

धुरि वदड पूजड ध्यान धरै, कर जोड़ी सेवा जेह करै ।

गुण गावै तेह सुगति गामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।२।

विपमा दुख वेंरी जाय विलैं, महिला जिम कमला आड मिलैं ।

जप जाप जपो अन्तर्यामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।३।

जदुसेन जरा मूर्छित जाणी, सज कीध पखाल तणौ पाणी ।

ठावा जस एहवा ठाम ठामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ॥४॥

काम कुम्भ चिंतामणि कल्पलता, छाजैं ए उपमा काज छता ।

पिण इण सम काइन आसामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ॥५॥

सतरैसे सतट्टि पोस सुदी, सातम श्री पाटण संघ मुदी ।

परतिख प्रभु नी यात्रा पामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ॥६॥

धन जिनसुखसूरि धर्म शील रस्तइ, सुविवेक कियो बेलजीवस्तइ ।

जिनराज जुहार्या जस नामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ॥७॥

श्री पार्श्व स्तवन

सुणि अरदासा सुगण निवासा अमची पूरड आसा राजि ॥
 देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कळुक दिलासा राजि ॥ १ ॥
 चाढी चटकी भव मइ भटकी, नाच्यौ हुं विधि नटकी राजि ।
 हिव मन हटकी आपसौं अटकी, लागौ तुम्ह पाय लटकी ॥२॥
 तइ अम्ह टाली मुगति सभाली, प्रीति अम्है हिज पाली राजि ।
 एक हथाली बागी ताली, बात अचभा वाली राज ॥ ३ ॥
 तुं उपगारी पास तुहारी, सेवा सहु में सारी राज ।
 तत्त विचारी शुध मन धारी, श्री धर्मसी सुखकारी राज ॥ ४ ॥

श्री पार्श्व स्तवन

राग—सारग वृ दावनी

नित नमियै पारसनाथ जी ।
 मनमोहन ए रतन चिंतामणि, हिव आयो छै हाथ जी ॥ १ ॥
 सेवो स्वामि सदा मन सूधें, आपै वल्लित आथ जी ।
 पुण्य उदै करि ए प्रभु पायौ, सिवपुर मारग साथ जी ॥ २ ॥
 महियल माहि अधिक जसु महिमा, सेवै सघ सनाथ जी ।
 ध्यावौ एक मना कहै धर्मसी, एह अनाथा नाथ जी ॥ ३ ॥

पार्श्वनाथ वधावा गीत

पहिलै वधावै जिणवर देव जुहांस्या,
 सफलौ हो सफलौ जन्म हुआँ सही ।
 वीजे वधावे समकित रतन सुलाधो,
 दिल में हो संकादिक दूषण नहीं जी ॥ १ ॥

अगणी वधावइ श्रावक पदवी पाइ,

देसैं हो देसविरति धर्म आदरूं जी ।

चौथइ वधावैं हो 'चारित लाधो,

तिणथी हो तिणथी भव सागर तरूं जी ॥ २ ॥

मंगल पहिलौ अरिहंत मानुं,

विजौ हो वीजो हो सिद्ध मंगल वली जी ।

तीजइ मंगल साधनी सेवा,

चउथे हो धर्म कह्यौ जे केवली जी ॥ ३ ॥

जिन शासन वरतौ जयवन्तौ,

भावित हो भावित वधावा मंगल भाखिया जी ।

च्यार लोगुत्तम एहिज चावा,

सूत्रे हो सूत्रे हो सरणा एहिज साखिया जी ॥ ४ ॥

पारसनाथ' तणै परसादै माहरै,

हो माहरै हो जैन धर्म मुदैं जी ।

मन शुद्ध श्री धर्मसी कहै माहरइ,

आज्यो हो आज्यो हो ए भव भव उदैं जी ॥ ५ ॥

इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवन । उपदेशे गेयंच ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

नैणा धन लेखु देखुं देखुं मुख अति नीको ।

जीहा धन जाणुं गावुं गावुं जस जिनजी को ॥

धन धन मुझ स्वामी तुं त्रिमुवन सिर टीको ॥ १ ॥ नैणा०

चित्त शुद्धे करि हूं नित सुणिवा चाहु,
 तुम्ह उपदेश अमी को ॥ २ ॥ नै०
 देवल देवल देव घणा ही दीसे,
 तुम सम जस न कही को ॥ ३ ॥ नै०
 पुण्यै करि प्रभु साहिव पायो,
 सोइ पायो मे राज पृथ्वी को ॥ ४ ॥ नै०
 कीजै मया मुक्त सेवक वीजै साचो,
 कीजो मत अवर हथी को ॥ ५ ॥ नै०
 रूप अनूपम तेज विराजै तैसो,
 सूरिज को न ससी को ॥ ६ ॥ नै०
 पास जिनेसर सहु मन वंछित पूरै,
 साहिव श्री धर्मसी कौ ॥ ७ ॥ न०

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

महिमा मोटी महियलै हो, परगट जिनवर पास ।
 मुरनर नित सेवा करै हो, आणीय अधिक उलास ॥ १ ॥
 जगनायक जिनवर गुण जपौ हो, जसु जपतां दुख जाय ।
 थिरे घरि नवनिधि थाय ॥ २ ॥ ज०
 मन मोहन मूरति भली हो, सब ही काज सुहाय ।
 चरण कमल सुख चाहतौ हो, मुक्त मन भमर मोहाय ॥ ३ ॥ ज०
 सिर उपर मुकट सुहामणो हो, कुण्डल दोन् कान ।
 भ्रिगमि (ग) तेजे भलकता हो, सूरिज तेज समान ॥ ४ ॥ ज०

चोखा चोवा चंदना हो, घसि केसर घनसार ।
 अद्भुत मृगमठ अरगजे हो, अरचता सुख अपार ॥ ५ ॥ ज०
 नित ही नाटक नव नवा हो, दो दो दमकै मृदंग ।
 भ्रमकित भाफरि भालरी हो, मोहत मन मुख चंग ॥ ६ ॥ ज०
 तत नक ताथेइ ताथेइ तटक दे तोडत तान ।
 फटक दे अति भली देत है फेरी, गावत विचि विचिग्यान ७ ज०
 पूजा यु करता प्रभुजी की, सहीय मिलै सुख साज ।
 दस दिस माहे बहु जस दीपै, परभवि सिवपुर राज ॥ ८ ॥ ज०
 पूरण बंछित पास जी हो, पुहवी माहे प्रधान ।
 वाचक विजयहरप सुख वाधै, धरमसी धरत ही ध्यान ॥ ९ ॥ ज०

श्रीआबू तीर्थ स्तवन

आवू आज्यो रे आवू आज्यो २ आवू आज्यो वहिला थाज्यो ।
 मानव नौ भव सफल करौ तो, यात्रा काजे जाज्यो ।
 वामानंदन वंदन वहिला, अचलगढै पिण आज्यो ॥ १ ॥
 हा रे म्होरा सयणा साचा वयण सुणेज्यो, अधिको तीरथ आवू-
 सहु पातक मल सावू, भल भल २ देवल जोज्यो ।
 देवल जोज्यो हरखित होज्यो, धुरि पातक मल धोज्यो ।
 सहु सुखदायक तीरथ नायक, ज्योवा लायक ज्योज्यो ॥ २ ॥
 हा रे सयणा नयणा सफल करेज्यो,
 दूरथी देवल वीसै, हीयडौ तिम तिम हीसै ।
 लुलि लुलि लुलि लुलि सीस नमाज्यो,

सीस नमाज्यो गुण गवराज्यो वलि श्रीफल वधराज्यो ।
धन धन वेला धन ए घडीयां, धन अवतार धराज्यो ॥ ३ ॥

हा रे सयणा छवि गिरवर नी छाजे ।

काइ लूवा आवें लहकै, केतक कपक सहकै ।

मह मह मह मह परिमल लेज्यो,

परमल लेज्यो दुख दलेज्यो, देहरै भमती देज्यौ ।

तोरण धोरण चितनी चोरण कोरण अनुमोदेज्यो ॥ ४ ॥

हां रे सयणा विमलवसी वादेजो ।

केसर भरीय कचोली, माहे मृगमद चोली ।

घन घन घन घनसार घुलाज्यो घुलाज्यो,

भाव भिलाज्यो आसातना टलाज्यो ।

नव नव रगी अंगी चगी अंगी अंगि रचाज्यो ॥ ५ ॥

हा रे सयणा खेला पात्र नचाज्यो

सरिखै वेस समेला, भमती रमता भेला ।

थिग मिग थिगथिग थेइ थैइ, थिग मिग

थेइ २ तत नंक ताथेई ॥

शिव मग सन्मुख थाज्यौ, धप मप दों दो,

भर हर भौं भौं मादल भेर वजाज्यो ॥ ६ ॥

हा रे सयणा अचलगढे अरचाज्यो ।

चारे विव उत्त गा, सोवन रूप सुचगा ।

भलहल फिगमिग ज्योति सराज्यो,

ज्योति सराज्यो, भाव भराज्यो ।

यात्रा सफल कराज्यो, विजयहर्ष सुख साता वाछो,

शुभ 'धर्मसीख' धराज्यो ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिन स्तवन

वीर जिणेसर वंन्द्रियै, इण सम नहीं कोइ और, म्हारा लाल ।
परता पूरण परगडॉं, माचों ग्रमु साचौर न्हा० ॥ १ ॥

आज इणै पंचम अरै, सासण एहनो सार न्हा० ।
जिन धरम वरते जगत में, ए एहनौ उपगार न्हा० ॥ २ ॥

गौतम सुधरम गणधर, शिष्य एहना श्रीकार न्हां० ।
सूत्र सिद्धान्त जे उपदिस्था, नित सुणता निस्तार न्हा० ॥ ३ ॥

अतुलित वली ए अचतर्यो, जिण सुर कीधा जेर न्हा० ।
संका मेटी शकनी, मही कंपायौ मेर न्हा० ॥ ४ ॥

अठ वरसी वालक इणें, महुकम एकण मुट्टि न्हा० ।
रामति आमल की रम्या, देव हराव्यो दुट्टि न्हा० ॥ ५ ॥

लेसालै ले आवता, अधिकाइ करी एण न्हा० ।
ऊतर आप्या इन्द्र ने, जौडौ व्याकरण जेण ॥ ६ ॥ न्हा०

वरस त्रीसज गृह वसी, ले लिखमी नो लाह न्हां० ।
आपो आपै आदर्यो, चारित चित्तनी चाह न्हा० ॥ ७ ॥

तप जिण सहु निरजल तप्या, वार वरस धुरि मु न न्हा० ।
तिण मे पारण दिन तिकै, ऊठसै मै इक उन न्हा० ॥ ८ ॥

सूलपाणि चडकोशियौ, गौसाला गुणहीन न्हां० ।
तिण तीना ने इण कीया, उपसम समकित लीण न्हा० ॥ ९ ॥

मूठौ ही जे मगडीयौ, जम्माइ जम्माल म्हा० ।
 तार्यो पनर भवे तिकौ, प्रभु सहुना प्रतिपाल म्हा०॥ १० ॥
 पामी केवल थापीया, गणधर जेण इग्यार म्हा० ।
 सहस चउद् शिष्य साधु ते, साध्वी छतीस हजार म्हा०॥ ११ ॥
 पुहता जिणवर सिवपुरे, ल्यै आटे गुण लाह म्हा० ।
 जिन प्रतिमा जिनवर जिसी, अरचौ अधिक उछाह म्हा०॥१२॥
 भावै जिन गुण भावना, गावइ वलि गुणगान म्हा० ।
 धन ते कहै श्री धर्मसी, पामै सुख परधान म्हा०॥ १३ ॥

श्री राड्द्रह महावीर स्तवन

राड्द्रह महावीर विराजै, भय सगला दूरें भाजे रे । रा० ।
 सहु विधि सुख सपति साजै, नित सेवक काज निवाजैरे । १। रा०
 सासन एहनो इण आरै, वरतै सुधरम विचारै रे । रा० ।
 सुन्दर मूरति अतिसारी, नित नमण करे नर नारी रे । २। रा०
 देवल वलि निर्मल दीपै, जसु तेज तरणी से जीपें रे । रा०
 सुरतरु ण फल्यो समीपै, पातक दुख पास न छीपें रे । ३। रा०
 धन धन जे धर्मसी ध्यावै, प्रभु सानिध सहु सुख पावैरे ।
 शुभ भाव धरी जे सेवै, दिन दिन मन वंछित देवे रे । ४। रा०
 सितरै वर्षे सुखदाइ, पुण्ये प्रभु यात्रा पाइ रे ।
 श्री जिनसुखसूरि सदाइ, श्री संघ धर्मशील सवाई रे । ५। रा०

श्री महावीर जन्म गीत

सफल थाल वागा थिया धवल मगल सयल

तुरत त्रिभुवन हुआ हरष त्यारा ।

धनद कोठार भडार भरिया धने,

जनमियो देव ब्रधमान ज्यारा । १ ।

वार तिण मेरगिरि सिहर न्ववरावियौ,

भला सुर असुरपति हुआ मेला ।

सुद्रव वरपा हुई लोक हरष्या सहु,

वाह जिनवीर री जनम वेला । २ ।

मिहर जगि ऊगतें पूगतें मनोरथ,

जुगति जाचक लहें दान जाचा ।

मंडिया महोछव सिधारथ मौहले,

सुपन त्रिसला सुतण किया साचा । ३ ।

करण उपगार ससार तारण कलू

आप अवतार जगदीस आयौ ।

धनो धन जैन धर्म सीम धारण धणी,

जगतगुर भले महावीर जायौ । ४ ।

सतरह भेदो पूजा स्तवन

भाव भले भगवंत री, पूजा सतर प्रकार ।

परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार । १ ।

करि पीछी मुखकोश करि, विमल कलश भरि नीर ।

पूजा न्हावण करौ प्रथम, सहु सुख करण सरीर ॥ २ ॥

केसर चदन कुमकुमै, अंगी रचो अनूप ।
 करि नव अगे नव तिलक, पूजा वीय प्ररूप ॥ ३ ॥
 वसन युगल उज्जल विमल, आरोंपें जिन अंग ।
 लाभ ज्ञान दरसण लहै, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ ४ ॥
 करपूरै कसतूरियै, विविध सुगन्ध वणाय ।
 अरिहंत अंगै अरचतां, चौगइ दुख चूराय ॥ ५ ॥
 मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ।
 प्रभु पूजाए पंचमी, पंचमगति दातार ॥ ६ ॥
 छट्टी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्पमाल ।
 गुण गुथी थापौ गले, जेम टलै दुख जाल ॥ ७ ॥
 केतक कपक केवड़ा, सौभे तेम सुगात ।
 चाढो जिम चढता हुचै, सातमीयै सुख सात ॥ ८ ॥
 अंगै सेल्हारस अगर, पूरौ मुखै कपूर ।
 अरिहंत पूजा आठमी, करम आठ कर दूर ॥ ९ ॥
 मोहन धज धरि मस्तकै, सूहव गीत समूज ।
 दीजै तिन प्रदिक्षणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १० ॥
 प्रभु सिर मुगट धरौ प्रगट, आभरण सुघट अनेक ।
 वाहै सोहै बहुरखा, विधि दशमी सुविवेक ॥ ११ ॥
 फूलहरौ अति फावतौ, फू दे लहकै फूल ।
 महकै परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १२ ॥
 पुहप सुरभि पाचे वरण, वरषा करण विशेष ।
 अधो बध मुख ऊरधे, द्वादशमी विधि देख ॥ १३ ॥

चित चोखे चोखै करी, अठ मंगल आलेह ।
 अरिहत प्रतिमा आगलै, तेरम पूजा तेह ॥ १४ ॥
 गंधवती मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ।
 धरि प्रभु आगलि धूपणो, चवदस अरचा चारु ॥ १५ ॥
 कठ भलइ आलाप करि, गात्रौ प्रभु गुण गीत ।
 भावौ अधिकी भावना, पनरम पूजा प्रीत ॥ ६ ॥
 कर जोडि नाटक करै, सजि सुन्दरि सिणगार ।
 भव नाटक ते नवि भमै, सोलम पूजा सार ॥ १७ ॥
 तत घन श्रुपि रे आन धें, वाजित्र चौविध वाय ।
 भगत भली भगवंतरी, सतरम ए सुखदाय ॥ १८ ॥
 जुदी जुदी विध जाणिवा, सख्या पिण समभाय ।
 दोहे इक इक दाखवी, इम धर्मसी उवभाय ॥ १९ ॥

बीकानेर चैत्य परिपाटी स्तवन ।

चैत्य प्रवाडे चौवीसटै, करता दरिसण सहु दुख कटै ।
 घणा महाजन मिलिया घेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ १ ॥
 शक्रस्तव पाचे सुविचार, जुगते जिनवर देव जुहार ।
 भावै वावै भुंगल भेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ २ ॥
 नित नित वीजै देहरै नमो, वासपूज्य जिनवर वारमो ।
 अलग टलै अज्ञान अंधेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ३ ॥
 तीजो देवल तिणहीज तीर, वंदो जिन चौवीसम वीर ।
 जिण सहु सुरवर कीधा जेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ४ ॥

भाडैसाह करायौ भलौ, तीरथ ए सहु मैँ सिर तिलौ ।
 मोटी ओपम राजे मेर, वंदो जिनवर वीकानेर ॥ ५ ॥
 सुमतिनाथ जिण पंचम सार, चौमुख २ जिन च्यार च्यार ।
 ऊपरि ऊपरि सुजस उचेर, वंदो जिनवर वीकानेर ॥ ६ ॥
 नमि आगे तिहा थी नमिनाथ, इकवीसम आपै सिव आथि ।
 हालौ जीव जयणाए हेर, वन्दो जिनवर वीकानेर ॥ ७ ॥
 बलता देवगृहे सुविधान, मन सुध वदु श्री वर्द्धमान ।
 फिरतां शुद्ध प्रदिक्षणा फेर, वंदो जिनवर वीकानेर ॥ ८ ॥
 आदिसर प्रासाद अनूप, राजैँ मूरति सुन्दर रूप ।
 चिहुँ दिसि विंब घणा चौपखेर, वंदो जिनवर वीकानेर ॥ ९ ॥
 अजितनाथ वीजौ अरिहंत, भय भंजन भेट्यौ भगवंत ।
 खाट्यौ समकित पाप खखेर, वदो जिनवर वीकानेर ॥ १० ॥
 परसिद्ध ए आठे प्रासाद, प्रणम्या जिनवर तजी प्रमाद ।
 श्री धर्मसी कहैँ साभ सवैर, वंदो जिनवर वीकानेर ॥ ११ ॥

तीर्थ कर स्तुति-सवैया

नमो नितमेव सजौ शुभ सेव, जयो जिनदेव सदा सरसै ।
 दुति देह दसैँ, अति ही उलसैँ, दुख दूर नसैँ जिनकैँ दरसैँ ॥
 असुरेस सुरेश अशेष नरेश, सबैँ तिण वंदन कुं तरसे ।
 धर्मसीह कहैँ सुख सोऊ लहैँ, जोऊ आदि जिणंद नमैँ हरसैँ ॥१॥

सवैया तेवीसा

तू उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सबै सुखकंदा ।
 जिते जगदेव करै तुम्ह सेव जिनेसर नाभि नरेसर नन्दा ॥
 देख मुख नूर मिटै दुख दूर नसै अंधकार ज्युं देखि दिणंदा ।
 श्री धर्मसीह कहै निसदीह उदौ करि संघ कौ आदि जिणंदा । २।
 दान दियो जिण आपणी देह कौ, लीनो परावत जीव लुकाइ ।
 आवत ही अचिरा उदरैँ सब देस मे शाति जिणें वरताइ ॥
 पाल्यौ छ खंड को राज जिणें जिनराज भयौ पदवी दु पाइ ।
 सेवहु भाव भलैँ धर्ममी कहैँ शाति जिणंद सबै सुखदाइ ॥ ३ ॥
 प्रगट्टा विकटा उमटाति घटा सघटा विहुटात छटा घन की ।
 डक ताल मैँ ताल रु खाल प्रणाल वहैँ डक ताल उतालनि की ॥
 चिहुं ओर चकोर सजोर सु भोर करैँ निसि सोर पहोरनि की ।
 विनती करैँ राजमती पिउ सुं अब वात कहा धर्म शीलन की ॥४॥
 ताल कंसाल मृदंग वजावत, गावत किन्नर कोकिल कूजा ।
 ताथेइ ताथेइ थेइ भलैँ हित, नाचट हैँ नर नार समूजा ॥
 कडल कान भिगासग ज्योति, सु दीपत चंद दिनंदही दूजा ।
 यौँ धर्मसीह कहैँ धन दीह, वनी मेरे पास जिणंद की पूजा ॥
 जानत वाल गुपाल सबैँ जसु, देस विदेस प्रसिद्ध पहरैँ,
 नाम ते कामित पामत हैं नित, देखत जात सबैँ दुख पूरैँ ।
 मोहन रूप अनूप विराजित, सोभत सुन्दर देह सनूरैँ,
 ध्यान धरौँ हित सु धर्मसी कहैँ, पारसनाथ सदा सुख पूरैँ ॥

जाकौ परता पूर देखे दुख जाइ दूर,

हाजरा हजूर जगि जागैं प्रभु पास जू ।

मूरति विराजै नित चतुर के मोहे चित्त,

पेखै बधै नैननि की अधिक पियास जू ॥

कीरति सुनी है कान, दीनौ कहा लु कै दान,

धरिके तुम्हारौ ध्यान आव लख पास जू ।

कहत है धर्मसीह गहत ही ताकौ नाम,

लहत अनंत सुख तूटै दुख पास जू ॥

चौबीस जिन गणधरादि सरूया छप्पय

बंदो जिन चौबीस चवदसें बावन गणधर ।

साधु अठ्ठावीस लाख सहस अडतीस सुखंकर ॥

साध्वी लाख चम्माल सहस छयालिस चउसय ।

श्रावक पचपन लाख सहस अडताल समुच्चय ॥

श्राविका कोडि पच लाख सह,

अधिक अठावीस सहस अख ।

परिवार इतो संघ ने प्रगट,

श्रीधर्मसी कहै करहु सुख ॥

सनतकुमार सभाय

ढाल -त्यागी वीरागी मेघा जिन सगभाया,

अथवा उडरे आवाकोडल मोरी रहनी

साचा सुग्यानी ध्यानी सनतकुमारा,

कारिमी काया माया कुण अहंकारा । सा०

इण महामुनिना ए अधिकारा, नित साभलतां ह्वै निसतारा । १

एण भरतक्षेत्र चउथा आरा. हथणाउर सुरपुर अणुहारा । सा० ।

आससेण सहदेवी कुखि अवतारा, भोगवें चक्रवर्ति

पदवी भारा । सा० । २

विधिविधि ऋद्धि तणाविस्तारा, पालें राज छखंड पडारा । सा० ।

एकदाइन्द्र प्रशंसै अपारा, ए अतिसुन्दर रूप उदारा । सा० । ३ ।

तिहा विजै विजयंत देवअतारा,

इन्द्र वचन आणैअदेखारा । सा० ।

विप्र नौ वेश रचींतिणवारा, देव दोआवैदेखणदीदारा । सा० । ४ ।

पइसण देवैनहि प्रतिहारा, आपन्हवण करै अग उघारा । सा० ।

अम्हे दरसणआया अलगारा, विचिरोकण ना नही

व्यवहारा । सा० । ५

मुजरो कीधौ मोहमकारा, कुण इणआगै देवकुमारा । ता० । ६ ।

दीपइरूपजाणे दिनकारा, सक्रवचन ते साच संभारा । सा० । ६ ।

इम सुणि नृप आणे अह कारा, सभा विराजैभला सजि

शृंगारा । सा० ।

वलिआवै देखै दरबारा, पिण शिरधुण्यौ केण प्रकारा ।सा०।७
 विप्र पूछयते कहय विचारा, एतुम्ह विणस्यौ रूप अबारा ।सा०।
 धिग ए तनु अभिमान धिकारा, नरनीकाय तिका नाछारा । ८।
 अदृश हुआ सुरते अचंभारा, सहु देखतां लोक सभारा । सा० ।
 विणट्टी कायारौग विकारा, चक्रवरति रा पिण नहि चारा । ९।
 असुचि अपावन अथिर संसारा, गरव करै ते मूढ गमारा ।सा०।
 भरिया तजि कोठार भंडारा, आप चक्रीहुआ अणगारा ।सा०।१०
 दिल बहु हेत सुनदा दारा, पूठइ विलपै ले परिवारा । सा० ।
 लुगि छम्मास फिरीतसुलारा, ललच्यौ नहितोईचित्त लगारा ११
 अरस विरस मुनिल्यै आहारा, उपज्या साते रोग अपारा ।सा०।
 कडू ज्वर सासकास करारा, स्वरभग अखियाउदर विधारा । १२।
 सातसै वरस सहा असातारा, इंद्र वखाण्यौ वले दृढ

आचारा ।सा०।

सुरकहै वेसकरे सथुआरा, साधु समाधिकरूतुभसारा ।सा०।१३
 मुनि कहै अतरग करम आम्हारा, तिहाकोईजोर न चलै

तुम्हारा ।सा०।

परचें थूक लगाइ पोतारा, अगुलीकीध सोवन आकारा ।सा०।१४
 भरियौ मुनिवर लछिभडारा, धन धन एहचलै खगधारा ।सा०।
 सुर परसंसि गयौ श्रीकारा, आऊ त्रिण लखवरप आधारा । १५
 समेतशिखरै मास सथारा, सरगतीजै गया सनतकुमारा ।सा०।
 विजयहरप गुरु सुगुर विद्यारा, वंदै श्रीधरमसीह वारोवारा । १६

मेतार्थ मुनि स्वाध्याय

राजग्रही में गोचरी, विहरतौ शुद्ध आहार ।

सोनार नै घर संचर्यो, सुमति गुप्तिइ रे साचवतौ सार । ११।

सुज्ञानी साधु धन मेतारिजं धीर ।

सजि समता रे तजि ममता सरीर । सु०७२।

सोना तणा जव तिण घड़ी, तिण घड़ी, कीध तैयार ।

सोनार तिण साधुनइ बहिरावा, गयो गेह मकार । सु०७३।

पूठा थकी कुच पखियइ तिहा, चुग्या सहु जव तेण ।

सोनार आइ संभालता, कद्यौ माहरा रे जव लीधा केण । सु०७४।

नर कोइ बीजौ इहा नहीं, सहु लिया जव इण साध ।

तिण रीस भरियै तेहनौ, सीस वीटयौ रे लेइ नीले वाध । सु०७५।

जाणियौ मन मे तिहा यती, जौ कहुं गिलिया कृंच ।

तौ एह हणिस्यै तेह नै, साधु बोल्यो रे नहीं इणसंच । सु०७६।

अति घणी वेदन ऊछली, सूकतै वाधइ सीस ।

पीड थी दृग छिटकी पड्या, दया पाली रे तोइ बिस्वा वीस । ७।

भली अनित्य अशरणभावना, धरि चित्त चढ़ते ध्यान ।

कर्म चूरि अतगड़ केवलि, थइ पहुंतौ रे मुनि शिवथान । सु०७८।

अणगार एहवा उपशमी, प्रणमियै तेहना पाय ।

सुख विजयहरप हुवै सदा, इम भाखइ रे धर्मसी उवमाय । सु०७९।

दश श्रावक सज्जाय

सूत्रै मन प्रणमौ दश श्रावक मोटी ऋद्धि बारै व्रत धार ।
 वीर जिणंदइ एह वखाण्या, सातमे अंग तणै अधिकार ।सू०।१।
 वाणीय गाम नगर तिहा आणंद, बारह कोडि सोनईया सार ।
 दस गौ सहस तणो इक गोकुल, एहवा गौकुल जेहनै च्यार ।सू०।२।
 कोडि अढ़ार सोवन छ गोकुल, चंपापुरि कामदेव जगीस ।
 तीजौ चुंलणीप्रिया बनारसी, आठ गोकुल धन कोडि चौबीस ।३।
 सुरादेव वाणारसी नयरइ, चुलशतक आलभीया सार ।
 कंभिह्णे नयरै कुंडकोलिक, छ ब्रज कोडि अढ़ार अढ़ार ।सू०।४।
 पोलासुपुरि सद्दालपुत्र सत्तम, तीन कोडि धन गोकुल एक ।
 आठमौ महाशतक राजग्रही, कोडि चौबीस ब्रजआठ विवेक ।५।
 नवमो नदणीप्रिया सावत्थी, दशमौ लेतीया प्रिया तिण ठाम ।
 बार बार कोडि धन बिहुनै, च्यार च्यार गोकुल अभिराम ।६।
 व्रत पाली अणशण करि पहुंता, पहिलै देवलोक परधान ।
 च्यार च्यार पल्योपम आयुष, धर्मसीह धरै धर्म ध्यान ।सू०।७।

—:❀:—

श्री गुरुदेव स्तवनादि संग्रह

श्री गौतम स्वामी स्तवन

प्रहसम आलस तजि परौ, चौखो चित्त करो रे, गचो गकर्णा रंग ।
गौतम गुण भणौ रे ॥ आंकणी ॥

सेवो मन शुद्धे करी, भावे भरी रे, आणंद होवे अग ॥ गौ०१॥
नामे नित नवनिध मिलें संकट टलै रे, टालिद नासे दूर ।
ध्यान धर्या धन ह्वै घणा,

न रहै मणा रे, पामे सुख भरपूर ॥ गौ०२ ॥

कामधेनु कल्पतरु, चिंतामणि वरु रे, नाम में तीन रतन ।
लब्ध अठावीस जेहनें,

गुण गेह नै रे, ध्वावे ते धन धन ॥ गौ०३ ॥

जिण दिनकर किरणा ग्रही, मन गहगही रे, चढ्यौ अष्टापद सोड ।
जिणवर विंव जुहारिया ,

दुख वारियारे, च्यार आठ दस दोड ॥ गौ०४ ॥

प्रतिबोध्या तापस वली, मन नी रली रे, पनरेसैं नें तीना
एकणि पात्रे पारणो,

भव-तारणउ रे, लब्धि अंगूठ अखीण ॥ गौ०५ ॥

जे एहवा मुनिवर जपै, तसु दुख खपै रे, तूटै सगला कर्म ।
लीला अधिक लहै सदा,

सुख संपदा रे, भाजे भव नौ भर्म ॥ गौ०६ ॥

आठ सिद्धि हुइ आंगणै, घरि धन घणै रे, विजयहरष जशवास ।
धरमसीह मुनिवर इम कहै,

ते सुख लहै रे, एह भणै जे उल्हास ॥ गौ०७ ॥

श्री जबूस्वामी स्तवन

छोडो ना जी २ कचन नै कामिनी छौडौ ना जी ।

सुणि जंबु स्वामी छोडो ना जी । आणि हां ।

सुधरम स्वामी तणि सुणि वाणी, इमदिक्षा मन आणी ।

तरुणी परणी तुरत तजौ ते, तोडो मति अति ताणी ॥ छो० १ ॥

दायज मे सोनइया दीधी, नवला कोड़ि निनाणुं ।

परिहरि नै पाछै पछतास्यौ, तुम सु स्युं अति ताणुं ॥ छो० २ ॥

प्रीतम कहै सुण देवानुप्रिये सुख थोड़ा दुख बहुला ।

मधु बिन्दु दृष्टाते मानी, सग तजुं छु सगला ॥ छो० ३ ॥

सुन्दर आठे श्वसुरा सासु, मातु पिता हित माथै ।

प्रभवो पचसया प्रतिबोध्यो, संयम लै सह साथै ॥ छो० ॥ ४ ॥

सुधरम शीश हुवा ए सह, सुधरम शील आचारी ।

सुत्र प्ररुप्या शिव पद पहुंच्या, आज जिके उपकारी ॥ छो० ५ ॥

वडली जिनदत्तसूरि (यात्रा) स्तवन

यात्रा ए वडली जास्या, गुरूदेव तणा गुण गास्या हो ।
 जिहा जिनवर मूरति राजइ, वलि जिनदत्तसूरि विराजें हो ॥१॥
 पाटण अणहलपुर पासइ, एह कीजै यात्रा उल्हासइ हो ।
 सुणि तीरथ महिमा सारी, आवइ भावइ नर नारी हो ॥२॥
 पूज्या सहु इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो ।
 जिण चौसठ योगिनी जीती, वरतइ ए बार वदीती हो ॥३॥
 वीर बावन पिण वसि कीधा, जगगुरू एहवा जस लीधा हो ।
 साकिणी डाकिणी उपशामइ, न पडै विजली जसु नामै हो ॥४॥
 वर पुर वलि वाटइ घाटै, दुस्मण भय दूरै दाटै हो ।
 खरतर गुरु डम जस खाटइ, वरतै जे सुधरम वाटै हो ॥५॥
 पारिख गुल्लाल पुन्याइ, जेहनइ सुत यात्र कराइ हो ।
 श्रीपूज जिनसुखसूरि साथइ, लाभ लीधौ लालचंद नाथइ हो ॥६॥
 संतरइ सतसठ वरीसइ, मिगसर वदि दुतीया दीसइ हो ।
 सहु संघ मनोरथ साध्या, इस कहै धर्मसीह उपाध्या हो ॥७॥

जिनदत्तसूरि सर्वैया

चावन वीर किये अपने वश, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ ।
डाङ्गण साङ्गि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ ॥
बीज तटक्क भटक्क कट्टक, अट्टक रहै पै खट्टक न काइ ।
कहै धर्मसीह लंघे कुण लीह, दीयैजिनदत्त की एक दुहाइ ॥१॥

१ श्री जिनकुशलसूरि (देरावर यात्रा) स्तवन

दादौ देरावर दीपै, जसु सेवक सुजसै जीपै हो ।

सद्गुरु सुखदाई ।

श्रीजिनकुशलसूरिन्द, कलिजुग माहे सुरतरु कंदो हो ॥१॥

महिमा इण जग माहे, आवै बहु यात्र उछाहे हो ।

परतिख परता पूरै, चित्तनी सहु चिंता चूरे हो ॥२॥

विपमी चेला वाटै, करता समरण दुख काटै हो ।

छाजहडा कुंल छाजै, गुरु महिमा अधिकी गाजै हो ॥३॥

परसिद्ध जिणचंद्र पाटै, खरतरगुरु शोभा खाटै हो ।

सानिध करण सदाइ, वड नामी गुरु वरदाई हो ॥४॥

शुंभ घणो ठाम ठामै, पाय पूजै ते सुख पामै हो ।

थिर देरावर थानै, मुनिवर सहु आसति माने हो ॥५॥

मन मोटै मुलताणी, आदर यात्रा मन आणी हो ।

राखी राखेचे रेख, सघ कीधो तिण सुविशेष हो ॥६॥

जेसलगट गच्छराज, जिणचंदमृगि गुणे जिहाज हो ।
 वदण मंघ तिहा आयै, वित्त साते शंत्रे वाचे हो ॥५॥
 सघ आदरै ममज, आया यात्रा श्रीपूज हो ।
 मोटो मंघ सुलताणी, हित मरोटी हाजीव्याणी हो ॥६॥
 जलालपुरे जस लीयो, नीतपुर उच वंदितमीधो हो ।
 ए सघ यात्रा आया, श्रीपूज श्रीनव सवाया हो ॥६॥
 सतरसे पैतालीसै, माह सुदि तीज सुजगीस हो ।
 यात्रा करी जयकारी, श्री धर्ममी कट सुखकारी हो ॥७॥

(२)

कुशल करण जिन कुशल जी, दादोजी परसिद्ध देव रे लाल ।
 परगट परता पूरवै, शुद्धे मन करतां सेव रे लाल ॥१॥
 गृध्वी माहे परगडौ, सिवीयाणो गढ सुखकार रे लाल ।
 जेलागर मत्री जेहां, नामे जयतश्री नारि रे लाल ॥२॥
 तेरे सैत्रीसै समै, जायौ शुभ दिन जयकार रे लाल ।
 सेंतालैं सयम लीयौ, सहु अथिर गिण्यौ संसार रे लाल ॥३॥
 सदगुरु जिनचंदसूरिजी, सघले गुणे देखि सुघाट रे लाल ।
 शुभ महोरत सत्योत्तरे, पाटण मे दीधो पाट रे लाल ॥४॥
 गिरुवो खरतर गच्छ धणी, जिण शासन में जसवास रे लाल ।
 देरावर पुर दीपतौ, निव्यासीयें स्वर्ग निवास रे लाल ॥५॥

सकट माहे समरता, दादौजी करें दुख दूर रे लाल ।
 वेडी राखी वूडती, परसिद्ध ए विरूढ पडूर रे लाल ॥६॥
 सेवता सुरतरु समौ, दिन दिन दौलतिदातार रे लाल ।
 विजयहर्ष वंछित दीयै, वंदै धर्मसी वारंवार रे लाल ॥७॥

(३)

कुशल गुरु नामे नवनिधि पामै,
 ध्यावै जेह सूधै मन सदगुरु, दिन दिन शुभ परिणामै ॥१॥
 भर दुक्कर अटवी वलि घाटै, वैरी जूथ घणामे ।
 कुशल खेम कुशल परसाढै, ते पहुंचे निज ठामै ॥२॥
 परता पूरण संकट चूरण, चावौ चौरासी गच्छा मै ।
 धर्मसीह कहै ध्याया धावै, करिवा सानिध कामै ॥३॥

(४)

दौलति दाता द्यौ सुख साता, सहजुन मन्न सुहाता राज ।
 जे दिन राता तुम्ह गुण गाता, ते रहै राता माता राज ॥१॥
 दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सहु नर मादा राज ।
 टलइ अल्हादा सहु विषवादा, कुशल कुशल परसादा
 राज ॥२॥
 प्रवहण तार्या कष्ट निवार्या, अटवी माहि उवार्या राज ।
 विरूढ संभार्या धर्मसी धार्या, सेवक काज सुधार्या राज ॥३॥

(५)

प्रेम मन धारि नित पहर परभात रै,

विविध जसवास गुण रास वादौ ।

अमल अखीयात विख्यात एणै इला,

दीपतौ देव जग मांहि दादौ ॥१॥

घाट रिपु थाट जलवाट ओघट घणै,

हणै सहु आपना हुइ हजूरै ।

सूरि सिरदार घै सकल सुख सेवकां,

पूर नित कुशल जिनकुशल पूरै ॥२॥

अधिक घण म्हाड उम्हाड अवंगाहता,

लसकरा तसकरा पड्या लारै ।

धींग गच्छराज रो ध्यान मन ध्यावता,

विकट संकट सहु निकट वारै ॥३॥

बडकती भाजती वृडती वेडीया,

पार उतार जिण विरुद पायौ ।

तूस सेवक तणा दूख भाजै तुरत,

धरमसी कुशल गुरु नाम ध्यायौ ॥४॥

सर्वैया

(६)

राजें थु भ ठौर ठौर ऐसो देव नाहीं और,
 दादो दादो नाम तें जगत यश गायो है ।
 आपणें ही भाव आय पूजै लख लोक पाय,
 प्यासनि कू राण माभि पानी आन पायो है ॥
 वाट घाट शत्रु थाट हाट पुर पाटण में,
 देह गेह नेह सौं कुशल वरतायो है ।
 धर्मसीह ध्यान धरें सेवका कुशल करै,
 साचो श्री कुशल गुरु नाम यो कहायो है ॥१॥

(७) कुशल सूरि छप्पय

सरब शोभ गुण सकल, साधुपति आपै साता ।
 सिरवंता सिरि सिखर, सील शुभ सीख विख्याता ॥
 सुद्ध चित्त सुखकार, सूरि जिनकुशलसूर दुति ।
 सेवहि सेवक कोडि, सैव मत वात शैल पति ॥
 सोभंति अधिक सोभा जगति, सौम्यरूप सौजन्यवर ।
 संघ नै सुख संपति दीयण, सदा सेव धर्मसी सधर ॥

(८)

श्री जिन कुशल सूरिश्वरु गावो गच्छराया ।
 शुद्ध चित्त नित समरता सुख होय सवाया । श्री १॥

सेवै कुण सुर अवर कु, परिहरि प्रभु पाया ।

आलिगे कुण आक कुं, छंडि सुरतरु छाया ॥२॥

मन शुद्धे जपतां मिले, मन वंछित माया ।

तेणि धर्मवर्द्धन धर्यो, गुण जिण ही गाया ॥३॥

(६)

कुशल करो जिन कुशल जी दुख दूर निवारौ ।

द्यौ मन वंछित दिन दिनै, विनती अवधारौ ॥कु० १॥

तो समरथ साहिव छतें, दास दीन तुम्हारौ ।

शोभा न वर्धै स्यामीया, एह वात विचारौ ॥२॥

भेट्या में हिव तुम्ह भणी, थयौ सफल जमारौ ।

धर्मवर्द्धन कहै माहरा, मन वंछित सारो ॥३॥

श्रीजिनचन्द्रसूरि गीत

जाति—सपस्वरो

आज खरै उदै मुदं सारा गच्छा माहि

साहि पातिसाहि मे सराह वाह वाह ।

जाग्यौ जैन चंद सागी, सोभागी रागी जैन धर्म,

वैरागी पुण्याइ जागी अधिकै उछाह ॥१॥

रूडा रूडा उपदेश दे दे वड़ा वड़ा भूप

कीधा, भ्रम्म रूप, खड़ा तडा सैवै पाय ।

वाणि रा किलोल लोल वखाणै इलौल आँणि,
 सूत्र रा अरत्थ सो गरत्थ घै वताय ॥२॥

सूरि मंत्र साधना सवाइ पाइ अधिकाइ
 आसति अगम्म आइ साची हाथ सिद्धि ।
 साचो जत्त तत्तसार औहटी विषमवार,
 वार तीन च्यार पाई पारिखा प्रसिद्ध ॥३॥

उजाडै पहाडे भाडे आया चोर धाडै आडै,
 राख्यौ साथ ओट जाणे कीध लोह कोट ।
 जास वयण सिद्धि योग सेवका रा रोग सोग,
 वायै ज्युं वातूल तेम जायै चढी चोट ॥४॥

साधी पंचनद जेण लाधी सिद्ध जैनचंद्र,
 जैनसिंघ जैनराज रतन अबीह ।
 ओपै एण पाट धम्मवाट साधा गज्ज घाट,
 पूज मोटे पुत्र धन्न धन्न धर्मसीह ॥५॥

नं०—२ जाति कडखो

पुण्य परकास परभात प्रगट्यौ प्रगट,
 भेटता भरम भर तिमिर भाजै ।
 देखि खरतर सुगुरु एम दाखै दुनी,
 रवि तणै तेज तुम्ह भाल राजै ॥१॥

अधिक ऊच्छाह सोइ दिवस उगो इला,
 दुरित अधार सहू दूरि डोलै ।

(५) रसाउला

चावौ गच्छ चउरासिये, भट्टारक वडभाग ।

गणधर श्री जिणचद गुरु, एओ सोभ अथाग ॥१॥

ए अत्थगारा, पूजरै पगारा,

यात्र बीजगारा, आवै उमंगरा ।

साधरै संगरा, अग उपागारा,

सूत्र सुचंगरा, भेद अभङ्ग रा ।

गंग तरंग रा, राग नै रगारा,

पापनै पुण्य रा, दाखवै दिन्न रा ।

संसै आसन्त रा, मेटियै मन रा,

गम्म आगम्म रा, ज्ञान रै गम्म रा ।

आखवै तत्त आगम्म रा,

धोरी श्री जिन धम्म रा ।

पूजतां पाय गुरु प्रम्म रा,

जायै पाप जनम्म रा ॥१॥

(६) सवैया

वाकुं दूजै पछि दूज वंदत है कोऊ एक,

याकौ नित ही नरिंद वदत अशेष हैं ।

चाकी तो निशा की वेर, अथिर सी जोति होत,

याकै ज्ञान कौ उदोत भानु सौ सुपेख हैं ।

वाकै सब सोल कला, सो भी दिन रैन छीन,
 याकै तो छतीस दून, दून रूप रेख हे ।
 धर्मसी सुबुद्धि धार गुणसौं विचार यार,
 चंदसु तो जिणचढ केते ही विशेष हैं ॥१॥
 जैसे राजहसनिसौं राजै मानसर राज,
 जैसे विंघ भूधर विराजै गजराज सौं ।
 जैसे सुर राजि सुं जु सोभ सुरराज साजै,
 जैसे सिंधुराज राजै सिन्धुनि के साज सौं ॥
 जैसे तार हरनि के वृन्द सौं विराजै चंद,
 जैसे गिरराज राजै नद वन राज सौं
 जैसे धर्मशील सौं विराजै गच्छराज तैसे,
 राजै जिनचढसूरि सघ के समाज सौं ॥२॥

तैसो ही अनूप रूप भावै आइ वदै भूप,
 चातुरी वचन कला पूरी पडिताइ है ।
 तैसो ही अडिग ध्यान आगम अगम ज्ञान,
 साचो मूरि मंत्र को विधान सुखदाइ है ॥
 तैसी है अमल बुद्धि, साची है वचन सिद्धि,
 तैसों गुण जान तैसी सोभा हू सवाइ है ।
 और ठौर गुण एक तो मे सब ही विवेक,
 ऐसी जिनचन्दसूरि तेरी अधिकाइ है ॥३॥

जिणचंद यतीश्वर वदन को,
 नर नारि नरेसर आवत है ।

सुकवि गच्छराज नैं निरखि उपम सजै,
तरणि जिम ताहरौ वखत तोलै ॥२॥

धर्म शोभा सकल तेज वरते धरा,
हारि नाठौ तमस हेक हिलकै ।

सूरि जिणचंद संपेखि सगला कहै,
किरणधर जेम तुम्ह भाग किलकै ॥३॥

प्रगट परताप जिनरतन रो पाटवी,
सकल सुख दैण कवि कहै धर्मसीह ।

भालियल तेज किरणांल जिम भालता,
दलिद मेटै करै दौलति दीह ॥४॥

नं०—३

दे दैकार करणें धर्म दाखै,
अधिकौ आणिद दैं अधिकार ।

नाम न ल्यै जिणचद न ना रो,
नाठौ तिण रूसे नाकार ॥१॥

मुवे सात प्रियां रे साह्यो,
गिणि पूरवलौ वस गिनौ ।

पूज तठै पिण धरता पगला,
न सकै रहि तिण ठाम न नौ ॥२॥

राजै नगर जिणें गच्छराजा,
दे दैकार घणा तिण देस ।

न नौ कोइ मुखैं न लगावै,
परहौं नासि गयौ परदेस ॥३॥

धरि हिव अरज रतन पाटोधर,
साच कहै धर्मसीह सही ।

माग्यौ देसि आफरती मुंनै,
ना कारौ तुम्ह पासि नहीं ॥४॥

न० (४)

चढ जिम सूरि जिणचंद्र चढती कला,
सोम आकार सुखकार सोहै ।

अधिक आणंद उद्योतकारी इला,
महीयले मानवा मन्न मोहै ॥१॥

आय नर राय जसु पाय लागै अडिग,
देखता दलिद्र दुख जाय दूरै ।

प्रगट जसु पुहवी परताप जागै प्रबल,
पवर गच्छराज सुखसाज पूरै ॥२॥

धरत धर्मवाट मुनि थाट सोभा धरा,
रतन रै पाट महगाट राजै ।

जुगपरधान जंगम्म तीरथ जगै,
दौलति दिह चढतै वाजै ॥३॥

सकल गुण धार सिरदार सोभा सधर,
सबल सौभाग संसार सारै ।

धरमवर्द्धन धरै नाम धन धन रा,
अभिनवौ कल्पतरु एण आरै ॥४॥

वर मादल ताल कंसाल वजावत,
 के गुरुके गुण गावत है ॥
 बहु मोतीय तन्दुल थाल भरे,
 नित सूहव नारि वधावत है ।
 धर्मसीड कहै गच्छराज कुं वंदत,
 पुण्य उदैं सुख पावत है ॥४॥

(७) सर्वौषा

छाजति छवि चंदा मुख सुख कंदा
 अमल अमंदा अरविंदा ।
 भाजति भय भुंदा शोभ सुरिंदा,
 फेटत फंदा दुख दंदा ॥
 द्रुति जाणि दिणंदा, सैवहि वृंदा,
 हाजर वंदा राजिन्दा ।
 कहै धर्म कविंदा अति आणंदा,
 जगति जर्तिंदा जिणचंदा ॥१॥
 शोभत सुखदानी श्री गुरुवाणी,
 सकल सुहानी सुनि प्राणी ।
 कलि कमल कृपाणी, सिव सहिनाणी,
 गुणिजन जाणी हित आणी ॥
 बुधजनहि वखाणी ग्रन्थ लिखाणी,
 रस कर सानी दुख हानी ।
 धर्मसीह सुजानी पुण्यप्रधानी,
 कुशल कल्याणी महिमानी ॥२॥

(८) गहु ली

धन धन दिन आज नो लेखै, वलि हरख्या सघ विशेषै ।
अंग उलट धरिय अशेषै ॥ १ ॥

पाटोधर पाटीयै पधारौ, अम्हची विनती अवधारौ ॥आ०॥
चौपड़ा गणधर कुलचन्द, सहसकरण सुपीयारदे नंद ।
खरतर गच्छ अधिक आणद ॥ २ ॥ पाटो० ॥

सद्गुरु जिनरतनसूरिद, पाट थप्यौ अभिनव इंद ।
चढती कला श्री जिणचद ॥ ३ ॥ पाटो० ॥

हियडौ नयणा अति हषे, दुख जाय परा सहु दरसै ।
तुम्ह देखण नै सहु तरसै ॥ ४ ॥ पाटो० ॥

सुणता उपदेश तुम्हारौ, अति हरख्यौ चित्त अम्हारौ ।
तुम्ह दरसण मोहनगारौ ॥ ५ ॥ पाटो० ॥

पूज वदन नी मन रलीया, सहु कोइ श्रावक मिलीया ।
दरसण दीठा दुख टलीया ॥ ६ ॥ पाटौ० ॥

पूज मूरति मोहन वेल, वलि वाणि सुधारस रेल ॥
पूज चालै गजगति गेल ॥ ७ ॥ पाटो० ॥

मिल मिल सब सूहव आवें, गीत मगल गहुंली गावै ।
वलि तंदुल मोती वधावै ॥ ८ ॥ पाटो० ॥

पूज प्रतपो अधिक पुन्याइ, नित विजयहरष सुखदाइ ।
धर्मसी कहै शोभ सवाई ॥ ९ ॥ पाटो० ॥

(६) गुरु गीत

राजें खरतरगच्छ राजवी, नित नित हो नवल नूर । रा० ।
 जिणचंदसूरीसर जग जयौ, उलसत हो पुण्य नै अकूर ॥१॥
 विद्याधर बड बखतावरु, महियलमें हो महिमा महिमाय ।
 राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जसु पाय ॥रा०२
 सहु कु मुखदायक मुख सोहै, देखता हो दुख जायै दूर ॥ रा० ॥
 जसू मूरति अति सोहामणी, सोहै सोहै हो श्रीजिनचंदसूर ॥रा०३
 चावा जगि गणधर चोपड़ा,
 वरदाइ हो जसु वंश विख्यात ॥रा०॥
 सुत सोहै सहसासाह नौ,
 मतिवन्ती हो सुपियारदे मात ॥रा० ४॥
 श्रीजिनरतनसूरीसरु,
 जोग जाणी हो जसु दीधौ पाट ।
 जसु जस जागै इण जगत मे,
 गावड गावड हो गीता रा गहगाट ॥५॥
 गुरू छजै छतीसे गुणै,
 भट्टारक हो जगि मोटै भाग ।
 शुद्ध क्रिया नित साचवै,
 सगला मे हो जेहनो सोभाग ॥ ६ ॥
 श्रीयुगप्रधान यतीश्वरु,
 देखता हो हुवै सफलौ दीह ।
 नित विजयहरप वंछित दीयै,
 धरि भावै हो गावै धरमसीह ॥७॥

(१०) जिनचंदसूरि गीत

साधु आचार सुविचार सखरी सुमति,

छतीसे गुणे करि जागीर्यौ वडी छति ।

साधियौ सूर मत्र ग्रही देवा सकति,

साधुपति साधुपति साधुपति साधुपति ॥१॥

धींग धोरी वडै रतन रे पाट धुर,

पाड धारै तिकै गिणा धन देसपुर ।

सुदृष्टि जिणरी हुवै जाणि परसन्न सुर,

चढ गुरु चढ गुरु चढ गुरु चढ गुरु ॥ २ ॥

तत्त सिद्धान्त रा तेम व्याकरण तरक,

गात्र जिण रो सदा ज्ञान सुधै गरक ।

उदै गच्छ खरतरै आज ऊगौ अरक,

भट्टारक भट्टारक भट्टारक भट्टारक ॥ ३ ॥

सूरि जिणचद श्रीपूज शोभा सधर,

बडा जिनदत्त जिणकुशल जसु दियै धर ।

श्री धर्मसी कहै सुजस सगले सखर,

जतीसर जतीसर जतीसर ॥ ४ ॥

न० ११

थिया केड दिवस मन कोड करता यकां,

पुण्य करि आज अभिलाप पूगौ ।

पूज जिणचंद रा चरण युग पेखता,

आज सूरज सही भलौ ऊगौ ॥१॥

धन्न धरती जठे पूज पगला धरै,
 सहू इम साभरै देस सारै ।
 इपि गच्छराज धन आज हुआ अम्हे,
 धन्न वलि तरणि जग किरण धारै ॥२॥
 वाणि वाखाण री जाण अमृत वदै,
 प्रेम मन धारि परवीण पीवें ।
 गोत्र गणधार गुणधार भेट्यो गुहिर,
 दीपियौ भलौ रवि जगत दीवें ॥३॥
 रतन पटधार वडवार वरतो रिधू,
 विधू धरि मेर ध्रु जाव वरतें ।
 धरो चिर आउ गच्छराउ धर्मशील धर,
 पुहवी किरणाल जा प्रगट परतें ॥४॥

जिन चंद सूरि दोहा

वारु सरव विवेक, इतरौ जाणौ आपथी ।
 अम्ह नैं दीजे एक, रिनु परिमाणैं रतन उत्त ॥ १ ॥

(१) जिनसुखसूरिपद महोत्सव

ढाल—चरण करण धर मुनिवर

उद्वय थयो धन धन आज नो, प्रगत्यौ पुण्य अंकूरो जी ।
 वद्या आचारिज चढती कला, नामै जिनसुखसूरोजी ॥१॥
 सूरत सहरै जिणचदसूरि जी, आप्यौ आपणो पाटो जी ।
 महोत्सव गाजै वाजै माडिया, गीतां रां सहगाटौ जी ॥२॥

पारिख साह भला पुण्यातमा, सामीदास सूरदासो जी ।
 पदठवणो कीधी मन प्रेमसुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ।३।
 रूढी विधि कीधा रातीजुगा, साहमीवच्छल सारो जी ।
 पटकूले कीधी पहिरावणी, सहु संघने श्रीकारो जी ॥४॥
 संवन् सतरै वासठ समै, उच्छव बहु आसाढो जी ।
 सुदि इग्यारस पद महोत्सव सज्यौ, चंद्रकला जस चाढो जी ।५।
 साहिलेचा व्हुराजगि सलहीयै, पींचा नख परसंसो जी ।
 मात पिता रूपचंद्र सरूपदे, तेहने कुल अवतंसोजी ॥ ६ ॥
 प्रतपो एह घणा जुग गच्छपति, श्रीजिनसुखसूरिदो जी ।
 श्रीधर्मसी कहै श्रीसंघने सदा, अधिक करौ आणंदो जी ॥ ७ ॥

(२) कवित

सकल गुण जाण वाखाण मुख सरसती,
 कलाधर अवर नर मीढ केहौ ।
 खरें आचार सुविचार जस खरतरे,
 जैनसुखसूरि जिनचंद्र जेहौ ॥ १ ॥
 सुगुरू निज सूरिमंत्र हाथसु सुंपीयौ,
 दीपीयौ दशो दिश सुजस दावौ ।
 कमल चढ़ती कला देखि सहु को कहै,
 चंद्र पाट दूसरौ चंद्र चावौ ॥ २ ॥
 अगम आगम तरक शास्त्र जाणइ अर्थ,
 छात्रधर छहुं छक गुणे छाजइ ।

तरंग रिखराज जेहाज जिम तारवा,

रतनहर राजहर रीति राजड ॥ ३ ॥

वडी छति मति उगति जुगति रहणी वडी,

महिपति वड वडा वयण मोहे ।

भलें धर्मशील सौभाग्य ल्यें भल भला,

सूरिवर सिहर सुखसूरि सोहे ॥ ४ ॥

(३) जिनसुखसूरि छप्पय

सकल साख सिद्धात भेद विधि विधि रा भाखैं ।

अवल धरम उपदेश, दुरस दृष्टाते दाखैं ॥

वडि पढुंछि व्याकरण तास समवड कुण तोले ।

जोडै तरक जुगति बहुत शुद्ध संस्कृत बोले ॥

खरतरे सदा दीसैं खरी, प्रसिद्धि भली पुन्य पूर री ।

इकवीस चौक गच्छ मे अधिक, सोभा जिनसुखसूरि री । १।

(४) जिनसुखसूरि अमृतध्वनि

खरतरगच्छ जाणे खलक, सयल गुणे सुसमृद्ध ।

शोभा जिनसुखसूरि री, सहु विधि धरा प्रसिद्ध ।

चाल—धरा प्रसिद्ध ढज जस वद्ध,

ध्यान लवद्ध द्विपणा सुद्ध धीमा बुद्धि,

धुनि धन रुद्ध ढूण विरुद्ध,

द्वेषन धंध द्वीरज सिद्ध द्वोरी सुद्ध,

द्वौत विरुद्ध द्वंसि कुबुद्धि,

द्ववत परिद्ध द्वारण निद्ध द्वन गुरु बुद्ध,

द्वूर पद दिद्ध द्वरि हथ सिद्ध,
 द्वी गुण गृद्ध द्वरि ततछद्ध द्वाम सुलद्ध,
 द्वरणी मद्ध द्वाक प्रसिद्ध,
 धूम सी किद्ध ध्वनि अमृत सुविशेष ॥ १ ॥ खरतर०

—:०:—

(५) जिनसुखसूरि चद्रावला

सहु धरमा सिर सैहरौ रे, श्री जिन धरम सुजाण,
 खरतर गच्छ सोभा खरी रे, भट्टारकीया कुलभाण ।
 कुलभाण रे जाँण वारू किरिया धर्म वखाण,
 पूज विराजइ पुण्य प्रमाण, जिनसुखसूरि अखडित आण ॥१॥
 श्री गच्छनायकजी रे, प्रतपौ बहु जुग पाट,
 खाटउ जस खरौजी, वरतौ सुधरम वाट । दाटौ दुख परौजी २
 साहलेचा वदुरा सही रे, पुहवी गोत्र प्रसिद्ध ।
 रतनादे रूपचद नउ रे, सुत ए गुणे समृद्धरे ।
 सुत ए गुणे समृद्ध सार, आणी मन वइराग अपार
 संयम जिण लीधौ सुखकार, अधिकै भाव भलइ आचार ॥ ३॥
 श्रीजिणचंदसूरिद जी रे, सै हथ दीधौ पाट ।
 महोछव सूरैत मंडिया रे, गीता रा गहगाट ।
 गीता रा गहगाट रे खास, दीपइ पारिख सामीदास ।
 पठठवणो कीधौ परकास, विलस्या वित्त लीधौ जसवास ॥४॥
 महिमा मोटी महियलै रे, हुआ हरष उच्छाह ।
 वचन कला वखाण नी रे, वाखाणै सहु वाह वाह ।

वाखाणैँ सहु वाह वाह रे लेख, आगम भणिया शास्त्र अशेष,
श्री जिन धर्मशील सुविशेष, राजैँ श्रीपूज चढती रेख, जी
गच्छना० ॥ ५ ॥

(६) सवैया

गुरू जिणचंद सूरि आप हाथ पाट दीनो,
कीनो है महोछव पुर सूरत सनूर जू ।
विलस्यौ वित्त वाह वाह चौरासी गच्छे सराह,
देखैँ तें विशेषैँ मुख होत दुख दूर जू ।
उदैँ को अंकुर किधुं पुण्य ही को पूर किधुं,
सूरिमत्र साधना की सकृति हजूर जू ।
इंद्रभूति अवतारी साचो धर्मशील धारी,
सवही कु सुखकारी जैनसुखमूर जू ॥ १ ॥

(७) द्रुपद राग—रामकली (रामगिरी)

जिनसुखसूरि सुज्ञानी, सेवो भवि जिनसुखसूरि सुज्ञानी ।
सब गुण लायक श्री गच्छनायक, सुखदायक सुविधानी ॥ १ ॥
चवद विद्या सहु विधि चतुराई, प्रकृति भली पहिचानी ।
श्री जिनचंद सुगुरू पद सुंज्यौ, वरषत अमृत वानी ॥ २ ॥ सेवो ॥
वखत वडैँ गुरू तखत विराजत, महिमा सब जगि मानी ।
शुद्ध क्रिया धर्मशील सु मारग, सव ही वात सयानी ॥ ३ ॥ से ॥

(८) द्रुपद—धन्याश्री

गावौँ गावौँ री गच्छनायक के गुण गावौँ ।

श्री खरतर गच्छ अधिकी सोभा, चौरासी गच्छ चावोरी । ग०१-

धन धन श्री जिनचंद्र पटोघर, दीपै चढ़तो दावौ ।
 सकल कला जिनसुखसूरीसर, पग वद्या सुख पावौ । गच्छ ०।२।
 वाणी सूत्र सिद्धान्त वखाणे, विधि सु वंदि वधावौ ।
 ए गुरु श्री 'धर्मशील' आचारी, सहु में सुजस सुहावौ गच्छ ०।३।

(६) भास गीत गहु ली

ढाल—मोरो मन मोह्यौ पूज वादण सौँ
 भलो दिण उगौ आज आणंद सौँ, गुरु वाद्या लाधो ज्ञान ॥
 सुणिस्या उपदेस सुहामणा, धरिस्या साचउ धर्म ध्यान । भलो ०१।
 नित करस्या समकित निरमलौ, निरमल जिम गगा नीर । भलो ०
 तजस्यां संगति निगुणा तणी, सुगणा सु करिस्यां सीर । भलो ०२।
 मिल आवौ सहिया मलपती, सुन्दर करि शुभ सिणगार । भलो ०
 गुण गावौ श्री गुरुदेव ना, औ सफल करौ अवतार । भलो ०
 भगवत गणधरै भाखिया, सहु सूत्र सुणावड सार । भलो ०
 जिन थी शुभ मारग जाणियै, एहवौ जे करै उपगार । भलो ०।४।
 जयणा करियै जीवा तणी, जतने भरिये पग जोई । भलो ०
 वडका रौ वलि कीजै विनय, मन कपट न करिस्यौ कोई ॥५॥
 खाटै जस अधिकउ खरतरा, जिण शासन शोभ सुजाण । भलो ०
 करणी सखरी पुन्य री करै, भला श्रावक कुल रा भाण । भ ०।६॥
 वरतै दिन दिन हि वधामणा, सहु सुजस करै संसार । भलो ०
 धर्म हेत उपाध्या धरमसी, श्री सघ सदा सुखकार । भ ० ॥७॥

गुरु गहुंली

(१०) टाल—वेत्रशी आगै थो कहै । १०

सिणगार सार वणाइ सुन्दर, चुंनडी ओढी सुचंग ।
 घर हाथ थाल विमाल ले, आवी अति उद्धरंग ।
 सहु मिली सहिया गुण गावौ गहुंली गीत ॥ १ ॥
 सुगुरु वधावौ सु रीति, पुन्य धरि बहु प्रीति ॥ सहु० ॥२॥
 फस्तुरि केशर कुंकमा, करि रोल भरीय कचोल ।
 मन रंग माडै माडणा, अधिकै भाव डलोल ॥ सहु ॥३॥
 चौकुण चिहु दिशि च्यार चौकी, चौकोर फूलडी चंग ।
 कलीए हसता कमल ड्युं, सोहै अति ही सुरंग ॥ सहु० ॥४॥
 साथीयो सुन्दर विचै सोहै, सोहै सगला मन्न ।
 संसार इम सफलौ करै, धन अम्मकादे धन्न ॥ सहु० ॥५॥
 चोखा अंखडित लेइ चोखा. माहि मोती मेलि ।
 सुहव वधावै सुगुरु नै, बधती मोहनवेलि ॥ सहु० ॥६॥
 नमती करंती निमछना, लुलि लुलि लागै पाय ।
 सुख विजयहरप लहै सदा, धरमसी कहै धरि भाव ॥ सहु० ॥७॥

—:❀:—

(११) सुगुरु व्याख्यानगीत

टाल—धर्म जागरीया नी०

सरस वखाण सुगुरु तणो, मन भवियण ना मोहै रे ।
 सुणिवानै तरसै सहु, सकल गुणै करि सोहै रे ॥ सरस० ॥ ए ।
 राग सिधत तणै रसै, भेद भलीपर भाखै रे ।
 मिसरी दूध मिल्या थका, चतुर भली पर चाखै रे ॥ सरस० ॥ २ ॥

प्रकृति जुदी पुण्य पाप नी, बेतालीस वयासी रे ।
 सुगुरु कहै समझाय नै, भगवते जे भासी रे ॥ सरस० ॥३॥
 दस दृष्टान्ते दोहिलौ, श्रावक नौ कुल सारू रे ।
 संगति बलि सदगुरू तणी, पामी पुण्य प्रकारू रे ॥ सरस० ॥४॥
 धरम नरम मन जे धरै, भरम करम' ना भाजै रे ।
 चरम जिणंद् कहैं ते चढै, परम मुगति गढ पाजै रे ॥ सरस० ॥५॥
 वाणि विविध विचार सु, प्राणी नै परकासै रे ।
 जाणी नै करिस्यै जिकै, वरस्यै मुगति विलासै रे ॥ सरस० ॥६॥
 इण भवि सुख अधिका लहै, विजयहरप जसवासो रे ।
 धरम करौ धर्मसी कहैं, इण उपदेश उलासो रे ॥ सरस० ॥७॥

(१२) छप्पय—क का बारहखडी पर

करण अधिक कल्याण, काज साधन शुभ कामित ।
 किलक भाल किरणाल, कीध जिण निर्मल कीरत ॥
 कुल दीपक बलि कुशल, क्रूर नहिं मन द्वा क्रूरम ।
 केवल धर्म केलचण, कैहणिया कैतल भ्रम ॥
 कोश गुण रतन को इण समौ, कौटिक गण कौमुदीयवर ।
 कज सम मुख कंठ कोकिला, कःहु जिनसुख जन सुखकर ।

श्री जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल—आषाढै भैरूँ आवै ए देसी।

‘जिनभक्ति’ जतीसर वंदौ, चढती कला दीपति चंदौ रे । जि० ।
 खरतर गच्छ नायक राजै, छत्रीस गुणे करि छाजै रे । १। जि० ।
 श्री ‘जिनसुख सूरि’ सनाथै, दीधौ पद अपणें हाथे रे । जि० ।
 श्री ‘रिणीपुर’ संघ सवायौ, महोछव कीधौ मन भायौ रे । २।
 ‘सेठिया’ वंसै सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे । जि० ।
 ‘हरिचंद्र’ पिता धर्मधीरौ, ‘हरिसुखदे’ उदरै हीरौ रे । ३। जि० ।
 लघुवय जिण चारित लीधौ, सद्गुरु नै सुप्रसन्न कीधौ रे । जि० ।
 विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुण्ये गुरु पदवी पाई रे । ४। जि० ।
 प्रगट्यौ जश देस प्रदेसै, वरते आज्ञा सुविसेसै रे । जि० ।
 वाटै सहु देस वधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई । ५। जि० ।
 संवत ‘सतरै उगुण्यासी, जेष्ठ वदि त्रीज’ पुण्य प्रकासी रे । जि० ।
 सहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहै ‘धर्मसी’ उपाध्या रे । ६।

॥ श्रावक करणी ॥

ढाल—हिवराणी पदमावती

श्री जिन शाशन सेहरौ, वहु जिनवीर ।

देशविरति धर्म उपदिस्थौ, धरे श्रावक धीर ॥१॥

श्रावक नी करणी सुणौ, सद्गुरु कहै सार ।

जे आदरता जीवडौ, पामै भव पार ॥ २ श्रा. ॥

पाछली रात प्रभात रौ, तजि ऊंघ अज्ञान ।

वे घड़ी एकात वैसि नै, ध्यावे धर्म ध्यान ॥३॥ श्रा ॥

उतम कुल हुं उपनौ, पूरवलैं पुन्न ।

जतन करी जिन धर्म नै, राखैं जेम रतन्न ॥४॥ श्रा. ॥

धुरि समकित साचौ धरै, नित गुणै नवकार ।

आदर पर उपकार सुं, वरतैं विवहार ॥५॥ श्रा. ॥

करि न सकै तोही करै, मनोरथ मन माहि ।

वृत वारै धारै वली, चारित नी चाहि ॥६॥ श्रा

देव जुहारी दिन उदय, गुरु वदि सुज्ञान ।

सांभलि उपदेश सूत्रनौ, गिणे धन दिन ज्ञान ॥७॥ श्रा. ॥

वादि कहै देज्यो वलि, भात पाणी लाभ ।

भोजन कीजै भाव सौं, पात्रा पड़िलाभ ॥ श्रा. ॥८॥

पचचखाण पूगे पारता, कहे तीन नौकार ।

घर सारु थोड़ौ घणौ, करे पुण्य प्रकार ॥ श्रा. ॥९॥

पाणी छाणे प्रेम सुं, दिन मे दोई वार ।

जीवाणी पण जतन सु, राखैं सुविचार ॥ श्रा. ॥१०॥

पीसण खाडण लीपणै, राधण रधाण ।

छै कूटो छःकायनौ, जयणा करे जाण ॥ श्रा. ॥११॥

चक्की चूलहै चद्रूया, तिम घृत नै तेल ।

ऊघाड़ा राख्या ईया, वधै पापनी वेल ॥ श्रा. ॥१२॥

वावीस अभक्ष जे वोलिया, तजें परहा तेह ।

चवदे नेम चितारता, इण लाभ अछेह ॥ श्रा. ॥१३॥

साहसीवच्छल साचवे, साधुनी करे सेव ।

आखड़ी वृत पचखाण री, टाले नहीं टेव ॥ श्रा. ॥१४॥
कूडा कथन रखे करौ, सुंस कूड़ी साख ।

थापण मोसौ मत करे, रिद्धि पारकी राख ॥ श्रा. ॥१५॥
साव्रू साजी सहित ना, विप ना व्यापार ।

पाप विणज टाले परां, जिम होइ जैवार ॥ श्रा. ॥१६॥
व्यापार शुद्ध करे वली, निम होइ प्रतीति ।

पाप किया ते पड़िक्मे, अतिचार अनीति ॥ श्रा. ॥१७॥
पांच तिथे टाले परो, अधिकौ आरम्भ ।

परहरे निन्दा पारकी, दिल न धरे दम्भ ॥ श्रा. ॥१८॥
घोता री परणी प्रिया, राखे तिण सुं रंग ।

शील धरे न करे सही, पर स्त्री प्रसग ॥ श्रा ॥१९॥
जूवा प्रमुख कह्याजिके, साते कुव्यसन्न ।

सेवै न कोई सर्वथा, धरमी ते धन्न ॥ श्रा. ॥ २० ॥
पोसा परवे पाखिए, करे मन नै कोडि ।

गुण गाए गुरुदेव ना, हरखे होडा होडि ॥ श्रा. ॥२१॥
सूडने दाणवइ गास जो, खडौ खेत्र अखंड ।

उपदेश न दिये एहवा, दोप अनरथ ढड ॥ श्रा ॥२२॥
रात्रिभोजन नादरे, इण दोप अपार ।

सेजै रात्रिं सूवता, वलि करं चौविहार ॥ श्रा. ॥२३॥
जो सूंता कोइ जीवनै, जोखो हुय जाय ।

तौ पचखाण सहु तणौ, करे मन वच काय ॥ श्रा. ॥२४॥
सहु श्रावक नित साचव, एतो कुल आचार ।

धन ते कहै श्री धर्मशी, सुख लहै श्रीकार ॥ श्रा. ॥२५॥

शास्त्रीय विचार स्तवन संग्रह

४५ आगम सख्या गर्भित वीर जिन स्तवनम्

देवा ना पिण जेह छै देव, सहु देविद करै जसु सेव ।
ते नमुं श्रीदेवाधिज देव, वचन सुणौ तेहना नितमेव ॥१॥
द्यै सहु नै सुख ए जगदीस, वाणी तेहनी विश्वावीम ।
प्ररूप्या आगम पेतालीस, सख्या नाम कहुं सुजगीस ॥२॥
श्री आचाराग पहिलौ अंग, सहस अढी ए सूत्र सुचंग ।
सुयगडाग वीजौ श्रीकार (सुविचार), सख्या इकवीससे सुविचार ३
तीजौ ठाणा अग सुपतिठु, सूत्रेसइत्रीससै सतसट्टि ।
चौथो समवायाग सुजाण, सोलेसै सतसठ श्लोक प्रमाण ॥४॥
पचम भगवती सूत्र सुधन्न, पनर सहस सतसैवावन्न ।
जाता धर्म कथा अग छट्ट, हिंवाणा पच हजारे दिठु ॥५॥
सत्तम उपवासग दसासार, बोल्या अठसै ऊपरि बार ।
अट्टम अतगड सूत्र कहेउ, श्लोक स ख्या आठसै ने नेऊ ॥६॥
नवमौ अग अणुत्तर उववाय, इकसौ बाणु मानकहाय ।
प्रश्नव्याकरण दसमौ परकास, एक सहस दोयसै प चास ॥७॥
सूत्र विपाके इग्यारम अग श्लोक वारसै सोलै सग ।
अंग इग्यार सूत्र मिले थाय, पैत्रीस सहस दोइ सै प्राय ॥८॥

ढाल —सफल सप्तार नी ॥

वार उपागमे प्रथम उववाइया, पनरसइ सूत्र परिमाण पिणपाडया।
रायपसे णिया वीय उपाग में, दोइहजार अठहोत्तर मन गमें।६।
त्रीय उपाग जीवाभिगम जाणियै, च्यार हजार सौ

सात परिमाणियै ।

चउथ श्रीपनवणा उवं गरकासियै, सात हजार सयसात

सत्यासियै ॥१०॥

पाचमौ जंवूपन्नति सुविसालए, चउसहस एकसौ वलिय छैंतालए।

चंदपन्नतिया छट्ट वावीस सैं, सत्तम सूरपन्नति संख्या इसौ।११।

अट्टम नाम निरयावली कप्पिया, नवम उवंग इमकप्पवडसिया।

पुफिया दशम इग्यार पुफचूलीया, एम वन्नीदशा वारम

अनुकूलिया ॥१२॥

अट्टम आदिथी उवंग पाचे मिली, शतक इग्यार संख्या इसी

साभली ।

वार उपांगनो मेल भेलौ वसै, सहस पच्चीस नैं वलि

सया सातसैं ॥ १३ ॥

मूल सूत्र सौ सवा तेण मिलतौ कह्यौ, विशेषआवश्यक सहस

पाचे लह्यौ ।

दूसरौ मूलसूत्र सातसैं दाखियै, दशवियकालिक भव्यजन

भाखियै ॥ १४ ॥

पाखियसूत्र नैं मूलसूत्र तीसरौ, तीनसैंसाठि संख्या

मता वीसरौ ।

उत्तराध्ययन दौइ सहस सुविचार ए, मूल सूत्रसहु सवाआठ

हजारए ॥ १५ ॥

सूत्र नंदी सरस जाणियै सातसै, अनुयोगद्वार उगणीससौ

मन वसै ।

एतलै ए थया सूत्र गुणत्रीसए, जे वचै नित्य व्याख्यान

सुजगीसए ॥ १६ ॥

ढाल—तदुल राशि विमलगिरि थापी

छ छेदे महानिसीथ निशीथ, पाच सहस गिणिजै इवीथ ।

वृहत्कल्प वीजौ वाखाण, च्यारसै चिहुतर संख्या जाण ॥१७॥

व्यवहार सूत्र छ सै सुविचार, दशाश्रुत स्कंध शत अद्वार ।

पचकल्प ते पचम छेद, सवा इग्यारसै संख्या वेद ॥१८॥

छठौ जीतकल्प इण नाम, इकसौ पाच छ कह्या आम ।

दसे पइन्ना हिव इम दाखै, सूत्ररुची ते हीये राखै ॥१९॥

चउसठि गाह तणो चौसरणौ, धरमी जन नै मनमे धरणौ ।

वीजौ आउर पंचखाण, चउरासी गाथा परिमाण ॥२०॥

तीजौ महा पचखाण कहीस, गाथा इकसौ नइ चौत्रीस ।

चौथौ भक्त परिण्णा चाह, इकसौ नै इकहोत्तर गाह ॥२१॥

पंचम पयन्तो तंदुलवेयाली, च्यारसै गाह भली तिहा भाली ।

छट्टो चन्दाविज्जा गाह, इकसौने छिहुतरि अवगाह ॥२२॥

गणविज्जा ए सत्तम गणियै, भाव भलै सौ गाथा भणियै ।

मरणसमाहि अठ्ठम पयन्त, गाहा जिहा छस्तै छप्पन्त ॥२३॥

देवेंद त्थुय नवमौ होइ, दाखौ तिहा गाथा सय दोइ ॥
 दशम सथारपयन्न सवासौ, दसे सतावीससै परकासौ ॥२४॥
 अंग इग्यार नै उपाग वार, मूल सूत्र चउ नदि अणुयोगद्वार ।
 छ छेद दश पयन्ता मेलीस, ए सूत्र आगम पेंतालीस ॥२५॥
 सूत्र पेंतालीस आगम सख्या, सहस अठ्यौत्तर सातमें काक्षा ।
 आज ऊनाधिक प्रायँ एह, तंत तौ केवलि जाणँ तेह ॥२६॥
 सूत्र निजुत्ति चुर्णि नै टीका, एहना बहु विस्तार अजीका ।
 छलख गुणचालीस सहस्सा, पाचसै छत्तीस जाण रहन्सा ॥२७॥
 कलसः—इमइणँ भरतै आज वरतै, भव्य जीव जिके सही ।
 आसता आणी तत्य जाणी, वीर वाणी सरदही ॥
 त्रिहुतरं जेसलमेर नगरै, विजयहर्ष विशेष ए ।
 धरमसी पाठक तवन कीधौ. दुरस पुम्तक देख ए ॥२८॥

२४ जिन-गणधर साधु साध्वी संख्या गर्भित स्तवन

आदीसर पहलो अरिहंत, गणधर चौरासी गुणवत ।
 प्रणमु सहस चौरासी साध, साध्वी त्रिणलाख गुणे अगाध ।१।
 अजितनाथ वीजो मन आणु, प्रणमीजै गणधर पंचाणु ।
 साहू इकलख वंदौ भवियां, त्रिण लख वीस सहस साधवीयां ।२।
 हिव संभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै वलि द्योय ।
 दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छत्तीस हजार ।३।
 अभिनंदन चौथो जिनराय, गणधर एकसौ सोल कहाय ।
 तीन लाख मुनि संख्या भाख, आर्या तीस सहस छः लाख ।४।

ढाल—चौपईनी

पाचम सुविधि जिनेसर सेव, सौ गणधर ध्यावो नित मेव ।
 तीस सहस तीन लाख मुनीस, साध्वी पचलख सहसे तीस । १।
 पद्मप्रभु प्रणमुं परभात, गणधर जेहने एक सो सात ।
 त्रिण लक्ष तीस सहस अणगार, साहुणी चउलख वीस हजार । ६।
 श्री सुपास जिणवर सातमौ, नित गणधर पंचाणुं नमो ।
 लाख तीन मुनि सूत्रे साख, साध्वी तीन सहस चौ लाख । ७।
 अठ्ठम जिन चदप्रभु नाम, गणधर त्र्याणु गुण गण धाम ।
 लाख अढी मुनि वदो भवी, चौलख सहस असी साधवी । ८।

ढाल २ हेम घड्यो रतने जड्यो खुपो, रहनी ।

नवमो सुवधि अठ्ठासी गणधर मुनि लख दोइ ।
 साधवी त्रिण लाख वीस हजारे अधिकी होइ ।
 सीतल दसम इठ्ठासी गणधर मुनि लख एक ।
 साहुणी पिण इक लख हीज अधिकी छए विवेक । ९ ।
 सहस चौरासी मुनि इग्यारम श्रेयास सार ।
 छिहुतर गणधर साहुणी इग लख तीन हजार ।
 वासुपुन्य जिन वारम जसु छासठि गणधार ।
 इक लख साहुणि बहुतर सहस कह्या अणगार । १० ।
 साहु अडसठ सहस, सतावन गणधर जाण,
 तेरम विमल अज्जा लख उपर आठसें आण ।

चवदस सामि अनत पचास क्हा गणराय,
 छासठ साधने वासठ साधवी सहसे मिलाय । ११ ।
 पनरस धरस तयालीस गणि चौसठ हजार,
 साहु साहुणी वासठ सहस अने सय चार ।
 वासठ सहस जतीस छतीस गणाधिप सति ।
 सोलस अजा इगसठि सहस छसे वलि तंत । १२ ।

ढाल ३ पुरदर नी ।

साठ सहस मुनि पेतीस गणधर सतरस कुंधु ।
 साधवी साठ हजार ने छसे वोली ग्रन्थ ।
 तेत्रीस गणधर अठारस अरि पूरे आस ।
 साधवी साठ हजारे साहु सहस पंचास । १३ ।
 महिनाथ उगणीसस साहु सहस चालीस ।
 साहुणी सहस पंचावन, गणधर अठ्ठावीस ।
 वीसस मुनिसुव्रत जसु साधु तीस हजार ।
 सहस पचासे साधवी गणधर जास अठार । १४ ।
 इकवीसस नमिनाथ नमु सतरे गणईस ।
 वीस सहस मुनि साधवी सहसे इगतालीस ।
 नेमिनाथ वावीसस साहु सहस अठार ।
 साधवी सहस चालीसे गणधर जास इग्यार । १५ ।
 सोल सहस साहु तेवीसस पास जिणेस ।
 दश गणधर साहुणी अठतीस हजार जिणेस ।

चौवीसम वर्द्धमान नमुं गणधार इग्यार ।
 चवदे सहस जतीस, साहुणी छतीस हजार । १६ ।
 चौवीस जिनना चौदहसे वावन गणधर एम ।
 साहु अठावीस लाख सहस अडतालीस तेम ।
 साधवी लाख चमालीस सहस छयालीस सार ।
 च्यार से उपरि छए धडै ए संख्याधार । १७ ।
 किणहीक सूत्रें ओछा अधिका कछा अणगार ।
 तेपिण चौवीसा ना पूरा नहिं अधिकार ।
 श्री आवश्यक सूत्रें पूरा सहु सुविचार ।
 तिणथी संख्या जाणी वंदु वारंवार । १८ ।

कलसः

इम संतरे से तेपने वरसें दीप परव सुदीसए ।
 श्री नगर वीकानेर अधिका विजयहर्ष जगीसए ।
 धर्मध्यान मन धरि कहे पाठक धरमसी नितमेवए ।
 चौवीस जिन धन राज जेहने ध्याइयें धर्म देवए । १९ ।

चौवीस जिन अंतर काल, देहायु स्तवन

पचपरमेष्टि मन शुद्ध प्रणमीकरी,
 धरमहित आगम अर्थ हीयडे धरी ।
 कहिस चौवीस जिन जिन तणो आतरो,
 आउ थित देह परिमाण मत पातगौ । १ ।
 प्रथमही सुखम सुखमा आरो जाणए,
 च्यार कोडा कोडि सागर परिमाणए ।

कोस त्रिण्ह देह त्रिणपह आयु धारण,
 तीय दिन तूअर परमाण आहारण । १ ।
 त्रिण छोडा कोडि सागर मुचम वीय अगे,
 देह दो कोन दोई पह आयु धरो ।
 दोर परिमाण आहार वीजे दिन,
 युगलीया मानवी एह कहिया जिणें । ३ ।
 दोड कोडाकोडि सुखम दुःखमा कयो,
 कोस इक काय इक पह आयु लयो ।
 आमलामान आहार लें दिन प्रतै.
 काल कर जुगलीया पोहचें सुरगतें । ४ ।

दात वीर जिरोसरनी ।

तिण तीजे अरै तीन वरस साढा अठ मास,
 शेष रह्या श्री आदिदेव पहंता सिववास ।
 चौरासी पुव्वलाख वर्ष पाल्यो जिण आयु,
 पाचसैं धनुप प्रमाण काय राजे जगराय । ५ ।
 आदि थकी पंचास कोड लख सागर हेव,
 हुयो अजित जिणेसरु ए वीजो जिण देव ।
 साढी च्यारसैं धनुप देह दीपें गुणनेह,
 बहुतर पूर्व लाख वर्ष आउखो एह । ६ ।
 अजित थकी त्रीस कोड लाख सागर गया जाम,
 तीजो तीर्थकर हुचो ए संभव शुभ नाम ।

च्यार सैं धनुष सरीर मान धार्यो जिणधीर,
साठ पूर्व लख वर्ष आयु पाल्यो वड़ वीर । ७ ।

संभव थी दस कोड लाख सागर परमाणे,
चौथो अभिनवन जिणद महिमा जग जाणे ।

ऊंच पणे जसु देह धनुष तीनसे पंचास,
आयु पचास पूर्व लख वर्ष पाल्यो सुखवास । ८ ।

हिव नव कोडिय लाख जलधि पूरा जव बीता,
पचम जिणवर सुमतिनाथ हुवा सुमति वदीता ।

तीनसैं धनुष सरीर तास शुभ वर्ण सुवास,
चालीस पूरव लाख वर्ष आऊखो जास । ९ ।

सागर नेऊ कोडि सहस हिव बीता जाम,
पद्मप्रभु छठो जिणेसरु ए हुओ गुण धाम ।

अढाईसे धनुष मान काया अभिराम,
तीस पूर्व लख आयु पालि पहुता सिवठाम । १० ।

ढाल — ब्रेकर जोडी ताम, रहनी

हिव नव सहस कोडे सागर हुआ सही,
श्री सुपास जिणेसर सातमो ए ।

दुइ सैं धनुषा देह वीस पूरव लख,
आयुथिति नितही नमो ए । ११ ।

हुआ सागर हेव नवसों कोडीय, दौढसे धनुष देही धरु ए ।
दस पूर्व लख आयु आठम जिनवर, श्रीचन्द्रप्रभु सुखकरु ए । १२ ।

सुविधिनाथ सुखकार नवमो जिनवर नेऊ कोडि सागरे ए ।
 आउ पूर्व लख दोइ, सो धनुषा तनु पाल्यो जिण पूरी परैं ए १३
 नीरधि हिव नव कोडि सुवधि जिणेसथी,
 शीतल दशमो जिन सही ए ।
 एक पूर्व लख आव धनुष नेऊ धर काया अंच पणै कहीए । १४।
 सौ निध छासठ लाख छावीस सहस वरस
 ऊणै इक कोडि सागर ए ।
 तिण अवसर श्रेयास अंग धनुष असी
 वरस चौरासीलख धरुए । १५ ।
 जिनवर वारमं जाण, चोपन सागरैं वासुपूज्य जिण वंदीये ए ।
 सत्तरि धनुष सरीर, अति सुख आउखो,
 बहुत्तर लाख वर्ष लिये ए । १६ ।

टाल — इण पुर कवल दोइ न लेसी, रहनी

तिण जिन थी हिव सायर तीस, विमलनाथ तेरम जिन ईस ।
 साठ धनुष काया सु प्रमाण, वर्ष साठ लख आयु वखाण । १७ ।
 हिव नव सायर कैरै अन्त, चवदम जिनवर थयो अनत ।
 पूरी काया धनुष पचास, तीन वर्ष लख आयुष तास । १८ ।
 एह थकी चिहु सागर आगे, पनरम धर्म जिणेसर जागें ।
 पैतालीस धनुष्य जसु देह, आउप दस लख वर्ष धरेह । १९ ।
 पल्ल त्रिभाग विना त्रिक सागर, सोलम शातिजिणेंद्र सुखाकर ।
 चालीस धनुष प्रमाणे काय, एक लाख वरसा नौ आय । २० ।

एण धकी पल्योपम आधै, समरुं सतरम कंथुं समोधै ।
 पामी देह धनुप पैतीस, आयु पचाणु सहस वरीस । २१ ।
 वर्ष एक कोडि सहस विहीन, चोथो भाग पल्योपम कीन ।
 त्रीस धनु अरि जिन अट्टारम, आयु वर्ष चौरासी हजारम । २२ ।
 वर्ष हुआ इक कोडि हजार, उगणीसम मल्लि जिन अवतार,
 तनु पचवीस धनुप नो तास, पचपन सहस वर्ष भववास । २३ ।
 बोल्या हिव बद्धर पूरा चोपन लाख,
 सामी मुनिसुव्रत हुआ सूत्रे साख ।
 वन्दो वीसम जिन वीस धनुप तनु मान,
 तीस सहसे वर्षे पाल्यो आयु प्रधान । २४ ।
 हिव पट् लख वर्षे हुआ श्री नमिनाथ,
 तनु पनरै धनुप मित सेवो सिवपुर सार्थ ।
 दस सहस वर्ष जिण पाल्यो आयु पडूर,
 इकवीसम जिनवर अरचो सुख अकूर । २५ ।
 पंच लाखे पूरे वीते वर्षे वद,
 वावीसम बहु गुण नेमीसर जिण इन्द्र ।
 यादव कुल जगचक्ष दीपे दस धणु देह,
 आयु थिति पाली एक सहस वरपेह । २६ ।
 हिव सहस त्रयासी सात शतक पचास,
 वर्षे त्रेवीसम परगट जिणवर पास ।
 नव हाथ प्रमाणे अंग सुरग सुरेह,
 पूरो जिण पाल्यो आयु सो वरसेह । २७ ।

इण थकी अढीसे वर्ष श्री महावीर,

बहुतर वर्षायुष साते हाथ सरीर ।

इम सहु वेतालीम सहस वर्ष उणेह,

इक कौडि कौडि सागर आदि थी एह । २८ ।

कलसः—इम अरें तीजे आदि जिणवर, अवर चोथे एमाए ।

चौवीस जिणवर चितचोखे प्रणमीये बहु प्रेमए ।

पुररिणी सतरेंसे पचीसै प्रगट पर्व पजूमणै,

वाचक विजयहर्ष सानिध धर्मसी मुनि इम भणे । २९ ।

६८ भेद अल्पबहुत्व विचार गर्भित स्तवन

वीर जिणेसर बढिये, उपगारी अरिहंत ।

आगम ए जिण उपदिस्वा, एओ ज्ञान अनत ॥१॥

भला अठाणु भेदसों, वोल्या अल्प बहुत्त ।

जिणमें भमियो जीवडो, ते सहु वात तहन्ति ॥२॥

दाल . सफल ससारनी ।

सहु थकी अल्प नर गर्भज जाणिये (१)

एहनी नारि सख्यात गुण आणिये (२)

अगनि असंख्यात गुण पज्जत वादरा, (३)

एहथी गुण असंख्यात अनुत्तर सुरा (४) ॥३॥

उपरिम (५) मध्य (६) अधत्रिक त्रिक (७) देवता,

अच्युत (८) आरण (९) प्राणत (१०) आनता (११)

एह संख्यात गुण जाणिज्यो अनुक्रमा ।

सातमीनरक (१२) असंख्यात गुणइमतमा (१३) । ४ ।

- हिव सहस्रार (१४) श्रुक्र (१५) पंचम नेरया (१६)
 लांतक (१७) चतुर्थीनर्क (१८) ब्रह्मदेवया (१९)
 तीय, पृथ्वीय (२०) माहेन्द्र (२१) असखगुणा,
 सनतकुमार (२२) वीयनिरय अनुक्रम घणा (२३)
 ठाम चौवीसमी मनुष्य समूर्च्छिमा, (२४)
 देवईशान असंख गुण निभ्रमा (२५) । ६ ।
 देवी ईशानरी (२६) सुधर्मसुरजिके (२७)
 तेहनी, त्रीय संख्यात गुणीयै तिके (२८) । ६ ।
 भवणवइदेव असंख्यात (२९) देवी संख्या बहु (३०)
 प्रथमनारकि असखेय गुणीया सबहु (३१)
 बोल वतीसमें खेचर पचेन्द्रिया,
 तिरिय असंख्यात गुणा (३२) सख्य एहनीत्रिया (३३) । ७ ।
 ढाल तिरा अवसर कोइ मागध आथो पुरदर पास ।
 थलचर तिरिय पुरप (३४) त्री (३५) जलचरिमिथुन (३६-३७) लहेस,
 व्यतर देवने (३८) देवीय (३९) ज्योतिपी युगम (४० । ४१) कहेस ।
 खचरतिरी (४२) थलचर (४३) जलचरय (४४) नपु सक जेह ।
 अनुक्रमै एह इग्यार संख्यात गुणा करि लेह ॥ ८ ॥
 बलि परजापति चोरिन्दी संख्यात गुणेह (४५)
 पज्जत सञ्जि पचेन्द्रि विशेषे अधिका तेह (४६)
 पज्जवइन्द्रि (४७) पज्जतेइन्द्रि विशेष (४८) विशेष
 अडतासीस एं बोल कह्या अनुक्रम गिण देख । ९ ।

पंचेन्द्रि अपज्जत असखगुणा ए जाण (४६)

चोरिन्द्रि तेइन्द्रि (५१) वेइन्द्रि (५२) अपज विशेष वखाण ।

प्रत्येक वनस्पतिय(५३)निगोद(५४)पृथ्वी(५५) अप(५६)वाय(५७)

चादर परजापत पाच असख गुणाय ॥१०॥

हिवअपज्जत्ता वादर अग्नि अठावनेवोल (५८)

एहवा हीज वनस्पति असंखगुणी इणत्तोल (५९)

वलिय निगोद(६०)पुढवी(६१)अप(६२)वाय(६३) एच्यारे जाण ।

वादर अपजत्ता असंख्यात गुणा परिमाण १११

इहांथी सुक्ष्मअपज्जत अग्नि असंख गुणेह(६४)

भू (६५) जल(६६)पवन (६७) इसाज विशेष धरेह ।

अडसट्टिमो इहा सूक्ष्म पज्जत तेउ गिणेस (६८)

पुढवी (६९) अप ने (७०) वायु (७१) पज्जता सुक्ष्म विशेष ११२

ढाल—वेकर जोडी ताम रहनी ।

वहुतरमे हिव वोल सूक्ष्म अपज्जत, जीव निगोदे जाणिवाए, (७२)

असंख्यात गुण एहएहथी पज्जत संख्याते गुण आणवाए (७३) ११३।

अनतगुणा अधिकार इहाथी आगले भव्य अनंत गुणा सहीए(७४)

ए चिहुतरमो समकित नहीं लहै, मोक्ष कदे लहिस्ये नहींए ११४।

समकित पतितने(७५)सिद्ध(७६)अनंतागुणा,एलेखवलयौ अनुक्रमेए ।

चादर रूप पज्जत वनस्पतितणा(७७) जीव अनंत गुणा भमैए ११५।

सामान्यरूपे सर्ववादर पञ्जत, जीव विशेषाधिक कहौए, (७८)
वणवादर अपञ्जत असखगुणा इहा, ठाम गुण्यासीमें लह्योए । १६।
अपञ्जत वादर जीव (८०) वलि वादरसहु,
(८१) अधिका अधिक विशेषथीए ।

सुहम अपञ्ज वणम्स असंख्यगुणा इम, सुण वयासी सासौ नथीए १७
अपञ्जत सुहम विशेष (८३) सूक्ष्मपञ्जती वनस्पति असखीगुणौए (८४)
इण चौरासी वोल इहाथी आगले सर्व विशेषाधिक पणौए । १८ ।
सूक्ष्म पञ्जता जाण (८५) सूखम सहु गिणौ (८६) भव्य सत्यासी
में भणौए (८७) । जाणौ जीवनिगोद (८८) वलियवनस्पती (८९)
एकेन्द्र अधिकागिणौ ए (९०) । १९ ।

जाणौ तृचजाति (९१) इक्काणुं इहां मिध्यादृष्टिवाणमोए (९२)
अविरत जीव अवशेष (९३) सकसाइ सहु, (९४) चावौ भेद
चौराणुंमो ए । २० ।

मानोहिव छद्मस्थ (९५) सर्व सयोगीय (९६) भववासी भणियै
सहुए (९७) । जीवजिता सहु जाणं एह अठाणुंमो, वोल विवेककरो
वहुए (९८) । २१ ।

कलस :—

इम वीर वाणी सुणो प्राणी सूत्र पन्नवणा थकी ।
ए भेद आण्या जिणे जाण्या तियै सिद्ध वधू तकी ।
सुख विजयहर्ष विशेष श्रीसंघ धर्म शील भला धरे ।
जेसाणगढ में तवन जोड़्यो सवत सतरे बहुत्तरै । २२ ।

इति अल्पबहुत्व-विचार-गर्भित श्रीमहावीर स्तवनम्

चौवीस दण्डक स्तवन

ढाल—आदर जीव क्षमा गुण आदर

पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ।
 त्तरण तरण विरुद तुम्ह साभलि, आयो हुं धरि आस जी ॥१॥ पू०
 इण ससार समुद्र अथागें, भमियो भवजल माहि जी ।
 गिलगिचिया जिम आयो गिड़तौ, साहिव हाथे साहिजी ॥२॥ पू०
 तुं ज्ञानी तो पिण तुम्ह आगै, वीतग कहिये वात जी ।
 चौवीसे दंडके हुं फिरीयो, वरणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ पू०
 साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ।
 पाच थावर नें त्रिणि विकलेंद्रि, उगणीस गिणती आण जी । ४ ।
 पंचेंद्रि तिरजंच नै मानव, एह थया इकवीस जी ।
 वितर जोतिधी नै वैमानिक, इम दंडक चौवीस जी ॥५॥ पू०
 पंचिंद्री तिरजंच अने नर, परजापता जे होइ जी ।
 ए चउविह देवा माहे ऊपजै, इम देवै गति दोइ जी ॥ ६ ॥ पू०
 असख्यात आउखें नर तिरि, निसचै देवज थाय जी ।
 निज आउखा सम कि ओछे, पिण अधिकै नवि जाय जी ॥७॥
 भवणपती कै वितर ताई, संमूरछिम तिरजंच जी ।
 सरग आठमें ताइ पहुचे, गरभज सुकृत सचं जी ॥ ८ ॥ पू०
 आऊ संख्याते जें गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ।
 वादर पृथिवी ते बलि पाणी, वनसपती परतेक जी ॥ ९ ॥ पू०

परजापते इण पाचे ठामे, आवी उपजै देव जी ।

इण पाचा माहें पिण आगे, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ १० ॥ पू०

तीजा सरग थकी मांडी सुर, एकेंद्रि नवि थाय जी ।

अठम थी ऊपरला सगला, मानव माहि ज जाय जी ॥ ११ ॥

ढाल—आज निहेजो दीसे नाहलो

नरक तणी गति आगति इणपरें, जीव भमें संसार ।

दोइ गति ने दोइ आगति जाणिये, वलिय विशेष विचार ॥१२॥

संख्यातें आऊ परजापता, पंचेंद्री तिरजच ।

तिमहिज मनुष्य वे हिज ए, नरकमे जाये पाप प्रपच ॥ १३ ॥

प्रथम नरक लगि जाइ असन्नीयौ, गोह नकुल तिम बीय

गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी लगै, सीह प्रमुख चौथीय ॥ १४ ॥

पाचमी नरके सीमा सापनी, छट्टी लगि स्त्री जाय ।

सातमीयें माणस के माछला, उपजे गरभज आय ॥ १५ ॥

नरक थकी आवें विहुं दंडके, तिरजच कै नर थाय ।

ते पिण गरभज तें परजापता, संख्याती जसु आय ॥ १६ ॥

नारकिया नै नरक थी नीसरया, जेफल प्रापति होय ।

उत्कृष्टे भांगे करते कहुं, पिण निश्च नही कोय ॥ १७ ॥

प्रथम नरक थी उवटि चक्रवृति हुवै, बीजी हरि बलदेव ।

त्रीजी लगि तीरथंकर पद लहै, चौथी केवल एव ॥ १८ ॥

पंचम नरक नो सरवविरति लहै, छट्टी देसविरति ।

सत्तम नरक थी समकित हिज लहै, न हुवै अधिक निमित्त १६

ढाल—करम परीक्षा करण कुमर चल्थोरे ।

मानव गति विण मुगति हुवै नहीं रे, एहनौ इम अधिकार ।

आऊ संख्यातें नर सहु दडके रे, आवी लहै अवतार ॥ २० ॥

तेऊ वाऊ डंडक वे तजी रे, वीजा जे वावीस ।
 तिहा थी आया थावे मानवी रे, सुख दुख पुण्य सरीस ॥२१॥
 नर तिरजंच असंखी आऊखे रे, सातमी नरक ना तेम ।
 तिहा थी मरि ने मनुष हुवे नहीं रे, अरिहंत भाष्यौ एम ॥२२॥
 वासुदेव वलदेव तथा वली रे, चक्रवरति अरिहंत ।
 सरग नरक ना आया ए हुवै रे, नर तिरि थी न हुवंत ॥२३॥
 चौविह देव थकी चवि ऊपजें रे, चक्रवरति वलदेव ।
 वासुदेव तीर्थकर ते हुवै रे, वैमानिक थी वेव ॥२४॥

ढाल—हेम घड्यो रतने ञड्यो खु पो,

हिव तिरजंच तणी गति आगति कह्य अशेष ।
 जीव भम्यो इण परि भव माहे करम विशेष ॥
 आउ संख्याती जे नर नै तिरजंच विचार ।
 ते सगला तिरजंचा माहे लहै अवतार ॥२५॥
 जिण तिरजंचा माहे आवे नारक देव ।
 तेह कह्यौ पहिली तिण कारण न कहुं हेव ॥
 पंचेंद्रि तिरजच संख्याते आऊखे जेह ।
 तेह मरी चिहुंगति माहे जावै इहां न संदेह ॥२६॥
 थावर पाच त्रिणें विकलिंदी आठे कहावे ।
 तिहा थी आऊ संख्याती नर तिरजंच में आवें ॥
 विकल मरी लहै सरवविरति पिण मोख न पावे ।
 तेउ वाउ थी आयौ तेह नै समकित नावै ॥२७॥
 नारक वरजी ने सगलाई जीव संसारै ।
 पृथिवी आऊ वनमपति माहे लहै अवतारै ॥

ए तीनों उवटी इहाथी आवै दस ठामें ।
 थावर विकल तिरि नर माहे उत्तपति पामै ॥२७॥
 पृथिवीकाय आदे देई दश दडक एह ।
 तेऊ वाऊ माहे आवी ऊपजै तेह ॥
 मनुप विना नव माहे तेऊ वाऊ वे जावै ।
 विकलिंदी ते दश माहि जावै पूठा ही आवै ॥२८॥
 एम अनादि तणौ मिथ्याती जीव एकत ।
 वनसपति माहे तिहा रहियो काल अनंत ॥
 पुढवी पाणी अगनि अनै चौथो वलि वाय ।
 कालचक्र असंख्याता ताई जीव रहाय ॥२९॥
 वेइंदी तेरिंदीने चोरेन्दी मभारें ।
 संख्याता वरसा लगि रहियौ करम प्रकारै ॥
 सात आठ भव लगता नर तिरजच मे रहियौ ।
 हिव मानव भव लहिनै साधनो वेप में गहियौ ॥३०॥
 रागद्वेष छूटै नहीं किम ह्वै छूटक बार ।
 पिण छै मन सुध माहरै तुं हिज एक आधार ॥
 तारणतरण में त्रिकरण शुद्धे अरिहंत लाधौ ।
 हिव ससार घणो भमिवौतौ पुदगल आधौ ॥३१॥
 तूं मन वछित पूरण आपद चरण सामी ।
 ताहरी सेव लही तौ मै हिव नव निधि पामी ॥
 अवर न कोई इच्छुं इण भवि तूं हिज देव ।
 सृधें मन इक ताहरीं होज्यो भव भव सेव ॥३२॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसलमेर महिमा दिण दिणै ।
 सवत्त सत्तरै उगणतीसै दिवस दीवाली तणै ॥
 गुण विमलचद्र समान वाचक विजयहरप सुशीस ए ।
 श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीस ए ॥३३॥

श्री समवशरण विचार स्तवनम्

॥ दोहा ॥

श्री जिन शासन सेहरौ, जग गुरू पास जिणिंद ।
 प्रणमै जेहना पद कमल, आवी चौसठि इंद ॥ १ ॥
 तीर्थकर आवै तिहा, त्रिगढौ करय तयार ।
 समकित करणी साचवै, एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥
 करै प्रशंसा समकित्ती, मिथ्यात्वी ह्वै मूक ।
 सूर्य देखि हरखै सहू, घणै अंधारै घूक ॥ ३ ॥

ढाल (१) वीर वस्त्राणी राणी चेलणा जी

आप अरिहंत भले आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ।
 समवशरण रचे सुरवरा जी, सखेपे ते कहुं सर्व । आ० ॥ ४ ॥
 भवनपती इन्द्र वीसे भिल्या जी, सोल दू वितर सार ।
 जोइस दु वस विमाणी जुड्या जी, चउसठि इन्द्र सुविचार । ५ ।
 पवन सुर पुंजी परमारजी जी, भूमि योजन सम भाउ ।
 मेघकुमार रचि मेघनै जी, करय सुगंध छड़काउ । आ० ॥ ६ ॥
 अगर कपूर शुभ धूपणा जी, करय श्री अगनिकुमार ।
 वाणवितर हिव वेग सु जी, रचय मणि पीठिका सार ॥ ७ ॥
 पुहप पंच वरण ऊरध मुखे जी, वरपए जाणु परिमाण ।
 भवणवइ देव त्रिगढो भलो जी, करय ते सुणहुं सुजाण ॥ ८ ॥
 रचय गढ प्रथम रूपा तणौ जी, सोवन कांगुरे सार ।
 रवि शश्वि रयण कोसीसके जी, कनक कौ वीय प्राकार ॥ ९ ॥

रतन गढ रतन रै कांगुरै जी, रचय वेमाण सुर राज ।
 भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, तिहा विराजै जिनराज ॥आ१० ॥
 भीति ऊंची धगु पाचसै जी, सवा तेत्रीस विसतार ।
 धनुष सै तेर गढ अतरौ जी, प्रोलि पचास धनु च्यार ॥ ११ ॥
 दश पंच पच त्रिहुं गढ तणी जी, पावड़ी बीस हजार ।
 थाक श्रम नहिंय चढता थका जी, एक कर उत्र विस्तार ॥१२॥
 पंच धगु सहस पृथ्वी थकी जी, उत्र रहै त्रिगढ आकास ।
 तेह तलि सहु यथास्थित बसे जी, नगर आराम आवास ॥१३॥
 तोरण त्रिक चिहुं विसि तिहा जी, नीलमणि मोर निरमाण ।
 दुसय धगु मध्य मणिपीठिका जी, उत्र जिण देह परिमाण ॥१४॥
 च्यार आसण तिहा चिहुं विसि जी, मोतीए भाक कमाल ।
 सम विचै कूण ईसाणमे जी, देवछंदौ सुविशाल ॥आ० ॥१५॥
 देव दुंदुभि नाद उपदिसै जी, जिण गुण गावसी जेह ।
 अम्ह जिम आइ सहु ऊपरै जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥

ढाल (२) सफल संसारं नी

पुन्व विसि आसणै आइ बेसै पहू, सुरकृत चौमुख रूप देखै सहू ।
 दीपै अशोक तरु वार गुण देह थी,

देखि हरखै सहू मोर जिम मेह थी ॥ १७ ॥

मोतिया जाल त्रिण छत्र सुविसाल ए,

रूप चिहुं विसै चामर ढाल ए ।

योजन गामिणी वाणि जिणवर तणी,

भगवंत उपदिशै वार परपद भणी ॥ १८ ॥

प्रदिक्षणा रूप थी अगनि कूणे करी,
 गणधर साधवी तिम विमाणी सुरी ।
 ज्योतिपी भुवणिनी वितरी त्री पणै,
 नैऋत कूण जिण वाणि ऊभी सुणै ॥ १६ ॥
 त्रिहुं तणा पति वायु कूण में जाण ए,
 सुर विमाणीय नर नारि ईसाण ए ।
 वार परिपद मद मच्छर छोड़ ए,
 भूख तृप वीसरै सुणै कर जोड़ ए ॥ २० ॥
 पूठि भामंडल तेज परकास ए,
 जोयण सहस धज ऊंच आकास ए ।
 मलहलै तेज धर्मचक्र गगने सही,
 महक सहु वारणै धूप धाणा मही ॥ २१ ॥
 वाहण वहिल सहि धरिय पहिलै गढै,
 होइ-पगचार नर नारि ऊंचा चढै ।
 जिण तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए,
 वैर तजि वीय गढ रहै सुख संच ए ॥ २२ ॥
 पुण्यवंत पुरुष ते परिपद वारमै,
 सुणै जिण वाणि धन गिणय अवतार मै ।
 चौवहि देव जिणदेव सेवा रसे,
 मणिमयी माहिली प्रोलि माहे वसै ॥ २३ ॥
 चिहुं दिसि वाटुली वावि चौ जाणियै,
 विदिसि चौकूणी दोइ दोइ वाखाणीये ।

आवि जिहां चावि जल अमृत जेम ए,
 स्नान पानै वपू निरमल हेम ए ॥ २४ ॥
 जय विजया अपराजि जयंतिया,
 मध्य कंचणगढै प्रोलि वसंतिया ।
 तुंबुर पुरुष पट्टंग अर्चिमाल ए,
 रजत गढ प्रोलि ना एह रखपाल ए ॥ २५ ॥
 पहिल त्रिगढौ न हुअ जिण पुर ग्राम ए,
 देव महर्धिक रचै तिण ठाम ए ।
 करण वार वार कारण नहिं कोइ ए,
 आठ प्रातिहारज ते सही होइ ए ॥ २६ ॥
 जिन समवशरण नी ऋद्धि दीठी जीए,
 तेह धन धन्न अवतार पायो तिए ।
 पास अरदास सुणि वंछित पूरज्यो,
 हिव मुक्क ताहरौ शुद्ध दरसण हुज्यो ॥ २७ ॥

॥ कलश ॥

इम समवशरणै रिद्धि वरणै सहू जिणवर सारिखी ।
 सरदहै ते लहै शुद्ध समकित परम जिनध्रम पारिखी ॥
 प्रकरण सिद्धंत गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए ।
 संस्तव्यौ पास जिणद पाठक धरमवरधन धार ए ॥ २८ ॥

—:❀:—

चौदह गुणस्थानक स्तवन

ढाल—थभरूपुर श्री, रहनी

सुमति जिणंद सुमनि दातार, वंदुं मन सुध वारो वार,
आणी भाव अपार ।

चवदै गुणथानक सुविचार, कहिसु सूत्र अरथ मन धार,
पावै जिण भव पार ॥१॥

प्रथम मिथ्यात कह्यौ गुणठाणौ, बीजौ सासादनं मन आणौ,
तीजो मिश्र बखाणो ।

चौथो अविरति नाम कहाणौ, देशविरति पंचम परमाणौ,
छट्टौ प्रमत्त पिछाणौ ॥२॥

अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अठम अपूरव करणकहीजै,
अनिवृत्ति नाम नवम्म ।

सूपम लौभ दशम सुविचार, उपशातमोह नाम इग्यार,
खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥

तेरम सयोगी गुणधाम, चवदम थयौ अयोगी नाम,
वरणु प्रथम विचार ।

कुगुरु कुदेव कुधर्म बखाणै, ते लक्षण मिथ्या गुण ठाणै,
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

ढाल—२ सफल ससारनी

जेह एकात नय पक्ष थापी रहै,

प्रथम एकात मिथ्यामती ते कहै ।

ग्रंथ ऊथापि थापै कुमति आपणी,

कहै विपरीत मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥

शैव जिनदेव गुरु सहु नमै सारिखा,

तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ।

सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प घणै,

संशयी नाम मिथ्यात चौथो भणै ॥ ६ ॥

समझि नहिं काइ निज धध रातो रहै,

एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ।

एह अनादि अनंत अभव्य नै,

कहय अनादि थिति अंत सुं भव्य नै ॥७॥

जेम नर खीर घृत खड जिमनै वमै,

सरस रस पाइ वलि स्वाद कहवौ गमे ।

चउथ पचम छठै ठाण चढि नै पड़ै,

किणही कषाय वसि आइ पहिलै अड़ै ॥८॥

रहै विचै एक समयादि पट आवली,

सहिय सासादनें थिति इसी साभली ।

हिव इहा मिश्र गुणठाण त्रीजो कहै,

जेह उत्कृष्ट अंतरमहूरत लहै ॥ ९ ॥

ढाल—३ बेकर जोडी ताम रहनी

पहिला च्यार कषाय शम करि समकित्ती,

कैतों सादि मिथ्यामती ए ।

ए वे हिज लहै मिश्र सत्य असत्य जिहा

सरदहणा वेहुं छनी ए ॥ १० ॥

मिश्र गुणालय माहि मरण लहै नहीं

आउ वंध न पडै नवै ए ।

कैतो लहि मिथ्यात के समकित लही,

मति सरिखी गति परिभवै ए ॥ ११ ॥

च्यार अप्रत्याख्यान उदय करी लहै,

व्रत विण सुध समकित पणौ ए ।

ते अविरत गुणठाण तेत्रीस सागर,

साधिक थिति एहनी भणौ ए ॥ १२ ॥

दया उपशम संवेग निरवेद आसता, समकित गुण पाचे धरै ए ।

सहु जिन वचन प्रमाण जिनशासन तणी,

अधिक अधिक उन्नति करै ए ॥ १३ ॥

केइक समकित पाय पुदगल अरध ता, उत्कृष्टा भव मे रहै ए ।

केइक भेदी गंठि अंतरमहूरतै, चढतै गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥

च्यार कषाय प्रथम्म त्रिणवली मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ।

साते परकृति जास परही उपशमै,

ते उपशम समकित धनी ए ॥ १५ ॥

जिण साते क्षय कीध ते नर क्षायिकी,

तिणहिज भव शिव अनुसरै ए ।

आगलि बांध्यो आय तौ ते तिहां थकी,

तीजै चौथे भव तरै ए ॥ १६ ॥

ढाल—४ इण पुर कबल कोई न लेसी

पंचम देश विरति गुणथान, प्रगटै चौकड़ी प्रत्याख्यान ।

जेण तजै बावीस अभक्ष्य, पान्यौ श्रावकपणौ प्रत्यक्ष ॥१७॥

गुण इक्कीस तिके पिणधारै, साचा वारै व्रत संभारै ।

पूजादिक षट कारिज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥१८॥

आरत रौद्रध्यान है मंद, आयौ मध्य धरम आनंद ।

आठ वरस ऊणी पुव कोडि, पचम गुणठाणै थिति जोडि ॥१९॥

हिव आगै साते गुणथान, इक इक अतरमहूरत मान ।

पांच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेण प्रमत्त छट्टौ गुण धाम ॥२०॥

थिवरकलय जिनकलय आचार, साथै षट आवश्यक सार ।

उद्यत चौथा च्यार कपाय, तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥२१॥

सूधौ राखै चित्त समाधै, धर्म ध्यान एकान्त आराधै ।

जिहा प्रमाद क्रिया विधि नासै, अपरमत्त सत्तम गुण भासै ॥२२॥

ढाल—५ नदि जमुना के तीर, रहनी

पहलै अंशौ अट्टम गुणठाणा तणै, आरंभै दोइ श्रेणि सखेपै ते भणै ।

उपशम श्रेणि चढै जे नर है उपशमी,

क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दशक्षय गमी ॥२३॥

जिहां चढता परिणाम अपूर्व गुण लहै,

अद्वम नाम अपूर्व करण तिणै कहै ।

शुक्लध्यान नौ पहिलो पायो आदरै,

निर्मल मन परिणाम अडिग ध्याने धरै ।२४।

हिव अनिवृत्ति करण नवमो गुण जाणियै

जिहा भावथिर रूप निवृत्ति न आणीयै ।

क्रोध मान नै माया सजलणा हणै,

उदय नहीं जिहां वेद अवेद पणो तिणै ।२५।

तिहा रहै सूपम लोभ काइक शिव अभिलपै,

ते मूखमसपराय दशम पंडित दखै ।

शातमोह इण नाम इग्यारम गुण कहै,

मोह प्रकृति जिणठाम सहु उपशम लहै ।२६।

श्रेणि चह्यौ जौ काल करै किणही परै,

तो थाये अहमिद्र अवरगति नादरै ।

च्यार वार समश्रेणि लहै ससार में,

एक भवै दोइ वार अधिक न हुवै किमै ।२७।

चढि इग्यारम सीम शमी पहिलै पडै,

मोह उदय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल रहै ।

खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणौ नहीं,

दशम थकी वारम्म चढै ध्याने रही ।२८।

ढाल—६ इक दिन कोई मागध आयो पुरदर पास

खीणमोह नामैं गुणठाणौ वारम जाण,

मोह खपायै नैडो आयौ केवलनाण ।

प्रगटपणै जिहा चारित अमल यथा आख्यात,

हिव आगै तेरम गुणथान तणी कहै वात ।२६।

घातीया चौकड़ीक्षय गई रहीय अघाती एम,

प्रकृति पच्यासी जेहनी जूना कप्पड़ जेम ।

दरसण ज्ञान वीरिज सुख चारित पाच अनंत,

केवलनाण प्रगट थयौ विचरैं श्री भगवंत ।३०।

देखैं लोक अलोकनी छानी परगट वात,

महिमावंत अढारह दूषण रहित विख्यात ।

आठे वरसे ऊण कही इक पूरव कोड़ि,

उत्कृष्टी तेरम गुणथान तणी थिति जोड़ि ।३१।

रकि शैलेसी करण निरुंध्या मन वच काय,

तेण अयोगीअंत समै सहु करम खपाय ।

पाचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनौ मान,

पंचमगति पामै सुखसु चवदम गुणथान ।३२।

तीजै वारमै तेरमै माहे न मरै कोई,

पहिलौ वीजौ चौथौ परभव साथै होइ ।

नारक देव नी गति में लामै पहिला च्यार,

धुरला पंच तिरिय मे मणुए सर्व विचार ।३३।

॥ कलश ॥

इम नगर वाहड़मेर मंडण, सुमति जिन सुपसाडलै ।

गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेदि आगम नै भलै ॥

संवत सतरै उगुणत्रीसै, श्रावण वदि एकादशी ।

वाचक विजयहरकख सानिधि, कहै इम मुनि धरमसी ॥३४॥

चौरासी आशातना स्तवन

ढाल—वितसै ऋद्धि समृद्धि मिली ।

जय जय जिण पास जगत्र धणी, शोभा ताहरी संसार सुणी ।
 आयो हुं पिण धरि आस घणी, करिवा सेवा तुम्ह चरण तणी १
 धन जन जे न पडै जंजालै, उपयोग सु वेसि जिन आलै ।
 आसातन चौरासी टालै, शाश्वत सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥
 जे नाखें सलेषम जिनहर में, कलहड करे गाली जूअ रमै ।
 धनुषादि कला सीखण दुकै, कुरलौ तंबोल भखै थूकै ॥ ३ ॥
 सरै वाय वडी लघु नीति तणी, संज्ञा कंगुलिया दोप सुणी ।
 नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदी नी नाखै चावड़िया ॥४॥
 दांतण नै घमन पियै कावौ, खावइ धाणी फूली खावौ ।
 सूवे वीसामणि विसरामै, अजगज पसु नइ दामण दामे ॥ ५ ॥
 सिर नासा कान दशन आंखें, नख गाल वपुस ना मल नाखै ।
 मिलणौ लेखौ करइ मंतरणौ, विहचण अपणौ करि धन धरणौ ॥६॥
 वैसे पग ऊपरि पग चडिया, थापै छाणा छड़े तुंडणिया ।
 सुकवइ कप्पड़ कप्पड़ वड़िया, नासीय छिपइ नृपभय पड़िया ॥७॥
 शोके रोवै विकथाज कहै, इहा संख्या वैतालीस लहें ।
 हथियार घड़ै नै पशु बांधै, तापै नाणौ परिखै राधइ ॥ ८ ॥
 भांजी निसही जिनगृह पेंसइ, धरि छत्र नें मडप में वइसैं ।
 हथियार धरै पहिरै पनही, चांवर वीजै मन ठाम नहीं ॥ ९ ॥
 तनु तेल सचित फल फूल लिये, भूषण तजि आप कुरूप थियै ।
 दरसणधी सिर अंजलि न धरइ, इग साडें उतरासंग करै ॥१०॥

छोगौ सिरपेच मउड़ जोड़ै, दड़िए रमै नइ वहसँ होड़ै ।
 सयणा सुं जुहार करै मुजरौ, करे भाड चेष्टा कहै वचन बुरौ ११
 धरें धरणुं मगडै उलंठी, सिर गुंथै बाधैं पालठी ।
 पसारइ पग पहिरइ चाखड़िया, पग भटकि दिरावै दुड़वडियां १२
 करदम लूहै मैथुन मंडै, जूआ वलि अइठि तिहा छंडै ।
 ऊघाड़ै गूफ कर वइदां, काढै व्यापार तणी केंदा ॥ १३ ॥
 जिनहर परनाल नौ नीर धरइ, अंघोलै पीवा ठाम भरै ।
 दूपण जिण भवण मे ए दाख्या, देव वंदण भाष्य में जे भाख्या १४
 सुज्ञानी श्रावक सगति छता, आसातन टालें वार सता ।
 परमाद वसै काइ थायै, आलोया दोष सहू जायै ॥ १५ ॥
 तंबोल नै भोजन पान जुआ, मल मूत्र शयन स्त्री भोग हुआ ।
 थूकण पनही ए जघन दसे, वरज्या जिन मंदिर माहि वसै ॥ १६ ॥
 द्रव्यत नै भावित दोइ पूजा, एहना हिज भेद कख्या दूजा ।
 सेवा प्रभु नी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

इम भव्य प्राणी भाव आणी, विवेकी शुभ वातना ।
 जिन ब्रिव अरचइ परी वरजइ चौरासी आसातना ॥
 ते गोत्र तीर्थंकर ज अरजें नमइ जेहनइ केवली ।
 चवभाय श्री ध्रमसीह वंदै जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥

अट्ठावीस लवधि स्तवन

॥ दोहा ॥

प्रणम् प्रथम जिणेसरू, शुद्ध मनै सुखकार,
 लवधि अट्ठावीस जिण कही, आगम नै अधिकार ॥१॥
 प्रश्नव्याकरणे प्रगट, भगवति सूत्र मकार,
 पन्नवणा आवश्यकै, वारू लवधि विचार ॥२॥
 अमल तपे करि ऊपनै, लवधां अट्ठावीस,
 ए हिव परगट अरथ सुं, साभल्लिज्यो सुजगीस ॥३॥

ढाल १ सज्जल संसार नी ।

अनुक्रमे हेव अधिकार गाथा तणै,
 लवधि ना नाम परिणाम सरिखा भणै ।
 रोग सहु जाय जसु अंग फरस्या सही,
 प्रथम ते नाम छै लवधि आमोसही ॥४॥
 जास मलमूत्र औपध समा जाणियै,
 वीय विण्पोसही लवधि वखाणिये ।
 श्लेषमा औपध सारिखौ जेहनौ,
 त्रीजी खेलोसही नाम छै तेहनौ ॥५॥
 देहना मैल थी कोढ दूरे हवै,
 चौथी जहोसही नाम तेहनो चवै ।
 केस नख रोम सहु अग फरसें लही,
 रहै नहीं रोग मन्वोसही ते कही ॥६॥

एक इन्द्रिय करी पाच इन्द्रियतणा;

भेद जाणै तिका नाम संभिन्नणा ।

वस्तु रूपी सहु जाणियै जिण करी,

सातमी लब्धि ते अवधिज्ञाने धरी ॥७॥

ढाल २ आव्यौ तिहा नरहर, एहनी

हिव आगुल अढीये ऊणो मानुप खित्त,

संगन्या पंचेद्री तिहा जे वसय विचित्त,

तसु मन नौ चितित जाणै थूल प्रकार,

ते ऋजुमति नामै अट्टम लब्धि विचार ॥८॥

संपूरण मानुप खेत्रें सजावंत,

पंचेन्द्रिय जे छै तसु मन वाता तत ।

सूषम परिजायें जाणै सहु परिणाम,

ए नवमी कहियै विपुलमती शुभ नाम ॥९॥

जिण लब्धि परमाणै ऊडी जाय आकास,

ते जंघा विद्याचारण लब्धिं प्रकास ।

जसु वचन सरापे खिण में खेरु थाय,

ए लब्धिं इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥१०॥

सहु सूखम बादर देखै लोक अलोक,

ते केवल लब्धी बारमीयें सहु थोक ।

गणधर पद लहियै तेरम लब्धि प्रमाण,

चवदम लब्धिं करि चवदह पूरब जाण ॥ ११ ॥

तीर्थंकर पदवी पामै पनरम लद्धि,

सोलम सुखकारी चक्रवर्त्ति पद रिद्धि ।

वलदेव तणौ पद लहीयें सतरम सार,

अड्डारम आखा वासुदेव विसतार ॥ १२ ॥

मिश्री घृत खीरें मिल्या जेह सवाद,

एहवी लहै वाणी उगणीसम परसाद ।

भणियौ नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार,

ते कुट्टग बुद्धी वीसम लवधि विचार ॥ १३ ॥

एकें पद भणियै आवै पद लख कोडि,

इकवीसम लवधी पायाणुसारणी जोडि ।

एकें अरथे करि उपजै अरथ अनेक,

वावीसमी कहियै वीज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥

ढाल (३) कपूर हुवै अति ऊजलो रे

सोलह देश तणी सही रे, दाहक सकति वखाण ।

तेह लवधि तेवीसमी रे, तेज्यो लेश्या जाण ॥ १५ ॥

चतुर नर सुणिज्यो ए सुविचार, आगम नै अधिकार । च० ।

चवद पूरवधर मुनिवरु रे, उपजतां सदेह ।

रूप नवौ रचि मोकलै रे, लवधि आहारक ऐह । च० ॥ १६ ॥

तेजो लेश्या अगनि में रे, उपशमिवा जलधार ।

मोटी लवधि पचीसमी रे, शीतल लेश्या सार । च० ॥ १७ ॥

जेण सकति सु विकुरवे रे, विविध प्रकारे रूप ।
 सदगुर कहे छावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥च०॥१८॥
 एकणि पात्रे आढमी रे, जीमीवै केई लाख ।
 तेह अखीण महाणसी रे, सत्तावीसम साख ॥च०॥१९॥
 चूरे सेन चक्रीसनी रे, सघादिक नै काम
 तेह पुलाक लवधि कही रे, अट्टावीसम नाम ॥च०॥२०॥
 तेज शीत लेश्या विन्हे रे, तेम पुलाक विचार ।
 भगवती मूत्र मे भाखियौ रे, ए त्रिहुं नो अधिकार ॥च०॥२१॥
 चक्रवर्ति बलदेव नी रे, वासुदेव त्रिण एह ।
 आवश्यक सूत्रे अछै रे, नहीय इहा सदेह ॥च०॥२२॥
 पन्नवणा आहार गी रे, कलपसूत्र गणधार ।
 तीन तीन डक मिली रे, वारू आठ विचार ॥च०॥२३॥
 प्रश्नव्याकरणे कही रे, वाकी लवधा वीस ।
 साभलता सुख ऊपजें रे, दौलति ह्वै निसदीस ॥च०॥२४॥

॥ कलश ॥

सवत्त सतरं सँ छवीसै मेर तेरसि दिन भलें ।
 श्री नगर सुखकर लूणकणसर आदि जिण सुपसाउलें
 वाचनाचरिज सुगुरू सानिधि विजयहरष विलास ए
 कहै धर्मवर्द्धन तवन भणता प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२५॥

आलोचना स्तवन

ढाल (१) सफल ससार नी

ए धन शासन वीर जिनवर तणौ,

जास परसाद उपगार थायै घणौ ।

सूत्र सिद्धात गुरुमुख थकी साभली,

लहिय समकित्त ने विरति लहियै वली ॥१॥

धर्म नो ध्यान धरि तप जप खप करै,

जिण थकी जीव संसार सागर तरै ।

दोष लागा गुरु मुखहि आलोईयै,

जीव निर्मल हुवै वख्र जिम धोईयै ॥२॥

दोष लागै तिकौ च्यार परकार ना,

धुर थकी नाम ने अरथ ते धारणा ।

किणहि कारण वसै पाप जे कीजीयै,

प्रथम ते नाम संकप्प कहीजियै ॥३॥

कीजीयै जेह कंदर्प प्रमुखे करी,

दोष ते बीय परमाद सजा धरी ।

कूदता गरवता होई हिंसा जिहा,

दर्प इण नाम करि दोष तीजौ तिहा ॥४॥

विणसता जीव नै गिनर न करै जिको,

चौथौ उट्टीआ दोष ऊपजै तिको ।

अनुक्रमै च्यार ए अधिक इक एकथी,

दोष धरि प्रायचित लेह विवेकथी ॥५॥

ढाल (२) अन्य दिक्स को० रहनी

पाटी कमली नवकरवाली पोथी जोड़,
ज्ञान ना उपग्रण तणीय आसातन कीधी होइ ।
जघन्य थी पुरमढ एकासण आविल उपवास,
अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥६॥

एजो खडित थायै अथवा किहा ही गमाइ,
तौ बलि नव्या कराया दोष सहू मिट जाइ ।
थापना अण पड़िलेह्या पुरमढ तो तपधार,
खिरता एकासण ते गमता चौथ विचार ॥७॥

दर्शन ना अतिचार तिहा परमड्डु जघन्न,
एकासण आविल अड्डिम चिहुं भेदे मन्न ।
आसातन गुरुदेवनी साहमी सु अप्रीति,
जघन्य एकासण थी आलोयण चढती रीति ॥ ८ ॥

अनंतकाय आरभ विनास्या चौथ प्रसिद्ध,
बि ति चौरिन्दी त्रसाया एकासण थी वृद्धि ।
बहु बि ति चौरिन्दीय हण्या बि ति चौ उपवास,
सकल्पादि चिहु विधि दुगुणा दुगुण प्रकास ॥ ९ ॥

उहेही कुलियावडां कीडीनगरा भग,
बहु जलोया मूक्या दस दस उपवास प्रसंग ।
वमन विरेचन कृमि पातन आविल इक एक,
जीवाणी ढोलंता दो उपवास विवेक ॥ १० ॥

संकप्पादिक एक पंचिद्वी उपद्रव होइ,
दोइ त्रिण आठ दसे उपवास आलोयण जोइ ।
बहु पंचिदि उपद्रव पट अठ नें दस वीस,
चिहुं परकारे चढती आलोयण सुणि सीस ॥ ११ ॥

पंचेन्द्री ने दीधै लकड़ी प्रमुख प्रहार,
एकासण अविणिल उपवास ने छठु विचार ।
साध समक्षै लोक समक्षै राज समक्ष,
कूड़ौ आल दीया दुइ चौ षट चौथ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥

दस उपवास ढढाया तेम मराया वीस,
इक लख असीय सहस नवकार गुणौ तजि रीस ।
पख चौमास लागि इक त्रिणदस उपवास,
अधिकौ क्रोध करेंतो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥

सूआवड़ि ना दोष कीया बलि थापण मोस,
बोल्या बलि उत्सूत्र कीया गुरु ऊपर रोस ।
करीय दुवालस वार हजार गुणै नवकार,
मिच्छादुक्कड़ देई आलावौ वार वार ॥ १४ ॥

ढाल (३) बेकर जोडी ताम, रहनी

विण कीधा पचखाण विण दीधां वांदणा,
पड़िकमणै विधि पातरै ए ।

अणोभा नै असिम्हाय तिहा अवघे भण्या,

इक इक आविल आचरै ए ॥ १५ ॥

गठसी नें एकत्त निव्वी आविल,
 भंगे आलोयण इमै ए ।
 एक पाच षट आठ नवकरवालीय,
 गुण नवकार अनुक्रमै ए ॥ १६ ॥
 उपवास भंग उपवास आविल ऊपरा,
 अधिकौ दड वखाणीयै ए ।
 पाचमि आठमि आदि भंग किया बलि,
 फिर ग्रहे पातक हाणीयै ए ॥ १७ ॥
 ऊखल मूसल आगि चूल्हौ घरटीय,
 दीधै अठिम तप करै ए ।
 मागी सूई दीध कातरणी छुरी-
 आविल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥
 जीव करावै जुद्ध रात्रि भोजन,
 जल तरणै खेलण जूऔ ए ।
 पाप तणौ उपदेस परद्रोह चीतव्या,
 उपवास इक इक जूजूऔ ए ॥ १९ ॥
 पनरै करमादान नियम करी भंग,
 मद्य मास माखण भख्या ए ।
 आलोयण उपवास सकपादिक,
 चिहु भेदे चढता लिख्या ए ॥ २० ॥
 वोल्या मिरपावाद अदत्तादान ल्युं,
 जघन्य एकासण जाणियै ए ।
 अति उत्कृष्टी एण जाणि आलोयणा,
 उपवास दस दस आणियै ए ॥ २१ ॥

ढाल (४) सुगुरु सनेही मेरे लाला, रहनी
 चौथे व्रत भागें अतिचार, जघन्ये छठ आलोयण धार ।
 मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टें गुणि लख नवकार ॥ २२ ॥
 परिग्रह विरमण दोष प्रसग, तीन गुण वृत माहे भंग ।
 च्यार शिक्षावृत रे अतिचारै, आविल त्रिण प्रत्येके धारे । २३ ।
 शील तणी नव वाङ्गि कहाय, तिहा जौ लागौ दोष जणाय ।
 त्रिय नै फरस हुआ अविवेकै, इक आविल कीजें प्रत्येके ॥ २४ ॥
 साध अनै श्रावक पोपीध, एकेन्द्री संघट्टें कीध ।
 वीसर भोल सचित जल पीध, दंड एकासण अंवल दीध । २५ ।
 विण धोये विण लूछे पात्रै, एकासण तिम पुरिमढ मात्रै ।
 गई मुहपोती आविल सारौ, तिम ओघै अठ्ठिम अवधारौ । २६ ।
 च्यार आगार छ छीडी राखै, वृत पचखाण करै पट साखै ।
 दोषे मिच्छाढुक्कड़ ढाखै, आलोयण तेह नै अभिलाषै ॥ २७ ॥
 आलोयण ना अति विस्तार, पूरा कहता नावै पार ।
 तौ पिण संखेपे ततसार. निर्मल मन करतां निसतार ॥ २८ ॥
 धन श्री वीर जिणेसर सामी, जसु आगम वचने विधि पामी ।
 जीत कल्प ठाणा अंग आदि, बलिय परंपर गुरु परसादि । २९ ।

॥ कलश ॥

इम जेह धरमी चित्त विरमी पाप आप आलोइ नै
 एकांत पूछै गुरु वतावै सकति वय तसु जोइ नै
 विधि एह करसी तेह तरसी धरमवत तणै धुरै
 ए तवन श्री ध्रमसीह कीधौ चौपनें फलवधिपुरै ॥ ३० ॥

वीस विहरमान जिनस्तवनम्

वदुं मन सुध वइरत माण जिणेसर वीस,
 दीप अढी में दीपै जयवंता जगदीस,
 केवलज्ञान ने धारै तारै करि उपगार,
 किण किण ठामै कुण कुण जिन कहिस्यु सुविचार ॥१॥
 पैतालीस लख योजन मानुष क्षेत्र प्रमाण,
 बलयाकारै आधै पुष्कर सीमा जाण,
 दोइ समुद्रे सोहै दीप अढाई सार,
 तिण मे पनरै कर्माभूमि नो अधिकार ॥२॥
 पहिलौ जवूद्वीप समइ विचि थाल आकार,
 लावउ पिहलउ इक लख जोइण नें विस्तार,
 मोटो तेहनै मध्य सुदरसण नामै 'मेर,
 तिण थी दस विदिसानी गिणती च्यारे फेर ॥३॥
 मेरु थकी दक्षिण दिशि एह भरत शुभ क्षेत्र,
 पाचसै छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र,
 उत्तर खड मे एहवो इरवइ खेत कहाय,
 इण विहुं करमाभूमि अरा छए फिरता जाय ॥४॥
 तेत्रीस सहस छसय चौरासी जोयण जाण,
 च्यार कलाए महाविदेह विपंभ वखाण,
 भरत थी चौगुणो इक एक विजय तणो परिमाण
 एहवी विजय वत्तीस विराजै जेहनै ठाण ॥५॥

मेरु विचै करि पूरव पच्छिम दोइ विभाग,
 सोलह सोलह विजय तिहा विचरै वीतग राग,
 सासतै चौथे आरै तारै श्री अरिहत,
 एहवै महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥६॥

पूरव विदेह विजय पुखलावती आठमी ठाम,
 पु डरीकणी नगरी तिहा श्री सीमंधर स्वाम,
 वप्र विजय पच्चीसमी विजयापुर नौ नाम,
 पच्छिम विदेह बीजौ युगमंधर कीजै प्रणाम ॥७॥

तिम हिज नवमी वच्छ विजय वलि पूरव विदेह,
 नयर सुसीमा त्रीजो वाहु नमुं धरि नेह,
 नलिनावर्त्ता चउवीसमी पछिम विदेह वखाण,
 वीतशोका नयरी तिहा चौथौ सुवाहु सुजाण ॥८॥

ए च्यारेई जिणवर जंबूद्वीप मकार,
 महाविदेह सुदर्शन मेरु - तणै परकार,
 एहवौ जंबूद्वीप महागढ जेम गिरिद,
 खाई रूपै दोइ लख जोयण लवण समद ॥९॥

ढाल २ दीवाली दिन आवीयर, रहनी

दीपड वीजउ दीप ए, धन धन धातकी खड ।

पिहुलौ चिहु लख जोयणे, मडल रूपै मंड ॥१०॥दी०॥

पूरव पच्छिम धातकी, खड गिणीजै दोइ ।

विजय मेरु पूरव दिसै, पच्छिम अचलमेरु जोइ ॥११॥दी०॥

दोड़ भरत दोड़ ईरवें, दोड़ वलि महाविदेह ।
 करमभूमि षट छै इहां, उणहीज नामै एह ॥१२॥दी०॥
 दीप इक इक मेरु नै आसरैं, करमभूमि तीन तीन ।
 निज निज मेरु थी माडिनै, लेखो चिहुंदिसि लीन ॥१३॥दी०॥
 श्रीसुजात जिण पाचमौ, छट्टउ स्वयंप्रभु ईस ।
 ऋपभानन जिन सातमौ, समरीजै निसि दीस ॥१४॥दी०॥
 अनंतवीरिज जिण आठमौ, एच्यारे जिनराय ।
 पूरव धातकीखंड में, महाविदेह रहाय ॥१५॥दी०॥
 पहिला चिहुं जिण नी परइ, विजय नगर दिसि ठाण ।
 तिणहीज नामें अनुक्रमै, विजय मेरु अहिनाण ॥१६॥दी०॥
 नवमौ शूरप्रभ नमं, दशमो देव विशाल ।
 इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण प्रणमुं त्रिकाल ॥१७॥दी०॥
 वारमौ चंद्रानन जिन, पच्छिम धातकी माहि ।
 विचरै च्यारे जिणवरा अचल मेर उच्छाह ॥१८॥दी०॥
 एहवौ धातकीखंड ए, परिदखिणा परकार ।
 अठ लख जोयण वीटीयौ, समुद्र कालोदधि सार ॥१९॥दी०॥

ढाल (३)

कालोदधि नै पैलै पार ए, वीट्यउ चूड़ी जेम विचार ए ।
 सोलै लख जोयण विस्तार ए, दीप पुक्खरवर अति सुखकार ए ॥
 सुखकार पुष्कर दीप तीजौ, तेहनै आधै वगै ।
 विचि पड्यो परवत मानुषोत्तर, मनुषक्षेत्र तिहा लगै ॥

तिण आध करि अठ लाख जोयण, अरध पुष्कर एम ए ।
 तिहा करमभूमि छए कहीजै, धातकीखंड जेम ए ॥२०॥
 आध पुष्कर में पूरव दिसै, मडर नामै मेरु तिहा वसै ।
 पच्छिम विज्जुमाली मेरु ए, इहां किण इतरौ नामै फेर ए ॥
 फेर ए इतरौ इहा नामै, अवर ठामै को नहीं । - -
 इक एक मेरै तीन तीने, करमभूमि तिहा कही ॥
 तिम भरत ईरवतइ विदेहे, नाम सिरखें हेत ए ।
 तिणहीज नामै विजय सगली, सासता ध्रम खेत ए ॥२१॥
 धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इण क्षेत्रां नो मान कह्यौ नहीं ।
 दुगुणा दुगुणै अति विस्तार ए, शास्त्र थकी लेज्यो सुविचार ए ॥
 सुविचार वाकी तेह सगलौ नगर तिमहिज मन गमै ।
 पूरवै पच्छिम जेह जिणदिसि, तेह तिमहिज अनुक्रमे ॥
 श्री चंद्रवाहु भुजंग ईसर, नेमि च्यार तिथंकरा ।
 पूरवै पुष्कर अरध माहे, सरव जीव सुखकरा ॥२२॥
 वइरसेन वंदू जिन सतरमो. श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ।
 देवजसा उगणीसमौ देव ए, जसोरिद्धि वीसम जिन सेव ए ॥
 जिन सेव च्यारे अर्ध पुष्कर, माहि पच्छिम भाग ए ।
 तिहा मेर विज्जुमाल चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥
 चउरासी पूरव लाख वरसा, आउ इक इक जिन तणौ ।
 पाचसै धनुष शरीर सोहै, सोवन वर्ण सोहामणौ ॥ २३ ॥
 काल जघन्ये इम जिण वीस ए, हिव उत्कृष्टै भेद कहीस ए ।
 इकसौ सित्तरि तिहां जिणवर कहै, पाचे भरते जिण पाचे लहै ।

जिण लहै पाचे, तेम पाचे ईरवै मिलि दश हुआ ।
 इक इक विदेह वतीस विजया, तिहा पिण जिण जुजुआ ॥
 एक सौ सित्तरि एम जिणवर, कोड़ि नव वलि केवली ।
 नव कोड़ि सहसे अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ॥ २४ ॥
 इहा भरते ईरवते आज ए, पचम आरै नहिं जिनराज ए ।
 धन धन पाचे महाविदेह ए, विचरै वीसे जिन गुण गेह ए ॥
 गुण गेह दोष अठार वर्जित, अतिशया चौतीस ए ।
 चउसद्वि इद नरिंद सेवित, नमू ते निस दीस ए ॥
 तिहा आज तारण तरण विचरइ, केवली दोइ कोड़ि ए ।
 दुइ सहस कोड़ि सुसाधु वीजा, नमुं वेकर जोड़ि ए ॥ २५ ॥

॥ कलश ॥

इम अढी दीपे पनर करमा-भूमि क्षेत्र प्रमाण ए ।
 सिद्धात प्रकरण साखि भाख्या वीस वइहरमाण ए ॥
 श्रीनगर जेसलमेर सवत सतर उगणतीसै समै ।
 सुख विजयहरप जिणिंद सानिधि नेह धरि ध्रमसी नमै ॥ २६ ॥

—❀—

अष्ट भय निवारण श्री गौड़ी पाञ्चनाथ छंद

॥ दोहा ॥

सरस वचन दे सरसती, एह अरज अवधार ।
 पारथिया पहिड़ै नहीं, उत्तम ए आचार ॥ १ ॥
 हित करिजे मोसु हिवै, देजे वैण दुरस्त ।
 कवियण पिण सुणि नै कहै, सखरौ घणु सरस्त ॥२॥
 गुण गरुऔ गौड़ी धणी, पारसनाथ प्रगट्ट ।
 मन सूधै मोटा तणा, गुण गाता गहगट्ट ॥ ३ ॥

छंद-नाराच

प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध ऋद्धि वृद्धि पूर ए,
 कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धते सनूर ए,
 विजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ घायकं.
 प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक , ४
 गुमान मोड़ि हत्थ जोड़ि देव कोड़ि वग्ग ए,
 अनूप भूप चु प धारि आइ पाइ लग्ग ए,
 पहू वहू सुकित्ति नित्त मव्व सोभ लायकं , प्र० ५
 कुबोह लोह कोह द्रोह मोह माण वज्जियं,
 अनंत कात शात दात रूप मैण लज्जियं ,
 असेस शुद्ध तत्ता जुत्ता सोभ ए अमायकं , प्र० ६

विसाल भाल सुव्विसाल अद्धचंद छज्जियं,
रउह थी रिसाइ जाणि एथि आइ रज्जियं,
सुनैण कंज गंध काज भौहि भौर रायकं प्र० ७

कपूर पूर कस्तूर कुंकुमा सुरग ए,
अरगजा अथगग में रहै गरक्क अग ए,
अछेह दुत्ति गेह देह सव्ववही सुहायकं, प्र० ८

मृदंग दौदौ दौ दप्प मप्प वज्ज ए,
नफेरि भेर भलरी निसाण मेघ गज्ज ए,
तटक्क तान थेइ थेइ लक्ख सुक्ख दायकं, प्र० ९

अष्ट भय नाम दोहा

करि केहरि दव क्रुद्ध अहि, राडि समुद्ध रोग ।
अति बंधण भय अठ टलै, सामि नाम सयोग ।१०।

छ द भुजगी

छहुं रित्तु छाक्यौ भुकंतौ भकोला,
लपक्के विलग्गी अली मालि लोला,
वलेटैं वलाका वली सुंडि दौला,
भरै निज्जरा जेम मदै कपोला, ११

पेहू चालतौ जाणि पाहाड़ तोला,
भलक्कै डलक्कावतो लाल डोला,
इसौ दूठ पूठै पडंता अकोला,
जपता करै नाचि नी मात चोला, १२

इति हस्तिभय

महा सद् सीह अवीहं उदंड,
 भरै फाल आफालतौ पुच्छ मुडं,
 डगें फाडि डाचौ वड वज्ज मुडं,
 महातिक्ख नक्खं रग्गे गोप चडं ॥ १३ ॥
 फुरक्कावतौ मुद्धि फाडत तुंडं,
 ललक्कंत लोला विकट्टं विहड ।
 धणी पास चौ नाम ध्यान धरड,
 टलै श्याल जु मीह होए अहडं ॥ १४ ॥

इति सिंह भय

जले जंगला में जटा जूट जाला,
 प्रणा झाड़ ऊजाड़ में लग भाला ।
 चहू मृग वग पसू पंखि वाला,
 बलंता कमेडा चिड़ा जंतु माला ॥ १५ ॥
 धुखे धूम लग्गे कीया नग काला,
 भलो भाल रुखे टल्या नाहि टोला ।
 बड़े सकटे एण आया विचाला,
 प्रभु नाम नीरैं बुझै तत्तकाला ॥ १६ ॥

इति अग्नि-भय

कलू काल रूपी महा विक्करालं,
 फणा टोप रोपै महाकोप जाल ।

बलक्के बलंतौ चलंतौ करालं,
 जिणै फूंकि सूकै तरु माल डालं ॥ १७ ॥
 हला हाल सलोलियं विक्ख लालं,
 रहै लाल लोचन दो जीह बाल ।
 धरता प्रभू नाम रिहै विचालं,
 सही साप होवै जिसी फूल मालं ॥ १८ ॥

इति सर्प. भय

भिड़ै भूप भूपे अधिकके अटक्के,
 खला हाड तूटै खडगा खटक्के ।
 परा हैवरा पाडि नाखै पटक्के,
 धुरा सिंधुरां कधरा भू धटक्के ॥ १९ ॥
 पडै प्राण संधाण बाणे बटक्के,
 हुकै केइ हाथाल रोसै हटक्के ।
 भला भाल गोलैहु नाले भटक्के,
 तुटै तुड मुडा प्रचंडा तटक्के ॥ २० ॥
 छछोहा सलोहा पडंधा छिटक्के,
 भुक्कै सूर भभेडि नाखै भटक्के ।
 प्रभु नाम लेता इसे ही अटक्के,
 कदे बाल बाको न होवै कटक्के ॥ २१ ॥

॥ इति शुद्ध भय ॥

जतन्ने घणे केइ बैसे जिहाजै,
 अथगो जले आइ कुन्वाइ वाजै ।

घटा टोप मेघा गडडुंत गाजै,
हुवककै तरंगा विरंगाहु वाजै ॥ २२ ॥

लिचा पित्र लागी घडी ताल भाजै,
अहो कोड राखै अठै अम्ह काजै ।

इसे सकटै जे जपैं जैनराजे,
सही पार पामै तिके सुक्ख साजै ॥ २३ ॥

इति जल भय

गड गुवड गोलक हीय होड़ी,
हरस्स खसं उध्रसं गांठि फोडी ।

टलै गोड थी कोड अड्डार रोडी,
महाताप सताप आतंक कोडी ॥ २४ ॥

न होवै कदे कायमै काय खोडी,
सहु आधि व्याधं सही जाइ छोडी ।

जिणंदं नमै मन्न मे मान मोडी,
लहै सो सदा सुक्ख संपत्ति जोडी ॥ २५ ॥

इति रोग भय

अमूछा मलेछा वली मन्न खोटा,
जिया चक्खु चुंचा लुल्या गाल गोटा ।

वली पाघ वाकी लपेट्या लंगोटा,
सहेटा गह्या सच्चला हाथ सोटा ॥ २६ ॥

दीर्ये कोरडा देह दोला दबोटा,
 वदें वोळ वाका भंभं मंत भोटा ।
 पड्या वडिखानै महा दुक्ख मोटा,
 प्रभू नाम थी वेग थायै विछोटा ॥ २७ ॥

इति वदि भय

नमता जिणेशं सदा मन्न रागं,
 सहीअे महा दुद्ध भें अट्ट भागै ।
 रली लोक लक्ख लुली पाय लागं,
 दिसो दिस्स मांहे जसू जस्स जागै ॥ २८ ॥

॥ कलश ॥

परत्तख जिणवर पास आस उल्लासह अप्पण
 विविध जास गुण वास दासचा ढालिद कप्पण
 चेंण ढेंण जसु चरण ईति अति भीति निवारण
 लील लाछि लख गान विमलकीरत्ति वधारण
 ढिण इद जेम दीपत दुत्ति, विमलचद मुख छवि वरण
 दौलत्ति विजयहरपा दीयण, धरममीह ध्याने धरण ॥२९॥

॥ इति अष्ट भय निवारण श्री गौडी पार्श्वनाथ छद ॥

श्री जिनचद्रसूरि अमृतध्वनि

रतन पाट प्रतपै रतन जाणड सकल जुगन
गच्छनायक जिणचद गुरू सोभन तप जप सत्त ।१।

चालि—

तौ तप जप सत्त तेम तपत्त तेज वखत्त तरणि तग्वत्त नृणमम चित्त
त्तजि मदि चित्त त्तरत चरित्त त्ति किय

हित्त त्तिनि गुपत्त त्तिदुय सुमत्त
त्तेवडि नत्त त्तजित मिद्धत्त त्तत्त सिद्धत्त त्तारित्तजंत त्तरक जुगन्त
त्तरजित धुत्त त्ततु दीपत्त त्तुल रतिपत्ति न्तासन मत्त त्तमत दुग्गित्त
त्तिभुवन कित्त त्तवत्त कवित्त त्तसु अमृतध्वनि धूममी कहै सार
१ रतन०

इति श्री वर्त्तमान गुरू स्तवना रूप ५० तत्ते ऋड करी नड
महा अमृतध्वनि जाणिवी ॥

उपकार प्रपद

राग—वृ दादनी सारग

करणी पर उपगार की

सव करणी मे अधिकी वरणी, तरणी यह संसार की । क० ।१।

कीनें गुण ऊपरि गुन करिवौ, वात सुतौ व्यवहार की ।

पिण विनु स्वारथ करण भलाई, अपने जीउ उद्धार की । क०।२।

सुकृती पात्र कुपात्र न सोचे, धरै उपमा जलधार की ।

साची कहिय सुगुरू धूम सीमा, सव शास्त्रनि कै सार की । क०।३।

सप्ताक्षरी कवित—

गिही केकि के अगिह केकि के गिह गिहि कुकहि ।
 केकि को क ख ग घूक हहा हूहू खगहु क्कहि ।
 के गहि गह गहि कोह खँ गगा है खग खगाहि ।
 के कुग्गह गह गहे अग अग्घै अगि अग्गहि ।
 के हक्क अहक्क अगाह गहै गेह खेह कंकह गुहा ।
 कहि कुक्ख खूह खुह अग्गि की कहुं केही अक्कह कहा ?
 अक्कुह विसर्जनीया ना कंठ इणे हीज साते अक्षरे कवित्त छै
 पेट नाट ऊपरा कह्यौ छै ।

गूढ रूप आशीर्वाद सर्वथा

धोरी के धनी के नीके हार कौ अहार सुत,
 ताही के नगर गयौ जाके दस सीस है ।
 मबे लोक जाके सुत ताके नाम ताकी सुता
 वाजी मुख भूपन वैठी निसि दीस है ॥
 राजा लावै रँत लार ताकी साखा की सिंगार
 आगे धाई धरी देखि उपजी जगीस हैं ।
 भाह की धुजावे रँन तिन्हें पूछ्यौ जोउ वन
 ताकी नाम चातुरी सा मेरी भी आसीस है ॥१॥

— १०७३ —

मुखतँ इक बोल कह्यौ न गिणै कोऊ धूनि बकं तो गुणी गहरो ।
 हलकं कहै बात न पावत न्याउ जवाब के जोर खडो बहरौ ॥

निसि मौन सो बंठो तके कहै ऊघत सूनौ ही सोर करै सहरो ।
न लहै गुण के कोऊ कहै ध्रमसी जगि आज लवारिन को पहुरौ ॥१॥



समस्या—दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है ।

सवैया इच्छतीसा

एक एक तैं विसेप पंडित वसैं असेप,
रात दिन ज्ञान ही की वात कुं धरतु है ।
वैदक गणक ग्रंथ जानै ग्रह गणन पंथ,
और ठौर के प्रवीण पाइनि परतु है ।
करत कवित सार काव्य की कला अपार,
श्लोक सब लोकनि के मन कुं हरतु है ।
कहै ध्रमसीह भैया पंडिताई कहु कैसी,
दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है ॥ १ ॥

समस्या—नैन के करोखे वीच भाखता सो कौन है ।

हरिसो सकेत करी राधिके विलोके मग,
असे आई वैठी सखी एक ही विछौन है ।
राधे बोली सुनि खेल मोसु नैन वाद जोवै,
अनिमेष दो मै हारी साई दासी हौन है ॥
एतैं सखी पीछैं हरैं हरैं आए हरी अति ही,
अति ही निकट ह्वैं कैं तकैं गहि मौन है ।
बोली सखी राधे सुनि मोसुं कहि साच वाच,
नैन के करोखे वीचि भाखता सो कौन है ॥१॥

सर्वोया सर्वतोमुख—गोमूत्रिका बध

अति	सत	गुणी	नर	चित्त	भणी	सुख	देण	सदा	जिण	चद	जती
मत्ति	वत	मुणी	सर	कित्त	घणी	मुख	वैन	मुदा	घन	दद	हती
प्रति	पत	धनी	पर	हित्त	जनी	सुख	चैन	बिदा	जन	वृद	पती
छति	वत	मुनी	दर	भित्त	हनी	दुख	रैन	छिदा	दिन	इद	दुती

नारी कुञ्जर जाति सर्वेयागं

शोभत घणी जु अति देह की वशी है दुति,
 सूरिज समान जसु तेज मा वदाय जू
 भूपति नमें है नित नाम 'कौ प्रताप पहु,
 देवत तही ही दुख नाहि है कदाय जू ।
 पूरण बडेई गुरा सेव के करे थै सुख,
 वदत तही ही वहलोक समुदाय जू ।
 देत है बहूत सुख देव सुगुरुहि नित,
 दोऊ कौ नमें है धमसीह यौ सदाय जू ।

अन्तर्लापिका

आदर कारण कौन भूप कहा रोपि रहैं क्रम
 न रहै निश्चल कौन कौन त्रिय नयने उपम
 करै विप्र कहा वृत्ति स्वामि वच को न उथापै
 कौन नाम समुदाय कौन तिय पुरुपइ व्यापै
 वसती विहीन कहियै कहा सवहि कहा राखत जतन
 धरिजै अखंड ध्रममी कहै 'धरम एक जग मे रतन' १

—:०:—

१ यह पूरा पढ़ने से "इकतीमा सर्वैया" है, बड़े अक्षरो को छोड़ देने से "भवैया तेवीना" हो जायगा ।

शीलरास

ढाल—हु बलिहारी जादवा, ए देशी

शील रतन जतने धरो, खंडी ने मत^१ आणो खोड कि ।
भूषण निरदूषण भलौ, होइ^२ नहीं कोइ इयै री जोड^३ कि ।१।शी.
शील रचे मन शुद्ध सू, परहा तेह पखाले पाप कि ।
कुल नै पिण निरमल करै, ओलखीयौ तिण आपो आप कि ।२।
सुकृत तिणै वलि संचीयौ, सहु जग मे पामै सोभाग कि ।
दुरगति दुख दूरें दलै, अइओ एहना विरूढ अथाग कि ।३। शी०
मुशकल करमे मोहनी, वार व्रता मा दुष्कर वभ कि ।
करणे जीह मन त्रिकरणे, दमणा एदोहिला^४ निरदभ कि ।४।शी.
पर त्रिय संगत पाडई, सत्तम व्यसन कहीजै सोइ कि ।
उडी मति आलोचज्यो, हाणि घरे पर^५ हासौ होइ कि ।५। शी.
मेरू जिता^६ दुःख मानियै, सुख तौ मधु ना धिदु समान कि ।
सुरगुरू विद्या (धर) सारिखा, मानिस तौ बैसीस विमान कि ।६।
मत विपयारस माचज्यौ, वाचेज्यौ एहवा गुरू बैण कि ।
द्रह्वी नै हित दाखवै, साचा तेह कहीजै सैण कि ।७। शी.
विपय तणा फल विप समा, ए बेऊ नही सम अधिकार कि ।
धिप-इक वेला दुख दीयै, विषय अनंती वार विचार कि ।८।
पुन्यै नरभव पामियौ, भरम्या विपय म राचौ भोल कि ।
काग ऊडावण कारणै, नाखौ मत थे रतन निटोल कि ।९। शी.

कनक तणौ देहरौ दसी, कंचण नी वलि आपै कोड कि ।
 कष्ट-तनी किरिया, हँ नही सील तणी ते होड कि ॥१०॥ शी.
 पालै शील भली परै, टालै दूपण परहा तेम कि ।
 बखाणे सहू को वली, हेक रतन नै जडीयौ हेम कि ॥११॥ शी
 निरमल नयणै निरखीयै, वयण वदं नही मयण विकार कि ।
 सुर सेवा करै सयण ड्युं, शील रयण थी अधिकौ सार कि १२
 सोहै मनुप सुशीलीयौ, कुसीलीया री शोभन काड कि ।
 कोड रीस मता करै, सीख भली साची कहिवाइ^१ कि ॥१३॥ शी.
 ललना सुं लुवधो थकौ, लोपि गमावै लज्जा लीक कि ।
 जायै धन पिण जूजूऔ, नीर रहै नहि फूटी नीक कि ॥१४॥ शी.
 पुरप भला स्त्री पापिणी, पापी पुरप नै स्त्री पुन्यवत कि ।
 मत^२ एकात म धारिज्यो, परणामे सहू फेर पडंत कि ॥१५॥ शी.
 कष्ट^३ धन भेलौ करै, भगड़ा भाटा करि करि भूठ कि ।
 खरचै नही धरम खेत मे, मानवन्ती नै द भर मूठ कि ॥१६॥ शी
 की कम करैडे कूकरी,^३ मुख नौ भरते मास मसूढ कि ।
 समन हुवै ते म्वाद् मै, माहिली हानिन जाणै मूढ कि ॥१७॥ शी
 अचगुण कोड न अटकलै, मेल करावे तिण सु मेल कि ।
 गुग्जन म्युं धारै गुसौ, अवसर नाखै ते अवहेल कि ॥१८॥ शी
 महिला रइ मगति मिल्याँ, मूखम जीव मरइ नव लाख कि ।
 भगवतइ इम भाखीयौ मूत्र सिद्धाते लाभै साख कि ॥१९॥ शी.

१ सुखदाड, २ मन, ३ हाड कस सूरडै कूकर ।

भरीयै रू तसु भुंगली, तातै सूए रे दृष्टात कि ।
 हिंसा जीवा री हुवै, एहवा विषय कह्या अरिहंत कि ।२०। शी.
 त्यागी विषय तणा तिके, ब्रानी तेह गिणीजै गान कि ।
 अथिर गिणीजै आडखौ, बरतै जेहवो संध्या वान कि ।२१। शी.
 जेहवी चंचल वीजली, पीपल नौ वलि पाकौ पान कि ।
 ठार रो तेह न ठाहरै, वैश्या नौ जिम नेह विधान कि ॥२२॥
 कीजै मद ते कारिमा, जल अंजलि नौ देखत जाय कि ।
 करवत बहती काठ में, दीसैं इण विध आयु रदाय कि ।२३। शी.
 सुखडाई संसार में, साचो नहीं कोइ धर्म समान कि ।
 एहना भेद अनेक छै, पिण सहु माहे शील प्रधान कि ।२४। शी
 ज्वलन हुवै जल जेहवौ, सरप हुवै फूलमाल समान कि ।
 मीह हुवै मृग सारिखौ, सीलैं सहु वाता आसान कि ।२५। शी
 भूठो गय ते हय जिसौ, हालाहल ते अमृत होइ कि ।
 जोरावर अरि मित्र ज्यं, कष्ट करै नहीं सीलैं कोय कि ।२६। शी.
 परिसिद्ध नाम प्रभात नौ, ल्यै सहु कोइ मन सुध लोक कि ।
 पभणुं केय परम्परा, वलि शास्त्रा थी केइ विलोक कि ।२७। शी.
 आदिसर नी अंगजा, ब्राह्मी शीलवती वाह वाह कि ।
 मुन्दर रूप सपेखि नें, चक्री भरत धरी चित चाह कि ।२८। शी.
 साठि सहस वरसा लगै, तप आविल करी तोड़ी काय कि ।
 शील पाल्यौ तिण सुन्दरी, कीरति आज लगै कहिवाय कि ।२९। शी.
 शुक्ल किसन पख ढपती, शील अडिग नी एकण सेज कि ।
 सहस चौरासी साधु थी, आदिसर परसास्या एज कि ।३०। शी

बहु जम चन्दनवालिका. लघु हिज वय जिण चारित्र लीध कि ।
 साधवी नहम् छतीस में, कीरती वीर जिणेसर कीध कि ॥३१॥
 भीना चीर मुकायवा, गईय गुफा मे राजुल रंग कि ।
 रहनेमे काउसंग रह्यै, अवलोक्री क्ह्यौ सुन्दर अंग कि ॥३२॥
 अकुम (ना) वसि गज आणीयौ, गीधो राजमती उपदेश कि ।
 निपट प्रमत्त्या नेमजी. लाभै नहीं दूषण लवलेस कि ।३३। शी.
 चीर दुर्वाधन खाचीया. पाचाली सुं करीय उपाय कि ।
 सौ अट्टोन्नार साउला. प्रगट्या नवनव शील पसाय कि ।३४।शी.
 देव उपाडी दौपदी, आणी धातकीग्वंड आवास कि ।
 पदमोत्तार नृप प्रारथी, छेडे मत मुक्ते छ मास कि ॥३५॥
 क्रीधी वाहर किसन जी, पदमोत्तार पिण लाग्यो पाय कि ।
 पाचे पाडव नी प्रिया. पाम्यो बंछित शील पसाय कि ॥३६॥
 चित चौखे रामचंदनी. कौशल्या माता सुखकार कि ।
 कष्ट टल्या बंछित फल्या, सतीया में सीलै सिरदार कि ॥३७॥
 रावण रं कवजै रही. सीता रो किम रहियो सील कि ।
 लोक वोक के लागुआ, ए परपूठ करै अवहील कि ॥ ३८ ॥ शी.
 पावक कुण्ड माहे पड़ी, जल शीतल मे न्हाई जेम कि ।
 सह्यु कह्यै धन धन ए सती, हुई निकलंक जाणे हेम कि ।३९। शी.
 हाथी जेहनं अपहरी जिण वन मे खामी जीवराशि कि ।
 वेऊ सुत नृप वृम्भिया, साधवी पद्मावती सु प्रकाश कि ।४०।
 साते चेडा नी सुता, शिवा सुज्येष्टा जेष्टा सार कि ।
 पद्मावती प्रभावती, चेलणा मृगावतीय चितारि कि ।४१। शी.

मृगावती मुक्त नै मिलै, चढि आयौ नृप चढप्रद्योत कि ।
 हिकमति करि हारावीयौ, पाल्यौ नै उदयनै पोत कि ॥४२॥शी०
 सुलसा सखरी श्राविका, निंदे पूरव करम निदान कि ।
 सीलै सुर सानिध करै, सु पै आणि जीवत सतान कि ॥४३॥शी०
 एक जती री आखि मे, तृण जीभें करि काढ्यौ तेह कि ।
 मेटी पीड़ा मुनि तणी, सतीय सुभद्रा धर्म सनेह कि ॥४४॥शी०
 कूडौ ही लोके कह्यौ, आलिंगन इण दीधउ अक कि ।
 चालणीयें जल^३ सींचता, कीधी शीलै ए निकलक कि ॥४५॥शी०
 देसवटौ जूए दीयौ, नीकलीयौ स्त्रीय सु नलराय कि ।
 सूती द्वादती तजी, शीले पग पग कीधी सहाय कि ॥४६॥शी०
 अति गरवी ने अविरति, जिण तिण सु जोडावै जुद्ध कि ।
 तिणहिज भेंव नारद तिरै, शील तणौ एक गुण मन शुद्ध कि ४७
 कुमरी मल्ली धन कही, जिण बूझवीया पट राजान कि ।
 पाल्यौ शील भली परै, सूत्र ज्ञाता में वरण समान कि ॥४८॥शी०
 सुघरणी श्री कुंभरायनी, मल्ली कुमरी तणी ए मात कि ।
 शील प्रभाव प्रभावती, वरतै सतीया माहि विख्यात कि ॥४९॥
 दूपण अभया नै दीयौ, कहै राजा द्यौ सूली कील कि ।
 सिहासन कीधौ सुरै, सेठ सुदरसण धन्य सुशील कि ॥५०॥शी०
 अरि (ना) कटक ते अटकीया, एहनो वल कोइ अगम अथाहकि ।
 शील मत्रै मंत्रीसरै, साचौ कहीयें सील सन्नाह कि ॥५१॥शी०
 साची सत्यभामा सती, रुक्मणी पिण तिम चढती रेख कि ।
 सलहौ मलयासुन्दरी, शील रतन राख्यौ सुविशेष कि ॥५२॥

सुरसुन्दरी ने श्रीमती, गुणसुन्दरी पिण अधिकी ज्ञान कि ।
 नित नित भयणरेहा नमुं, धरिजै अंजनासुन्दरी ध्यान कि ५३
 दूषण संख राज दियौ, कर वध्या दीठा केयूर कि ।
 कलावती कर कापीया, निरख्या तो बल ने ए नूर कि ॥५४ शी०
 भयणा श्रीस्थूलिभद्र नी, जखा जखदिन्ना सु प्रमाण कि ।
 भूआ भूअदिन्ना बलि, सयणा वयणा रयणा जाण कि ॥५५॥
 कोश्या केर नाटक किया, मुनि थूलिभद्र रह्यो ज्युं मेर कि ।
 आया गुरु ऊभा हुआ, दुक्करकारक कह्यो दो वेर कि ॥५६॥
 एह अदेखौ आणि नै, सीह गुफावासी ते साध कि ।
 चूकौ भटके चौमास मै, आवी नें खाम्यो अपराध कि ॥५७॥
 आतल नें पिण औहटे, बलि संवाहै काठी वाग कि ।
 तारै आपणपौ तिको, सहु माहे पामे सौभाग कि । ५८ । शी०
 शील खंड्यौ तिण स्युं कीयौ, दावानल गुण वन नै दीध कि ।
 कूट्यौ पडहौ कुजस नौ, कुल मै मसि नौ टीलो कीध कि ॥५९॥
 पाणी दीधौ पुण्य नें, सहु आपढ नें दीध सकेत कि ।
 दुख लियो काइ उदीर नै, चतुर हुवै तौ तु चित चेत कि ६०॥
 शिवपुर द्वारै तिण सही, भोगल दीधी काठी भीड कि ।
 सहु देख तेहनै सामट्टा, नित आवै जिम पखी नीड कि ॥६१॥
 अवगुण कुण कुण आखीयै, खड्या शील पडे दुख खाण कि ।
 पाले तेह पुण्यात्मा, बिलसै सहु सुख ए जिण वाणि कि ॥६२॥

जिन शासन धन जाणियै, आगर धरम रतन नौ एह कि ।
 ब्रह्मचारी हुआ बड बडा, त्रिकरण शुद्ध प्रणमीजै तेह कि ।६३।
 वरतै वीकानेर मे विजयहरप जसु लील विलास कि ।
 बुरि ध्यायौ धर्म ध्यान नौ, श्री धर्मसीह रच्यौ शीलरास कि ।६४

इति श्री शीलरास सम्पूर्णम् । सवत् १७७७ वर्षे
 मिति फागुण सुदि २ दिने श्री विक्रमपुर मध्ये
 पडित सुखरत्नेनलिपी कृत ।
 (पत्र ३ जयचदजी भंडार)

श्रीमती चौढालिया

दीहा

खीर खाड मिलीया खरा, घृत विण न वणं वात,
तिम इहा चार प्रकार मे, वरणु शील विख्यात, १
शीले सुर सानिध करै, शीले लील विलास,
शीले दुरगति दुख टलै, शीले पामै शिव वास, २
ते ऊपर सुणजो सहू, श्रीमति ना दृष्टात,
शील राख्यो जतने करी, ते हिवै सुणजो तंत, ३

ढाल (१) चौपई

इणहिज दखण भरत मभार, अग्देश आरज आचार,
धण कण कचण रीध अपार, वसतपुरि अलका अवतार, १
प्रवल तेज प्रताप पडूर, शत्रुदलन तिहा राजा सूर,
तिण राजा रे जीव समान, मतिसागर मुहतो प्रधान, २
सार पुरि नि करै सभाल, चंद्रधवल नामै कोटवाल,
चतुरा जासु एकज चित्त, सुन्दरदत्त नामे प्रोहित, ३
बहु व्यापार वणो वाजार, गढ मढ मढिर प्रौल प्राकार
उत्तम जन तिहा वसे अनेक, वसतपुरि नगरी सुविवेक, ४
हिव सुन्दरदत्त प्रोहित तणौ, श्रीदत्त मित्र अछै हित वणौ,
तेहने नार अछै श्रीमती, शील गुणे करि सीता सती, ५

सेठ जरै परदेशे जाय, प्रोहित नै घर दीयो भोलाय,
 जेहवो राखै हेत सदीव, देह दौय जाणै इक जीव, ६
 एक दिन श्रीढत्त सेठ विचार, परदेशे चाल्यो व्यापार,
 तेड़ी प्रोहित ने कहै तेह, तुम सारु छै माहरो गेह, ७
 घर की घणी भोलावण दीध, सेठ तिहा थी कीधी सीध,
 प्रोहित आवै करै सभाल, को न सकै कर बाको वाल, ८
 सुखे रहे नारि श्रीमति, पालै शील सदा शुभमति,
 प्रोहित दीठी रूप अमोल, कहिवा लागो एहवा बोल, ९
 हुं प्रोहित माहरो कायदो, मोसु मिल ज्यु हुवै फायदो,
 तुम प्रीतम जे माहरो मित्त, तु हिवै कोइ न मेलै चित्त, १०
 श्रीमति उत्तर थाप्यो सही, तमने एहवो करवो नहीं,
 मोटा ते इम न करै मूल, सा (य) र थिकी कीम उडै धूड, ११
 दिवी भोलावण तुम नै घणी, प्रदेशे चाल्यौ मुक्त धणी,
 घर हुंती किम उठै धाड, चीभडला किम खायै वाड, १२
 प्रोहित कहै मुक्त वचन उवेख, धेठि होइ सहि करे द्वेष,
 हिवे ताहरौ घर जातो देख, इण बात मे मीन न मेख, १३
 दूहा—श्रीमति मने जाण्यो सही, खिणि टालु एक वार,
 पहिलै पोहरै आवजो, रात गया ततकाल, १
 सतोष्यो प्रोहित वचन, निज घर बैठो आय,
 शील राखण नं श्रीमती, एहवौ करे उपाय २

ढाल २—अलबेला नी

कह्यो जाय कोटवाल नै रे लाल तूँ छै पुर रुखवाल सुविवेकी रे
 प्रोहित की मत्त पातकी रे लाल जोरे करैय जंजाल सु० १

सीले निर्मल श्रीमती रे लाल करि बुध बल प्रचंड सु०
 जोयजोये इण भात सुं रे लाल राखे सील सुचग सु० २
 कहै कोटवाल चिंता किसी रे लाल ए नाखिस अवहेल सु०
 प्रोहित रहसी पाधरो रे लाल पिण तुं मोसुं मन मेल सु० ३
 सती कहै छै वातड़ी रे लाल नहि छै ताह न लाग सु०
 पाणी थी किम प्रगटै रे लाल ऊनी बलती आग सु० ४
 मोसुं ताण मती करो रे लाल कह्यो इम कोटवाल सु०
 सती कहै तमे आवजो रे लाल बीजे पहरु विचाल सु० ५
 तिहा थी आवि उतावली रे लाल कहै मुता नै एम सु०
 राजा धुर धर थानके रे लाल कह्यो अन्याय हुवै केम सु० ६
 कोटवाल कुमारगी रे लाल हु नांखिसु उखेड़ सु०
 रूपे मोह्यो मुंतो कहे रे लाल तुं मुझ ने घर तेड़ सु० ७
 सू बोलो छो कहै सती रे लाल सगला सरिया काज सु०
 अमृत थी विप ऊपजै रे लाल आयो कलजुग आज सु० ८
 मु तो कहै बोलो मती रे लाल सो वाता एक वात सु०
 तीजे पहरु पधारजो रे लाल इम कहि गई असहात सु० ९
 आवी राजा ने कहै रे लाल मुता मे नहिं माम सु०
 कहै छै तुझ घर आवसुं रे लाल सुं कीजे हिवै साम सु० १०
 राजा रूपे रीकियो रे लाल रागे कहे इण रीत सु०
 मुंतो सु मुझ आगलै रे लाल मुझ नै कर तुं मीत सु० ११
 भूप भणी कहै सती रे लाल धरती खावा धाय सु०
 तुमे छो प्रजा ना पिता रे लाल एह करो किम अन्याय सु० १२

राजा हुवै सहुनो धणी रे लाल मत तुं वचन उथाप सु०
चउथे पहरै रातनै रे लाल आविजो थे आप सु० १३
करि सकेत जुदा जुदा रे लाल आवि आपनै गेह सु०
शील राखण नै श्रीमती रे लाल जौयजो करस्यै जेह सु० १४

दूहा

सती कहै ते वारता, पाडोसण नै तेड़,
च्यार नगर ना थंभ ते, मुंके नहीं मुक्त केड़, १
कूड़ो कागल ले करि, रोती देती राड़,
तूं आए निशि पाछली, कूटे मुक्त किमाड़ २
इम सिखावी तेहनै, मोटी सक्की मंजूस,
च्यार भखारी तेह में, कोड मति जाण्यो कूड़ ६
इण अवसर संइया थई, आथम्यो जब सूर,
नेह सहित नि (स) ज थयो, तो प्रोहित नवले नूर, ४

ढाल (३)—नवकार री

वस्त्र आभरण अमोल तंबोल सजाई चूर,
हरखि आयो सति घरे हसतो ऊभो हजूर ॥१॥
कूडै मन आदर करै तेह सजाई लीध,
दासी ने सनकारि सिखावी सगलो सिधो दीध,
भोजन पान सजाई करता वेला कीध,
वाधी रात पड़ी छै आकुल थाओ म सीध ॥२॥
वीजे पहोरे आयो आय वजायो वार,
हुं कोटवाल उघाड़ किमाड़ म लावो वार ।

प्रोहित कहें जाण्यो छै एणै मुझ विकार,
 तो आयो इण वेला कीजे कवण विचार ॥३॥
 सतीय भणी कहें प्रोहित माहरा वाप नो सूंस,
 तुम उपगार गिणीस छिपाय तुं मुझ नै तिण मंजूस,
 तिण मजूस मे एक भखारै घाल्यो ठूस,
 सबलौ तालो दीधो सरव रही मन हूस ॥४॥
 हिवै कोटवाल नै माहे लीधो दीधो बहुमान,
 नवी सजाई करवा माडी भोजन पान ।
 फिरता विरता आवी रात गमाई ग्यान,
 तीजे पहुरे वारै बोल्यो प्रधान ॥५॥
 साद ते अटकलीयो हलफलियो कोटवाल,
 मुझ ने जाणि मुंहते कुड करी ततकाल ।
 हिवै किहा जाऊ कै थी धाड बोली बाल,
 बैसि रहो भखार नी बीच मंजूस विचाल ॥६॥
 तिहा बलि तालो दीधो लीधो मुंहतो माहि,
 अधिक भगत करै पिण ऊपरले मन उच्छाह ।
 जिम तिम रात गमावै वात घणी आगाह,
 वारणै राजा बोल्यो चउथे पहुरै चाह ॥७॥
 मंत्री जाण्यो इण वेला नृप आयो आप,
 मुझ करतूत तिहां थी वाणी पुरो पाप ।
 मुझ संताड़ि हिवै नहिं बीजी काइ टाप,
 तीजै घर घालि दीयो तालो टाल सताप ॥८॥

ऊपरलै मन हुंतै माहे दुलायो राय,
पग धोवावै पाणी ल्यावै ज्युं निशि जाय ।
इण अवसर आफलती रोती वारणै आय,
पाडोसणीं कीमाड ने कूटै करि हाय हाय ॥६॥

कूकै पाडोसण हलफली खोल किमाड
ताहरा पति ना कागल माहे मोटी धाड
राजा कहै सु कीजै पहिली मुक्त नै छिपाय
चौथे भखारै घाल्यो तालो दीध जडाय ॥१०॥

आसै पासै लोक मिल्या तेह निसुणी कूक
कूडै चित्त सती पण रोवै प्रीय गयो मुक्त मूक
जडीया पेई मा च्यार जणा जाणै मामै चूक
काड आया हिवै केम निकलम्या रहिस्या मूक ॥११॥

दूहा

इतरै सूरज ऊगीयो, प्रगट थयो परभात,
सेठ तणी सभलावणी, करती सगले वात, ॥१॥

आरण कारण करण ने, सगला मिल्या सब कोय;
मुंओ सेठ अपूतीयो, सुणीयो राणी सोय, ॥२॥

माल करावो खालसै, राजा ने कहो जाय,
भूपत किहा लाभै नहीं, जोयो सगले ठाय, ॥३॥

राजा मुंहतो नहिं घरे, तिम प्रोहित कोटवाल,
किण हिक् मोटा कामवश, गया होसे ततकाल ॥४॥

राणी जाण्यौ हुं हिज हिवै, मंगाची ल्युं माल,
 मूंक्या प्यादा आपका, साथे देई हमाल ॥६॥
 सेठाणी कहै माहरै, सघलै घर रो सार,
 वीजो काइ जाणुं नही, इण मंजूप मकार, ॥६॥
 हमाले आणी हिवै, मोटि निउं मंजूस,
 राणी जाणै सार ते, ल्युं वहिलेरो लूस ॥७॥

ढाल (४)—धरम आराधीयर, ए देशी

तालो खोलावै तिसै ए, ऊभी राणी आप,
 पहिला प्रोहित प्रगट्यो ए, वहिलो गयो संताप, १।
 हिवै इचरज थयो ए, जोयजो करम संजोग,
 विपयारस वाह्या थका ए, विगडै दोनुं लोग, २।
 कहै राणी तें सुंकीयौ ए, हसिवा लागी हेव,
 प्रोहित कहै हसजो पछे ए, देखो वीजा देव, ३।
 जितरै वीजे वारणै ए, नीकलियो कोटवाल,
 राणी कहै ओ काइ ए, करवी थी संभाल, ४।
 म्हा विण चौकी कुण करै ए, कहै कोटवाल निदान,
 ततखिण तीजा ठाम थी ए, प्रगट थयो परधान ५।
 हस राणी कहै स्युं हुचो ए, दफतर थारै हाथ,
 मु तो कहै मनै आवणा ए, राजा जी के पास, ६।
 तालो चौथो खोलता ए, पोते प्रगट्यो राय,
 माथें ओढै ओढणा ए, लोका माहे लजाय ७।

मांहो मांहे मीटे मिल्या ए, मान महातम खोय,
 पछाताप ते अति करै ए, हुणहार जिम होय ।८।
 भूपति प्रमुख सको भणै ए, श्रीमति नै साबास,
 वैरी घाव वखाणीये ए, राख्यो शील सुवास, ।९।
 तेड़ी राजा तेहनें ए, सखरो दै सतकार,
 श्रीमती तुं मोटी सती ए, नाम थकी निस्तार ।१०।
 वसत्र आभ्रण दीया घणा ए, वहनी नाम बोलाय,
 पोते नृप पगे लागने ए, निज अपराध खमाय ।११।
 गाजै वाजै हर्ष सु ए, पहोंचावै नृप गेह,
 सहु लोक मे जस थयो ए, धन धन श्रीमति एह ।१२।
 नगरी माहि बहु हुवो ए, जिण धरम नो उद्योत ।
 सुध शील पाल्यो थका ए, श्रीमति पर वाधै ज्योत ।१३।
 कितरो काल गया थका ए, आयो तसु भरतार,
 शील प्रसादे सुख लह्यो ए, वरत्या जय जयकार ।१४।
 अन्य दिवस गुरु आविया ए, धरमघोप अणगार,
 श्रीमती संजम लीयो ए, जाणी अथिर ससार, ।१५।
 व्रतधारी श्रावक हुवा ए, राजादिक बहु लोग,
 पुन्न तणे परसाद थी ए, थाये सगला थोक, ।१६।
 सूध साधवी श्रीमती ए, सुर पद पाम्यो सार,
 महाविदेह में सीभसी ए, एक लहसि अवतार ।१७।
 सीले सुख सदा लहै ए, सीले जस सोभाग,
 धरम थकी कहै धरमसी ए, सफल फलै तसु आस ।१८।

इति श्रीमती चौढालिया सम्पूर्णा

[स्वामी नरोत्तमदास जी के सग्रह से]

श्री दशार्णभद्र राजर्षि चौपई

वीर जिणेसर वढ ने, प्रणमूं गौतम पाय,
 एहनो सासन आज ए, सहु जीवा सुख थाय ।१।
 विधि सु करता वंदना, धरता मन सुद्ध ध्यान,
 लहिये सुख इह लोक ना, परभव मुक्ति प्रधान ।२।
 वादंता श्री वीर ने, मन थी छोड्यो मढ,
 इन्द्र प्रशंस्यो आपथी, भलो दसारणभढ ।३।
 मदहरसूत शिवधरम मे, पेखी तिण प्रस्ताव,
 दसार्णभद्र कीध दढ, भगवत ऊपरि भाव ।४।
 भाति भाति दीठी भली, गुण अवगुण ह्वै ज्ञान,
 भली वस्तु सहु को भजे, निगखी तजे निदान ।५।

ढाल (१)—कपूरहुवे अति उजलो रे, ए देशी
 सस्त्रन्ध ए तुम्हे साभलो रे, कारण मूल कहाव,
 अधिक दशार्ण आढर्यो रे, भगवंत ऊपरि भाव ।१।
 सुगुण नर ए सुणिज्यो अधिकार
 साभलिता थासी सही रे, आगें लाभ अपार, सु०२।
 देश सहु मे दीपतो रे, वारू देश वैराट,
 सहु को लोक सुखी सदा रे, वरतें निज कुल वाट, ।३।
 मोटो एक तिण देश मे रे, गिणजे धनपुर गाम,
 धन धाने धीणे करि रे, ठावो निरभय ठाम । स० ।४।

मदहर सुत मणिहारीयो रे, वसे तिहा सुखवास,
 सखरो आप सुमारगी रे, त्रिया कुशीला तास । स०१५।
 कोइ क तिहा कणवारीयो रे, मनरो तिण सु मेलि,
 आवै छानो अवसरे रे, करिवा तिण थी केलि ।स० १६।
 उणही ग्रामे एकदा रे, मोटे चोहटें माहि,
 नाटिकीया नाचै नवा रे, आवें लोक उमाहि ।स०१७।
 किणही नाटिकीये कीयो रे, नारी रूप नवल्ल,
 भाति भाति खेलें भलो रे, अदभुत कला अवल्ल ।स०१८।
 तेहवें ते मदहर त्रिया रे, देखण आवी दौडि,
 नटवी रूप निहाल ने रे, ठिक न रह्यो दिल ठोडि ।१।
 उण रा साथी आगलें रे, तेह त्रिया कहें ताम,
 मुझ घर आवी जो मिलें रे, चू तुहने सो ढाम ।१०।
 तुरत बात मानी तिणें रे, नाटिक परो निवेडि,
 नाटिकीयो तिण नारिने रे, आयो करिवा केडि ।११।
 त्रिया रूप नटवो तिको रे, आगण उभो आय,
 मदहर त्रिय माहे लीयो रे, बहु आदर बोलाय ।स०१२।
 पग हाथ प्रमुख पखालिवा रे, निरमल दीधो नीर,
 पुरसैं भोजन युगति स रे, खाडि घिरत नें खीर ।१३।
 जीमण वैठो जेतलै रे, नटुवो वेसे नारि,
 तिण बेला कणवारियो रे, बोल्यो घरि-ने बार ।स०१४।
 नारि कहे नट नारि नें रे, कर मति चिंता काइ ,
 तूं छिप वैसि तिला तणे रे, मोटे कोठें माहि ।सु० १५।

ते आघो वैठो तिहां रे, अंधारी दिसि आई ।

फू फू फू तिल फूकि ने रे, खूणै वैठो खाय । सु० १६ ।

दूहा

आसंगायत आवियौ, तेहवें तेह तलार ।

पायस भोजन पेखि ने, जिमवा करे जिवार । १ ।

जीमण वैठो जुगति सुं, सखरी खीर सवाद ।

बोल्ह्यो ग्रहपति वारणे, साभलियो तिणसाढ । २ ।

हलफलियो उठ्यो हिवें, अटकल कोप उपाय ।

करें वीनति कणवारीयो, छानों मुक्क छिपाय । ३ ।

तिल घर मे वैसो तुम्हे, पिण ओलै हिज पास ।

आघा मत पैसौ उहा, विषधर नो छै वास । ४ ।

ते छिपायो वैठो तिसें, आयो धणीय उमाह ।

आखर वीहे अंगना, निबलो तोही नाह । ५ ।

भर्यौ थाल दीठो भलो, खीर घृत नें खाड ।

पूछै पति कहो किम किया, मोसु कपट म मांड । ६ ।

ढाल (२)—कुमरी बोलावै कुदडो ए देसी

कहे त्रिया वाता केलवी, आठिम नो दिन आजो रे ।

शिव पारवती पूजिवा, करी खीर तिण काजो रे क० ११

जैति करी नें जीमिवा, हुं वैठी थी एहो रे ।

जितरे हीय आया तुम्हे, मै कहिवो सत्यमेवो रे । क० २

पति कहें हुं परि गाम थी, आयो भूखो आमो रे ।
 पहिली जीमल्युं तूं पछे, धाई वैठी धामो रे । क० ३
 किम जीमिस त्रिया कहै, सुचि कीधो नहिं स्नानो रे ।
 करतो भोजन ते कहै, तुम्ह स्नाने अम्ह स्नानो रे । क० ४
 तिण अवसर तिल घर तणै, मधि वैठो हुइ मूकौ रे ।
 नट ते रूपे नारि नें, फाकै तिल दे फूंकौ रे क० ५
 विम्मासै कणवारियो, सरप कह्यो थो सोयो रे ।
 किहा इक फूकारा करै, हिव केही गति होयो रे । क० ६
 जौ अंधारें भाटसी, करसी कुण कणवारो रे ।
 इण विसि वाघ उठी नदी, पड़ियो एह प्रकारो रे । क० ७
 नर उठी नासौ जिसे, लखियो नटवी लागो रे ।
 ते पिण उठ नाठी तिहा, भला गया विहुं भागो रे । क० ८
 धोखे पड़ियो घर धणी, सोचे केहो सरूपो रे ।
 नर नारी कुण नीकल्या, अदभुत रूप अनूपो रें । क० ९
 प्रिय नै पनें परचावण, प्रीया बोली होठे बुद्धो रे ।
 मैं पाल्यो थो जीमता, स्नान किया विण सद्धो रे । क० १०
 जीम्यो अणन्हायो जरै, सखरी न करी सेवो रे ।
 शिव पारवती सलकिया दोयु परतिख देवो रे । क०
 पहिला बडेरा पूजता, सेवा करता सारो रे ।
 पैट पूज्या सहु पूजिया, ए थारो आचारो रें । क० १२
 कूक्या बाहर का नहीं, हुंपिण रही हरायो रे ।
 वैसि रहें ज्यु वापड़ो, ढोली ढोल बजायो रे । क० १३

दूहा

मदहर कहै सुण माननी, हु मूरख मतिहीन ।
 अणसमभयो उतावलै, कारिज भूडो कीन । १ ।
 हिवै जो अधिकी नूंहि तो, विधि काईक वताय ।
 गया देव पाछा गृहे, आवै केण उपाय । २ ।
 त्रिया कहै सुणि नाह तु, जो परदेशे जाय ।
 खरै न्याय धन खाट नें, ल्यावै तुं हित लाय । ३ ।
 विधि वलि बाकुल करी, वलि पूजीजे धरि प्रेम ।
 शिव पारवती तो सही, आवै पूठा एम । ४ ।
 केलवी कह्यो कुसीलणी, साच गिणै पति सुद्ध ।
 देखो भोलो दिह रो, धवलो तितरो दूध । ५ ।

दाल (३) सेवा बाहिरौं कहीयै कौ सेवक ए देशी

मानव युं भमे मिथ्यामति मोह्यौ, जे हित अहित न जाणै ।
 अणहूंता इ देवा ऊपर, आसत अधिकी आणै । १ मा०
 दिन तिणहीज चलयौ परदेशे, ले आऊं धन लाहो ।
 माहरा रूस्था देव मनाउ, ए मन मे उमाहौ । मा० २
 करतो पंथ दिने कितरेकें, देश दशारण दीठो ।
 वारू सरस ईख रा वाटक, माहि हुवै गुल मीठो । मा० ३
 रोजगार काजै तिहा रहियौ, काम कितो एक कीधो ,
 खेत धणी तिण हेम खुशी सु, दस गदीयाणा दीधौ , ४ मा०

खाचाताण मिली ए खरची, काम सरै नहिं कोई ,
 भमतो तिहा थी वलि भोगवतो, सुख दुख लीया सोई ; ५ मा०
 इक दिन इक अटवी मे ऊभो, छवि सखरी तरु छाया ,
 वाडी चढि राय दशारण, उणहिज वडि तलि आया , ६ मा०
 पूछयो भूपे कुण परदेशी, इण ठामे क्युं आयो ,
 तिण अपणा घर देव त्रियानो, सहु विरतंत सुणायो , ७
 मदहर सुत हुं छु मणिहारो, धन नें कारण धाउं ,
 अरथ खाट नें पूजी अरची, माहरा देव मनावु , ८
 पूजिस हु शिव नें पारवती, सो दिन सफलो थासी ,
 माया भावै तितरी मेलो, आखर साथ न आसी , ९
 सहसबुद्धी नृप सुणि समभावै, परमारथ सहु पायो ;
 सरल चित्त दीसे तुं सखरो, पिण वाहर वहकायो , १०
 घर मे केई घाल्या घरणी, नाठा ते नर नारि ,
 शिव पारवती घर थी सिलक्या, कामण दीधी गारी , ११
 परहो तुम्ह काढ्यो परदेशे, कुलटा इतरो कीधो ,
 समभावी इम राय दशारण, डेरो पुर मे दीधो , १२
 सखरे महिले राख्यो सुखियौ, सखरी भगति सजाई ,
 स्वारथ विण जे करणी सेवा, भल्ला तणीय भलाई , १३
 ढिल में चिते राय दशारण, अहो एहनी अधिक्राई ,
 अछता देव तिहा ही ऊपर, साची भगति सदाई , १४
 मो सरिखौ नाहिं कोई मूरख, मोहे रहियौ माची ,
 साचा देव तिथंकर सरिखा, सेवा न करू साची , १५

जयवंता श्री वीर जिणेशर, इण ठामे जो आवै ,
तो काडक अधिकार्ई कीजे, भावना इम नृप भावै , १६

दूहा

इण अवसर तिहा आविया, जगगुरु वीर जिणेश ।
तरता बीजा ने तारता, देता ध्रम उपदेश । १
परसिद्ध श्री गौतम प्रमुख, गणधर साथ इग्यार ।
साथे साथ भला सही, जेहनै चवद हजार । २
चौ विधि देव मिली रच्यो, समवशरण श्रीकार ।
स्वामि वैठा सिंहासणे, वैठी परषद वार । ३
जेण दसारण राय ने, दीध वधाई दोड़ ।
आभरण वगस्या अंगना, माथै राख्यो मौड़ । ४
हिवै घणो हिज हरखियो, भूप दशारणभद्र ।
छोले इछोले छिले, साचो जाणि समुद्र । ५
सवला आडंवर सजे, वाटुं इम ब्रधमान ।
किणही वांच्या नहिं कदे, इम धारे अभिमान । ६

ढाल (४) यतिनी देशी

अभिमान इसौं मन आणै, प्रभु आया पुण्य प्रमाणै ।
महिमा करूं सवल मंडाणे, वाह वाह सकोड वखाणै । १
तेड्या कोटंवरक ताम, आवै हिव भूपति आम ।
सुख गीय वजावो सारा, नोवत नीसाण नगारा ॥२॥

शुचि कीजे स्नान संपाड़ा, सहु पहिरै नवि नवि साड़ा ।
 हीर चीर पाटंवर हेम, पहिरौ सहु भूपण प्रेम ॥३॥
 हिव आणि सिणगारो हाथी, साम्हेलौ मोहें तिण साथी ।
 गुडडत कलाहिण गाजै, रोलम्ब कपोले राजे ॥४॥
 काजल किलकें तनु काला, सवला परचण्ड सु डाला ।
 सिंदूरुच्या सीस सलूकै, जलधर में वीज भूवूकै ॥५॥
 ऊपर सोहै अंवाड़ी, फूली जाणै फूलवाड़ी ।
 ऊंचा परवत अणुहारा, आप्या गज सहस अठारा ॥६॥
 घणा मोला ऊंचा घोड़ा, हर हीसै होडा होडा ।
 तेजी ऊछलै त्राडता, उचास भणी आपडता ॥७॥
 मुंह पतलै पूठे मोटा, छछोहा ने कानें छोटा ।
 सोने री साखत कसीया, राजी हुवै चढता रसिया ॥८॥
 सालहोत्र सुलक्षण साख, लेखा हय चौवीस लाख ।
 सोल सहस घणै सनमान, राजें साथै राजान ॥९॥
 सुखपाल सहस श्रीकार, रथ तौ इकवीस हजार ।
 सातसै अन्तेजर सार, सहु सज्ज हुआ सिणगार ॥१०॥
 कहा पायक तेत्रीस कोड़ि, कर सेवा वे कर जोड़ि ।
 छत्र चामर सोभा छाजै, रवि तेज दसारण राजे ॥११॥
 वड़ी रिधि तणै विसतारै, पुर वाहिर हिव पधारै ।
 आवै धरता आणंद, जिहा त्रिगडै श्री वीर जिणद ॥१२॥

॥ द्रुहा ॥

अवाड़ी थी उत्तुच्या, महिपति अधिकें मान ।

मदहर सुत पिण साथ ले, वंचा श्री ब्रधमान ॥१३॥

ढाल—(६) आज निहंजो दोसइ नाहनो—ए देशी

कोई मन मे गरव रखे करो, सुझानी ह्वं सोई ।
जो करो तोही दसारणभद्र ज्यु , करिज्यो तुम्हे सहुकोई । १को०
सबलो गज दशारण देश नो, तुरत ज तजीयो तेह ।
पाए लागी ने इंद्र प्रशंसीयो, अधिको मुनिवर एह । २
उत्तगाध्ययन अध्ययन अठारमे, मूत्र टीका सुविचार ।
रिपमंडल वलि प्रकरण थी, रच्यो ण विस्तर अधिकार । ३
मिथ्यामत जिम साभलता टलै, साचो मरस संवध ।
समकित कारण सुबुधि साभलो, बोल्यो सगवट बध । ४
संवत सतरै वरस सतावनै, मेडतै नगर मभार ।
चौमासे गणधर जिणचद जी, सुजस कहै ससार । ५
भट्टारकीया खरतर गच्छ भला, शाखा जिनभद्रमूरि ।
वाचक विजयहरय वखतावरू, परसिध पुण्य पडूर । ६
तेहनै शिष्ये ए मुनिवर तव्यो, श्री पाठक ध्रमसीह ।
श्री जिनधरम तिकौ श्रीसध नै, द्यौ सुख दोलति लीह । ७

इति श्रीदशारणभद्र राजर्षि चतुःपदी समाप्ताः

सवन् १८६१ मिती आसाढ कृष्ण १ रवि

महिपुर लि० उद्योतविजै—

श्रीवीरभवतामरः



राज्यद्धि वृद्धिभघनाद् भवने पितृभ्या,

श्री 'वर्धमान' इति नाम कृतं कृतिभ्याम् ।

यस्याद्य शासनमिदं वरिवर्त्ति भूमा—

वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥

श्री 'आर्पभिः' प्रणमतिस्म भवे तृतीये

गर्भस्थितं तु मघवाऽस्तुत सप्तविंशे ।

यं श्रेणिकादिकनृपा अपि तुष्टुवुश्च

स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

(युग्मम्)

अथ तृतीयकाव्ये श्रीभगवतो महावीरस्वामिनो, वलाधिक्यमाह—

वीर ! त्वया विदधताऽऽमलिकीं सुलीला,

वालाकृतिश्ललकृदारुरुहे सुरो यः ।

तालायमानवपुपं त्वदृते तमुच्च-

मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

हिव अति हरख्यो मदहरो, देख निरंजन देव ।
 मिथ्यामति मेटी करे, श्री जिनवर नी सेव ॥२॥
 इन्द्र हिंवाँ आवै इहा, सबल आडंबर साज ।
 नृप प्रतिबोधण जिन नमण, एक पथ दोड काज ॥३॥

ढाल (५) इण अवसर कोइ मागध आयो पुरन्दर पास, ए देशी

सोधरमै देवलोके शक्र महासुर राज,
 दीठौ राय दशारण वदण नै सजै साज ।
 करणी एह करै ते धन जिन वदन काज,
 पिण अहंकार उतारनै हु प्रतिबोधि आज ॥१॥

सुरपति हुकम इरापति देव धरी ऊछाह,
 चौसठि सहस्स बड़ा गजराज विकुर्वे चाह,
 इक इक गजरै मुख सुखकारी पाचसै वार,
 मुख मुख आठ दंतूशाल रच्या श्रीकार ॥२॥

इक इक दंते पंते वारू अठ अठ वावि,
 वावी वावी आठ आठ कमल सुगंध धर भाव
 कमले कमले लख लख पाखडिया परसिध,
 पाखडीए पाखडीए नाटक वत्रीस वद्ध ॥३॥

बलि प्रति कमले मध्य प्रासाद वतस विमान,
 राजै तिहां अग्रमहिपी आठे शक्र राजान,
 एह अचभै रूप अनूप वण्या असमान
 देख दस्मारण राजा आप तज्यो अभिमान ॥४॥

जग में धन धन जिन शासन धन वीर जिणंद,
 आवै जेहनै वंदण काजै एहवा इंद,
 मैं अग्यान कीयौ अभिमान महा मतिमंद,
 मुक्त रिद्धि अंतर जेहवौ कूप समंद ॥५॥

अहो अहो इन्द्र आगे कीया केई धरम अनूप,
 लाधी वैक्रिय लवधि रचै मन मान्या रूप,
 धरम करू हिव हु पिण ते निश्चै मन धारि,
 वीर सु आवि करी नृप वीनति तु प्रभु तारि ।६।

प्रतिवूधौ मदहर सुत पिण नृप संगति पाइ,
 मलयाचल मगे तरु वीजा पिण महकाय,
 कीधो लोच तिहा हिज सोची वात न काय,
 देई विहुं ने दीक्षा शिष्य किया जिनराय ।७।

तुरित त्यागी वड वैरागी मोह न माय,
 जे करणी तें कीधी ते मैं कीनि न जाय,
 तें अहंकार पोतारो साच कीयो सुखदाय,
 पोतें इन्द्र प्रशंसा करि करि लागो पाय ।८।

सहु रिधि सवर शक्र पहंतो सरग मभार,
 वीर जिणेसर तिहा थीं कीध अनेथ विहार,
 राय दशारण मदहर साधु भला ध्रमसील,
 सहु सुख पाया पायो केवल मोख सलील ।९।

ढाल—(६) आज निहेजो दीसइ नाहलो—ए देशी
कोई मन मे गरव रखे करो, सुझानी ह्वै सोई ।
जो करो तोही दसारणभद्र ज्युं, करिज्यो तुम्हे सहु कोई । १को०
सवलो राज दशारण देश नो, तुरत ज तजीयो तेह ।
पाए लागी ने इंद्र प्रशंसीयो, अधिको मुनिवर एह । २
उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमे, सूत्र टीका सुविचार ।
रिषमडल वलि प्रकरण थी, रच्यो ए विस्तर अधिकार । ३
मिथ्यामत जिम साभलता टलै, साचो सरस संबंध ।
समकित कारण सुबुधि साभलो, बोल्यो सगवट बंध । ४
संवत सतरै वरस सतावनै, मेडतै नगर मभार ।
चौमासे गणधर जिणचद जी, सुजस कहै ससार । ५
भट्टारकीया खरतर गच्छ भला, शाखा जिनभद्रसूरि ।
वाचक विजयहरष वखतावरु, परसिध पुण्य पडूर । ६
तेहनै शिष्ये ए मुनिवर तब्यो, श्री पाठक ध्रमसीह ।
श्री जिनधरम तिकौ श्रीसध नै, द्यौ सुख दोलति लीह । ७

इति श्रीदशारणभद्र राजर्षि चतुःपदी समाप्ताः

संवन् १८६१ मिति आसाढ कृष्ण १ रवि

महिपुर लि० उद्योतविज्ञै—

श्रीवीरभक्तामरः



राज्यर्द्धिं वृद्धिभषणाद् भवने पितृभ्या,

श्री 'वर्धमान' इति नाम कृतं कृतिभ्याम् ।

यस्याद्य शासनमिदं वरिवर्त्ति भूमा—

वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥

श्री 'आर्षभिः' प्रणमतिस्म भवे तृतीये

गर्भस्थितं तु मघवाऽस्तुत सप्तविंशे ।

यं श्रेणिकादिकनृपा अपि तुष्टुवुश्च

स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

(युग्मम्)

अथ तृतीयकाव्ये श्रीभगवतो महावीरस्वामिनो वलाधिक्यमाह—

वीर ! त्वया विदधताऽऽमंलिकीं सुलीला,

वालाकृतिश्छलकृदारुरुहे सुरो यः ।

तालायमानवपुपं त्वदृते तमुच्च-

मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थकाव्येन श्रीभगवतो विद्याधिक्यमाह—

शक्रेण पृष्टमखिलं त्वमुक्त्वथ^१ यत् तद्
 जैनेन्द्रसंज्ञकमिहाजनि शब्दशास्त्रम् ।
 तम्यापि पारमुपयाति न कोऽपि बुध्या,
 को वा तरीतुमलमन्वुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

उपदेशाधिक्यमाह—

धर्मस्य वृद्धिकरणाय जिन ! त्वदीया,
 प्रादुर्भवत्यमलसद्गुणदायिनी गौः ।
 पीयूषपोषणपरा वरकामधेनु-
 नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥

कर्मक्षये भगवतो नाम्नो माहात्म्यमाह—

छिद्येत कर्मनिचयो भविना यदाशु
 त्वन्नामधाम क्लि कारणमीश ! तत्र ।
 कण्ठे पिकस्य कफजालमुपैति नाशं
 तन्नारुचूतकलिकानिकरकहेतुः ॥ ६ ॥

भगवता मिथ्यात्व हतं तदन्यदेवेषु स्थितमित्याह—

देवार्यदेव ! भवता कुमतं हत तन्—
 मिथ्यात्ववत्सु सतत शतशः सुरेषु ।
 सतिष्ठतेऽत्तिमलिनं गिरिगह्वरेषु
 सूर्यां शुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

भगवतो नाम्न आधिक्यमाह—

त्वन्नाम 'वीर' इति देव सुरे परस्मिन्
 केनापि यद्यपि धृत न तथापि शोभाम् ।
 प्राप्नोत्यमुत्र सलिले किमृजीपपृष्ठे,
 मुक्ताफलघृतिमुपैति ननूदविन्दुः ? ॥ ८ ॥

भगवतो ज्ञानोत्पत्तिविशेषमाह—

ज्ञाने जिनेन्द्र । तव केवल नाम्नि जाते
 लोकेषु कोमलमनासि भृशं जहर्षुः ।
 प्रद्योतने समुदिते हि भवन्ति किं नो,
 पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥६॥

सेवके उपकारविशेषमाह—

वादाय देव । समियाय य इन्द्रभूति—
 स्तस्मै प्रधानपदवीं प्रददे स्वकीयाम् ।
 धन्यः स एव कुवि तस्य धशोऽपि लोके
 भूत्याऽऽश्रित य ॥ह नाऽऽत्मसमं करोति ॥१०॥

भगवतो वचनमाधुर्यमाह—

गोक्षीर सत्सितसिताधिकमृ (मि) ष्टमिष्ट-
 माकर्ण्य ते वच इहेप्सति को^१ परस्य ।
 पीयूषकं शशिमयूखविभ विहाय
 क्षारं जल जलनिधे रसितु क इच्छेन् ? ॥११॥

भगवतोरूपाधिक्यमाह—

अङ्गुष्ठमेकमणुभिर्मणिजैः सुरेन्द्रा
निर्माय चेत्तव पदस्य पुरो धरेयुः ।
पूष्णोऽग्र उल्मुकमिवेश स दृश्यते वै
यत्तो समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

भगवद्दर्शने मिथ्यात्वं नोद्घटतीत्याह—

उज्जाघटीति तमसि प्रचुरप्रचारं
मिथ्यात्विना मतमहो न तु दर्शने ते ।
काकारिचक्षुरिव वा न हि चित्रमत्र
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

कपायभङ्गे भगवतो बलवत्वमाह—

वन्या द्विषा इव सदैव कपायवर्गा
भङ्गन्ति नूतनतरुनिव सर्वजन्तून् ।
सिंहातिरेकतरस हि विना भवन्तं
कस्तान् निवारयति सद्भरतो यथेष्टम् ? ॥१४॥

उपसर्गसहने भगवतो दृढता दर्शयन्नाह—

द्विद् 'सङ्गमे' न महतामुपसर्गकाणा
या विंशतिस्तु समृजे जिन । नक्तमेकम् ।
चित्ता चचाल न तथा तव कञ्चन्या तु
किं मन्दरादि शिखर चलितं कदाचिन् ? ॥१५॥

भगवानपूर्वदीपोऽस्तीत्याह—

निःस्नेह ! निर्दश ! निरञ्जन ! निःस्वभाव !
 निष्कृष्णवर्त्म ! निरमत्र ! निरङ्कुशेश !
 नित्यद्यत्ते ! गतसमीरसमीरणात्र
 दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

अथ सूर्यादप्यतिशयवान् भगवानित्याह—

विस्तारको निजगवा तमसः प्रहर्त्ता,
 मार्गस्य दर्शक इहासि च सूर्य एव ।
 स्थाने च दुर्दिनहतेः करणाद् विजाने
 सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

अथे चन्द्रादपि त्वद्यशोऽधिकमित्याह—

प्रह्लादकृत् कुवलयस्य कलानिधानं
 पूर्णश्रियं च विदधञ्च यशस्त्वदीयम्
 वर्वर्त्ति लोकवहुकोक सुखकरत्वाद्-
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कत्रिम्बम् ॥१८॥

भगवता (यन्) सावत्सरिकं दानं दत्ता तदाह—

यद् देहिनां जिनवराब्दिकभूरिदाने—
 दौःस्थ्य हत हि भवता किमु तत्र चित्रम् ?
 दुर्भिक्षकष्टदलनान् क्रियते सदौप-
 कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ? ॥१९॥

भगवच्चरणदशने फलाधिक्यमाह—

यादृक् सुखं भवति ते चरणेऽत्र दृष्टे
तादृक् परभुवदनेऽपि न देह भाजाम् ।
प्राप्ते यथा सुरमणौ भवति प्रमोदो
नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

भक्तो भगवत्सेवा प्रार्थयन्नाह—

एवं प्रसीद जिन ! येन सदा भवेऽत्र
त्वच्छासनं लगति मे सुमनोहरं च ।
त्वत्सेवको भवति यः स जनो मदीयं
कश्चन मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

जिनस्य भामण्डलम्—

भामण्डलं जिन ! चतुर्मुखदिक्चतुष्के
तुल्यं चकासदवलोक्य सभा व्यमृक्षन् ।
सूर्यं समा अपि दिशो जनयन्ति किं वा
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदशुजालम् ॥ २२ ॥

लोकैर्यः शिवः शिव इति ध्यायते स भगवानेवेत्याह—

शम्भुर्गिरीश इह दिग्वसनः स्वयम्भू-
मृत्युञ्जयस्त्वमसि नाथ महादिदेवः ।
तेनाम्बिका निजकलत्रमकारि तन् त्वन्—
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ २३ ॥

सर्वशास्त्राध्ययनादपि सम्यक्त्वमधिकमिति दर्शयन्नाह—

जानन्ति यद्यपि चतुर्दश चारु विद्या
देशोनपूर्वदशकं च पठन्ति सार्थम् ।
सम्यक्त्वमीश न धृतं तव नैव तेषां
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

पुरुषोत्तमोऽयं वीर एवेत्याह—

नृणा गणाः गुण चणाः पतयोऽपि तेषां
ये ये सुराः सुरवराः सुखदास्तकेऽपि ।
कृत्वाऽञ्जलिं जिन ! चग्निक्रति ते स्तुतिं तद्
व्यक्त त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

संसारसागरशोपकाय प्रणामः—

रोगा भ्रूवा बहुमहामकराः कषाया—
श्चिन्तैव यत्र वडवाग्निरसातमम्भः ।
वार्धिर्भवः सर इव त्वयका कृतस्तन्
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥२६॥

भगवद्दर्शनालाभे विडम्बना—

यद् यस्य तस्य च जनस्य हि पारवश्य—
मावश्यकं जिन ! मया वरिवस्ययाऽऽप्तम् ।
तन् तर्कयामि बहुमोहतया मया त्वं
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

स्तनन्धयस्य भगवतो रूपस्वरूपमाह—

रम्येन्द्रनीलरुचि वेषश्रुतो जनन्याः

पार्श्वं श्रितस्य धयतश्च पयोधर ते ।

रूपं रराज नवकाञ्चनरुक् तमोत्रं

विम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥

प्रभोर्जन्म—

इक्ष्वाकुनामनि कुले विमले विशाले

सद्गतराजिनि विराजत उद्भवस्ते ।

दोषापहारकरणः प्रकटप्रकाश—

स्तुङ्गोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

नाथस्य जन्माभिषेकः—

स्तानोदकैर्जिन (र्जनि) महे सुरराजिमुक्तै-

र्गात्रे पतद्भिरपि नूनमनेजमानम् ।

दृष्ट्वा भवन्तममराः प्रशशंसुरीश-

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

वप्रत्रयविचारः—

ये त्रिप्रदक्षिणतया प्रभजन्ति वीरं

ते स्युर्नरा अहमिवाद्भुतकान्तिभाजः ।

वप्रत्रयं वददिति प्रविभानि तेऽत्र

प्रख्यापयन् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

भगवत्संस्मरणे सुरसान्निध्यमाह—

कान्तारवर्त्मनि नराः पतिताः कदाचिद्
 दैवात् क्षुधा च तृपया परिपीडिताङ्गाः ।
 ये त्वा स्मरन्ति च गृहाणि सरासि भूरि-
 पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥

भगवच्चित्तस्थिरतामाह—

संनिश्चला जिन ! यथा तव चित्तवृत्तिः
 कस्यापि नैवमपरस्य तपस्विनोऽपि ।
 यादृक् सदा जिनपते ! स्थिरता ध्रुवस्य
 तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ? ॥३३॥

अथ भगवद्दर्शने जन्मवैरिणामपि विरोधो न भवतीत्याह—

ओत्वाखवोऽहिगरूढाः पुनरेणसिंहा-
 अन्येऽङ्घ्रिनोऽपि च मिथो जनिवैरवन्धाः ।
 तिष्ठन्ति ते समवसृत्यविरोधिनं त्वा
 दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

भगवच्चरणशरणगतं न कोऽपि पराभवतीत्याह—

यस्ते प्रणश्य चमरोऽहितले प्रविष्ट-
 स्त हन्तुमीश न शशाक सिदुश्च शक्रः ।
 तद युक्तमेव विबुधाः प्रवदन्ति कोऽपि
 नाक्रामति क्रमयुगाचल सश्रितं ते ॥३५॥

भगवन्नामतोऽति (पि) भयं न भवतीत्याह—

पूर्वं त्वया सदुपकारपरेण तेजो-

लेश्या हता जिन विधाय सुशीतलेश्याम् ।

अद्यापि युक्तमिदमीश । तथा भयान्नि

त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

भगवन्नामतः सर्पभयमपि विलीयत इत्याह—

ऊर्ध्वस्य ते विलमुखे वचनं निशम्य

यच्चण्डकौशिकफणी शमतामवाप ।

तन् साम्प्रतं तमपि नो स्पृशतीह नाग—

स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुसः ॥३७॥

भगवद्बिहारे ईतयो न भवन्तीत्याह—

तुर्यारके विचरसिस्म हि यत्र देशे

तत्र त्वदागमत ईतिकुलं ननाश ।

अद्यापि तद्भयमहर्मणिधामरूपान्

त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदासुपैति ॥ ३८ ॥

भगवत्पादसेवाफलम्—

निर्विग्रहाः सुगतयः शुभमानसाशाः

सच्छुक्लपक्षविभवाश्चरणेषु रक्ताः ।

रम्याणि मौक्तिकफलानि च साधुहंसा

स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥

भगवद्वचनश्रद्धानान् कामितप्राप्तिर्भवतीत्याह—

संसारकाननपरिभ्रमणश्रमेण,

क्लान्ताः कदापि दधते वचन कृत ते ।

ते नाम कामितपदे जिन देह भाज—

छासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥

भगवद्रूपं दृष्ट्वा सुरूपा अपि स्वरूपमदं मुञ्चन्तीत्याह—

सर्वेन्द्रियैः पटुतरं चतुरस्रशोभ

त्वां सत्प्रशस्यमिह दृश्यतरं प्रदृश्य

तेऽपि त्यजन्ति निजरूपमदं विभो । ये

मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥

निर्वन्धनं जिन ध्यायन्तो निर्वन्धना भवन्तीत्याह—

छित्वा दृढानि जिन । कर्मनिवन्धनानि

सिद्धस्त्वमापिथ च सिद्धपद प्रसिद्धम् ।

एवं तवानुकरणं दधते तकेऽपि

सद्यः स्वयं विगतवन्धमया भवन्ति ॥ ४२ ॥

भगवत्स्तोत्राध्ययनान् सर्वोपद्रवनाशो भवतीत्याह—

न व्याधिराधिरतुलोऽपि न मारिरारं,

नो विड्वरोऽ शुभतरो न दरो ज्वरोऽपि ।

व्यालोऽनलोऽपि न हि तस्य करोति कष्टं

यस्तावक स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥

भगवत्स्तवोमौक्तिकहारः कण्ठे धार्य इत्याह—

त्वत्स्तोत्रमौक्तिकलता सुगुणा सुवर्णां

त्वन्नामधामसहिता रहिता च दोषैः ।

कण्ठे य ईश ! कुरुते धृत 'धर्मवृद्धि'—

स्त 'मानतुङ्ग'मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

अथ प्रशस्तिः—

रसगुणमुनिभूमेऽन्देऽत्र भक्तामरस्थैः

चरमचरमपादैः पूरयन्सत्समस्याः ।

सुगुरु 'विजयहर्षा' वाचकास्तद्विनेय—

श्चरमजिननुतिं ज्ञो 'धर्मसिंहो' व्यधत्त ॥ ४५ ॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

सरस्वत्यष्टकम्

प्राग्वाग्देवि जगज्जनोपकृतये, वर्णान् द्विपञ्चाशतम्,
या वाप्सी निजभक्तदारकमुखे, केदारके बीजवन् ।
तेभ्यो ग्रन्थ-गुलुञ्छकाः शुभफला, भूता प्रभूतास्तकान् ,
सैवाद्याऽपि परःशतान् गणयसे स्रक्स्फोरणाञ्छद्गतः ॥१॥

यैर्ध्यातेति प्रात प्रातर्म्मातुर्म्मात वाग्मात--
विद्याजातः सश्रीसातस्तेपा जातः प्रख्यातः ।
एता भ्रातर्भक्त्युध्रातः स्नेहस्तातः स्वाख्यातः
सेवस्वातश्चितृष्णातः शास्त्रेषु स्यान्निष्णातः ॥२॥

शिक्षाञ्छं दश्च कल्पः सुकलितगणितं, शब्दशास्त्रं निरुक्ति—
वेदाश्चत्वार इष्टा भुवि विततमते धर्मशास्त्रं पुराणं ।
मीमांसाऽऽन्वीक्षिकीति त्वयि निचितभृतास्ताः षडष्टाऽपिविद्या-
स्तत्त्वं विद्यानिपद्या किमु किमसिधिया सत्रशाला विशाला ॥३॥

सुवृत्तरूपः सकलः सुवर्णः प्रीणन् समाशा अमृतप्रसूर्गीं.
तमः प्रहर्त्ता च शुभेषु तारके हस्ते विद्युः किं किमु पुस्तकस्ते ॥४॥

पदार्थसार्थदुर्घटार्थचित्समर्थनक्षमा,

सुयुक्तिमौक्तिकैकशुक्तिरत्रमूर्त्तिमत्प्रमा ।

प्रशस्तहस्तपुस्तका समस्त शास्त्रपारदा,

सता सका कलिंदका सदा ददातु सारदा ॥५॥

मंद्रैर्मध्यैश्च तारैः क्रमततिभिरुरः कण्ठमूर्द्धप्रचारैः,

सप्तस्वर्य्या प्रयुक्तैः सरगमपधनेत्याख्ययाऽन्योन्यमुक्तैः ।

न्कन्धेन्यस्य प्रवालं कलललितकलं कच्छपीं वादयन्ती,

रम्यास्या सुप्रसन्ना वितरतु वितते भारती^१ भारती^२ मे ॥६॥

भातो भ्रातः श्रवणयुगले कुण्डले मण्डले वै,

चान्द्रार्कीये स्वतः उत ततो निःसृतौ पुष्पदन्तौ ।

श्रावं श्रावं वचनरचना मेदुरीभूय चास्याः,

संसेवेते चरणकमलं राजहंसाभिधातः ॥ ७ ॥

अमित नमितकृष्टे तद्विद्या सन्निकृष्टे,

श्रुतसुरि शुभदृष्टे सद्रसाना सुवृष्टे ।

जगदुपकृतिसृष्टे सज्जनानामभीष्टे,

तव सफलपरीष्टे को गुणान्वक्तुमीष्टे ॥ ८ ॥

सतेत्यमष्टकेन नष्टकष्टकेन चष्टके

सतां गुणर्द्धि गर्द्धनः सदैव धर्मवर्द्धनः ।

सखे सुबुद्धिवृद्धिसिद्धिरीप्स्यते यदा सती,

नमस्यतामुणस्य साववश्य मों सरस्वती ॥ ९ ॥

—०—

इतिश्रीसरस्वत्यष्टकं विद्यार्थपूर्त्तौ त्रिविष्टपविष्टरं

:—❀—:

१ सरस्वती । २ भा व रतिश्चेति भारती कान्ति सुख च ददातुइत्यर्थ ।

श्रीजिनकुशलसूरीणामष्टकम्

—:०:—

यो नातृनिव सेवकानपि सदा वर्भक्तिं कुर्वन् मुदं,
 विच्छिदन् वियदं ददच्छुभपदं सपादयन् सपदं ।
 मन्यन्ते हि यकं पितामहतया विश्वेऽत्र विश्वे जनाः,
 सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ।१।
 येऽरण्येषु पिपासवः प्रपतिता दध्युर्गुरुं मानसे,
 नानागत्यवितत्यमेघमतुलं वः पाययामास यः ।
 योऽद्याप्येप उदन्यतो बहुजनान् कं धापयेद्ध्यानतः,
 सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ।२।
 लोलोहोलति मिंगला कुलतमे सिन्धावगाधे भृशं,
 मज्जन्त प्रविलोक्य सेवकगण सत्रा वहित्रेण वै ।
 यस्तूणति मतीतरत्सकुशलदं दोभ्यां गृहीत्वा दृढं,
 सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ।३।
 वारीशोत्तरणे रणे प्रहरणे नागे नगे पन्नगे,
 भङ्गाया विकटे ऋषे ऋषकुटे घट्टेऽरघट्टे वटे ।
 ध्यानाद्यस्य मनागपीह लभते नो ईतिभीती नरः,
 सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ।४।
 त्व चेदेनमनेनस सकृदपि स्नेहादसेचिष्यथाः,
 रामे वैत्य रमा मनोरमतमा त्वा पर्युपासिष्यत ।

इत्यादिश्य वयस्यमिभ्यमनुजा यस्याह्विमर्चन्त्यहो ।

सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ॥५॥

धन्या 'जैतसिरी' प्रभू जनयिता मत्री च 'जैलागरो'

यस्मे जन्म ढढी ददौ यतिगुणान् श्रीजैनचन्द्रो गुरुः ।

व्युत्पन्नाय तु सूरिमंत्रसहित सौव पद दत्तवान्,

सोऽय वः कुरालानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ॥६॥

श्रेयः श्रेयस ओजसा शुभयशा यःस्वर्गमध्यासितो,

नेदीयानिव हर्षयत्यनुदिनं भक्तान् दवीयानपि ।

यो लोके कमलाकरान् रविरिव प्रौढ प्रतापोद्यतः,

सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ॥७॥

दद्यादद्य धनीयते बहुधनं स्त्रीकाम्यते सुस्त्रियः,

यो भक्ताय जिगीपते च विजय सुत्ये सुतान् दासते ।

यत्कीर्त्तिः प्रसरीसरीति सततं कौ कौमुदीव स्फुटं,

सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तुं विद्याचणः ॥८॥

सत्काव्याष्टकमष्टधीगुणयुतो ढः पूतरूपो पटुः,

सच्चेता उपवैणव ह्यहरहर्यः सप्तकृत्वः पठेत् ।

तस्मै श्री विजयादिहर्षगुरुता सद्धर्मरीलोदयो,

दादाति प्रभुरेप जैनकुशलः साक्षादिव स्वर्द्धमः ॥९॥



इति श्रीजिनकुशलमूरीणामष्टकम्

चतुर्विंशतिजिनस्तवनम्

—:❀:—

(इन्द्रवज्राछन्दः)

स्वस्तिश्रिये श्री ऋषभादि देवं, निर्दम्भदेवं जिनदेवदेवं,
चारुप्रकाशं किल मारुदेवं, स्तौमीह सम्पत्तिलतैकदेव ॥१॥

(तोटकछन्दः)

अमरासुर पुस्पशुपक्षिऋत-मदवारनिवारक ईश जितः,
भवता मदनोऽपि मदौघयुतः प्रवदन्तिबुधा अजितं हि ततः ॥२॥

(वशस्थ)

लसद्यशः पूरितसद्दिशं भवंत एतमर्चन्तु जनाश्च शंभवं ।
जिनं सदिक्ष्वाकु कुलाब्जसंभवं, स्फुरत्तपोधाम वितीर्णसभव ॥३॥

(द्रुतविलम्बित)

जिनमहं प्रणमाम्यभिनन्दनं,

सुभगसंवरभूपतिनन्दनम् ।

सकलसद्गुणपादपनन्दनं,

जिनवरं जनलोचननन्दनम् ॥४॥

(तोटकं)

त्रिजगत्पतिरेषजिनः सुमति—

वितनोतु मतिं किल मे सुमतिः ।

शुभवोधपयोधिरनेकनुतिः,

क्रमणद्यु तिरंजितदेवपतिः ॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

पद्मप्रभोऽर्हन् वरपद्मलोचनः,

पद्माननश्चाश्रितपद्मलाञ्छनः ।

सच्चित्तपद्मामलपद्मलाञ्छनः,

पद्माकरः स्याच्छिवपद्मलाञ्छनः ॥६॥

(भुजङ्गप्रयात)

भजन्ता प्रभुं चित्रदं श्रीसुपाश्वं,

भवन्तो नरा नूनमानन्दपाश्वं ।

जिनं तप्तहेमस्फुरत्कान्तिपाश्वं,

सता सातदं दम्भवल्लयत्रपाश्वं ॥७॥

(वसन्ततिलका)

चन्द्रप्रभं जिन वदन्ति यके मनुष्या—

त्वा सेवकेन्दुसदृशीकरणान्न दक्षाः

भो चन्द्रसेवितपदाब्ज परमयोक्तः,

स्वामिन्वत स्तवभकार-उकारयुक्तः ॥८॥

(तोटकं)

विवृधा प्रणुवन्ति जिनं सुविधिं,

विविधप्रकटीकृतधर्मविधि ।

शिवमार्गविधानत एव विधिं,

शुण्णरीरनिधिं शिवदायिविधिं ॥९॥

(प्रमाणिका)

विभु भजस्व शीतलं, सदृक्षशस्त्रशीतलं ?
दरान्निवारिशीतलं, जिनं विभिन्नशीतलं ॥१०॥

(विद्युन्माला)

अर्हन्तं सूध्नां श्रेयासं, वन्देऽहं देवश्रेयासं ।
श्रेयः सत्कासारे हंसं, हिंसं नोध्वान्तौघे हंसं ॥११॥

(मधुमाधवी)

त्वा प्राग्य सर्वभुवनत्रयवासिपूज्य—
मन्यात्क इच्छति सुराञ्जिन वासुपूज्य ।
किं कोऽपि कल्पतरुमीहितद विहाय,
ह्युच्छूलपर्णिन इहेसति सत्सुखाय ? ॥१२॥

(द्रुतविलम्बित)

विमलनाथमशेषगुणाकर, विमलकीर्तिधरं च भजेवरं ।
विमलचन्द्रमुख जिननायक, विजयहर्षयशःसुखदायकं ॥१३॥

(स्रगधरा)

कीदृक्ससार एषः प्रमितिकृतितया कीदृशः सिद्धिजीवः,
कीदृक्षो राजशब्दः सुरनरनिचये जिष्णुनामाऽपि कीदृक्
वाह्यार्थो वर्णबंधा द्विधिहरिगिरिशप्रस्तुतश्चारुधर्मा
धर्माद्यः सर्वदर्शी स हि विशदगुणःपातु चातुर्दशोवः ॥१४॥

(मन्दाक्रान्ता)

यः सर्वेषाममित सुखदो य सदेच्छन्ति सर्वे,
तुल्यं येनान्यदिह न हि च प्राणिना यः पितेव ।

तस्यापि स्वाम्यसि जिनपते धर्मनाथाभिधाना,—

न्मन्ये तेनाहमिति हि भवच्छदृशो नास्ति कोऽपि ॥१५॥

(शार्दूलविक्रीडितं)

शान्तिः शान्तिमनाः स नाहितकरः सेवन्ति शान्तिं बुधा—

स्तायन्ते मम शान्तिना सुमतयस्तस्मै नमः शान्तये ।

शान्तेः कान्तिधरो परो न हि सुरः शान्तेरहं सेवकः,

शान्तौ तिष्ठति मन्मनश्चसततं शान्ते । सुसातं कुरु ॥१६॥

(स्रग्विणी)

चिन्मयं मद्रदं कुंथुतीर्थङ्कर विश्वविश्वेशमीडे मुदा शङ्कर ।

दुष्टकर्मौघघूकांकाहस्करं, पुण्यकृतपुण्यसद्रत्न-रत्नाकरं ॥१७॥

(वसन्ततिलका)

नाम्नीह यद्यरजिनस्य सदा श्रुते च,

नश्यन्ति लञ्चरिजना हि किमत्र चित्रम् ।

आकर्णिते वत निनादभरे मृगारे—

स्तिष्ठन्ति किं मृगगणा वलिनोऽपि बाहू ॥१८॥

(मालिनी)

द्विजपतिदलभालं मङ्गिनाथं सुभालं

प्रहतविपयजालं छिन्नदुःखाञ्जनालं ।

अमितसुगुणशाल प्राप्तनिर्वाणशालं,

भविक-पिक-रसालं स्तौमि नित्यं त्रिकाल ॥१९॥

(सिंहोद्धता)

राकेन्दुकान्तिमुनिसुव्रत वै त्वदास्यं,
दृष्ट्वा हि दृग्विकचपद्ममनोहरं च ।
संभावयन्ति मनसीति शुभा मनुष्याः,
सद्राजतेऽञ्जयुगलं विधुमध्यभागे ॥ २० ॥

(द्रुतविलम्बितं)

नमत भव्यजनाः सततं नमिं, नमित निर्जरमद्भुतकामदं ।
मदनपञ्जरभञ्जनद्विद्विजं, द्विजपतिप्रवराननमीश्वरं ॥ २१ ॥

(मन्दाक्रान्ता)

यस्त्वं नित्यं किल रमयसे मुक्तिसीमन्तिनीञ्च,
तस्याः सङ्गं क्षणमपि समुन्मुखसि त्वं न नेमे ।
सत्त्व सर्वे सुरनृ मुजगैः कथ्यसे योगिनाथ,
स्तेपा वाक्यं वत जिन कथं त्वां च संजाघटीति ॥२२॥

(कामक्रीडा)

वामापुत्रं तेजोमित्रं दुःखौघागे मातङ्गं, -
सच्छ्रीकोप चेतस्तोप शोभावह्नी सारङ्गम् ।
दत्तानन्दं विद्यावृन्दं प्राण्याशाया कल्पागं,
नित्योत्साह वन्दे चाहं श्रीपाश्वरेशं पुण्यागम् ॥२३॥

(पञ्चचामर)

प्रवादिसर्वगर्वपर्वप्रभङ्ग भूरिस्ट्,
सुपर्वनाथ हैतिमीतिभीतिवार-वारकम् ।

जिनेश-वर्द्धमान वर्द्धमान शासनं वरं,

नमामि मामकीनमानसावुजन्मषट्पदम् ॥२४॥

(कलशः)

इत्थं संवदुरोजदृष्टिनगभूसङ्घे च दीपालिका—

घस्रे गुम्फित एष सातभरदस्तीर्थङ्कराणा स्तवः ।

सद्विद्याविजयादिहर्षकमलाकल्याण शोभाभर,

तन्याद्वो बहुधर्मवर्द्धनवता सन्मानसाना सदा ॥२५॥

इति चतुर्विंशतिजिनस्तवनं पृथक्काव्यजातिमयम् ।

अथ व्याकरण सज्ञा शब्द रचनामयं

श्रीमहावीर जिनवृहत् स्तवनम्

यस्तीर्थराजखिशलात्मजातः सिद्धार्थभूपो भुवि यस्य तातः,
वितन्यते व्याकरणस्य शब्दैस्तत्कीर्तिरेवात्र यथामुद्वदैः ॥१॥

यो लेख शालाऽध्ययनाय वीरो,

विनीयमानः प्रयतः पितृभ्याम् ।

इन्द्रेण पृष्टं सममुत्ततार,

सर्वस्ततः शाब्दिक एष उचे ॥ २ ॥

ततः परं यः परिणीयपत्नीं,

संभुज्य सर्वानपि कामभोगान् ।

गृहात्परिव्रज्य चरित्रलोलया—,

न्मन्ये विसस्मार स शब्दविद्याम् ॥ ३ ॥

स तत्र संज्ञाविधिना समानैः,

सहाऽपि सन्ध्यक्षरता विधित्सन् ।

ये नामिनस्तेषु गुणञ्च वृद्धि—

मवाधपूर्वं युगपच्चिकीर्षन् ॥ ४ ॥

धित्सन् हसत्वं न हि निःस्वरेषु,

तथान्त्ययोर्वै रसयो विसर्गम् ।

नाम्नः शत त्र्युत्तरमन्त्रयुञ्जन्,

विभक्तिभिस्तस्य च नाशमाशु ॥ ५ ॥

लिङ्गत्रयोच्छेदमपि प्रकुर्वन्,

न युष्मदस्मत्त्वपरापरत्वं ।

अग्रोपसर्गा व्यय कारकं च,

स्त्रीप्रत्ययं तत्र मनागपीच्छन् ॥ ६ ॥

वर्णन्य लोपं न तथा विकारं,

न वर्णनाशं च वदन्निरुक्तं ।

कदापि नो विग्रहकारकेषु,

प्रकल्पयन्नेव विकल्पभावम् ॥ ७ ॥

वर्णा विशुद्धार्थविभक्तयो ये,

तेषा समास न समीहमानः ।

सुखाऽव्ययीभावपदं यदत्र

लिङ्गसुः सदा तत्पुरुषप्रधानः ॥ ८ ॥

द्वन्द्वं बहुव्रीहिपरित्रहादि—

रूपं विरूपं च न कर्म धारयन् ।

शत्रावशत्रावपि न द्विगुत्वं,

यद्यद्वदंस्तद्वितमेव लोके ॥ ९ ॥

नित्यं यथाख्यातक्रियाकृतो ये,

तान्सोपसर्गान्न चिकीर्षमाणाः ।

विभूञ्च भावं विजहञ्च कर्म,

न कर्मकर्तृत्वमुशंस्तथोक्त्या ॥ १० ॥

(अष्टभिः कुलकम्)

विराजतेऽयं किल कामकुम्भः,

स्वामिस्तव प्राज्ययशः समूहः ।

नो चेत्कथं पूरयतीह नित्यं,

वाढं कवीना मन ईप्सितञ्च ॥ ११ ॥

सतः सदैवाभिनयं नयन्ती,

सरागरंगाय रभागरंगे ।

दिशं दिशं चारुदृशं दिशन्ती,

नर्नर्त्ति कीर्तिस्तव नर्त्तकी च ॥ १२ ॥

स्विदयमाद्रियते सुगुणै सखे,

स्विदयमाद्रियते सुगुणानिति ।

सुगुणमैक्ष्य हि वीर जिनाविषं,

बुधजना विमृशन्ति भृशं मिथः ॥ १३ ॥

राजानः स्वैर्ललाटैरहरहरमिता यान्स्पृशन्ति प्रणामात्,
 ते राजतो नखास्ते जगति जिनविभो तान्यपि द्योतयन्ति ।
 स्वामिस्तस्मादमीषा प्रवरमिह महाराज नामास्ति सत्तन्—
 मन्त्र्येऽन्ये नखायामपि दधति महाराज संज्ञा मृषा सा ॥ १४
 यावहसन्तौ दिविपुष्पदन्तौ यावद् ध्रुवस्तावदसौ स्तवश्च,
 कुर्यात्प्रकर्षं विजयादिहर्षं सद्युक्तिलीलः शुभधर्मशीलः ॥ १५ ॥

—

(१) समसंस्कृतमयं पार्श्वनाथ लघुस्तवनम्

ससारवारिनिधितारकतारकाभ,
 डिंडीरहीरसमसत्तमवोधिलाभ ।
 आतंकपंकदलनातुलवारिवाह,
 वामेयदेव जयभिन्न भवोरुदाह ॥ १ ॥
 जानामि कामित करं तव नाम देव,
 तेनाऽऽगतोऽहमिह पादसरोरुहे ते ।
 मा माऽवहीलय गुणालय सह्यालो,
 संतो भवन्ति निपुणाहि परोपकारे ॥ २ ॥
 मोहारिभूमिरुहभंगसतंगजाय,
 संछिन्नतुगसमनोज मनोजवाय ।
 मायाविवादिकुवलालिन वारुणाय,
 भूयो नमो भवतु ते जिननायकाय ॥ ३ ॥

वामाङ्गज दरभरागगज भजन्ते,
 ते जन्तवो नव-नवोदयता लभन्ते
 भूमीरूहो हि समयामलयं वसन्तो,
 गच्छन्ति किंन शुभचन्दनता समेऽपि ॥ ४ ॥
 इत्थ सदैव समसस्कृतशब्द शोभ,
 यः पापठीति मनुजः स्तवनं यशोभवे ।
 स त्रीयते विजयहर्षसुख सलीलः,
 पाश्वेशितु स्मरणतः शुभधर्मशीलः ॥ ५ ॥ ॥

—:०:०—

(२) पाश्वजिनलघुस्तवनम्

विश्वेश्वराय भवभीति निवारणाय
 सताप-पादप निवारण वारणाय ।
 सत्यक्तमाय सजलाबुद्धनीलकाय,
 तुभ्य नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ १ ॥
 सम्मोहमारुतसुरेशधराधराय ।
 मुक्त्यङ्गनाप्रणयपुञ्जकृतादराय ।
 दुःकर्मकाष्ठ-भरकाननपावकाय,
 तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ २ ॥
 सज्जन्तु वार्द्धितसुदानसुरद्रुमाय,
 कंदर्पसर्पहरणे गरुडोपमाय ।

योगीश्वराय शिवशालिवने शुकाय,

तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ३ ॥

दारिद्र्य-रेणु भर-सहरणाम्बुदाय,

सम्पत्ति-सिद्धि सुयशः सुखबोधदाय ।

आजन्मदुःखगणपल्लवलावकाय,

तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ४ ॥

देवाऽसुरप्रणतपाद सरोरुहाय,

कुन्देन्दुमण्डलसमुज्ज्वलचिद्गृहाय ।

निःसंख्यदुःखदगदक्षय कारकाय,

तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ५ ॥

पूर्णक्षपारमण शुभ्रकलाकलाय

सत्कीर्ति संभृतदिगीश्वरमण्डलाय ।

लीलाऽऽलयाय विकचाम्बुरुहाम्बुकाय,

तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ६ ॥

(कलश)

इत्थं विश्वयमश्वसेननरराड्-वशाब्जघस्राधिपं,

सद्वामोदर शुक्तिमौक्तिकनिभ कल्काग भङ्गद्विपम् ।

श्रीपार्श्व विजयादिहर्ष सहिताः स्युः सस्तुवन्तो नराः,

पार्श्वेश बहुधर्मवर्द्धनधनं चिद्रत्नरत्नाकराः ॥७

(३) श्रीपार्श्वजिनवृहत्स्तवनम्

वाञ्छितदानसुरद्रुम तुभ्यं,
 नम ए कुरु सौख्यानि लसन्ति ।
 जय जय जगतिपतेः ॥ १ ॥

नव नव नवनमहर्निशममलं,
 यश ए तव कवयो गायन्ति ।
 जय जय जगतिपतेः ॥ २ ॥

इक्ष्वाकुकुल-कमलाकरवर
 भास्कर ए अश्वसेनवंश-वत्स
 जय जय जगतिपतेः ॥ ३ ॥

वामामातृवामोदरमानस
 सर ए तत्र मनोरमहंस,
 जय जय जगतिपतेः ॥ ४ ॥

धन्यतरं तदहो अहस्त्रिभुवन
 मह ए तव शुभ-उद्भव आस,
 जय जय जगतिपते, ॥ ५ ॥

ववृधे प्रियमनोरथ इव सुखमिव
 दिव ए वर राज्यं विललास,
 जय जय जगतिपतेः ॥ ६ ॥

ज्वलदहियुगल बहुहित मत्र—

दानत ए इन्द्रपदं नयसिस्म

जय जय जगतिपतेः ॥ ७ ॥

नमीकृतशक्रव्रज राज्य—

रज ए त्व तूर्णं त्यजसि स्म

जय जय जगतिपते ॥ ८ ॥

मोहलता दलन द्विप बहुलं

तप ए चारुतरं च चकर्प

जय जय जगतिपतेः ॥ ९ ॥

लध्वा केवलसंपदः शिवपद

सद ए त्वं श्रीपार्श्वं वभर्था,

जय जय जगतिपतेः ॥ १० ॥

सौख्यं बहुभिरवाप्यत तव—

नामत ए कामितदायक देव

जय जय जगतिपतेः ॥ ११ ॥

श्रीधर्मवर्द्धन पेहत तव मत—

रत ए त्वं प्रभुरेधि सदैव

जय जय जगतिपतेः ॥ १२ ॥

श्रीपार्श्वजिनवृहत्स्तवन संस्कृतमयं तालमध्ये गेय ।

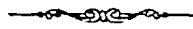
(४) चतुरक्षर-पार्श्वस्तवनम्

(कन्या छन्द)

भो भो भव्याः कीर्त्तिस्तव्याः
 नव्या नव्या, जैनी श्रव्या ॥ १ ॥
 प्रत्यूषेनः, श्रीपार्श्वेनः
 यो ज्ञानेन, प्रन्ननेव ॥ २ ॥
 ध्वस्तद्वद्व, सम्यक्सधं
 त्यक्त्वाव्यध्वं, तं वदध्व ॥ ३ ॥
 यः श्रीकाश्या, वाणारस्या
 पुय्यामस्या, स्वश्रेयस्या ॥ ४ ॥
 अश्वात्सेनः, श्रीभूपेन
 ईतिस्तेन, स्तद्राज्येन ॥ ५ ॥
 तत्तत्रीमुख्या, वामाभिख्या
 तस्याःकुक्ष्याः, पुत्रो न्युष्यान् ॥ ६ ॥
 चेतोऽन्तर्वै, न्यस्तोऽखर्वैः
 ग्लायद्गर्वै-देवैः सर्वैः ॥ ७ ॥
 पुण्यप्राज्यं, भुक्त्वा राज्यं
 तत्साम्राज्यं, ज्ञात्वा त्याज्यं ॥ ८ ॥
 यः संसारं, त्यक्त्वा भारं
 साध्वाचारं, चक्रे सार ॥ ९ ॥

अन्यापोह, ध्यात्वा सोऽहं
 श्रेण्यारोह, क्षिप्त्वा मोहं ॥ १० ॥
 तत्राचल्यं, हत्वा शल्यं
 प्रापत्कल्यं, यः कैवल्यं ॥ ११ ॥
 द्वे आयात-स्तत्सेवातः
 श्रीर्विद्यातः, सातत्रातः ॥ १२ ॥
 तद्व्याख्यानं, तस्य ध्यानं
 तत्त्वज्ञानं, भूयात्प्यान ॥ १३ ॥
 अन्याऽनीह, स्तद्भक्तीहः,
 धर्मात्सीह-स्तं स्तौतीह ॥ १४ ॥

इति श्रीचतुरक्षरायाप्रतिष्ठायाजातौ कन्यानाम छंदोवृहन्स्तवनं



(५) पार्श्वलघुस्तवनम्

(द्रुतविलम्बितछन्दः)

प्रवरपार्श्वजिनेश्वर पत्कजे,
 भयहरे भविभावुकदे भजे ।
 य इमके न कदापि नरस्त्यजे—
 त्तमिह सद्रमणीवरमासजेन् ॥ १ ॥
 उदितमेतदहः सफल नशं,
 सफलता च नयामि तथा दृशं ।
 जिनप दर्शनतो भव एष मे—
 सफल एव गुणाः सफलाः समे ॥ २ ॥

जरिद्विपीति विलोक्य सना जिनं

मम मनोऽत्र शिखीव घनाघनं ।

मिलति वै यदि वाञ्छितदायक—

स्तमनुसृत्य न वष्टि सुखाय कः ॥ ३ ॥

लघुवया अपि यः सवयाः सता

निजगुणैः प्रवभूव तनूभृता ।

अहियुगाय यकोज्ज्वलते वदे

सुरपद स जिनो भवतां मुदे ॥ ४ ॥

शमद्वमादिगुणैरति सुन्दर—

स्तव जिनेश विराजति सवरः ।

परिभृतो मणिभिः सुयशश्चणः

क्षितितले किमु भाति न रोहणः ॥ ५ ॥

तव यशश्च गुणान्निगमं पदं,

वचनतो मनसस्तनुतो मुदः ।

वदति वेत्ति च विंदति वंदते,

विधिरयं जिन यस्य स नन्दति ॥ ६ ॥

गुणचनो भुवि पार्श्वजिनेश्वरः

सम इहाऽस्ति न येन परः सुरः ।

जित इनो महसा यशसा शशी

नमति तं सततं मुनिधर्मसी : ॥ ७ ॥

इति छेकानुप्रासपादान्त-द्रुतविलम्बित छन्दोमयं

पार्श्वजिनलघु-स्तवनम्

(६) श्रीपार्श्वलघुस्तवनम्

भजेऽश्वसेन-नन्दनं मुहुर्विधाय वन्दनं,
 न रागिणो हि के नरा इने जिने सुदृग्धराः ॥१॥
 सता विपश्चिता मता सदेव सुप्रसादता,
 विघेहि पार्श्वदेवते मयि क्रमाब्जयो रते ॥२॥
 अभीष्ट युष्मया मया प्रवृत्य ते त्वदाज्ञया,
 न दद्यते कृपोदयाद्विभो ममोद्यता अयाः ॥३॥
 चरीकरीति ते यशः प्रसर्सरीति तद्यशः,
 वरीवरीति ते पदं स वर्वरीति ते पदं ॥४॥
 समस्तदुःखनाशनं विभो तवानुशासनं,
 तदस्तु मे पुनर्धनं सुजनधर्मवर्द्धनं ॥५॥

श्री ऋषभदेव स्तवनम्

जय वृषभ वृषभवृषपविहितसेव, सेवकवाञ्छितफलफलद देव ।
 देवादेवार्चितपादपद्म, पद्माननपूरितभूरिपद्म ॥१॥
 पद्माङ्गजमदगजगजविपक्ष, पक्षीकृतजगदुपकारलक्ष ।
 लक्षितसमलोकालोकभाव, भावितसूनृतसुगुणस्वभाव ॥२॥
 भावारितमोभरतरणिरूप, रूपस्थित रूपातीत-रूप ।
 रूपित सद् यज्ञसुधर्मशील, शीलित शाश्वतशिवसौख्यलील ॥३॥

नवग्रही-न्यायपरीक्षा

सख्ये सत्यपि दहना द्रक्षति यन्नं विचक्षणा त्रयथा ।
 ग्रहराजो ग्रहराजौ हिमाशुमंगारकादवाक् ॥१॥
 शीताद्विभ्यति सर्वे शीतार्त्तिर्भवति दुःसहा सततम् ।
 अङ्गारकमुष्णाशुं तत्तिष्ठत्यन्तरा हिमरूक् ॥२॥
 यत्रायाति कुपुत्रो जनयति वैरं हि जनकपुत्राणाम् ।
 यद्विग्रह गृहालौ सोऽयं सोमस्य सौम्यस्य ॥३॥
 निवसति यद्यपि दैवाद् ब्रह्मः क्रूराक्रूरयो द्वयोर्मध्ये ।
 सत्प्रकृतेरनुभावाद्यः सौम्यः सौम्य एव स्यात् ॥४॥
 गुरुरधिकः सर्वगुणैर्गुरुसेवा नैव निःफला भवति ।
 समया गुरु वसन्तौ ग्रहावुभौ बुधकवी जातौ ॥५॥
 तारुण्ये सति शुक्रे वोभूयन्तेऽसमे शुभा कामाः ।
 तदभावे तदभावाच्छुक्रवल को न कामयते ॥६॥
 उच्चपदादिस्थित्या पितुरुक्त्याचलति वैपरीताद्यः ।
 सत्याभिधो बुधोक्त्या मन्दो मत्या पुनर्गत्या ॥७॥
 पर्वण्यमृत पेन्तु तुदति सुधाशुं विधुतुदः साक्षान् ।
 लट्वास्वादो लोके शीर्षे छिन्नेऽपि न हि तिष्ठेत् ॥८॥
 स्वस्वामिनं विनाऽपि हि निजशक्त्या कार्यसिद्धिमातनुते ।
 किं नो कवन्धरूपः केतुः स्तुत्यो ग्रहश्रेणौ ॥९॥
 श्रेष्ठा सुवर्णरचिता नवग्रही मुद्रिका सुधर्ममतिः ।
 प्रीत्या परीक्षमाणाः परीक्षते तत्त्वरत्नानि ॥१०॥

शान्तिनाथस्तवनम्

स्तुवन्तु त जिन सदोपकारतालताघनं,
 स्वदेहदानतो यको ररक्ष रक्तलोचनम् ।
 प्रसूदरस्थितेन सच्छुनंयुता प्रयुजिता,
 त्वरा निजाःप्रजात्रजा रुजा विवर्जिताःकृताः १

अवाप्य येन जन्म चक्रवर्तिता प्रवर्तिता,
 जगत्प्रभुत्वमाप्य कीर्त्तिनर्त्तिकी च नर्त्तिता ।
 अभीष्टदा दिवस्तरुर्घटो मणि स्रयोऽप्यमी,
 अनुत्वका तकास्तु सेवते सना सना भ्रमी ॥ २ ॥

स्वकीयसेवकाय यः सुखं ददाति सत्वरं,
 ततो मुदा तमाचिरेयमाचिरेयमीश्वरं ।
 नमो नमोऽस्तु ते त्वया समो न कोऽप्यहो ऋमुः
 सुधर्मशीलने भवेभवेस्त्वमेव मे विमुः ॥ ३ ॥

—:❀:—

(७) श्रीगौडीपार्श्वनाथस्तवनम्

प्रणमति यः श्रीगौडीपार्श्वं, पद्मा तस्य न मुखति पार्श्वं,
 सुगुणजनं सुषमेव । कीर्त्तिस्फूर्तिरहो ईदृक्षाः यस्य—
 जगति जागर्त्ति समक्षा, ननंमीह तमेव ॥ १ ॥

सद्रक्त्या भक्तलोका जिनवरंभवतो यत्र यत्र स्मरन्ति,
साक्षान्तोषां समेषां वरमिह हि मुहुर्वाञ्छितं त्वं विधत्से ।
यात्रामायान्ति तत्तो कति कति च मया प्रत्ययाश्चात्र दृष्टा,
दृष्टा मे चित्तवृत्तिस्तत इत इत आः कामये नान्य देवम् ॥ २ ॥

(प्राकृतचित्राक्षराञ्जन्दः)

विविह सुविहिलच्छ्रीवल्लिसंताणमेहं,
सुगुणरयणगेहं पत्तसप्पुण्णरेहं ।
दलियदुरियदाहं लद्धससिद्धिलाहं,
जलहिमिव अगाहं वंदिमो पासनाहं ॥ ३ ॥

(मागधी)

शुलपुलनलवल्लुचिलविनिलमिदपलमानन्द,
सकलगुभाशुभशेविदपदशलशीलुहदं ।
कलुनाशागल कुलकमलालिदिनेशलदेव,
चलनशलोजमहं पनमामि निलंतलमेव ॥ ४ ॥

(सौरसेनी)

दुहदटिनीडारनदरनपोय, दुरिदोहहुदासन-अदुलदोय ।
सपूरिदजगदीजंदुकाम पूरयमह वंछिद पाससामि ॥ ५ ॥

(पैसाची)

तुहताहतवानलनासघनं, सुहतानसुकोवितगीतगुनं ।
धरनीसकनीस नत सत्त, नम पानजिनं सुसुहं तततं ॥ ६ ॥

(चूलिकापैसाची)

मतनमतसरवनवनदहनपावकं,

सिद्धिसुभजुवतिसिंगारवरजावकं ।

जो हु तुह चलनजुकमचते सततं

चकति सव्वे चना पास पनमंति ते ॥ ७ ॥

(अपभ्र सिका)

तुहु राउल-राउलह सामि हु राउल रकह,

हिणसु दुहाइ सुहाइ कुगु सुमइ मा अवहीरह ।

पिक्खइ जुगु अजुगु ठाणु वरसतउ किं घणु,

पत्तउ पइ जइ होसु दुहियसा तुह अवहीरणु ॥८॥

(समसस्कृत)

सज्जन्तु कामितविधाननिधानरूपं,

चित्ते धरामि तव नाम सुगेयरूपं ।

इच्छामि कान्त मिदमेव भवे भवेऽह,

वामाङ्गजेह गुणगेह सुपूरितेहं ॥९॥

इम अरज अम्हारी ता हि पक्षीकुरु त्व,

गिणइज हित कीधु तस्य सत्यं गुरुत्वं ।

हिव मुक्क सुख आपो, सा तवैवास्ति शोभा,

तुक्क विण कहि स्वामी कस्य नो सन्ति लोभाः ॥१०॥

स्वर्भापा संस्कृतीया तदनु प्रकृतिजा मागधी शौरसेनी,

पैशाची द्वय गरुपाऽनुसृतविधिरपभ्रंसिकासूत्रवाक्यैः ।

पद्भिर्वाग्भी रसेर्वा स्तुति सुरमवती-निर्मिता पार्श्वभर्त्तुः,
 श्रीधर्माद्वद्वेनामितसुकृतवता ह्यादसुस्वाददाम्तान् ॥११॥
 इतिश्रीगौडीपार्श्वनाथस्य स्तवन पट्भाण समसस्कृतादि

चातुर्थमथ श्रेयः क्रियान्

~*~*~*~

(८) श्रीपार्श्वधीशितु बृहत्स्तवनम्

~*~*~*~

सर्वश्रिया ते जिनराज राजतः,
 श्लोकोरित शुल्को गिरिराज-राजतः ।
 अर्घप्रदानैरपि राजराजतः—
 त्वत्कोऽतिरेको भुवि राजराजतः ॥१॥
 स्मरणं वुहते सदा यक—
 स्तव तस्मै सुखवासदायकः ।
 त्वमसि प्रभवे सदायकः
 प्रणमन्नेश भवेत्सदायकः ॥२॥
 शुभदृक् तव नाथ सेवक,
 नयते वाञ्छितमेव सेवकं ।
 विबुधैर्विहितैकसेवकं,
 त्वदृते वशिम् हि मान्से वकं ॥३॥
 तव ये चरणेऽन्ननामिनः

स्युरहो ते तु कदापि नामिनः ।
 मणिमाप्य मुनीश नाकिनः,
 किमु चित्र हि भवन्ति नाकिनः ॥४॥
 जिनपार्श्वसुनाम तावकं,
 शरण यः श्रयते न तावक ।
 न पराभवितुं हि कोऽपि त,
 प्रभविष्णुः क्षितिपोऽपि कोपितं ॥५॥
 परिहृत्य वसुस्त्रियौ वने,
 निवसन्तीश यके हि यौवने ।
 हृदि यैर्निहितं न नाम ते,
 विदधीरन्सहितं न नाम ते ॥ ६ ॥
 गमित नरजन्म देवनै—
 हृदि मे तेन कदापि देव नैः ।
 तदहं परवश्यतां गतः,
 परसेवा च मया कृतागतः ॥ ७ ॥
 शुभवता भवता सुकृता कृताः,
 कतिचिदूर्ध्व जगत्प्रभुताद्भुताः ।
 कतिचिदीश महोदयतायता,
 मम विधौ विहिता लसता सता ॥ ८ ॥
 मम सदा नतनिर्जरवारके,
 त्वयि विभौ सति पापनिवारके ।

इह जिनाधिपदुःपमवारके,
 किल मया किमऽदायि न चारके ॥ ९ ॥
 राका भवानिव भवानिह भात्यतोऽपि,
 श्रेष्ठाः स्तुवन्ति शुभवन्तमहो भवन्तं ।
 छिन्नार्त्तिराप्तभवता भवतापकर्त्री,
 तस्मै सदाऽत्र भवते भवते नमः स्तान् ॥ १० ॥
 देवोऽधिकः प्रभवतो भवतो न कोऽपि,
 सेवाज जिष्णु-भवतो भवतोऽतिरम्या ।
 सद्भक्तिरा भवति यै भवति प्रकल्पता,
 प्रोप्तातया शिवफला जिनधर्मसीता ॥ ११ ॥

श्रीनेमिस्तवनम्

❀:०:❀

जिगाय यः प्राज्यतरस्मराजीं,
 तत्याज तूर्णं रमणीञ्च राजीम् ।
 राजेव योगीन्द्रगणे व्यराजीद्—
 देयात्स नेमि र्बहुसौख्यराजीः ॥ १ ॥
 निजकुलकुलरत्नं वाञ्छितार्थद्युरत्नं,
 तमसि गगनरत्न चित्कला रात्रिरत्नम् ।
 नमितसकलदेवः क्रोधदायैकदेवः,
 प्रभवतु सुमुदे वः सतत नेमिदेवः ॥ २ ॥

—❀—

(६) श्रीपार्श्वस्तोत्रं

(द्विहसं शालिनी छंद)

तवेश नामतस्त्वरा दरा भवन्ति गत्वराः,

प्रसृत्वरा रवेकरास्ततो यथा तमो भराः ॥१॥

अधोत्कराश्च नश्वरा धरेश्वराद्धि तस्कराः,

स्थिराः स्युरिन्दराभराः स्वमन्दिरान्न हीत्वराः ॥२॥

प्रभोः स्तवेषु तत्परा नरा जगत्सु जित्वराः,

तकेषु तत्परा दरा दरातयोऽपि किंकराः ॥३॥

विधीयता जिनेश्वराऽऽशु पार्श्वदृक्कृपापराः,

प्ररायतां तरा व्वरा ममापि धर्मशीलराः ॥ ४ ॥

—०—

पञ्चतीर्थ्याः पंचजिन स्तोत्रम्

(प्रमाणिकाछंदः)

योऽ चीचलद्दुश्च्यवनोरसि स्थितः

क्रमाङ्गुलीतः किल कर्णिकाचलं ।

स्वनाम चचुश्च चरिक्रियादयं,

स श्रीमहावीरजिनो महोदयम् ॥ १ ॥

अर्कः शुभोदकर्मतर्कितश्रिय,

जैवातृकः प्राति जयं यशः क्रियम् ।
 भौभो भिनत्तीतिमनीतिजा भियं,
 बुधो ददातीह बुधाञ्चिता धियम् ॥ २ ॥
 गुरु गुरुं ज्ञानगुणं विधत्ते,
 काव्यः कला काव्य कलाञ्च दत्ते ।
 शनिः शुभं राहुरय शिखीश,
 तुः सेवितु र्चच्छति वीरमीशम् ॥ ३ ॥
 एवं सेवा दधतः पञ्चजिनानां स्तवान्प्रपञ्चयते ।
 ते सौख्यानि लभन्ते भव्यश्रीधर्मशीलभृतः ॥ ४ ॥

अष्टमङ्गलानि

स्वस्तिकं चारुसिंहासनं कौस्तुभं,
 कामकुम्भः सरावादिमंसंपुटं ।
 मत्स्ययुगल सुखस्यार्पणं दर्पणं,
 नन्दिकावर्त्तकं मङ्गलान्यष्ट वै ॥ १ ॥

चतुर्दशम्बुजानाः

श्वेतेभो वृषभो हरिश्च कमला स्यात्पुष्पमालाद्वयं,
 पूर्णेन्दुश्च दिवाकरो ध्वजवरोऽभःपूर्णकुम्भःसरः ।

क्षीराब्धि द्विविधं विमानभवन सद्रत्नराशिर्महान्,
निर्धूमाग्निरिसे चतुर्दश शुभाः स्वप्ना मुदे सन्तु वः॥१॥

गीर्वाणसिन्धावहिमगिनो वहून्,
ग्रन्तं समालोक्य रूपा गरुत्मान् ।
जघान गगाम्बु-शुभप्रभावा,
चतुर्भुजीभूय वभूव तत्पतिः ॥१॥

~*~*~*~*~

शीघ्रमागच्छ भो शिष्य, मम पादौ निपीडय,
परिचर्याप्रसादेन, त्व प्रवीणो भविष्यसि ॥१॥

~*~*~*~*~

(१०) श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम्



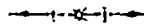
प्रसर्सति पार्श्वेश विश्वे यशस्ते,
विशस्ते तु धन्या पदाब्जस्पृशस्ते,
मदीयाऽपि लोला, स्तुतौ तेऽस्तु लोला,
विदोलायमाना भ्रमादत्त मा भून् ॥१॥

बुधास्ते सपर्यातया 'चारुतर्या,
भवाब्धि प्रतीर्या भजान्सद्विपुर्या ।

अह तेऽनुभावं समारूढ्य नावं,
तितीर्षुर्विभावंश्रितस्त्वा मुदाऽवं ॥२॥

न केनाऽपि केनाऽपि भोगादिना मे,
वशाया रिरसा निनंसोस्त्वदं ह्री ।

विनेता तवेशास्मि नेतासि मे त्वं,
रमा धर्मशीलप्रमा देहि मह्यं (?) ॥३॥



इति श्रीपार्श्वस्य लघुस्तोत्रमद् कोविदसद् प्रशस्यं ।

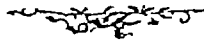
श्री वीकानेरमध्ये श्रीआदीश्वरमूर्ति स्तोत्रं

प्राज्या चरीकर्त्ति सुखस्य पूति,
यका जरीहर्त्ति च दुष्टजूति ।
मद्रैश्च मोमूर्ति सुभक्तमूर्ति,
ता वीकपुर्या नमतादिमूर्ति ॥१॥
इष्टार्थपूर्त्तौ च्छुघटी वरीयसी,
जाड्यार्त्तिहानावपटीपटीयसी,
गिरीसभेयं प्रतिमा गरीयसी,
स्थिरा स्थिरावद् भवतात्स्थवीयसी ॥२॥
एनाजिनेनागसमा शयद्वयं,

ललाट आधाय विधाय सह्यं ।
 वयं च यूयं शुभधर्मशीला,
 भजाम भव्या विलसामलीला ॥३॥
 इति श्रीऋषभदेवस्तवनम्



समस्यामयं श्रीमहावीरस्तवनम्



श्रीमद्वीर तथा प्रसीद सततं मे स्यादियं भावना,
 संसारं तु वरं च जीवितमथो त्वद्दर्शनात्कै र्मन ।
 भोगान् सर्वकुटुम्बकं क्रमतया जानामि पक्वेतर—
 “जम्बूवज्जलविन्दुवज्जलजवज्जंबालवज्जालवन्” ॥१॥
 स्थाने तज्जिननूयसे बुधजनैस्त्वं दुष्टकष्टापहो,
 भ्रान्त्या भुक्तविपं त्वगाधमुदक शत्रूद्धितं शस्त्रकम् ।
 दावाग्निः प्रबलो महाँश्च निगडस्त्वन्नामत स्यात्क्रमा—
 ज्जम्बूवज्जलविन्दुवज्जलजवज्जंबालवज्जालवन् ॥२॥
 सोऽपि त्वा प्रणनामय शिवमते श्रीशैवराजो मुनि—
 येनामी लवणाम्बुधिप्रभृतयो दृष्टा हि सप्त क्रमात् ।
 क्षीरोदोदधिभृद्दृष्टोदकइराभृच्चेक्ष्वा स्वादुव,
 अम्भोधिर्जलधि पयोधिरुदधिर्वारानिधिर्वारिधि ॥३॥
 ये त्व। श्रीजिन संश्रयन्ति हि जनास्ते स्युर्जिनाख्याधरा—
 स्तद्युक्तं जलपर्यया इव विभा प्राप्ताऽधिरित्यक्षरं ।

पयायास्युरुदन्वता बुधजन सगृह्यमाणा अनो,

अम्भोधिर्जलधि पयोधिरुद्धिर्वारानिधिर्वारिधि ॥४॥

जिन भजतामिति भ्रह्मरीयं, प्रवक्ति लोकानिव वाद्यमाना ।

वृहद्ध्वनेरर्थत एव ठस्य, ठंठंठंठंठठठठठठः॥५॥

दान तपः शीलमशेषपुण्य, ज्ञानञ्च विज्ञानमपीह भावः ।

त्वच्छासनेनेश विना कृततन्, ठठठठठंठठठंठठठः ॥६॥

जिनवचनमिद तेऽनन्तकृत्वोऽधिकारे,

प्रययुरणुनिगोदं ज्येष्ठपञ्चेन्द्रियाञ्च ।

युगपदिह विपद्य स्यात्कदाचिन्न चित्र,

मशकगलकमध्ये हस्तियूथं प्रविष्टम् ॥७॥

मन इदमगुरुपं न्यायसिद्ध मदीयं,

मदमदनमतंगा यान्ति तन्मध्यदेश ।

अहमिह किमु कुर्या देव साक्षादजय्यं.

मशकगलकमध्ये हस्तियूथं प्रविष्टम् ॥८॥

नवन नमनं महनं वचनं, कुरुते कुरुते कुरुते कुरुते ।

तव यः स यशः शिव मा च सुखं, लभते लभते लभते लभते ॥९॥

दीव्यदीधिति दिक् चतुष्कसदृशंभामण्डलपृष्ठतः

कृत्वाऽऽसीनमहो चतुर्मुखविधुश्रेष्ठाऽऽस्य नंतु त्वकां ।

आयातः स्मयदा विमानसहितौ श्रीपुष्पदन्तौ तदा,

चन्द्राः पञ्च तथैव पञ्च रक्षयो दृष्टा जनैर्भूतले ॥१०॥

पुण्या ते प्रकृतिः प्रभो परसुरो वाडं मदाह्यं सदा,

सद्रव्योऽपि निराश्रयोऽसि मदनानीकपरिन्नन् स्फुट ।

इष्टं मृष्टतरं च वर्णनमथो प्रस्तूयते ते क्रमाद्—

गंगावद्गजगण्डवद् गगनवद्गागेयवद्गोयवन् ॥११॥

(कलशः)

इत्थं वाञ्छितदानदैवततरुयः शासनाधीश्वरः ।

श्रीवीरः शिवतातिराततयशाः श्रीधर्मतो वर्द्धनैः,

नूतो नूतन नूतन द्युतिमयः काव्यैसमस्यामयै—

ये ध्यायेयुरिमं जिनं जगतितेस्यु जन्तवः कन्तवः ॥१२॥

व्यस्त-समस्त मध्योत्तर प्रश्नमय काव्यम्

के पत्यौ सति भूपणोत्सवधराः ? श्रेष्ठास्तु के प्राणिपु ?

सर्वत्रादरता लभेत भुवि कः ? के बन्दिना स्युर्गृहाः ?

का का भाग्यवता भवत्प्रतिपद ? के कांढशीकागिना ?

के धन्या निज संपदा विलसने ? “दानप्रकारादराः” ॥१॥

धान्याद्यर्थ उदूखले भवति का स्वाचर्या समेषा च का ?

कार्या नन्नजनैर्गुरौ लसति का शोभा च राज्ये तथा ?

सप्तास्यस्तरणे रथ वहति कः ? सर्व्वसहा का स्मृता ?

कुग्रामे वसता सता भवति का ? “सुज्ञान नीवीक्षितिः” ॥२॥

रामे १८५था

त्वं संत्रोधय कामकेशवविधी-शानश्रियःस्वं मम,

दातृणा च हरौ सदाऽत्र भवताच्छीतापतौ सुन्दरि !

किं धातुत्रयमत्रु कीर्ति वद्भो त्व वन्हिवीजं ब्रज,
विश्रामेप्यविशंश्रिते मुहुरहो उक्तेऽपि किं मुह्यसे ॥१॥

—:०:—

गी वीणा तत्रिकेका वरचिवुकसृता सूचिका सद्रसाना,
कूपानां वान्पनाशाश्रुतियुगलदृशामूर्द्धमूर्द्धा पुरश्रीः ।
तस्मिन् वासश्चकासज्जिन तव सुयशो गाङ्गावाहस्तदित्य,
सूच्यग्रे कूपपट्कंतदुपरि नगरं तत्र गङ्गा प्रवाहः ॥१॥

तिलमिव लघु चित्ता स्नेहयुक् तत्प्रदेशे,
निवमति किल हीनाङ्गीव तृष्णातिकृष्णाः ।

मयमिव मदनं सा मृतमे^१ऽभूत्तदित्यं,
तिलतुपतटकोणे कीटिकोष्ट्रं प्रसूता ॥२॥
तवेशाऽस्त्यन्यं धर्मशीलोपदेशो,
भवान्धि तित्तीर्षु भवेद्यो हितेन ।

रतिश्चारतिश्चातिनिन्दातिकृष्णा

समस्या समस्या समस्या समस्या ॥३॥

प्रवर्न्वर्त्ति^२ विश्वे जिनस्योपदेशो,

भवान्धि तित्तीर्षु भवेद्यो हितेन ।

रतिश्चारतिश्चातिनिन्दा तितृष्णा,

समस्या समस्या समस्या समस्या ॥४॥

—:०:—

अथ कतिचित्समस्यापदानि पूर्यन्ते

[“दर्शं पूर्णकलं च पश्यति विधुं बन्ध्यासुतोऽन्धो दिवा”
इति समस्यापदं श्रीमाल विहारीदासस्य पुरतो भट्टेन प्रदत्तं ।
यथा—]

प्राग् दुःकर्मवशान्मृतस्वजनकं कञ्चिद्गताक्षं शिशुं,
बन्ध्या काचिदपालयन् नृभिरतः प्राख्यायिबन्ध्यासुतः ।

मध्याह्ने शयितः स दर्शदिवसे पूर्णेन्दु मेक्षिष्ट तद्—

दर्शं पूर्णकलं च पश्यति विधुं बन्ध्यासुतोऽन्धो दिवा ॥१॥

[“मन्दान्दोलितकुण्डलस्तवकया तन्व्या विधूतं शिरः” इति
समस्यापदं भट्टदत्तं पूर्यते]

भर्त्राऽऽवश्यककार्यतः प्रवसता प्रावाचि पत्न्याः पुरो,

मासान्ते त्वमहं च धामनि निजे द्रक्ष्याव इन्दु नव ।

रुच्ये तावदसङ्गते सखिजनैर्द्रष्टुं विधुं प्रोक्तया,

मन्दान्दोलितकुण्डलस्तवकया तन्व्या विधूतं शिरः ॥१॥

अन्यच्च—

साधूना पुरतो मयाद्य विधिना धर्मः समाकर्णितः,

पत्युक्तं वचनं हिताच्च वनिता श्रुत्वाऽऽशुहृष्टा वर ।

त्वं चेन्मा वनिते वदेरथ तदा गृहामि साधु व्रतं,

मन्दान्दोलितकुण्डलस्तवकया नन्व्या विधूतं शिरः ॥२॥

["प्रथमकवलमव्ये मक्षिकामन्निपातः" इति समस्यापदं
उपाध्यायविनयविजयैर्दत्त तत्पूरित पण्डितधर्मसीकेन]

परिणय जनताया याति यो भाग्यहीनः

स्वदनमनुजपङ्क्तौ रोपमाधाय तिष्ठेत् ।

यदि कथमपि भोक्तु नस्थितस्तत्र जातः,

प्रथमकवलमध्ये मक्षिका सन्निपातः ॥१॥

उपसि कृपणनामाऽग्राहि जातं फल तद्—

द्रुतमजनि जनैः स्वैरादिरुद्धे गता च ।

कथमपि यदि जग्धिः प्रापि तत्रापि जातः,

प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥२॥

कचिदपि समये स्याच्चित्तभङ्गो जनस्य

तदुपरि विफलाभ्युर्मिष्टसत्कारवाचः ।

परिणमयति किं वै शेषतत्काल भुक्तीः,

प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥३॥

यदि हि जननलग्न स्याद्गुद्ध प्रमादान्,

तदुपरि न फलाय स्पष्टभावाधिकारः ।

किमुपरितनभुक्तिं प्रापयेत्सत्फलत्वं,

प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥४॥

[“विद्युत्काकेन भक्षिता” इति समस्यापदं राजसारै र्दत्तं
यं धर्मसिंहेन पूर्यते]

आयान्त नायकं वीक्ष्य, श्यामया श्यामवाससा ।
रुद्रा सीमं तरु-क्किवा, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ १ ॥
प्रेरितेन भृश पत्या कस्तूरीचूर्णं मुष्टिना ।
छन्ना रदच्छदाभा किं विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ २ ॥
प्रसह्य खण्डिके क्षिप्त्वा सद्युति र्द्वरणीसुता । (?)
रक्षसा रावणेनाहो, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ३ ॥
आजग्मुधी छलं कत्तुं, श्रीजिनदत्तसूरिणा ।
कृष्णामत्रेणरुद्योत विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ४ ॥
त्वत्वङ्गखण्डितस्यारेः पेशीराजन्यदाऽपतत् ।
मद्वर्णद्वेप्रिनीयं वै, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ५ ॥
राजंस्त्वद्वैरिनारीभी रुदतीभिरधोमुखं ।
धौताञ्जनेन पत्राली, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ६ ॥

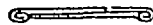
(इति समस्यापदकमहमदावादमध्ये पूरितं)

—:०:—

[“मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः”
इति व्यास-सतीदास-दत्तं समस्यापद पूर्यते -]

श्रीकृष्णोऽम्बुधितश्चतुर्दशभृश रत्नानि निर्वासय,
मासानेहसितत्रशक्तशफरः शुण्डाघटो निसृतः ।

म्वस्वभू शत्रुशाठपूर्वलभनाद्धीतिप्रतीतेः क्रमा—
 त्मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥१॥
 राजन्नाजिविधौ त्वया निजरिपुव्यांपादितस्तच्छिरो.
 लात्वोद्धीय जगाम गृध्र उत तद्भृष्टं च नद्या ब्रह्म ।
 वाग्घट्टे किमिति स्त्रियस्तिमियुत तन्निश्चकर्पुस्तदा,
 मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥
 वृक्षे क्षौद्रमसख्यमक्षिकमिहा रुक्षन् समीक्ष्य स्त्रियो,
 द्रागुन्मूल्य सरिद्रयोद्रुममिलद् द्रुत्वामितद्रुद्रुत ।
 पीताब्धिश्च पपौ जलं स्थलतया गामजनाच्चित्रतो,
 मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥३॥
 कासाराम्भसि वारिणा निजघटान् वभ्रुः पुरस्य स्त्रिय—
 स्तावत्ताजलमध्यतो मदकलो हस्त्युन्ममज्ज स्फुटम् ।
 भूस्यन्मीनमुद्रग्रवर्णमिमं ता वीक्ष्य चित्रं तदा,
 मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥४॥



“मन्दोदरी किमुदरी बदरी किमेषा” इति समस्या पदं—

हृष्टाशया वरदशाननजल्पनौघै,

रंतस्तमाः कुवलकण्टकता दधाना ।

मायोपमात्रययुताऽपि क्रमाद्विभिन्ना,

मन्दोदरी किमुदरी बदरी किमेषा ॥ १ ॥

चारुश्रिया बहुविचारि सुगोत्रजेषु, सञ्चारताचरणलक्षणवर्जितेषु ।

प्रश्नोत्तारे इयमुभे धरते समस्या, धन्वस्थलेषु च खलेषु चको

विशेषः ॥ १ ॥

“यष्टिरीष्टे न वैणवी” इति समस्यापदं

नमन गुणवानेव कुरुते न तु निर्गुणः ।

गुणं विना नतिं कर्तुं, यष्टिरीष्टे न वैणवी ॥ १ ॥

प्रतिभैव प्रभुर्युक्तिखण्डने स्यान्मतिस्तुना ।

क्षोदितु हि कुशीवक्ष्मा, यष्टिरीष्टे न वैणवी ॥ २ ॥

“शीर्षाणां सैव वन्व्या मम नवतिरभूद्भोचनानामशीतिः”

इति समन्या—

चक्रे श्रीपार्श्वमौलौ शृणु युवति मया सत्फणाना सहस्रं,
तद्वीक्ष्येन्द्रः स्तुवन्सन् खशशिनवशिरास्युन्मसाज्ज स्ववस्त्रैः ।
शच्यय्या नर्चर्खाक्ष्य कवि धुमितदृशोऽर्हन्प्रतस्थेऽघशेषा,
शीर्षाणां सैव वन्व्या मम नवतिरभूद्भोचनानामशीतिः ॥ १ ॥

—o—

(“नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः” इति समस्यापदं श्रीजिन
चन्द्रसूरिभट्टारकैः प्रदत्ता पञ्चकृत्वः पूरितम्)

सुषमाभिरनेकसूतैः प्रतिभाभिः सुनयश्च सद्गुणैः ।

जिनचन्द्रतुला करोति यो नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।१।

प्रति घम्मयकैतवस्पृहाः करणान्यत्र च पञ्च तद्भिदे ।

प्रवणो यति यः परीक्ष्यते, न वलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।२।

उपकारपरोपकारिणु क्तक कामिनिकाञ्च वष्टिनो ।

संभवात्त्रिपराङ्मुखः पुमानवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः॥३॥

कुन्ते गुम्गर्हणाय को दृढमुष्टि त्वमल दधाति यः ।

अभिधाय शुभात्र यम्य स नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।४।

गदतः स्वजनेष्ट नाशतो जरसा मृत्युत एव दैवतः ।

शतशो भयमेवमुद्धहन्नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ॥ ५ ॥

“तिलतुपतटकोणे कीटिकोष्ट्रं प्रसूता” इति समस्यापदम्

सखि दृशि समपप्तत्कीटिकैकोपतार

सुहृद्वदत्पक्ष्मो दस्य निःसारयस्ताम् ।

अभिमुखमयविम्बं वीक्ष्य दृक्स्थ तदाऽहो,

तिलतुपतटकोणे कीटिकोष्ट्रं प्रसूता ॥ १ ॥

“विवेकः शाब्दिकेष्वयम्” इति समस्यापदम्--

उत्तमोऽहं सदा वर्त्ते मव्यमस्त्व प्रवर्त्तसे ।

परः सामान्य आवाभ्या विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ १ ॥

समासः क्रियते तेषा येषामन्वययोग्यता ।

व्यासता बहुरूपाणा, विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ २ ॥

सार्वधातुकतानित्य लकाराणा चतुष्टये ।

आर्द्धधातुकताषट्के, विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ ३ ॥

“हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः”

ज्वलन्कपायोऽपि तवोपदेशा—

द्भवेज्जनः शान्तिरसैकरूपः ।

किं नामृतासारत ईश हि स्यान्,—

हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः ॥ १ ॥



धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली में प्रयुक्त देशी सूची

(१)	मुरली वजावैजी आवै प्यारो कान्ह	७१
(२)	चतुर विहारी रे आतमा	७६, ११२
(३)	आज निहेजो दीसै नाहलो	७८, २७१, ३६६
(४)	केसरीयो हाली हल खडै हो	८०
(५)	कबहु मै नीके नाथ नःध्यायो	६२
(६)	आयो आयोरी समरतां दादो आयो	६३
(७)	गोठलदे सेत्रु जे हाली	११२
(८)	नायक मोह नचावियो	११३
(९)	सफल ससार अवतार० १७२, २५६, २६६, २७५, २७६, २८६, २९०	
(१०)	अमल कमल जिम०	१६३
(११)	विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली	१६८, २०८, २८४
(१२)	घणरा ढोला	२००
(१३)	सुंवरदे रा गीत री	२०३
(१४)	दादै रै दरबार चापो मोह्य रह्यो	२०५
(१५)	आदर जीव क्षमा गुण०	२०६, २७०
(१६)	नणदल री	२०७
(१७)	त्यागी वैरागी मेघा जिन समझाया	२२२
(१८)	उडरे आवा कोइल मोरी	२२२
(१९)	चरण करण घर मुनिवर	२४४
(२०)	वेत्रणी आगे थी कहै	२५०
(२१)	धर्म जागरीयानी	२५०

(२२)	आषाढ मैरु आवै	२५२
(२३)	तदूल राशि विमलगिरि थापी	२५७
(२४)	हेम घड्यो रतने जड्यो खुंपो	२५६, २७२
(२५)	वीर जिनेश्वर चरण कमल	२६२
(२६)	वेकर जोडी ताम	२६३, २६८, २६२
(२७)	इण पुर कंवल कोई न लेसी	२६४
(२८)	तिण अवसर कोई मगघ आयो०	२६७, २८३, ३३४
(२९)	करम परीक्षा करण कुमर चलयो	२७१
(३०)	वीर वखाणी रानी चेलणा	२७४
(३१)	थभणपुर श्री पास जिणंदो	२७८
(३२)	नदी यमुना के तीर,	२८१
(३३)	आव्यो तिहा नरहर	२८७
(३४)	कपूर हुवै अति ऊजलो	२८८, ३२६
(३५)	अन्य दिवस को	२९१
(३६)	सुगुण सनेही मेरे लाला	२९४
(३७)	दीवाली दिन आवीयउ	२९६
(३८)	हु बलिहारी जाववा	३११
(३९)	अलवेला नी	३१६
(४०)	नवकार री	३२१
(४१)	घरम अराधियाए	३२४
(४२)	कुमरी बुलावै कूबड़ो	३२८
(४३)	सेवा बाहिरो कहिये को सेवक	३३०

(अमरकुमार) सुरसुन्दरी रास का अन्त्य भाग

[ढाल १२—इण पर भाव भगति मन आणी]

धरम शील जिण साचो धार्यो, वलि नवकार संमार्यो जी ।
सुरसुन्दरिए सर्व समार्यो, निज आतम उधार्यो जी,

एक सदा जिन धर्म अराधो ॥६॥

‘शीलतरंगणी’ ग्रन्थ नी साखे, ए रास अति लाखै जी ।

धन जे शील रतन नै राखै, भगवत इणपर भाखै जी ॥७॥

संवत सतरै वरस छत्तीसै, श्रावण पूनिम दीसै जी ।

एह संबन्ध कह्यो सुजगीसै, सुणता सहु मन हीसै जी ॥८॥

गणधर गोत्रे गच्छपति गाजै, जिनचंद्रसूरि विराजै जी ।

श्री वेनातट पुर सुख साजै, चौपी करी हित काजै जी ॥९॥

साखा जिनभद्रसूरि सवाई, खरतर गच्छ वरदाई जी ।

पाठक साधुकीरति पुण्याई, साधुसुन्दर उवभाई जी ॥१०॥

विमलकीरति वाचक बड़ नामी, विमलचन्द यश कामी जी ।

वाचक विजयहर्ष अनुगामी, धर्मवर्द्धन धर्म ध्यानी जी ॥११॥

उपदेश हिया में आणी, पुण्य करे जे प्राणी जी ।

आवी लाछि मिलै आफ्राणी, साची सद्गुरु वाणी जी ॥१२॥

वारमी ढाल कही बहुरगे, चौथे खंड सुचंगे जी ।

जिन धर्मशील तणै शुभ सगे, आनंद लील उमगे जी ॥१३॥

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भारती (उच्चकोटि की गोध-पत्रिका)

भाग १ और ३	८) प्रत्येक
भाग ४ से ७	६) प्रति भाग
भाग २ (केवल एक अंक)	२) रुपये
तैस्सितोरी	विगोषांक—५) रुपये
पृथ्वीराज राठोड	जयन्ती विशेषांक ५) रुपये

प्रकाशित ग्रन्थ

- १; कलायण (ऋतुकाव्य) ३।। २ वरसगांठ (राजस्थानी कहानियां १।।)
३ आभै पटकी (राजस्थानी उपन्यास) २।।

नए प्रकाशन

- | | |
|----------------------------|-------------------------------|
| १. राजस्थानी व्याकरण | १३. सद्यवत्सवीर प्रदन्व |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास | १४. जिनराजसूरि कृति कुसुमाजलि |
| ३. अचलदास खीचीरी वचनिका | १५. विनयचन्द्र कृति कुसुमाजलि |
| ४. हम्मीरायण | १६. जिनहर्ष ग्रन्यावली |
| ५. पद्मिनी चरित्र चौपाई | १७. धर्मवर्द्धन ग्रन्यावली |
| ६. दलपत विलाम | १८. राजस्थानी दूहा |
| ७. टिगल गीत | १९. राजस्थानी वीर दूहा |
| ८. परमार वंश दर्पण | २०. राजस्थानी नीति दूहा |
| ९. हरि रम | २१. राजस्थानी व्रत कथाएं |
| १०. पीरदान लालस ग्रन्यावली | २२. राजस्थानी प्रेम-कथाएं |
| ११. महादेव पार्वती वेल् | २३. चंदायण |
| १२. सीताराम चौपाई | २४. दम्पति विनोद |
| | २५. समयसुन्दर रासपचक |

पता :—सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर

